प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

[पहला खण्ड]

सम्पादक
डॉक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण; विक्रमाब्द २०११, सन् १९५४ ई०
द्वितीय संस्करण २०१५, सन् १९५८ ई०

मूल्य

मुद्रक
ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड,
पटना-४

सूची

संकेत-विवरण

वि० सं०	विक्रमी संवत्
क्र० सं०	क्रम-संख्या
ग्रं० सं०	ग्रन्थ-संख्या
फ०	फसली सन्
ई०	ईसवी सन्
ना० प्र० स० का०	नागरी प्रचारिणी-सभा, काशी
खो० वि०	खोजवि-वरणिका
र० का०	रचनाकाल
लि० का०	लिपिकाल और लिपिकार
पृ० स०	पृष्ठ-संख्या
प्र० पृ० प०	प्रति-पृष्ठ पंक्तियाँ
पु० क्र० सं० का०	पुस्तकालय क्रम-संख्या-काव्य
खो० वि० ग्रं०	खोज-विवरण-ग्रन्थ
बि० रा० भा० प० १ खं०	बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् १ खंड
आ० शा० भ० ज० ग्रं०	आमेरशास्त्र-भंडार-जयपुर (जैन)-ग्रंथ-सूची
क० प्रा० ता० ग्र०	कन्नडप्रान्तीय तालपत्रीय ग्रन्थ-सूची
जै० सि० भ० आ० सू०	जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा-सूची
बि० रि० सो० मा० डि० कै० मि०	बिहार रिसर्च सोसायटी डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ मैनस्क्रिप्ट्स
सी० सी० पार्ट	कैटलोगस कैटलॉगोरम स्क्रिप्ट्स भाग
सी० एस्० सी० ख०	कलकत्ता-संस्कृत-कॉलेज-खण्ड
एच्० पी० एस्० ख०	हरप्रसादशास्त्री-खण्ड
बी० एम्०	ब्रिटिश म्यूजियम
सी० पी० बी०	सेंट्रल प्रोविन्स एण्ड बरार
डिस्० कैट० एम्०	डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ संस्कृत मैनस्क्रिप्ट्स गवर्मेंट ओरियण्टल मैनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास

वक्तव्य

[द्वितीय संशोधित संवर्द्धित संस्करण]

परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथशोध विभाग द्वारा संगृहीत पुरानी पोथियों के विवरण का यह प्रथम खण्ड पहले पहल विक्रमाब्द २०११ में प्रकाशित हुआ था। यह नवीन संस्करण उसी का संशोधित और संवर्द्धित रूप है। इस संस्करण में पहले संस्करण में अंकित गुरुमुखी और बँगला की पुरानी पोथियों के विवरण नहीं हैं। केवल संस्कृत और हिन्दी की पोथियों के ही विवरण अलग अलग इसमें दिये गये हैं।

पहले संस्करण से इसमें विशेषता यह है कि हिन्दी की ५७ पुरानी पोथियों के नये विवरण प्रकाशित हैं। इन पुरानी पोथियों में से अधिकांश ऐसी ही हैं, जिनसे बिहार राज्य के अनेक ज्ञात अज्ञात कवियों की रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं।

पहले संस्करण से दूसरी विशेषता इसमें यह है कि इसकी पृष्ठ-संख्या क्रमबद्ध है और इसके आरम्भ में ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय दे दिया गया है तथा तीन परिशिष्टों में निरीक्षणात्मक रूप से ज्ञातव्य विषयों के सम्बन्ध में संक्षिप्त सूचनाएँ संकलित कर दी गई हैं।

इस विवरण का दूसरा खण्ड भी प्रकाशित हो चुका है। इस प्रथम खण्ड के प्रथम संस्करण का प्रकाशन सीमित संख्या में ही हुआ था। साहित्यिक अनुसंधान में संलग्न विद्वानों ने उसको बहुत उपयोगी समझकर अपनाया। फलस्वरूप उसका यह परिष्कृत संस्करण प्रकाशित किया गया है। आशा है कि इस संस्करण से साहित्यिक गवेषणा के कार्य में यथोचित सहायता मिलेगी।

इस संस्करण में सम्मिलित नई पोथियाँ जिन सज्जनों से प्राप्त हुई हैं उनको हार्दिक धन्यवाद देते हुए हम आशा करते हैं कि वे भविष्य में इसी प्रकार परिषद् के ग्रंथ-संग्रह कार्य में सहयोग करते रहेंगे।

महाशिवरात्रि शकाब्द १८७९
फरवरी, १९५८ ई

शिवपूजन सहाय
(संचालक)

निवेदन

[प्रथम संस्करण]

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से समस्त बिहार राज्य में हस्तलिखित प्राचीन पोथियों और दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों की खोज कराई जाती है। खोज का काम सर्वत्र भ्रमण करके श्री रामनारायण शास्त्री करते हैं। यह काम परिषद् के मान्य सदस्य और बिहार-राज्य के शिक्षा विभाग के उपनिदेशक डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के तत्त्वावधान में होता है। श्री ब्रह्मचारीजी की देख-रेख में श्री रामनारायणजी नयी संगृहीत पोथियों का परिचयात्मक विवरण तैयार करते हैं, जो डॉ० शास्त्री द्वारा सम्पादित होकर 'साहित्य' में क्रमशः प्रकाशित होता रहता है। क्रमशः छपे हुए उन विवरणों के कुछ अतिरिक्त पृष्ठ, त्रैमासिक 'साहित्य' के प्रत्येक अंक से अलग रख लिये जाते हैं। उन्हीं में से एक सौ पोथियों का विवरण इस पुस्तिका में प्रकाशित किया जा रहा है। यह संग्रह केवल अनुसंधानकर्त्ता विद्वानों (रिसर्च-स्कॉलरों) की सुविधा के लिए बहुत सीमित संख्या में प्रकाशित हुआ है। आशा है, विद्वज्जन इससे लाभ उठावेंगे।

इस विवरण पुस्तिका की पृष्ठ-संख्या क्रमबद्ध नहीं है। किन्तु पोथियों का संख्या क्रम ठीक है। विवरण का दूसरा खंड क्रमबद्ध पृष्ठ-संख्या के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

इस संग्रह में प्रकाशित एक सौ पुस्तकों के विवरणों में हिन्दी के अतिरिक्त कुछ संस्कृत, बँगला और गुरुमुखी पोथियों के भी विवरण हैं। जिन उदार सज्जनों की कृपा और सहायता से परिषद् को हस्तलिखित प्राचीन पोथियाँ प्राप्त हुई हैं, उनके नाम और पते तो विवरण में दे ही दिये गये हैं, पर यहाँ हम परिषद् की ओर से उन सबको हार्दिक धन्यवाद देते हैं। विश्वास है कि परिषद् के ग्रन्थ शोधक श्री रामनारायण शास्त्री बिहार-राज्य में जहाँ कहीं जायँगे, वहाँ सहृदय सज्जनों से, उनको संग्रहणीय ग्रंथों का दान अवश्य प्राप्त होगा। पोथियाँ देनेवाले सहृदय सज्जनों को यह स्मरण रखना चाहिए कि जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी हुई पोथियों से साहित्यिक गवेषणा का काम सुविधा से नहीं हो सकता है। इसलिए बिहार-सरकार की सहायता से परिषद्-पुस्तकालय में अलभ्य पोथियों का एक संग्रहालय बनाया गया है, जिसमें पोथी देनेवाले सज्जन भी पधार कर सुरक्षित रखी हुई पोथियों से लाभ उठा सकते हैं।

शिवपूजन सहाय
(परिषद्-मंत्री)

दो शब्द

[द्वितीय संस्करण]

तीन वर्ष पूर्व (सं० २०११ वि० में) हमने परिषद्-ग्रन्थालय में संकलित एक सौ हस्तलिखित पोथियों के त्रैमासिक 'साहित्य' में प्रकाशित, विवरणात्मक लेखों की पुनर्मुद्रित (रिप्रिन्ट्स) प्रतियों को पुस्तकाकार प्रकाशित किया था। उसके इतना शीघ्र समाप्त हो जाने की संभावना नहीं थी। किंतु अनुसंधित्सु सुधी सुविज्ञों ने उसे इस प्रकार अपनाया कि आज हम उसका द्वितीय संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस किंचित् सुसंपादित और परिष्कृत संस्करण में हिन्दी एवं संस्कृत भाषा की हस्तलिखित पोथियों के विवरण पृथक्-पृथक् तो दिये ही गये हैं, ग्रंथों की संख्या भी बढ़ाकर एक सौ इक्यावन (१०० हिन्दी और ५१ संस्कृत) कर दी गई है। इस विवरण में पूर्व-संस्करण में आई हुई पोथियों के अतिरिक्त हिन्दी की सत्तावन (गरिया साहित्य २२* और चौबे संग्रह ३५) अन्य पोथियों के विवरण सम्मिलित कर लिये गये हैं। विवरण के तृतीय परिशिष्ट में महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का संकेत कर दिया गया है।

इस संग्रह में ५१ ग्रंथकारों (हिन्दी—३४, संस्कृत-१७) के १५१ ग्रंथों (१०० हिन्दी और ५१ संस्कृत) के विवरण हैं जिनमें चालीस ऐसी रचनाएँ हैं (हिन्दी-१८ और संस्कृत-२२) जिनके ग्रंथकार साहित्यिक-जगत् के लिए अपरिचित एवं अज्ञात हैं (प्रथम परिशिष्ट में देखिए)।

निम्नलिखित तालिका में विक्रम शताब्दी के अनुसार प्रत्येक शताब्दी में रचित तथा लिपिबद्ध ग्रंथों की संख्या का निर्देश किया गया है। इनके अतिरिक्त ग्रंथों में रचना काल का उल्लेख नहीं हुआ है।

विक्रम शताब्दी के अनुसार संख्या के रचना काल और लिपिकाल

शताब्दी	इस शताब्दी में रचित पोथियों की संख्या	इस शताब्दी में लिपिबद्ध पोथियों की संख्या
सोलहवीं	१	×
सत्रहवीं	×	×
अठारहवीं	१	५
उन्नीसवीं	२	३४
बीसवीं	६	४८

* २२ की संख्या जिल्दों की द्योतक है, इनमें ५४ पोथियाँ सम्मिलित हैं।

इस संस्करण में अप्रकाशित पोथियों की संख्या की वृद्धि हुई है, जिसके फलस्वरूप निम्नलिखित विहारी एवं अन्य अज्ञात ग्रन्थकारों की विशेष चर्चा हुई है—

अवतार मिश्र, परमानन्द, भुवालस्वामी, कृष्णसिंह और हरिदास।

इनके संबंध में संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी ग्रन्थ-विवरण के प्रारंभ में दे दी गई है। इनमें सूरजदास, लालचदास, पदुमनदास, कुंजनदास, शिवनाथदास, कृष्ण (कारन) दास, के ग्रन्थों पर परिषद् के इस विभाग का खोज कार्य जारी है। संत सूरजदास और उनकी कृति 'रामजन्म' का संपादन हो रहा है। 'संत कवि दरिया : एक अनुशीलन' के दूसरे खंड—'दरिया ग्रन्थावली' के लिए संत दरिया के ग्रन्थों का पाठान्तर-विश्लेषण भी हो चुका है। प्रतिवर्ष एक हस्तलिखित ग्रंथ अपने मूल रूप में समीक्षात्मक अध्ययन के साथ प्रकाशित करने का विचार है।

हम उन महानुभावों के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने परिषद्-संग्रहालय के लिए उदारतापूर्वक हस्तलिखित पोथियों का दान किया है। ग्रंथ-विवरण-प्रसंग में उनके दान का उल्लेख कर दिया गया है। विशेष रूप से हम श्री साधु चतुरीदासजी तथा श्री पं० गणेश चौबे के अनुगृहीत हैं, जिन्होंने संत दरिया के ग्रंथों तथा महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित पोथियों का दान कर परिषद्-संग्रहालय की श्री वृद्धि की है।

वसंत-पंचमी
२०१४ वि०

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
अध्यक्ष,
प्राचीन हस्तलिखित-ग्रन्थ-अनुसंधान-विभाग

दो शब्द

(प्रथम संस्करण)

भारत के प्राचीनतम साहित्य को मुख्यतः दो व्यापक संज्ञाएँ दी गई हैं—श्रुति और स्मृति। 'श्रुति' का आशय उस मूल साहित्य से है, जिसे मानव जाति ने प्रथम प्रथम पाया। इस साहित्य का मुख्य स्रोत 'श्रुति अथवा श्रवण' था और प्राचीन गुरु-परम्परा के प्रभाव में इसे ईश्वरीय वाणी मानकर परम सम्मावना का पात्र बनाया गया। किन्तु वह साहित्य जो इस मूल श्रुति-साहित्य के आधार पर निर्मित हुआ और जिसे गुरु-परम्परा से लोग स्मृति (स्मरण) द्वारा रक्षित करते रहे वह 'स्मृति' के नाम से प्रचलित हुआ। इस प्रसंग में यह कहना कठिन है कि श्रुति और स्मृति दोनों प्रकार का मौखिक साहित्य प्रथम प्रथम लिपिबद्ध कब हुआ। किन्तु इतना तो असंदिग्ध रूप से माना जायगा कि पाणिनि के व्याकरण की रचना के समय तक लिपिकला का आविष्कार हो चुका था।

प्रथम प्रथम जो लिपिबद्ध साहित्य हमें प्राप्त है वह मुख्यतः शिलालेखों, मुद्राओं, अथवा ऐतिहासिक महत्त्व रखनेवाली इस प्रकार की अन्यान्य वस्तुओं पर अंकित मिलता है। जब बौद्धों और जैनों ने अपने विपुल अपभ्रंश, पालि तथा प्राकृत साहित्य का निर्माण किया और उनका अधिकाधिक प्रचार करना चाहा तब ग्रंथों को भूर्जपत्र अथवा तालपत्र पर लिखकर सुरक्षित करने की प्रथा चलाई। प्राचीन काल में जितने बौद्धों के विहार और जैनियों के मंदिर थे, उनसे संबद्ध हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रहालय रहा करता था। जैन धर्मावलम्बी इन संग्रहालयों को शास्त्र भंडार, सरस्वती भण्डार, भारती भाण्डागार अथवा संक्षेप में केवल 'भण्डार' कहा करते थे। आज भी राजस्थान तथा अन्यत्र स्थित अनेकानेक मन्दिरों में जैन ग्रंथों की विपुल निधि सुरक्षित है। काश्मीर, काशी, मिथिला, नदिया (बंगाल) आदि कतिपय प्रदेशों अथवा स्थानों में वैदिक अथवा हिन्दू धर्म से संबद्ध संस्कृत-भाषा का प्रचुर साहित्य हस्तलिखित रूप में संचित है, बौद्धों के भी तक्षशिला, विक्रमशिला और नालन्दा विहारों तथा विश्वविद्यालयों में बहुसंख्यक ग्रंथ सुरक्षित थे जिनमें से अनेक ग्रंथ इतरधर्मियों द्वारा भस्मसात् भी कर दिये गये।

वर्तमान युग में जब मुद्रण के आविष्कार ने ज्ञान की सामग्री को सर्वसुलभ बनाया, तब विद्वानों का ध्यान इस ओर गया कि हस्तलिखित ग्रंथों की अमूल्य निधि को प्रकाश में लाया जाय। फलतः इस प्रकार के ग्रंथों की खोज और उनके संबंध में संक्षिप्त सूचनाओं के प्रकाशन का कार्य सन् १८ ८ ईसवी से आरंभ हुआ। पहले पहल यह कार्य मुख्यतः संस्कृत ग्रंथों की खोज तक सीमित था। डॉ० कीलहॉर्न, बूलर, पीटर्सन, बरनेल तथा भण्डारकर आदि विद्वानों ने एशियाटिक सोसाइटी एवं प्रादेशिक सरकारों के साहाय्य से संस्कृत ग्रंथों की खोज के आधार पर, सूचियाँ प्रकाशित किये और उन सबों को मिलाकर आफ्रेक्ट साहब ने एक बृहत् परिचयात्मक संकलन 'कैटेलोगस कैटेलॉगरम्' के नाम से अनुसंधित्सु जगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया। संस्कृत ग्रंथों तथा जैनधर्म-संबंधी साहित्य के ऐसे कई बहुमूल्य परिचयात्मक संकलन विद्यमान हैं।

हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों के संग्रह तथा उनके संबंध में सूचनाओं के प्रकाशन का व्यवस्थित रूप से कार्य करने का प्रयत्न सर्वप्रथम काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने किया और सन् १६०० ईसवी में श्री बाबू श्यामसुन्दरदास के तत्त्वावधान में खोज-विभाग की स्थापना हुई। सभा ने अबतक १६ रिपोर्टें तैयार की हैं, जिनमें केवल १२ छप सकी है और शेष अभी लाल फीते के जटा-जूट में विलीन है। इन रिपोर्टों का प्रकाशन सरकार के आर्थिक अनुदान पर ही अवलंबित रहा है। अत: अप्रकाशित रिपोर्टों के उद्धार के लिए कब गंगावतरण होगा, यह अनिश्चित है। हिन्दी-साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी यह स्वीकार करेगा कि हमारे साहित्य और संस्कृति के नवीन इतिहास तथा नवीन चेतना के निर्माण में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज ने बहुत बड़ी देन दी है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्त्वावधान में हस्तलिखित पोथियों के संग्रह और अनुसंधान का का कार्य १६५१ ईसवी के फरवरी मास मे प्रारंभ हुआ है। तीन वर्ष के अल्पकालिक अन्वेषण के फलस्वरूप अबतक ७७७ हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय में संकलित हो चुके हैं। प्रान्त के विभिन्न ग्रंथालयों में संगृहीत १५८ ग्रन्थों का विवरण-पत्र भी तैयार किया जा चुका है। संकलित ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के सम्मिलित मुखपत्र 'साहित्य' में क्रमशः प्रकाशित होता रहा है। उन प्रकाशित विवरणों की पुनर्मुद्रित प्रतियों का कुछ अंश पुस्तकाकार प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस संग्रह में १०० हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण हैं, जिनमें ४२ हिन्दी, १ गुरुमुखी, ५ बँगला और १ तालपत्र पर लिखित मिथिलाक्षर-ग्रंथ है। शेष ५१ नागरी लिपि में लिखित संस्कृत ग्रंथ है। हमें आशा है कि अनुशीलन-शील सुधी-समाज के लिए यह संक्षिप्त विवरण अनुसंधान-कार्य में मार्ग-निर्देश का कार्य करेगा। संक्षिप्त विवरणों को तैयार करते समय यह ध्यान रखा गया है कि हस्तलिखित ग्रंथों के उद्धरण अपने मौलिक अविकल रूप में आवें।

हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों में अनेक पोथियाँ ऐसी हैं जो अबतक अप्रकाशित हैं और उनपर यदि सम्यक् अनुसंधान किया जाय तो हिंदी तथा बिहार के साहित्यिक इतिहास पर अभिनव प्रकाश पड़ेगा। अबतक, परिषद् में तथा राज्य के विभिन्न पुस्तकालयों में संगृहीत पोथियों से पचीस ऐसे कवियों, लेखकों का पता चला है, जिनके संबंध में अनुसंधान-अनुशीलन की नितांत आवश्यकता है। इन पचीस में ग्यारह ऐसे हैं, जिनके ग्रंथों की संक्षिप्त सूचनाएँ प्रस्तुत संग्रह में आई हैं। ये निम्नलिखित हैं—

१. **श्रीसंतसूरजदास**—इनके द्वारा लिखित 'रामजन्म'-नामक ग्रंथ मिला है। रचना से प्रतीत होता है कि ये बिहार-प्रांत के ही संत थे। 'रामजन्म' पर एक समालोचनात्मक अध्ययन डा० धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा 'साहित्य' में प्रकाशित हो रहा है।

२. **श्री लालचदास**—ये यथासंभव गोस्वामी तुलसीदासजी से भी पूर्व आविर्भूत हुए थे और इन्होंने कृष्ण-संबंधी प्रबंध-काव्य की रचना की थी। इनका दोहों और चौपाइयों में लिखित श्रीमद्भागवत प्राप्त हुआ है। परिषद्-संग्रहालय में इनके तीन ग्रंथ हैं। इस विवरण में सबसे पहला ग्रंथ इन्हीं का है। इनके दो ग्रंथ भी मन्नूलाल पुस्तकालय, गया में सुरक्षित हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-रिपोर्ट, मिश्रबंधु-विनोद तथा शिवसिंह-सरोज में भी इनकी चर्चा की गई है। श्री लालचदासजी का जन्म-स्थान बरेली (उत्तर प्रदेश) था। इनकी साहित्य-भूमि बिहार थी। इन्होंने विशेषतः दरभंगा जिले के रोसड़ा के आसपास समय-यापन किया।

३ श्री पदुमनदास—ये रामगढ़ राज्य के आश्रित कवि थे। इन्होंने हितोपदेश का हिन्दी पद्यानुवाद किया था जो इस विवरण में है। इनके द्वारा लिखित दो और ग्रंथ मन्नूलाल पुस्तकालय, गया में हैं। इनकी रचना में रामगढ़-राज्य की संक्षिप्त वंशावली भी दी हुई है।

४ श्री शिवनाथदास—दरिया-पंथ के एक साधु। इन्होंने इसी मत से संबंधित एक मौलिक ग्रंथ की रचना की है। ये प्रसिद्ध दरियापंथी मठ, तेलपा (सारन जिला) में रहते थे।

५ श्री कुंजनदास—शिवपुराण के आधार पर लिखित दोहे और चौपाइयों में 'शिवपुराणरत्न', इनकी मौलिक रचना है। ये शाहाबाद जिले के निवासी थे। इनकी रचना से ज्ञात होता है कि इनके शिष्य पूर्वी बिहार के मुंगेर और भागलपुर जिले में अधिक थे।

६ श्री कृष्णकारखदास—बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले के रोसड़ा के निवासी एक संत। ये संभवतः कबीर के समकालीन संत थे। रोसड़ा में इनका एक मठ भी है। कबीर पंथियों में इनका एक पृथक् शाखा मानी जाती है। इनकी तीन रचनाएं प्राप्त हुई हैं। इनके द्वारा लिखित अन्य अनेक हस्तलिखित ग्रंथ रोसड़ा-मठ में सुरक्षित हैं।

७ श्री मानदास—इनका निवास स्थान मिर्जापुर जिले के अकौनी नामक ग्राम में था। यह ग्राम पूर्वीय रेलवे के विन्ध्याचल स्टेशन से एक स्टेशन आगे, अष्टभुजा के करीब, बिरोही स्टेशन के सन्निकट है। इनके द्वारा लिखित 'श्री रामायण' विशालकाय ग्रंथ है। यह ग्रंथ लगभग २०० वर्ष प्राचीन है। इनकी रचना पर अवधी का प्रभाव अधिक है। यह ग्रंथ और ग्रंथकार हिन्दी-जगत् के लिए नवीन हैं।

८. श्री श्रीभट्ट—इनकी रचना 'युगलस्तोत्र' है। इसमें इन्होंने ब्रजभाषा प्रभावित भाषा में राधा और कृष्ण के संबंध में बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। इनकी अन्य रचनाएँ श्री मन्नूलाल पुस्तकालय गया में हैं। अपनी रचना में इन्होंने विभिन्न रागों के पद तो बनाये ही हैं दोहे भी लिखे हैं। इनके संबंध की सूचना काशी-नागरी प्रचारिणी की खोज रिपोर्ट में भी है। इनके ग्रंथों में इनके निवास-स्थान आदि के संबंध में कोई भी चर्चा नहीं है।

९ श्री परमानन्ददास—इन्होंने अपने ग्रंथ 'कबीर भानु प्रकाश' में अपना कोई भी परिचय संकेत नहीं दिया है। इनके ग्रंथ से इनका विशाल अध्ययन तथा सभी धार्मिक सम्प्रदायों के मन्तव्यों से विस्तृत परिचय ज्ञात होता है।

१० श्री नगनारायण सिंह—ये सारन जिले के पटेढ़ा नामक ग्राम के निवासी साहित्यिक थे। यद्यपि ये बहुत प्राचीन कवि नहीं हैं तथापि पूर्व वर्तमानकाल' के साहित्यिकों में इनकी गणना होगी। इन्होंने हिन्दी संस्कृत और फारसी में पद्य रचना की है। विशेष इस विवरण में देखिए।

११ श्री अवधकिशोर सहाय—ये बिहार प्रान्त के पलामू जिले के डाल्टनगंज के आसपास कचनपुर ग्रामवासी थे। इन्होंने चितौर की लड़ाई और राजपूती इतिहास से संबंधित वीर-काव्य की रचना की थी। इनकी रचना 'चित्तोरोद्धार' का प्रवाह बड़ा ही सुन्दर है।

इन ग्यारह कवियों के अतिरिक्त जिन अज्ञात साहित्य सृष्टाओं का पता चला है उनके विवरण पृथक् खण्ड में सम्मिलित किए जायेंगे। बिहार के चंपारन जिले में प्रचलित सरभंग मतों की वाणियाँ भी संग्रहीत होकर परिषद् संग्रहालय में आ गई हैं। इन वाणियों का सांस्कृतिक

साहित्यिक अध्ययन यथासमय ग्रंथाकार प्रकाशित किया जायगा। परिषद् ने यह भी निश्चय किया है कि क्रमशः प्रतिवर्ष मूलग्रंथ भी मुद्रित तथा प्रकाशित किये जायँ।

विवरण प्रस्तुत करते समय यह ध्यान रखा गया है कि उद्धरण आदि उसी रूप में रखे जायँ, जिसमें वे मूल पोथी में हैं। फलतः श, ष, स, अथवा ह्रस्व, दीर्घ आदि को अविकल रूप से उतार दिया गया है और उनका शुद्ध रूप नहीं दिया गया है। व और ब के संबंध में यह जान लेना चाहिए कि प्रायः पोथियों में ब वैसा ही लिखा गया है जैसा नागरी का व और व को नागरी व के नीचे बिंदु (व़) देकर संकेतित किया गया है। किंतु उद्धरण देते समय छापे की सुविधा को ध्यान में रखकर उपरिलिखित ब और व को क्रमशः व और व़ न लिखकर ब और व ही लिखा गया है।

एक बात और। हस्तलिखित पोथियों में प्रायः छंद के एक चरण को इकाई मानकर इस प्रकार लिखा गया है, जिसमें शब्द एक-दूसरे से पृथक् नहीं मालूम पड़ते। या तो समग्र चरण या पोथी की समग्र पंक्ति के ऊपर एक ही लकीर दे दी गई है, अथवा जहाँ एक लकीर नहीं है, वहाँ उस पंक्ति अथवा चरण का प्रत्येक अक्षर समान दूरी पर अलग-अलग, किंतु एक-दूसरे से सटाकर, लिखा हुआ है।

आधुनिक लेखों और पुस्तकों के पढ़नेवालों को हस्तलिखित पोथियों के पढ़ने में इस कारण कुछ कठिनाई अवश्य होगी, क्योंकि पढ़ते समय अपने मन से एक में मिले हुए शब्दों को अलग-अलग करके पढ़ना और समझना होगा।

नागरी के य का उच्चारण प्रायः ज के समान होता है, किंतु किसी अक्षर के साथ संयुक्त होने पर य के समान होता है। जहाँ संयुक्त न होते हुए भी य का उच्चारण अंतःस्थ य के समान इष्ट है, वहाँ प्रायः उसके नीचे बिंदु (य़) दे दिया गया है। मूर्धन्य ष का उच्चारण प्रायः ख के समान माना गया है और इसी कारण दुष (दुख), शाषा (शाखा) और वषानि (बखानि) आदि प्रयोग किये गये हैं। ग्रंथों के लिपिकार अन्य प्रकार की भी बहुत-सी अशुद्धियाँ करते थे, जिनका परिचय मूल उद्धरणों से पाठकों को मिल जायगा। पोथियाँ जहाँ-जहाँ से संगृहीत हुई हैं, उन स्थानों अथवा पुस्तकालयों के नाम विवरण के साथ ही दे दिये गये हैं।

हम इस संग्रह को व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक नहीं बना सके हैं, क्योंकि यह रिपोर्टों का संकलन-मात्र है और प्रयास भी प्रथम है। किंतु हमें आशा है कि अगले संग्रहों को हम पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार साहित्यिक-जगत् को भेंट कर सकेंगे।

इस संग्रह को तैयार करने तथा सामग्री जुटाने में हमारे शोधकर्त्ता श्री रामनारायण शास्त्री ने जिस तत्परता तथा लगन से कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है।

श्रीमहावीर-जयंती,
चैत्रशुक्ल १३, सं० २०११ वि०

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
अध्यक्ष,
प्राचीन हस्तलिखित-ग्रंथ-शोध-विभाग
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

ग्रंथकारों का संक्षिप्त परिचय[1]

[ग्रंथकारों के नाम के सामने (अंकित) कोष्ठकान्तर्गत संख्याएँ विवरणिका में सम्मिलित ग्रंथों की क्रम-संख्याएँ हैं ।]

१—अवतार मिश्र (६१) [illegible] के रचयिता चंपारन जिला ([illegible] ग्राम)-निवासी । रचनाकाल १८८४ वि. ।

२—अवधकिशोर शर्मा ([illegible]) चंपारन जिले के [illegible]पुर ग्राम निवासी । जन्म सं० १९६४ वि. में । वर्तमान 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से भूषित हिन्दी और संस्कृत के अध्यापक ।

३—आनन्द कवि (७८) [illegible] के रचयिता । इनकी कुल—कोकसार, कोकमंजरी, कोकाकलाप और [illegible]श्रृंगार—चार रचनाओं का उल्लेख मिलता है ।

४—कबीरदास (२३ क, २७, ३२, ८०, ८३, ८४) निर्गुण-काव्यधारा के प्रसिद्ध संतकवि और [illegible] के प्रवर्तक । जन्म सं० १४५५ वि. । निर्वाण-सं० १५०५ वि० । रामानंद के शिष्य और धर्मदास के गुरु । इस विवरण में इनके निम्नांकित ग्रंथ हैं—

१—हनुमानबोध—लि० का०—१९३८ [illegible] खोज में प्राप्त कबीर साहित्य में यह ग्रंथ नवउपलब्ध है ।

२—शब्द—यह रचना नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) की भी खोज में मिल चुकी है ।[2]

३—[illegible]—[illegible] ग्रंथ [illegible] ।

४—कहरा—कबीर का [illegible] ग्रंथ । इस विवरण ग्रंथ की हस्तलिपि १८ [illegible] (= १७८८ वि०) की है ।

५—[illegible]—[illegible] कबीर का यह ग्रंथ [illegible] आधारित है । नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) को इस ग्रंथ की एक प्रति खोज में मिली है ।[3]

६—[illegible]—यह ग्रंथ कबीर की [illegible] का आध्यात्मिक विवरण है । [illegible] । नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) को [illegible] प्राप्त हुई हैं ।[4]

---

१ [illegible]

२ —[illegible] पृ० [illegible] ।

३ —[illegible] पृ० [illegible] ।

४ —[illegible]

[illegible] ([illegible]) पृ० [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

५—कुंजनदास—(२१) 'शिवपुराणरत्न' के ग्रंथकार, बिहार-राज्यान्तर्गत शाहाबाद जिले के 'पंवार' ग्राम-निवासी, रचना-काल अज्ञात।

६—कृपाराम—(८५) सं० १८५५ वि० के लगभग वर्त्तमान, रामानुज-संप्रदाय के भक्तकवि। ना० प्र० स०, का० को भी यह ग्रंथ—'भागवत-भाषा'—खोज में मिला है। 'समयबोध' के ग्रंथकार इनसे भिन्न हैं।

७—कृष्ण (कारख) दास(३८)—'विचारगुणावली' के ग्रंथकार; बिहार-राज्यान्तर्गत दरभंगा जिले के रोसड़ा-वासी। कहा जाता है कि ये संभवतः कबीर साहब के समकालीन थे। कबीर-पंथ की प्रचलित शाखाओं में 'वचन-वंशीय' शाखा के संभवतः प्रवर्त्तक।

८—केशवदास (७३, ८६, ९७, ९८, १००,)—ओड़छा-नरेश मधुकरशाह और उनके पुत्र राजकुमार इन्द्रजीत सिंह के आश्रित, ओड़छा (बुन्देलखंड)-निवासी सनाढ्य ब्राह्मण। सुप्रसिद्ध ग्रंथकार।

इनके निम्नलिखित हस्तलेख इस संग्रह में हैं—

१—विज्ञानगीता—दो हस्तलेख।

२—रसिकप्रिया—दो हस्तलेख।

३—राम-चन्द्रिका—एक हस्तलेख; समय—सं० १७९३ वि० = (१७३६ ई०)।

इनकी रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिली हैं।[1] कवि का अनुमित समय सन् १६०० ई० है।

९—गुरु नानक साहब (१५)—'सतनाम विहंगम' के ग्रंथकार, सिक्ख-पंथ के प्रसिद्ध संस्थापक, तिलावरी (पंजाब)-निवासी, जाति के वेदी खत्री; सं० १५२६-१५९६ तक वर्त्तमान, नामदेव छीपी के समकालीन[2], वर्णनात्मक तथा उपदेश-शैली में महत्त्वपूर्ण रचना। इनके शिष्यों में इन प्रवचनों का विशेष प्रचार है। सिक्खमत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'जपुजी साहब' तथा 'सुखमणि साहब' के आधार पर ही इस ग्रंथ की रचना हुई है। नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को इनकी अन्य तीन—सुखमनी, अष्टांग-योग, नानकजी की साखी और गुरुनानक-वचन—पांडुलिपियाँ खोज में मिली हैं। विस्तार के लिए दे०—खोज-विवरणिका, १९०२, ग्रं०-सं० २१८, १९०६—१९०८, ग्रं०-सं० १९९, १९०९—१९११, ग्रं०-सं० २०५, २०७;

---

१. दे०—ना० प्र० स०, काशी की खोजविवरणिका—	१९२३—२५ ई० की	ग्रं०-सं०	२०७
"	१९२६—२८ ई० "	"	२३३
"	१९२९—३१ ई० "	"	१९२
"	१९३२—३४ ई० "	"	११३
	१९०९—११ ई० "	"	२०५

१९३१ ३२, प्र०-सं० २८३ १९२६ २८, प्र -सं० ३१५
१९२९–३१, प्र०-सं २३६ १९३२–३४, प्र०-सं० १५१ ।

१०—गोस्वामी तुलसीदास(२ ३, ४ ५ १८ ३६, ४० ४१ ४२, ६६ ७४, ७५, ८१ ८६)—हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ सतकवि। निम्नलिखित रचनाओं की कुल सतरह प्रतियाँ मिली है, जिनका विवरण इस प्रकार है—

ग्रन्थ-संख्या	ग्रन्थनाम	प्रतियाँ	लिपिकाल
१	रामचरितमानस	१५	१८५८ वि० १९२२ वि , १८४७ वि०, १८८८ वि०, १८५६ वि०, १८६४ वि० १८३६ वि , १९०६ वि० ।
२	विनय पत्रिका	१	१८ [illegible] वि० ।
३	छप्पय रामायण	१	×

११—चरनदास (६६)—चरणदासी-सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक प्रसिद्ध सन्त डहरा (अलवर राजस्थान)-निवासी धूसर बनियाँ शुकदेव के शिष्य और सहजो बाई के गुरु जन्म—१७६० वि मृत्यु—१८३८ वि , प्रथम नाम रणजित । कार के अठारह ग्रंथ नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिले हैं।[१]

१२—रामदास (२८)—'श्रीरामार्णव' के ग्रंथकार अकोढ़ी ग्राम, विन्ध्याचल (मिर्जापुर)-निवासी, जाति के ब्राह्मण साधु सं० १८१८ वि के लगभग वर्त्तमान। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) को इनके ग्रंथ खोज में मिले हैं।[२] रामायण पिंगल-नामक इनकी दूसरी रचना खोज में मिली है।

६०—नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज विवरणिका सन् १९२ २२, सन् १९२३ २५ ग्र -सं० १९२ ।

१३—धर्मदास (२१-ख, २३-ख, २६ २९, ३७ [illegible])—कबीरदास के शिष्य उ० १४५७ के लगभग वर्त्तमान कबीरपंथ के प्रचारक कबीरपंथ में आने से पूर्व का नाम जुडावन जाति के बनिया और बाँधवगढ़ (मध्यप्रदेश) निवासी। धर्मपत्नी 'अमीना' से नारायणदास और चूड़ामन नामक दो पुत्र, नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी अनेक पोथियाँ खोज में मिली हैं।[३]

---

१ दे०—नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) का खोज विवरण–१९०५ ग्र -सं १० १८, १९, १९०६–८, ग्र -सं १४७ १९ ९–११ ग्र सं०–४५ १९१७-१९ ग्र -सं० ३७ १९ –२२ ग्र -सं० २६ १९२३–२५ ग्र -सं ७१ १९२६–२८ ग्र -सं० ७– १९२९–३१ ग्र -सं ६५ १९३२–३४ ग्रंथ-संख्या ३८ ।

२ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) का खोज विवरण १९०२ ग्रंथ-संख्या २ २६ ३ ग्रंथ-संख्या १४५ ।

३ दे०—ना० प्र० स०, का खो० वि –१९ ६–८ ई० ग्र सं०–१५८ १९२३–२५—ग्र०-सं० १०० १९३२–३४, ग्र० सं० ५३ ।

१४—नगनारायण सिंह (२४)—बिहार-प्रान्तस्थ सारन जिले के 'पटेढ़ी' ग्राम-निवासी ; अनेक हिन्दी-संस्कृत-ग्रंथकारों के आश्रयदाता ; फारसी, हिन्दी और संस्कृत के समान कवि।

१५—नन्ददास (६)—स्वामी विट्ठलदास के शिष्य , सं०१६२८ वि० के लगभग वर्त्तमान , तुलसीदास के भाई; अष्टछाप के कवियों में प्रमुख, इनके अन्य ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में उपलब्ध हुई हैं। दे०—ना० प्र० स०, का०—खो० वि० १९०१, ग्र०-सं० ११, ६६ १९०२, ग्र०-सं० २०० ए, बी, सी, डी, ई ; १९०३, ग्र०-सं० १५३ ; १९०६—११, ग्र०-सं० २०८ बी, डी, ए, सी, ई, एफ, १९१७-२०, ग्र०-सं० ११६ ए०, १९२०—२२, ग्र०-सं० ११३ डी,–ई। १९२३—२५ ग्र०-सं० २६४ , १९२६-२८ ग्रं०-सं० ३१६ ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी , १९२९—३१, ग्रं०-सं० २८०।

अबतक इनकी निम्नलिखित पन्द्रह पोथियाँ खोज में उपलब्ध हुई हैं—

१—अनेकार्थमंजरी (नाममाला), २—भवरगीत, ३—नाममंजरी या मानमंजरी, ४—फूलमंजरी, ५—रानीमंगल, ६—रासपंचाध्यायी, ७—रुक्मिणी-मंगल, ८—विरहमंजरी, ९—दशमस्कंध भागवत, १०—नामचिन्तामणि-माला, ११—जोगलीला, १२—स्यामसगाई, १३—नासिकेतपुराण-भाषा, १४—रसमंजरी और १५—विरह-मञ्जरी।

१६—नाभाजी, नाभादास (६, १०, ११)—स्वामी अग्रदास के शिष्य और प्रियादास के गुरु, भक्तमाल के प्रसिद्ध लेखक , सं० १६५७ के लगभग वर्त्तमान, ध्रुवदास के समकालीन। इनका उपनाम नारायणदास था। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं।[१]

१७—प्रदुमनदास (२२)—बिहार-प्रान्तस्थ हजारीबाग जिले के रामगढ़-राज्य के आश्रित कवि, कर्ण कायस्थ, दामोदरलाल के पुत्र, सं० १७३८(= १६८१ ई०) के लगभग वर्त्तमान। इनके ग्रंथ अबतक अप्रकाशित हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं।[२]

१८—परमानन्द (६२)—विरहमाला के रचयिता , बिहार-राज्य के शाहाबाद जिले के कोरी ग्रामवासी कवि, सं० १८५५(= १७९८ ई०) के लगभग वर्त्तमान।

---

१ ना० प्र० स० (काशी), १९००—ग्र०-सं० ४५, ६७, १९०६—८ ग्रं० सं० १२१ , १९०९—११, ग्र०-सं०२०२, २११।

२ दे०—ना० प्र० स०, का०—१९२६—२८, ग्र०-सं०, ३६।

१६—परमानंददास (३३)—पनार प्रान्तस्थ दोदा (मुजफ्फर) ग्रामवासी स —१६३५ (=) १८७८ ई० के लगभग वर्तमान। ना प्र का को इनकी रचना खोज में मिली है।[1]

२०—विहारीलाल (७०)—हिन्दी के प्रसिद्ध कवि ग्वालियर राज्य के निवासी १७३० वि० के लगभग वर्तमान माथुर चौबे जयपुर-नरेश जयसिंह मिर्जा के आश्रित कृष्णदास के गुरु। इन्होंने सतसई पर टीका लिखी है। ये नवरत्नों में गिने जाते हैं। विहारीसतसई की पाण्डुलिपियाँ ना० प्र स (काशी) को खोज में मिली हैं, जिनका लिपिकाल है—

क्र-सं		लिपिकाल	खोज विवरण-काल	प्र-सं
१		१७१६ वि	१६ ० ई०	११५
		१७७५ वि०	१६०१ ई	२७
३		१८०३ वि	१६०२ ई०	/
४	(टीका)	१८,७ वि (टीका-काल १७७७ वि०)	१६०१ ई	५२
५	”	”	१६०४ ई०	१२६
	”	१८२३ वि० ”	१६०१ ई०	७५
७	”	१८५० वि	१६०६–१६०८ ई०	६६
८		१८५१ वि		
६	”	१८२८ वि०	१६२६—२८ ई०	६८ ए
१	”	सं० १८४ (= १७८३ ई०)	१६२६—२८ ई	६८ बी
११		सं० १८६८ वि० (= १८४१ ई०)	१६२६—२८ ई०	—६८ सी
१२		सं १६०० वि (= १८४३ ई)	१६२६—२८ ई०	६८ डी
१३		—	१६२६—२८ ई०	६८ ई
१४		१७६२ वि (=१७०५) ई०	१६२६—३१ ई०	५३ सी

इसके अतिरिक्त इसी विवरणिका में देखिए प्र०-सं० ५३ ए और बी।

अन्य पाण्डुलिपियाँ भी इसी खोज में मिली हैं। विस्तार के लिए दे०—ना० प्र० (का०) खो० वि —१६२०—२२, प्र -सं २० २३, २५ और ६२।

२१—सुवास (२७)—भगवद्गीता के—दोहे-चौपाइयों में—रूपान्तरकार उपनाम—जनसुलाल और सुवालस्वामी। नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) के खोज विवरण में भी इनकी पाण्डुलिपि की चर्चा हुई है। दे —खोज विवरण—१६०६–११ ई , प्र सं १३२। उक्त पाण्डुलिपि का हस्तलेख-समय है १७६२ वि ।

१ दे०—ना० प्र० स० काशी १६२६–३१, प्र -सं ६२।

२२—रामानन्द (७८)—'सिद्धांत-पटल' के ग्रंथकार, प्रसिद्ध सुधारक और कबीर के गुरु, रचनाकाल संभवत पन्द्रहवीं शती, ना० प्र० स०, का० को इनकी रचना मिली है।[1]

२३—रामप्रसाद गुरु (१६)—'रत्नार्णव' के ग्रंथकार। रचनाकाल १२७७ फ० = १८७० ई० = १९२७ वि०।[2]

२४—लालचदास—(४, ८२)—बरेली-निवासी • हरिचरित्र के ग्रंथकार सं० १५२७ वि० = १४७० ई० के लगभग वर्त्तमान। 'शिवसिंहसरोज' और 'मिश्रबंधु-विनोद,में मात्र नाम-चर्चा ; शिवसिंह ने इनका र० का० सं० १६५२ माना है और कालिदास हजारा में भी इनके नामोल्लेख की चर्चा की है।[3] नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी खोज में ग्रंथकार के हस्तलेख मिले हैं। १९०६–८ ई० की खोज-रिपोर्ट में इनका र० का० १५६८ वि० है।[4]

ना० प्र० स० (काशी) के एक हस्तलेख में इनका र० का० है सं० १५२५=१४६८ ई० और दूसरे में सं० १५८५ वि०=१५२८[5] ऐसा प्रतीत होता है कि १५२५ वि० और १५८५ वि० में ८ और २ का व्यत्यय लिपिकार की अनवधानता का परिणाम है। कहा जाता है कि कवि की काव्य-रचना-भूमि बिहार-राज्य के दरभंगा (रोसड़ा) जिले में थी।

२५—शिवनाथ दास (२५) 'शिव-सागर' के दरियापंथी ग्रंथकार, बिहार-राज्य के सारन जिलान्तर्गत तेलपामठ-निवासी, संभवत इनकी अन्य कई रचनाएँ उक्त मठ में सुरक्षित हैं; ग्रंथ अप्रकाशित; लि० का० संभवत सं० १८५० वि०=१७९३ ई० है।

२६—नंदलाल कवि (१६-ख)—रामरतनगीता के ग्रंथकार, रचना अप्रकाशित, कुछ अनुसंधायकों के मत से इस ग्रंथ के ग्रंथकार कुशल सिंह हैं। इनका र०का० सं० १६७७ वि० लगभग था। कहा जाता है कि 'अर्जुनगीता' और 'रामरतनगीता' के ग्रंथकार कुशलसिंह[6] फफूंद के

१ दे०—ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९०२ ई०, ग्रं०-सं०-६५
" " १९०९–११ ई० " २०५
" " १९२६–२८ ई०, पृ० सं० ७८३ (ग्रं०-सं०-११७–तृतीय परिशिष्ट, अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ)

२ ना० प्र० स० (काशी) को भी 'सुखजीवनप्रकाश' के ग्रंथकार जहानगंजनिवासी 'रामप्रसाद' खोज मिले हैं, जिनका र० का० १८७६ ई०=१९३२ वि० है (दे०—ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९२९–३१ ई० ग्रं० प०२९०)। दोनों ग्रंथ के ग्रंथकार एक ही 'रामप्रसाद' संभव हैं।

३. दे०—शिवसिंहसरोज की पृ० सं० २८२ और ४८५।

४. दे०—ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९०६–८ ग्रं० सं० २८६; खो० वि० १९२३ २५ ग्रं० सं० २३८

५ दे०—ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९२६–२८ ई० ग्रं०-सं० २३१ ए०, २६१ बी०।

६. दे०—त्रैमासिक 'साहित्य' (वर्ष ६, अंक ७)—कवि कुशलसिंहकृत 'रामरतनगीता' शीर्षक लेख ; श्रीपरमानन्द पाण्डेय, (पृ०-सं० ६२)

१९—परमानंददास (३२)—पंजाब प्रान्तस्थ दोदा (मुज्जर) [illegible] सं० ११३१ (=) १८७८ ई० के लगभग [illegible]। [illegible] का [illegible] को इनकी रचना खोज में मिली है।[1]

२०—बिहारीलाल (७[illegible])—हिन्दी के प्रसिद्ध कवि [illegible] सं० १७१० वि० के लगभग वर्तमान [illegible] मिर्जा के आश्रित कृष्णदास के पुत्र [illegible] लिखी है। ये नवरत्नों में [illegible] है। [illegible] पाण्डुलिपियाँ [illegible] ([illegible]) के खोज में [illegible] हैं, जिनका लिपिकाल है—

क्र० सं०	लिपिकाल	खोज विवरण-काल	[illegible]
१	१७१६ वि	१९०० ई	[illegible]
२	१७७५ वि०	१९०१ ई०	[illegible]
३	१८०३ वि	१९ [illegible] ई०	[illegible]
४ (टीका)	१८,७ वि (टीका-काल १७७७ वि०)	१९ [illegible]	[illegible]
५ ”	”	१९०४ ई०	[illegible]
६ ”	१८३३ वि ”	१९०१ ई	[illegible]
७ ”	१८५० वि		
८ ”	१८५१ वि	१९ [illegible]—१९०[illegible]	[illegible]
९ ”	१८२८ वि०		
१ ”	स १८४ (= १७८३ ई०)	१९२[illegible]— [illegible]	[illegible]
११	सं० १८९८ वि (= १८४१ ई०)	१९ [illegible]— [illegible]	[illegible]
१२	स १९० वि (= १८४३ ई०)	१९ [illegible]—[illegible] ई०	[illegible]
१३	—	१९ [illegible]— [illegible]	[illegible]
१४	१७६२ वि (= १७ [illegible]) ई०	१९२६— [illegible]	[illegible]
		१९ [illegible]— [illegible]	[illegible]

इसके अतिरिक्त इसी विवरणिका में [illegible] प्र० सं० २१ [illegible] अन्य पाण्डुलिपियाँ भी इसी खोज में मिली है। [illegible]

(क) खो० वि —१९२ —२२ प्र सं २०, २३, २२ [illegible]।

२१—भुवाल ([illegible]७)—भगवद्‌गीता [illegible] अनभुवाल और भुवाल [illegible] खोज विवरण में भी इनकी [illegible] खोज विवरण—१९ [illegible]—११ ई०, [illegible] का हस्तलेख-समय है १७६[illegible] वि०।

---

१ [illegible]—ना० प्र० स० काशी १९२६-२१, प्र० [illegible]।

५२—ग, ५३—ग, ५४, ५५, ५६, ५७—क, ५७—ख, ५७—ग, ५७—घ, ५८, ५६, ६०—क, ६०—ख, ६०—ग, ६०—घ, ६१—क, ६१—ख, ६२—क, ६२—ख, ६२—ग, ६३, ६४, ६५—क, ६५—ख, ६५—ग, ६५—घ) बिहार-प्रान्तस्थ शाहाबाद जिलान्तर्गत धरकंधा-निवासी, जन्म सं० १७३१ वि० और मृत्यु सं० १८३७ वि०, पीरन शाह के पुत्र, दरियापंथ के प्रवर्त्तक।[1] नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं। इस विवरण में इनके ग्रंथों की सत्तावन पाण्डुलिपियाँ हैं।

३०—सूरदास (४३)—हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और अष्टछाप के कवियों में प्रमुख, व्रजवासी, सं० १५४० वि०से १६२० वि० तक वर्त्तमान। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी), लि० का०—सं० १८६०, सं० १८७३, सं० १८६६ और सं० १८५३) और मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) (लि० का० सं० १८५७ और १६२४) के संग्रहालयस्थ हस्तलेख से यह पाण्डुलिपि प्राचीन है। इसका लिपिकाल सं० १८२५ वि० है।

३१—हरिदास (८७)—'रासलीला' के नवोपलब्ध ग्रंथकार, 'हरिदासस्वामी की बानी' नामक ग्रंथ के रचयिता, हरिदास से भिन्न[2]; सं० १७२७ वि० के लगभग वर्त्तमान।

---

१ दे०—सन्तकवि दरिया एक अनुशीलन, डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, प्रकाशक—राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना—३।
२. दे०—ना० प्र० स० का०, खो० वि० १६०५, ग्रं०-सं०-६७, खो०-वि० १६०६–११, ग्रं०-सं० १०६ बी।

हस्तलिखित पोथियों का विवरण

[१] श्रीमद्भागवत (हरि चरित्र)—ग्रंथकार—लालचदास। ग्रंथलेखक ×। अवस्था—अत्यन्त प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-संख्या—१८७। प्रति पृष्ठ पंक्तियाँ लगभग ४ । लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—संवत् १८५८ आषाढ़ सुदी ७ रविवार।

प्रारम्भ— पुनीवचनुश्रुति महीश्राही चउ अपन मुनदेहु वीवाही
बीनतीकी हसीस मुरना। देहुप्रसाद माही कीरत गाथाद '

अंत— ऐसे जगदीस्वरजाहै तेहीसेनहुनरनाह॥
चरनसरन जन लालच हरीसुमरहु मनमाह
इतिश्रीहरीचरीत्रे दसम सकंधे श्री भागवते महापुराने कीरत बैकुंठ
सीघारननोनाम ऐकानवैमा अध्याये।'

विषय—भागवत महापुराण अध्याय ५ से अध्याय ६१ तक। दोहे और चौपाइयों में रचना की गई है।

टि०-(१) यह ग्रंथ अत्यन्त प्राचीन है। ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ-संख्या के साथ 'लालच' लिखा हुआ है जो ग्रंथकर्ता के नाम का सूचक है। ग्रंथ के अनेक स्थलों में और अध्यायों के अन्तिम दोहों में यह नाम आया है। यथा—पृष्ठ ४६ में—

'जननालच के ठाकुर मोक बेद पर मान।
बैरी रूप जो ध्यावे पावे पद नीरवान।

(२) ग्रंथ के लिपिकार ने आदि या अन्त में अपना परिचय नहीं दिया है। ग्रंथ की लिखावट ठीक नहीं है। भाषा राम-चरित-मानस की सी है।

(३) ग्रंथ की लिखावट में ख के लिए 'ष' और 'ष' के लिए ख लिखा है य में नीचे चिह्न देकर 'य' लिखा गया है।

(४) यह ग्रंथ श्रीरामेश्वरप्रसाद गुप्त मंत्री—वैदिक-पुस्तकालय पुनपुन, (पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[२] संपूर्ण रामायण—ग्रंथकार—गोस्वामी तुलसीदास। लिपिकार—गयादत्त पाण्डे। अवस्था—अच्छी। पोथी सचित्र। पृष्ठ-संख्या—५३। प्र०-पृ० ५० लगभग ६०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—

सं० १६२२, आश्विन कृष्ण सप्तमी, तारीख ११।

प्रा०—"जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदौं सबके पदकमल सदा जोरि जुग पानि।
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व।
बंदौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥७॥"

अन्त—"यह सुभ शंभु उमा संवादा सुख संपादन समन विषादा
भव भंजन गंजन संदेहा जन रंजन सज्जन प्रिय एहा।"

विषय—भगवान् रामचन्द्र की जीवन-कथा।

टि०–(१) यह ग्रंथ लीथो किया हुआ है। इसमें कथा से सम्बन्ध रखनेवाले चित्र भी दिये हुए हैं।

(२) ग्रंथ के अन्त में लिखा है—"यह ग्रंथ संवत् १६२२ आश्विन कृष्ण सप्तमी, ता० ११ को अनन्तराम अग्रवाल के यहाँ श्री गयादत्त पाण्डे के द्वारा आनन्दवन छापाखाने में छपा। स्थान श्री काशी विश्वनाथपुरी, मुहल्ले शिवालयघाट में।" छापाखाने का अभिप्राय लीथो-छापाखाने से है।

(३) यह ग्रंथ श्री विष्णुदेव शर्म्मा, जमींदार (ग्राम-खोरमपुर, डा० छितरौर, बेगूसराय, जि० मुंगेर) से प्राप्त हुआ है।

[३] रामायण—ग्रंथकार-गो० तुलसीदास। लिपिकार-×। अवस्था—अत्यन्त प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-संख्या—१७७। प्र० पृ० प० लगभग ४२। लिपि—नागरी। रचनाकाल-×। लेखनकाल—सं० १८४७, फागुन सुदी पंचमी, बुधवार।

प्रारंभ— (चौपाई)

"चहुजुगनीनीकालतीहुलोका भयेनामजपीजीववीसोका
स्रुतिपुरानसंतमतऐहू सकलसुक्रीनफलनकल सनेहू
ध्यानप्रथमयुगमखहुजपुजी द्वापर परितोखनपरीपुजी
कलीकेवलमलमुलमलीना पापपवोनीधीजनमनमीना"

अन्त— (सोरठा)

"सीअरघुवीरवीवाहजनप्रेमगावहीसुनही
तीन्हकहपरमउछाहु मगलाएतन रामजस
इतिश्रीरामचरित्रेमानशेशकलकलीकलुखवीधसीनोनाम
अपीरसीभगतीवीग्याननोनामप्रथमपानशमापनवालकाडसंपूरन
पडीतजनसोवीनतीमोरी छुटलवाढ़लपरहव सवजोरी सीभमस्तु"

विषय—श्रीरामचन्द्रजी की कथा। केवल बालकांड है।

टि०–(१) 'राम-चरित-मानस' की प्रकाशित अन्य प्रतियों से इसमें पाठ-भेद है। यथा—प्रारम्भ के 'चहु जुग' में, प्रकाशित प्रतियों में, 'वेद-पुरान-

सत-मत एहू के स्थान पर 'स्मृतिपुरान और ध्यान प्रथम-जुग मख विधि दूजे के स्थान पर 'मख दुज पुनी' लिखा है। अन्त के सोरठा में— सियरघुबीर बिवाह जो सप्रेम गावहि सुनहि के स्थान पर रघुबीर बिवाह जस प्रेम गावही है।

इसी प्रकार अन्य कई स्थानों पर सीतानाथ के लिए 'जानकीनाथ' शब्द आया है।

(२) ग्रंथ में मात्राओं का ह्रस्व दीर्घ का कोई विचार नहीं है।

(३) ग्रंथ में दोहे-चौपाइयों की संख्या नहीं दी गई है।

(४) ग्रन्थ के प्रारम्भ के ६ पृष्ठ नहीं हैं। प्रारम्भ दोहा-सं० ४२ के बाद चौपाई से हुआ है।

(५) यह ग्रंथ श्री रामेश्वरप्रसाद (मंत्री वैदिक पुस्तकालय पुनपुन पटना) से प्राप्त हुआ है।

[४] रामायण—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—अत्यन्त प्राचीन देशी कागज। पृ० सं० ६ । प्र० पृ० ५० लगभग ४०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १४८८, आषाढ़ वदी षष्ठी, मंगलवार।

प्रारम्भ— श्रीगनेसायेन्मह श्रीभगवानजी सहाऐ श्रीगनानीसहाऐ श्रीहनुमानजी सहाऐ श्रीपोथअजोध्याकान श्रीतुलसीदासजीका—

(श्लोक)—वामांकेचवीभातीभुधरसुतादेवापगामस्तके
भाल्वेवालाव्रीधुगुरुलेच रले अरस्वारसी व्यालरा
सवीगेएवीसुलीभूसनवर सवाधीप सरवा
सायऐशजगतहीवमसीनीभग श्री शंकरपातुमा ॥१॥
प्रसन्तामास्वागताभीखेरस्थान वनवास दुख्तीतालद
मुखाम्बु ज श्ररघुनन्दनमनमदामुमजुलमगलप्रद्र ॥२॥
नीलाम्बुजस्यामलकोमलगमत्सीतारवाम्बुपीत वामभाग
पानी महामाऐक चारुचाप नमामीरामरघुबसनाथं

(दो०)—श्रीगुरुचरनसरोज रज नीजमनमुकुरसुधार
बरनोरघुबरवीमलजस जोदाऐकफलचारी

अन्त— (सोरठा)

भरतचरीतकरनेम तुलसीजेशादरकहहीं
सीयाराममपदप्रेम अवसीहोऐभवरीसवीरती

विषय—श्रीरामचन्द्रजी की कथा। अयोध्याकाण्डमात्र।

टि०-(१) अन्य प्रकाशित प्रतियों से पाठ भेद है। यथा—अन्त की पंक्ति में (प्रकाशित प्रति में)—'तुलसी जो सादर सुनहिं' है, और इसमें 'तुलसी ज शादर कहहीं' है। अन्तिम चरण में अवसि होइ भवरस

विरति' है। इस ग्रन्थ में—'अवसि होऐ हरि-पदवीरती' है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी पाठ-भेद है।

(२) ग्रंथ-संख्या ३ और ४ के लिपिकार एक ही व्यक्ति प्रतीत होते हैं; क्योंकि दोनों की लिपि और लेखनशैली एक-सी है। ग्रंथ-सं० ३ को सं० १८४७, फागुन सुदी पंचमी को समाप्त करने के बाद, ३ मास ६ दिन में, ग्रं०-सं० ४ (अयोध्याकाण्ड) को, १८४८ संवत् में आषाढ़ वदी षष्ठी को समाप्त किया है।

(३) इन दोनों ग्रंथों का लिपिकार ही भागवतमहा-पुराण (ग्रंथ-सं० १) का भी लिपिकार है। इन दोनों के लिखने के बाद संवत् १८५८ में उसे लिखा है।

(४) बाल-काण्ड के समान ही इसमें भी दोहों और चौपाइयों में संख्या नहीं दी हुई है।

(५) यह ग्रन्थ भी श्रीरामेश्वरप्रसाद (मंत्री, वैदिक पुस्तकालय, पुनपुन, पटना) से प्राप्त हुआ है।

[५] **संपूर्ण रामायण**—ग्रन्थकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—चुन्नीलाल। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृ०-सं० २९७। प्र० पृ० पं० लगभग—४४। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—सं० १८५६, वैशाख सुदी २, मंगलवार।

प्रारंभ— (चौपाई)

"वीधुवदनी सवभातीसवारी सोहन वसन वीनानरनारी।
सवगुनरहीतकुकवीकीत वानी रामनाम जस अंकीतजानी॥"

अन्त— (दोहा)

"मोसमदीननदीनहीत तुम्हसमानरघुवीर।
असवीचारी रघुवंसमनी हरहुवीसम भीभीर
कामीहीनारीपीआरीजीमी लोभीहीप्रीयजीमीदाम
तीमीरघुनाथनीरतर॰ प्रीअलागहुमोहीराम॥ संपूरन
इति रामचरीत्रे मानसेमकलकलीकलुखवीधंसनो वीमलवीग्रानसवादीनो नाम सप्तमोपानउतरकाडसमापतह मीवीरस्तु सुभमस्तु॥
इति श्री पोथी रामायेनशातोकाड कीततुलशीदासकथासंपुरनजथादरसतथा लीखते ममदोषनहीजेते 'पढीतजन सो वीनती मोरी छुटल अछर पठवशवजोरी॥'
दसपत दासनके दासखेवक चुनीलाल काएथकान वाशीदेरानीपुर कशवा॥ शवत् १८५६ शाल मीती वैशाषसुदी २ रोज मंगल को पोथी तैयार हुआ पोथी के मालीक षुशीहालशाहु जौनपुरी शुत हुकम-शाहु के वींददीहु शाहु वाशीदे रानीपुर कशवा—शुवे वीहार।"

विषय—श्रीरामचन्द्र-कथा।

टि०–(१) लिपि प्राचीन तथा अस्पष्ट। मात्रा, ह्रस्व, दीर्घ आदि का भेद नहीं। प्राय सभी स्थानों में ह्रस्व इकार के लिए दीर्घ इकार का प्रयोग किया गया है।

(२) यह ग्रंथ स्पष्ट करता है कि लिपिकार यद्यपि जौनपुर के किन्हीं शाहजी के यहाँ रहते थे, तथापि उनका निवास-स्थान बिहार प्रांत था।

(३) यह ग्रंथ श्रीरामहरि (मंत्री आर्य वैदिक-पुस्तकालय, गुलज़ारपुर पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[६] नन्दकोष (नाममाला प्रथम खंड)—ग्रंथकार—नंददास। लिपिकार–×। अवस्था–प्राचीन, अव्यवस्थित। पृष्ठ सं —२४। प्र पृ पं लगभग ३०। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल–×।

प्रा०—॥ 'लतानाम ॥ मनती विसतीव लरी विसनीलतावीतान ॥
अमरबेलि नीमिमूलवनीतीप्रतुअदेपीमान ॥१११॥
प्रिनम नाम ॥ इष्टदयितवल्लभसपानीतम परम सुखान ॥
पिय प्यार ।'

अंत—॥"जुगल नाम ॥ यमल जुगल जुग उभयपुनिमिथुनवीवीवीय ॥
जुगलकिशोर यथा सदा नंदलाल के हीय ॥२७१॥'
इति श्री नाम माला प्रथम खंड नंदकोष नंदलालदासकृत भाषामनित समाप्तम् ॥ सिद्धिरस्तु शुभमस्तु'

वि —हिन्दी भाषा के शब्दों के पर्याय।

टि०--ग्रंथ के अंत में नाम का पर्याय देकर २७१ सं० से स्पष्ट होता है कि ग्रंथ बड़ा होगा। प्रारम्भ में ११० नामों के पृष्ठ नहीं हैं। ग्रंथ फटी हुई अवस्था में प्राप्त हुआ है॥ पृष्ठ १० तक नहीं हैं। नाममाला प्रथम खंड से ज्ञात होता है कि ग्रंथ के और भी खंड हैं। यह ग्रंथ कविराज श्री नरेन्द्रनाथ वैद्य (मद्दना—मोगलपुर भागलपुर) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[७] (क) सतनाम–(भगत महातम कथा)—ग्रंथकार—× लिपिकार—गायनलाल। अवस्था—ठीक नहीं है। ग्रंथ जीर्ण-शीर्ण है। पृष्ठ-सं —२३। प्र० पृ पं, लगभग ४०। आकार प्रकार—८" × ७"। भाषा–हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल–×। लेखनकाल—सं० १९०८, बैशाख सुदी पंचमी रविवार।

प्रा०— भगती करै याती काकी नाद ॥ आन नारी पर चीत न डालाइ ॥
प्रसंसे भगवान अरथ मामा ॥ रवाती सुद बीन्ह मरे पीमासा ॥
ऐसे राम भगति सो आही ॥ दासरी सदा करपे नाही ॥'

अंत— (दोहा)

"संतन्ही के प्रसंग ते ।। पापी उनी को पाऐ ।।
जे सो चन्दन क साथ मे ।। औरो काठ वसाऐ ।।
संत की संगती जो करे ।। पावे अन्त सुख वास ।।
भगती प्रतीग्या देखी के ।। जन को भऐ जो त्रास ।।"

इति श्री भग्ती महात्म दुखहरन समत्रास नेतारन सकल मानवतार जमराए दुत संम्वादे नारद संन दीठा वो सो श्री संसार भग्मायो सो नाम द्वादसमो अध्याय ।।१२।। सपूरन ।

इति श्री भगत महातम ग्रन्थ सम्पूरन समापतह । जो देखा सो लीखा मम दोख नही अंत सक्ल संत सौ वीनती मोरी छुटल अक्षर मात्रा पठत सब जोगी पोथीक मालीक श्री श्री श्री स्वामी गोपालदासजी मोकाम सा० तेघरा प्रग० मलकी पुस शुदी तीन तीथ्रा रोज सेनिवार को अढाई पहर दीन उठते तैआर भेल दखसत ।"

वि०—भक्ति, सत्संगति और मोक्ष के आधार पर नारद के साथ राजा का संवाद दोहे और चौपाइयों में ।

टि०—ग्रंथ के, प्रारम्भ के ५ पृष्ठ नहीं हैं । इस ग्रंथ के साथ ही दो ग्रंथ और भी संबद्ध हैं, जिनका विवरण नीचे है । यह ग्रंथ कबीर मठ रोसड़ा, (दरभंगा) के महंत श्रीअवधदास साहब के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

(ख) भौपालबोध—(भूपालबोध,—ग्रन्थकार—× । लिपिकार—गोन्दरलाल । अवस्था-प्राचीन, देशी कागज, विपर्यस्त । पृष्ठ-सं०—६, प्र० पृ० पं० लगभग—४० । आकार-प्रकार-८"×७" । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना-काल-× । लेखनकाल—सं० १२७८, आषाढ़ सुदी चतुर्दशी, शनिवार ।

प्रा०—"चौपाई ।। धर्मदासो वचनं ।।
धर्मदास कहे वदी छोरा । कैसे जीवन भारत थोरा ।।"

अंत— (सोरठा)

"सोहं साईं सहीऐ ।। सबद सार तासे कहो ।।

ऐती श्री ग्रन्थ भौपलबोध संमपूरंन समापतह जो देखा सोलीखा मम दोष नेही अंते सकल संत सो वीनती मोरी छुटल अछर मेत्रा पठव सब जोरी मीती आषाढ सुदी चतुरथी रोज सनीचर के डेढ पहर दीन उठते ग्रन्थ तैआर भेल ग्रन्थ के मालीक श्री गोसाईं गोपालदास साकीन तेघरा प्रगने मलकी द अर्धीन सत गोन्दरलाल साकीन बौनी प्रगने मलकी ता० २६ असाढ रोज सनीचर स० १२७८ साल ।।',

वि०—धर्मराज, ज्ञानी और भूपाल के परस्पर वार्त्तालाप द्वारा जीवन, ज्ञान, मोक्ष और जीव के संबंध में विवेचन । साखी, दोहा, सोरठा और चौपाइयों में रचना ।

टि०—इस ग्रंथ के साथ दो पृष्ठों का नेहान्तस लिखित 'अमरमूल' भी है। क और स दोनों ग्रंथ एक जिल्द में एक साथ ही हैं। यह ग्रंथ श्री महंत अवधदास साहब—रामद्वा (दरभंगा) कबीरमठ—के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[८] असज्जनमुखचपेटिका—ग्रंथकार—रामानुजाचार्य। लिपिकार-भीष्मदास। अवस्था-अच्छी। ग्रंथ अपूर्ण। पृष्ठ-सं —८। प्र पृ० प० लगभग—२४। आकार प्रकार—१४' X ८½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—संवत् १९१०।

प्रा०— श्रीमतेरामानुजाय नम श्रीमद्भागवत नौमि यस्यैवस्य प्रसादत अज्ञातानपि जानाति मन सर्वागमानपि १
रामानुजाचार्यकृता सज्जनमुखचपेटिका तामहतु मीमास्ये मा श्रीमद्भागवतद्विषा २
तदय भाषाया कुर्व दुर्जनाना हरिद्विषा मुखचपेटिका सर्वे महातो हृदिधीयता ३

कवित्त-वेद औ पुराण मूल सकल सराहै जाहि
ताहि ना बतावै बोपदेव कृत भड़ुआ
शंकर सराहै मधुसूदन सराहै जाहि
श्रीधर सराहै ताहि मानो नहि गड़ुआ
वीर एहै नाहि धमचक्रवर्ति ग्रन्थ का प्रमाण सब
नागोजी तिलक किया शु तिया के कडुआ
भट्टोजी प्रमाण किया विदित जहान माहि
कैसे के छुकावौ सार बयल कद अडुआ १

अंत—कहि कहि थकि गया वेद औ पुराण मुनि
जानत जहान मन लाग भकुआए हैं।
भूलि है पुराण राह गहि है गवार बौद्ध ता
त कविता द्वार हमहु बताए है॥
नीक लागै सोइ करो तुम्हा भार सोइ परो
तुम सा ता हम नाहि कवा कछु पाए है।
दीन देखि सरल भरासे दास रामही के
मैं ता समुझाइ बश कछु कलपाए है॥४२॥
हाथ जारि माथ नाइ व्यासजी के लाडिला के
चरण कमल रज मेरो धन ऐही है।
नाम शुकदेव जा बखाने एक भागवत
भागवत आप कृस्नचन्द के सनेही है॥
जासु रीति भांति सूत सकल सराहि गए

ताहि को भाव कहवेया कौन देहो है।
तहा मेरो जीभि तो गवाही देत सकुचत
हारि मानि रहत न जात कहि मेही है ॥४३॥'
यदि गालपा भवेदीर्षा परलोक हितात्मन ।
भवद्भिरुच तथा नद्भिर्मदीयता मयम् नवंश. ॥४४॥
नीचे करुणा या प्रोक्ता मगीकारतया शुभा ।
गृहणीन सुधियो गार्ली भवंतो हि सु मावव ॥४५॥
श्रुतिस्मृतिनिमाचारविरोधावेशगेपन ।
कुर्न यम नना मर्वाक वाणया सुत्र चपेटिका ॥४६॥
इति श्रीमज्जानकी प्रसादकृता गज्जनमुख चपेटि समाप्ता सवत्
नुर्नसेदम लिप्यन भीष्मदास वैरागी कबीर पंथी ॥"

वि०—उस ग्रंथ में लोक-प्रचलित अवतारवाद, पुराण आदि सम्मतसिद्धान्तों की आलोचना की गई है।

टि०—कबीरमत से सम्बन्धित विचार। ईश्वर के सम्बन्ध में भी विवेचन। वेद, पुराण, उपनिषद्, भागवत आदि पर लेखक के अपने विचार। कबीरदास की जैसी तीखी भाषा का प्रयोग। यह ग्रंथ, महंत श्री अवधदास साहबजी, कबीरमठ, (रोसड़ा, दरभंगा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[६] भक्तमाल—ग्रंथकार—नाभास्वामी। लिपिकार—भीष्मदास। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०-३५४। प्र० पृ० प० लगभग-३३। आकार-प्रकार—१०"×६½"। भाषा—हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सवत् १६०७, फाल्गुन शुक्ल एकादशी, रविवार॥

प्रा०—"श्रीकबीरसाहिबाय नमः॥ श्री हरिगुरुवैस्नवभ्यो नमः॥ अथ श्री भक्तमाल टीकासहित लिख्यते॥ तहा अर्थ भक्तमाल मैं लिख्यो है॥
भक्त भक्ति भगवतंरु सो व्यारिन रूप लिख्ये है॥
तहाँ हरि को रूपन लिख्यो जाय। क्योंकि कठिन है कवित्त॥
रूप की अवधि ऐसी औरन बनाई विधि जाके लपिवे को लाल देवता मनाइवो ताकि सोभालपिवेको वैठत।
गरब करि अनत हि मन होत घूमि घन नाइवो।
ऐसी भाँति आप आप कूर कहिवाय गये चतुर
चितेरे तिन्हें कहाँ लों गिनवाइवो॥ कृस्न प्रान प्यारे वह चित्रनि
विचित्र गति कान्ह पैन बनै वाके चित्र को बनाइवो॥१॥
लिखन बैठी जाकी छवि गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत क चतुर चितेरे कूर

चतुर चितेरा ना लिखै रचि पचि मूरति लाल।
यह चितवनि यह मुरिचलनि कैसे लिखै अमा॥
कठिन लिखन अतिसय महा कैसे के लिखि जाय
यशुदा सुत के बरन वपु कहा मोहि समुझाय॥
सुत्तर मन गात आन में राके के हितचित मति करि एक॥
लिखै मधुर मूरति विसद जीवन सुरूप टेक॥३॥'

कवित्त

अन्त— समर में लरयो जाय गिरिहू गिरयो जाय
गगन में फिरयो जाय पावक में दहियो
कानन में रह्यो जाय विरह हू सह्यो जाय
पाल कर गयो जाय और कहा कहिबो।
हलाहल पियो जाय करतब कियो जाय
सर्व सुनियो जाय मौखि का कहिबो।
और दुख पाहु सो दुसह कठिन ऐसो
जैसो काहू कर संग एक छिन रहिबो॥

विषय— श्रीकृष्ण जीवन सम्बन्धी प्रसिद्ध पाथी।

टि०— इस ग्रंथ में एक साथ ही कई टीकाकारों की टीका प्रतीत होती है। लेखन शैली प्राचीन है। ~~टीकाकार प्रियदास हैं।~~ दूसरे टीकाकार नारायणदास हैं। ज्ञात होता है नारायणदास ने मूल की टीका की है और प्रियदास ने उस टीका की भी टीका की है। ग्रंथ के अन्त में लिखा है—

अस्तुति श्री मूलकार नारायणदास जू की॥ छप्पै॥
नमो नमो महाराज नमो श्री नाभा स्वामी
गुण निधान सब जानकार नृप अंतर जामी
भक्त माल सुख जाल भक्तिरस अमृत भीनी
भवसिन्धु को तरन धर्म नौका यह कीन्ही
भागवत धर्म सब सुकधर को चतुर्वेद प्रगट्यो मही
जन नारायण के आस यह चरण सरण राखो सही॥१॥

दोहा—बार बार बन्दन करो नाभा आभा ऐन
कारनागा सा वन का श्री भक्तमाल सुख देन॥
अथ निखर प्रार्थना (सम्भवत इसका अभिप्राय है—लेखक की पाठकों के प्रति अभ्यर्थना)—
नाभा स्वामी मूल कृत तिलक प्रियादास कीन्ह
वैस्नव पुनि पयाय करि ताल अनुग लिखी लीन्ह १
जो टिप्पन पूरब किय वैस्नवदास प्रमाण
सो मम मथन भीन कृत छोम दन गुरु आण २

पुनि ह्वै टिप्पन स्फुजि हिल ठौर ठौर जीन
कीन्ह दास दास के दास हुन लाल दास मनहीन ३"

इससे ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में 'तिलकप्रिया' टीका किसी ने की थी। बाद में 'हिम्मतदास', 'खेमदास' और 'नागमरणदास' तथा 'प्रियादास' ने व्याख्या की है।

टीकाकार ने गीता के अतिरिक्त बिहारी और सूर के भी उद्धरण दिये हैं। ग्रन्थ के अन्त में लिपिकार ने अपने विषय में लिखा है—

"श्रोता बरता जुगल सो तीनें रस कर जोरि
लघु दीनान अच्छर पर्यो सो सब बांचिय जोरि
नाभा कृत जो मूल है टीका कृत प्रियादास
पुनि देस्नव टिप्पन कियो भक्तमाल गुन गास ॥
फागुन मास के पन में शुक्ला पक्ष के बीच
तिथी एकादशी जानिये रत्यादन के बीच
सम्मत अत्तर्द्धैन के मास रसागर जान
भीष्मदास पुस्तक लिपी गर्गीनाग परमान ॥६॥
रूहूल गाय के दक्षिन परगन्ना स्थान
तथा बैठि पूरण कीये गुरु पद सहिहिंनि ध्यान ॥७॥"

इस ग्रंथ के अनुसंधान से सम्भावना है, इस महत्व की सामग्री प्राप्त हो। यह ग्रंथ अवधदास साहब महन्त, (कबीरमठ, रोसड़ा, दरभंगा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[१८] भक्तमाल—ग्रन्थकार – नाभाजी। लिपिकार—भीष्मदास। अवस्था—अच्छी। प्राचीन, हाथ का बना, देशी कागज। पृष्ठ-संख्या—६३। प्र० पृ० पं० लगभग २६। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कार्तिक, शुक्ल, तृतीया सं० १६३४, (सन् १८७७) गुरुवार।

प्रारम्भ— "श्री गणेशायनम ॥ अथ श्री भक्तमालटीका लीन लिख्यते ॥ टीका करता को मंगलाचरण ॥"

कवित्त ॥

"महाप्रभु कृस्नचैतन्यमनहरन जू के
चरन को ध्यान मेरे नाम मुख गाइये ॥
ताही समै नाभा जू ने आग्या दई लई
धारि टीका विस्तार भक्तमाल की सुनाइये ॥
कीजिये कवित्तबंध छंद अति प्यारो लगै
जगै जगमाही कहनायी हिमाइये ॥
जानौं निज मति ऐपै सुन्यौ भागवत
सुक द्रुमनि स्रौर फिरी ऐसै ही कराइये ॥

अथ टीका को नाम स्वरूपवर्नन ॥

यदि कविताई भूषन लगै जिनके सुनाइ
औ नवा पुनिरुक्त लै मिटाइ है ॥
अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाइ अति
छवि छाइ मानो भरी सी लगाइ है ॥
काव्य की बड़ाइ निज मुख न भलाई होत
नाभाजू कहाइ ताते पौढ़िक सुनाइ है ॥
हृदय सरसाइ जो पै सुनिए सुनाइ यह
भक्तिरस बोधनी सुनाम टीका नाइ है ॥

अंत— स्वारथ के साधवे को आनके अराधवे को
गीननिके बांधिवे को भारत सुभाय को ॥
कोमल कृपा लहद संतनिको सदाचार
दुर्जनउदारता साधैं बरो जलधाम कै ॥
आलसी आलाम सुखधाम रामचंद्र भूयो
भयो भवसिंधमाहि कूद्यो घन पाय कै ॥
करसी कुचाल भाल मालाहून तिलक भाल
ऐसे भक्त मालहि कीजे कहलाय कै ॥६१०॥

नाभा स्वामी जू की अस्तुति ॥

छप्पै ॥ 'नमो नमो महाराज नमो श्री नाभा स्वामी
गुन निधान सब जान कान त्रिये अंतरजामी
भक्तमाल सुख आलभक्ति रस अमृत भीनी
भक्त सिंधु को तरन परम नौका यह कीनी
भागौत धर्म सब कथन को चतुर वेद प्रगट्यो मही ॥
जन लालदास के आस यह चरन सरन राखो सही ॥६११॥

दोहा— बार बार बंदन करों नाभा आभा चैन ॥
पढ़या गाभा वेद को भक्त मान सुख देन ॥१॥

इति श्री भक्तमाल मूल टीका सहित सम्पूर्ण समाप्त ॥१॥

विषय— भक्तिकाव्य ।

टि०-१—यह भक्तमाल सटीक है। टीका की शैली प्राचीन है। भाषा रामचरित-मानस से मिलती जुलती है। यद्यपि पोथी के प्रारम्भ या अन्त में टीकाकार के नाम का स्पष्ट संकेत नहीं है तथापि कुछ स्थानों से प्रकट होता है कि इसके टीकाकार श्री लालचदासजी हैं। इनके और भी ग्रंथ हैं। उनसे भाषा-साम्य है। ग्रंथ के अंत में जनलालदास ने अपने नाम की ओर संकेत कर रहा है। इनके अन्य ग्रंथों में भी नाम के लिए ये शब्द आये हैं।

२—पोथी की लिपि प्राचीन है। लिपि पुरानी होने के कारण ही अस्पष्ट है। लिपिकार ने अपने वक्तव्य में लिखा है—'ग्रंथ लिपि समाप्त कीया श्रीरामदास स्वय पठनार्थं ॥१॥ पछि देशहरिया नाहजहां रोड के पास टिल्लिनगर के अग्रेहवपाना ग्राम सो जान रामपोरस मोहे प्रमाननामधि बैठिकै ग्रंथ पूरा कीया श्रीष्म गुरुपदभरि ध्यान ॥१॥ नष सीप पष्ट ग्रीम को लिषत भयो अति कष्ट। सुरष हाथ न छिजीयो नष्ट लिपी नष्ट अष्ट ॥१॥ समतसो विनती मोरी छुटल अक्षर लेव नय जोरी ॥'

इसमें लिपिकार के स्थान आदि का संकेत मिलता है।

यह ग्रंथ कबीर पंथी (तिघरा, मुंगेर) के प्रमुख साधु के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[११] भक्तमाल—ग्रंथकार—नाभास्वामी। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-संख्या—१६। प्र० पृ० पं० लगभग—३०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ— "श्री सद्गुरु कबीर साहिबायनम ॥ वंदेह श्रीगुरो श्रीयुत् पदकमल श्री गुरुवैष्णवदास।

श्री रूपसाग्रजानसहगणरघुनाथान्विदमतम् ॥ न सजीवं साद्वैतं सावधूतं परिजननहित कृष्णचैतन्य देव श्री राधाकृष्णपादनर सहगणललितान् श्री विसाखाचितारवम् ॥१॥

चैतोमृगैर्जनाना सततनगता श्री प्रियादासटीका गंधद्रव्यादिलेपाहारि-भकैर्व्यंजनी समन्तात्। सानदासर्वगास्य अवलिवकुलमोशानलना श्री नाभामालाकारेण कृपाचरतिहरिहदि श्रीमतीभक्तिमाना ॥२॥

अथ ॥ वंदोभक्त सुमाल लालितावितली सतनहरण ॥
मेटत कठिन कराल भाल अकवदुगुजन्मके ॥
पैदोतवधूरिगुण नागरनागरमह ॥
कृपा सजीव-निमूरिव्याधिहरण करुणा भवन ॥१॥
रसिकनलोगभूपजोरिपान विनतिकरत ॥
महाराजसुखस्वरूप भक्तमालहि विधि कह्यौ ॥"

पद ॥

अन्त—"मीठेमीठेचापिबेरल्याईभीलनी ॥
कौनसी अचार बरतीनही रंगरप
रतीजाति हू मैं कुलहीनी बनी है कुचीलनी ॥
जूठे फल पाये राम सकुचे न भाय जानि
तुमतो प्रभु ऐसी कीनी रस की रसीलनी
कौनसी तपस्या कीनी बैकुंठ पदई दीनी

विमान मैचगाल ऐसा है सुमीलनी ॥
गोबी प्रीतिकरै काइ नमभीरानुसरै माह प्रीति
ही मोनरि ग गाकुल श्री अहीरनी ॥१॥

एकाश्रा ॥ भक्तयाहमेकया ग्राह्य शुद्धयात्मा प्रियस्थिता ॥
भक्तिः पुनातिमन्निष्ठा श्वपाकानपि संभवात् ॥१॥

विषय— भक्तिकाव्य । आध्यात्मिक और साहित्यिक ।

टि०—१—इस ग्रंथ में गीता पुराण आदि के श्लोकों के उल्लेख द्वारा टीकाकार ने ग्रंथ के विषय की पुष्टि की है। ग्रंथ के मूल और टीका को प्रारम्भ करने के पूर्व टीकाकार ने विभिन्न विषयों पर अपने मत दिये हैं। आत्मा के सम्बन्ध में पृ० सं० ४ में-॥ गीतायां ॥ नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावक न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषयति मारुत ॥१॥ या जीव नित्य है ॥ पूरव अध्यासचन्यौआवै है इत्यादिकन कोलय विक्षेप है परन्तु जीव का नहीं ॥ त्रयकालत्रयावस्थाविषैअपरिछिन्न है याते ध्यान ॥'

टीकाकार ने अपने विषय में पृ० सं० ३ में लिखा है—"श्री अमनरायनदास प्रियाप्रियप्रगनी जीवन रसिकरसाल प्रभु ब्रह्मा पुनिविस्नुप्रभुमर्वममहेस रविशशिवरुण कुबेर अप गणेश सुरेस ॥१॥
जाकी सत्ता पाय के सबही होत समर्थ
अपने अपने दाम के सकल समारत अर्थ
जब जब रत्नम देत दुख काहूदीनवसाय ॥
व्याकुल फिरत बिहाल अति महाकष्ट को पाय ॥

पोथी के टीकाकार प्रियादास हैं। ग्रंथ अपूर्ण है। टीका के पूर्व भूमिका विस्तृत है। पोथी की भाषा अवधि और ब्रज से मिलती-जुलती है।

२—पोथी के लिपिकार का नाम प्रारम्भ या अन्त में नहीं है। लिपि की शैली प्राचीन और अस्पष्ट है। लिपिकार कोई कबीरपंथी वैष्णव साधु प्रतीत है। प्रारम्भ में सद्गुरु-कबीर का नाम लिया गया है। टीका अच्छी है। मा० ला यह अंकेत मूल ग्रंथ के लिए हैं। ग्रंथ में उद्धरण गीता वामन पुराण और पद्म पुराण से लिये गये हैं। ग्रंथ की पृष्ठ सं —४ में हनुमन्नाटक से भी उद्धरण लिया गया है। ग्रंथ अनुसंधेय है।

३—यह ग्रंथ कबीर स्थान (तधरा सुगर) से प्राप्त हुआ।

[१०] सतनाम—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। पृष्ठ सं०—१८। प्र० पृ० प० लगभग—१८। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—(पतले अक्षरों मे)

"ककार है जगत को सादी गुनत्रन तीनों अक्षर त्यागे न हिगहीये
ही वात यौ प्रवान वेद मन तो
ताहिते कहत है कवीर तीन अंक जोर मोर और कहेगत अगत को। २

(मोटे अक्षरों में) क ब्रह्म अमीनामेषु ।। विद्यमाण विशिष्यते रमंते अवभुतानं। यत कवीरस्य उच्यते ।३

(पतले अ०) टीका ।। जल में कवीर और थल में कवीर
पाञ्च तत्त मे बसे कवीर तीनि गुन मे कवीर है।
विद्यमाण जान यौ बिनसना है
जन है कै म निसु दिन उया स्गन मे नीर है
थावर औ जंगम जत जीव जगत मो है
रहो भरपुर जैसे जटित जजीर है
ताहिते कहत है कवीर तीनि अंक जोरि
मोरि मोरि और हिलगावै त अधीर है ।।३।।

(मोटे अ०) मूल ।। क सुख सागोरो दाता ।। बीज ज्ञान तथैव च
रहितोआदि यंतेरा। यत कवीरस्य उच्यते ।।४।।

(पतले अ०) टीका। कहत ककार सुख सागर दातार यहै
ध्यान को मयासागुर ज्ञान बीज बानी है
रटत रकार मोर हित आदि अंत मध्य
कहत नहत जाकी अकथ कहानी है
गुगे के मो गुर जोई खाये सोई स्वाद जाने
चुपचाप होईक कछ बात न वपानी है।
ताहिते कहत है कवीर तीनी अंक जोरि
मोरि मोरि और ही कहैगे ते अज्ञान है ।।४।।"

अन्त—मूल ।। (मोटे अक्षरों में) कपटस्या पट छेद्या ।। विचारो परमार्थक।
रागद्वेष विनासश्च ।। यत कवीरस्य उच्यते ।।२६।।
(पतले अक्षरों में) टीका।—कपट प्रछेदा ।।
"सवते सिरे है पर सुन्य पर कर्न काज कारन ।।
ककार सब जगणि दातार यह ।।
कहत बकार सो विचार करौ ।।
बार बार जन जग माह जानो मानो सार शार यह ।।
राम राम रटबहै आठो जाम काम सोई सोई निजा
नाम धाम धाम है रकार यह ।।
ताही ते कहत है कबीर तीणि अक जोरि मोरि माथे ।।
और नर्क निरधार यह ।।३४।।

(माट अक्षरों में) मूल ॥ कमुन्नाग जथा भावा ॥ विमला चतु्वियागता ॥
घारना सुभ लोकाना । यत कबीरस्य उच्यते ॥३५॥

विषय— कबीरपंथ का दार्शनिक माहात्म्य ।

वि०—१—यह पुस्तिका अपूर्ण है। प्रारम्भ और अन्त के पृष्ठ फट जाने के कारण ग्रन्थ का नाम ग्रन्थकर्ता लिपिकार काल आदि के सम्बन्ध में ज्ञात नहीं होता है। अन्त के कुछ पृष्ठों पर सतनाम लिखा है। यह नाम ग्रन्थ के लिए उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। इसमें क आदि वर्णों के आधार पर कबीर की स्तुति दार्शनिक पद्धति से की गई है। मूल ग्रन्थ संस्कृत श्लोक में है और उसकी टीका हिन्दी पद्य में। मूल श्लोक के प्रत्येक के पदान्त में यत् कबीरस्य उच्यते और हिन्दी पद्य के प्रत्येक के अन्त में तीनों अंक जोरि आदि है। सभी ४८ पद हैं किन्तु पृष्ठ-सं० २ से आरम्भ होकर पृष्ठ-सं० १७ तक लगातार हैं। बाद के दो पृष्ठ नहीं हैं। २०वें पृष्ठ में दो पंक्तियाँ मात्र हैं।

२—पुस्तिका की लिपि स्पष्ट और सुन्दर है। लिपि-शैली, यद्यपि प्राचीन है तथापि व 'श्रो 'ब क्रमशः अपने स्वरूप में ही लिखे गये हैं। 'ख के लिए ष और ष के लिए 'य' तथा य के लिए य के नीचे बिन्दु देकर य लिखा गया है। किन्तु य यहाँ अपने शुद्ध रूप में ही लिखा गया है।

३—यह पुस्तिका कबीरपंथी मठ (तिघरा मुंगेर) के एक साधु के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[१२, ग्रन्थकार—×। लिपिकार—प्रेमदास। अवस्था—अच्छी बीच-बीच में फटा है। पृष्ठ—१२०। प्र पृ प लगभग–२८। आकार—। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल–×।

प्रारम्भ—॥मंगल॥

दिनन करो दयाल भक्ति की घन करो ॥
सरदा आपकी लाज यम साहब जिन करो ॥१॥
मद हार विकार घारना का वसै ॥
भगी सुरति नहीं ठहराय नयन कैसे लगै ॥ ॥
पाच तत्व गुन तीन का सागर सा जीया ॥
ऐसा राये मिल माय ता चंदन पाटिया ॥३॥
त्रिगुण फासि फन्दी आप माया मद जाल में ॥
सो सागर के बीच महा जंजाल में ॥४॥
मोह मुक्त जब होय दया जन पै करो ॥
मेरा करा कर्म विकार इस छन्नी करो ॥५॥

मानिव कबीरदहि छोर अग्ज गुरु गानिम ॥
हमरे पतीत उधारि मगन गाहिच ज्ञानिये ॥६॥"

अन्त—॥टेक॥

"मन करि धीन मायाकरि बार्ती अरु ज्ञान करि बाती
पंच तत के दीप नजोया नन अचय दिन राती ॥१॥
चित चंदन ओ ध्यान पुगधन अनहद घट बजाई
अज पाहुनि भाव करि भोजन भन ना भोग लगाई ॥२॥
नवर मुन अपग्यान गावना नाउर पाट लगाई
भीतर हरि पुजि पर मे गुर अन्म पुहुप चढाई ॥३॥
मध मृदंग गग हर धुनि उपजे अनहद बाजै बीन
ब्रह्मा विस्न महेश नारद मगन नाव लोनीन ॥४॥
काल निकदन सुर नर वंदन मतन पुरन अधार
कहे कबीर भक्ति येक मार्गा आवागमन निवारि ॥५॥"

विषय— कबीर साहित्य। दार्शनिक।

टि०-१—पोथी के प्रारम्भ या अन्त में पोथी का नाम नहीं दिया हुआ है। प्रतीत होता है—कबीरदास के अनेक ग्रन्थों का इसमें लघुकाय, संक्षिप्त संग्रह है। इसमें साखी, रमैनी, मंगला, सगलाविलास और नेहरा तथा होरी आदि हैं। रचना सुन्दर, हृदय और दार्शनिक है। स्थान-स्थान पर निर्गुण, रहस्यवादी भावना का बड़ा ही गम्भीर पुट है। यों तो प्राय प्रत्येक पद के अन्त मे 'कहै कबीर' ऐसा लिखा है किन्तु पृष्ठ संख्या ३५ और ३६ मे श्री धर्मदासजी का नाम आया है जो श्री सत कबीर साहब की ही शिष्य-परम्परा में से कोई सम्भव हों। 'सतगुरु' की सर्वत्र चर्चा है। ग्रन्थ अनुसंधेय है।

२—पोथी की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। प्रारम्भ के ७ पृष्ठ फटे हुए हे और ८ से प्रारम्भ होने पर भी दो पृष्ठ जीर्ण हे। अन्त में भी पोथी अपूर्ण है। पृष्ठ सं० १०१ तक दी गई है, बाद के ४६ पृष्ठों में सं० नहीं दी गई है।

३—यह पोथी श्री कबीरमठ, (तघड़ा, मुंगेर) से प्राप्त किया।

[१४] युगलस्तोत्र—ग्रन्थकार—श्री भट्ट। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ—१०। प्र० पृ० पं० लगभग—२८। आकार— । लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—रागविभास—

"उठत भोर लालजू के संगतें कुंजकी कमल राधिकाप्यारी
खिसी खिसी परत नीलपट सिरतें ससीवदनी नव यौवनवारी
मनभावती लाल गिरिधरजू की रचिहे विधाता सुहथ सवारी

नै था भग्मुरति रग भीनें प्राय सहित दखे निकुज विहारी ॥
प्रात मुन्ति मिल मगल गाव लाल लन्ती को मत्री लन्तावें
रहसिकेलिकहिहीयें भाइ राधामाधव अधिक हिताइ
प्रेम मभ्रमर्के वचन मुनाइ मुदरी हरिमुख दर्शन पाव
भाल विशाल कमलदलननी स्यामास्याम परम मुखदनी
जै जै नुरवरताल बजाव गीतवाद्य मुचाल मिलावें
हीयेंहाव भावलियें थाररतिघृतज्यातिवात विहारा
तनमनमुक्ता चाक पुराव थारनि श्री भग अमिन परचावें ८१

अत— रागकेन्दारी—

फूली कुमुदनी मरन मुहान
नमुनातीर धीर दाऊ विहरत कमल नील कर भाइ
नील वरन स्यामा रुच कीनी अरुन बरन ता हरिमन भाइ
श्री भग लपगी रह अलनकर मानौं मरक्तमीन कनक जाराइ १०२
स्यामा स्यामपदपावे साइगुरु मनति श्रति रीत आ हाइ नइ
मुवन वृषभानु मुतापद भनै तजें मन अति जाइ
श्री भग भक्ति रह स्वामिपन आनक है मनि सब छाइ १०३

दाहा— श्री भग प्रगन्ति जुगलसत पनै कराप्रेकाल
जुगलकलि अवलोकमें मिन्ट निपेजजाल १०४
इति श्री युगल सत सपूर्ण ।

विषय— कृष्णभक्ति-काव्य ।

टि०—१—इस ग्र थ में कविवर भट्ट न राधा और कृष्ण क प्रेम का बड़ा ही आकर्षक और मनारजक वर्णन किया है। इसकी भाषा ब्रजभाषा साहित्य म मिलती-जुलती है। ब्रजभाषा क कवियों के समान ही विभिन्न रागों में रचना की गइ है। एक राग क बाद दाहा का समावेश है। वर्णन बड़ा ही राचक और हृद्य है। शैली मुन्दर है और भाषा प्रभावकारी है। ग्र थ अनुसधय है। ग्रन्थ के प्रारम्भ क दा पृष्ठ फटे हैं।

—ग्रन्थ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है।

३—यह ग्रन्थ श्री कबीरमठ सानपुर के महतजी के सौजन्य स प्राप्त किया।

[१५] सतनाम विहगम—ग्र थकार—गुरु नानक साहब। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ—१६२। प्र० पृ० प० लग भग—३०। आकार—×। लिपि—गुरुमुखी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—साखी ॥ हुकम रजा चलनानानकालाम्रयानानाकमकापरमारथतवअमाकहया सिपुआमिननरहनाआरनजाननागभूमवन्नमारमवइसनोटुकुमपरमरवरन्वीचहै ॥

अन्त— "वाहेगुरुनिर्माणहैजापयाहोमपुनीत तिसिपरापतनानकातरातिहंगम चीट,
पोथी— वोवैवमकरलेततसजीया अमृतनामहोताहवीया
हहैहटामूथकरिरावेपी अमृतएहोमनतनतिरापे
जगे ग्यान किथा मनमाहीजोचीनमो मरमैनाही
रारेरागबहुत अनकार नानक जवजव उतरे पार
इतीविहगमनंपरन मुलामुकावलणग्रक्खरलागकनामे'व पढाया।
बोले भाई वाहेगुरुजी, सतगुरुजी, धन्य गुरुजी, वाहेगुरुजी।
एकओंकार सतगुरप्रसाद ॥"

विषय— जपुजी साहब (गुरुजी की प्रथम वाणी)

टि०-१—गुरुनानक साहब के जीवन की एक कथा है—"गुरुनानक साहब सुमेरु पर्वत पर गये, वहाँ गुरुगोरखनाथ और मछेन्द्रनाथ उपस्थित थे। उनके साथ उस समय उनके शिष्य भाई मरदानजी (मुसलमान) और भाई वालाजी (हिन्दू) थे। वहाँ उन लोगों की गोष्ठी हुई। उस स्थान पर श्री गुरुनानकजी ने जो कुछ कहा, वह 'श्री जपुजी साहब' नाम से प्रसिद्ध है।" यह ग्रन्थ-साहब का एक गुटका है।

२—इस ग्रन्थ में 'जपुजी साहब' के अतिरिक्त 'सुखमणी साहब' भी है। 'सुखमणी साहब' पाँचवें गुरु अर्जुनदेव का लिखा है। इसमें उक्त दोनों ग्रन्थों की टीका है। टीकाकार ने मूल ग्रन्थ की टीका के अतिरिक्त अपने भी विचार दिये हैं। ग्रन्थ में, वाणी, साखी और शब्द का प्रयोग है। 'वाणी' सवैया और चौपाई को कहते हैं। यह एक छन्द है। 'साखी' वाणी की व्याख्या है। वाणी को ही 'शब्द' भी कहते हैं।

३—इसमें बहुत-सी वाणियाँ ऐसी हैं, जो प्रकाशित और उपलब्ध 'गुरुग्रंथ साहब' और सुखमणी साहब जपुजी साहब, में नहीं हैं। ग्रंथ अनुसंधेय है। यह ग्रंथ (टीका) अप्रकाशित है।

४—ग्रंथ के लिपिकार कोई उदासीन-सम्प्रदाय (सिक्ख सम्प्रदाय की एक शाखा) के साधु हैं। मूल ग्रंथ और टीका के अतिरिक्त लिपिकार ने अपनी ओर से भी कहीं-कहीं कुछ लिखा है। लिपिकार ने अपने को 'विहगम' कहा है। विहंगम का अर्थ होता है—अहन्ता एवं अभिमान से रहित। गुरुमुखी में, सिक्खों की भाषा में, 'साधु' को विहंगम कहते हैं। 'अतिथि' के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है। उस लिपिकार ने ग्रंथ की समाप्ति के बाद ग्रन्थ के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग किया है। 'इती विहगम सम्पूरन' और 'तिसे परापत नाननका तरा विहंगम चीट' में दो बार 'विहंगम' शब्द आया है। ग्रन्थ में अनेक

स्थलों पर यह शब्द दुहराया गया है। इससे प्रतीत होता है कि लिपिकार कोई साधु भिक्षु है या इस नाम का कोई अन्य व्यक्ति।

५—ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर लिपि में थोड़ा अन्तर है जिससे ज्ञात होता है कि या तो भिन्न भिन्न लिपिकारों ने मिलकर लिखा है या लेखनी भिन्न होने के कारण ऐसी भिन्नता है। ग्रन्थ को समाप्त करने के बाद पुनः लिखा है—

राम तत्त किवाड़ अगम अगोचर अलख है रूप न लखा जाय। जान की है दीदार दिया खेँ का अनार" आदि। इस पृष्ठ और लिखा है। लिपिकार ने ग्रन्थ के प्रारम्भ या अन्त में लिपिकाल की ओर संकेत नहीं किया है। अनुमान है यह दो सौ साल पूर्व की पोथी है। इसकी लिपि अत्यन्त प्राचीन और अस्पष्ट है। पोथी में कई स्थलों पर दरियाी-सम्प्रदाय के सिद्धान्त की भी समावेश है। यह ग्रन्थ श्री गुरुनानक साहब का है। प्रारम्भ के कुछ पृष्ठ फटे हैं। यह ग्रन्थ बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् के संग्रहालय में सुरक्षित है। गुरुप्रसादजी एम० ए० साहसराय बिहार शरीफ (पटना) के सौजन्य से प्राप्त।

[१६] (क) रामजन्म—ग्रन्थकार—श्री सन्त सूर्यदासजी। लिपिकार—श्री जगेश्वर लाल। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना कागज। पृष्ठ—६०। प्र० पृ० प० लगभग—२६। आकार-प्रकार—×। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—बैशाख शुक्ल १४, रविवार—सन् १२८७ साल स १६३७ वि० १८८ ६०।

प्रारम्भ—' श्री गनपतीजीसहाऐ श्री भवानी सदा सहाऐ श्री कालीजी सदा सहाऐ श्री सरासताजी सदा सहाऐ श्री पोथी रामजन्म ॥

दोहा ॥ श्री श्री गुरुचरनसरोज रज नीजमनमुकुरसुधार
बरनोंरघुबरबीमलजस जोदाऐकफलचारी
ऐकभरासाऐकबल ऐकआसबीसवास
ऐकभरासारामपर आपहीतुलसीदास

सुमीरीनी—गौरीपुत्ररामावनदन पशुवदाकरधारी गौरीसकरकंठेबसो सरासतीहीरदेमहेस
तहरचरनमनोरथ साधीकरप्रभुभार भुलाअक्षर परगासहु गौरीके पुत्र गनेस

चौपाई—बरनोगनपतीबीरबीनीबीनामा रामरूपनुमपुरवहुकामा
बरनोसारदाअम्रीतबानी रामरूपनुममलीगतीजानी
बरना वसुधा धरैनाभाग रामरूपमऐ जगतप्रतीपाला
बरनोचादसुनर्कीआरी रामरूपननीरमनीमानी

अन्त— ॥ दोहा ॥
सब रानी अनुबातही बेग कहा ता पाप
सीता सबकी माता राम सबका बाप

चौपाई — रामजन्मकथाजोनरपटटचटैंवरमपापछैंजाइ
मुनीके ग्यानजोनरकरट रामजन्मकथाअनुसरइ

दोहा— पाशरह्यनहुतडीननकेमेटीमकलनाकीगे,
लीग्यनीवान्ताराचराटामगुरुकेहोऐ

दोहा— मान नग्ग अपन्नग सुन वरीम्र तुलाएैकसंग
तुलैनाताहीमकलमीली जोमुगलहै मनमग

दोहा— नामपहलु देवगनीगी त्यानतुमद्दारकपाठ
लोचनपढनीगत्रीका परानजाहीकेहीवाट
ऐलीश्रीपोथीरामजन्मसमपुरनस्मापतजोपत्रीमोटेग्यानोलीखाममद्योपनादीअतें
पढीतजनगोमीनतीमोरीकुटलअक्षरलेवमजोरीडमखतजगेव्रलाल"

विषय— भगवान श्रीरामचन्द्र के जीवन से सम्बन्धित काव्य।

टि०—१—यह पोथी सत सूर्यदास की लिखी है। भाषा कुछ अवधी, भोजपुरी और कुछ-कुछ मागधी से मिलती-जुलती है। इस संत के नाम और रचनाओं का उल्लेख अबतक के किसी भी 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' में नहीं हुआ है। ग्रंथकार संतश्रेणी के कवि प्रतीत होते हैं, क्योंकि स्थान-स्थान पर जीवन-चरित्र से हटकर उन्होंने दार्शनिक विवेचन भी किया है। कथा का आधार 'रामचरितमानस' है। कथा संक्षेप में कही गई है। केवल दोहों और चौपाइयों में रचना है। कुछ स्थानों पर अन्य रागों का भी मिश्रण है। इस रचना पर भक्तिकाल का प्रभाव प्रतीत होता है। ग्रंथ सुपाठ्य और विवेच्य है।

२—लिपिकार ने पोथी के अन्त में अपना परिचय देते हुए लिखा है—"दमखतजगेव्रलाल जीलागोरखपुरहाल परस्हरलकलकत्ता महलै टंडइल-बगान सनबाहसै ८७ सालमहीनावैसाखसुदी १४ दीन अतवार के तईआर हुआ।" इससे ज्ञात होता है कि यह पोथी कलकत्ता में लिखी गई है। लिपि पुरानी और स्पष्ट है।

३—यह पोथी शहीद-द्वारका-पुस्तकालय, नुशरूपुर (पटना) से पं० वासुदेवजी साहित्याचार्य के सौजन्य से, प्राप्त हुई है।

[१६] (ख) रामरतनगीता—ग्रंथकार—श्री नंदलाल कवि। लिपिकार—श्री जुगेश्वरलाल। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ—६४। प्र० पृ० प० लगभग—३२। आकार-प्रकार—×। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पौष कृष्ण ६, शनिवार सन्, १२८७ साल, सं० १९३७ वि० १८८० ई०।

प्रारम्भ— "श्री गनेसजी सहाऐ श्री महादेवजी सहाऐ श्री सरोसतीजी सहा श्री गगाजी सहाऐ श्री पोथीरामरतनगीता।

दोहा— पहीनेगुरक्या-प्रेर्मा हगुररचानहान
पानीमाथी-न भया अनमपुस्तनीरवान
अनसपुरवनीरवानहै न-कलवैनाकाहे
न हकाताबाहीलवैनाहीयरकाराहे

चौपा— सीरीगुरवीमनक जननगावों नहीपरमा-गावींदगुनगावों
मीरीकीगीदनग्मुब्रीनवानी गुरपरमान्कहुकहोवमानी
केकसमैसीरीनगुराद आरजुनकग मपे केक ठाइ
धूपनीपतेआर्गतीवींहा चरनान्क ले माथ दीहा
हाथजारीग्ररजुनमोठाठे तुमकमाग्रामोहकम बा

दोहा— तीनीनाककेठाकुरप्रभु भाखौ वचन ।
वीनतीकरा अधीनहाये दीन बु नंदलाल

चौपा— सबौकेपरभुग्राहैचीनमारकहतहीनाथदुनाक्रपारे
स्रीकारीसनवानेवीदुसग आरजुनकहैसुनोजदुराग

दोहा— रामरतनगीताकर ग्ररजुनकीह अनुसार
सकनसीरीग्गी सुनैचीतदेइ मुक्तीहाएैसंसार

भन्त०— ॥ चौपाइ ॥
'देवनकपानेहेगीनानामानुसपन्माहाएनीरचीता
गीत पन्सुनैचीतला दुखदारीदसभजाएेपराइ
आपुग्रीआपरानीहाइगीत सुनैपुत्रफलहाइ
बरन्हमयानमनएहमाही परमतंतुकरी आरजुनराखा
तीनैंलाकआमरीपुरीराखा
मीरीमुखगातारामपुरनमेटआरजुनकेमहेथुगीतेउ

दोहा— सीरीकीरीसन आरजुनसीले गुरुकी हएेकभार
से भगवंतहीतभाखेन कुसल सीघपणहान ससारन

विषय— राम-नाम महिमा का दार्शनिक विवेचन ।

टि०-१—ग्रंथकार का नाम ग्रंथ के आदि या अन्त में नहीं है। प्रारम्भ के पद्यों में एक स्थान पर 'बीनती करा अधीन हाये दीनबंधु नंदलाल' पद आया है। 'नंदलाल' भगवान् श्री कृष्ण के लिए आया है क्योंकि इस पद के पूर्व श्रीकृष्ण का प्रसंग है। यदि दीनबंधु से श्रीकृष्ण का बोध हो सकता है तो यह ('नंदलाल') ग्रंथकार के नाम की ओर संकेत कर रहा है।

२—पोथी की भाषा अवधी और पश्चिमी मानपुरी से मिलती-जुलती-सी है।

३—इस पोथी में राम-नाम की महिमा के साथ-साथ दार्शनिक विचार भी हैं, जैसे —

आरजुनमनोदीनकहही रामभजन ते नकमुगमहही
सीमामान्आप वैना नाकरदाग्गीसुनभैननानाद

महीमामोरीजोपावेमोहीसमाहोएमोए
सभमीली • •• ।
वचनमोरसुनोजदुराऊ नाम कै महीमा कहतना आऊ
एहेमामीकोईकहतना आवे नामके महीमाकहतन आवे
आरजुनउठीकेअस्तुतीलाइ जोगजीवनकहावुभाइ
तेहीतेमकलपापवहीजाइ नेमधरममोहीचीतदेइ
जहीवीधीमोरहोएउधारा मोही नेभाखोनदकुमारा"

६१ पृष्ठ के इन पदों में नाम, योग, धर्म आदि के सम्बन्ध में संकेत है। पूरे ग्रंथ में इसी प्रकार कृष्ण-अर्जुन के परस्पर-संवाद के रूप में विषय का विवेचन किया गया है।

४—ग्रंथ में 'ए' के लिए 'ऍ' का और 'ऐ' के लिए 'एय' का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार 'ष' के स्थान पर 'ख' और 'ख' के स्थान पर 'ख' के नीचे बिन्दु देकर प्रयोग हुआ है।

५—ग्रंथ विवेच्य और सुपाठ्य है।
(क) और (ख) दोनों पोथियाँ एक ही जिल्द में हैं तथा दोनों के लिपिकार भी एक ही हैं। ग्रंथ की लिपि प्राचीन और शैली भी पुरानी होने के कारण अस्पष्ट है।

६—यह पोथी शहीद-द्वारका-पुस्तकालय से, प० वासुदेवजी साहित्याचार्य, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० मिडल स्कूल, खुशरूपुर (पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुई।

७] ज्ञान-दीपक—ग्रंथकार—सत दरिया साहब। लिपिकार—बुधनदास फकीर। अवस्था—अच्छी, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—१८७। प्र० पृ० प० लगभग—३६। आकार—६"×१०"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ, कृष्ण, १८६५, बुधवार।

प्रारम्भ— "साहा साहब जीदा जाग्रीत हस उबारन सुक्रीत दरीआ साहब सतगुरु ग्रंथ भाखल ग्यान दीपक साखी प्रेमजुक्ती नीजुमूल है गुरगमीकरो सूथा दा आ दीपक जवही बरे दरसननामअया प्रथम ही सतगुरु सतकरमा उ दा आ से उकर दरसन पाउ नीरुन घरी जवही गुरु मीले उ आनद-मंगल ललीत लोभए उ भौतिरनी गुरग्यान अनूपा सो सम ही देव से उ सरूपा प्रगटकरो फीरि राखु समोइ जेन फनी मनी नाही जात वीगोइ पत्र माव कमी अक नीखा पोवें प्रेम वीरला कोई सता ग्यान अकुर रत राहा जो समिता चला प्रवाह प्रेम रश रमिता तामे सत सु घट भव तरनी अति सुरूप साम्राजात नावरनी पठे सत सुध जानि पुनिता भव-शात्र नाही होहिअनीता जठ जनता मे देपि भुलाना लहरी उतग सम ग्यान छुपाना लहरी फिरंग फिरता रहै मदमयिता के मूल परे भवन मे मराभि कै भएे वो कठीन तन सुल

सुधर शत मनि मुक्ता जैश शामा शाभित चुंथि नतें शे
निन निज ऊरथ गानें गुन ग्याना ॥ '

अंत — भए या मपुरन ग्यान सतगुरु प पावन करो उवर बमत मुनान जो हि गयीरी वा वीवेक एह ममत अठारह सैं तैंतीस मादो पौथी अभार मावा जा भवन वरदनी गौ द री भ्रा गवन वा चार भा वनीवार मुक गवन कीता छपलार ना जन सब्द बीवेकी ग्रा मेटे मकल सभ सोक ॥ समत १८६८ प्रथ ग्यान दीपक सपुरन भइल वार बुध क मरकार माहाशा भोपपुर प्रगन नवारी तपेवीमी मौले घरकघा तप्त पौराथै प्रवाना समुगनेना दरीआ माहब का अस्थान है प्रथ ग्यान दीपक सर मन कीआ बुधनदास फकीर दरीआ पथी ।

विषय— मत परम्परा की निर्गुण धारा का दार्शनिक विवेचन ।

टि०-१—पाथा क पढ़न म नात हाना है कि दरिया माहब की यह अंतिम कृति है । इस पोथी का अंतिम पद "समत अठारह सतीस भादो पोथी अभार भादो वनी वार एक गवन कीवो छपलोक में स्पष्ट सकेत है कि इनके देहान्त के बाद उनके इन विचारों का संग्रह किया गया है।

२—दरिया माहब बिहार प्रान्त क आरा (शाहाबाद) जिले के घर वधा' ग्राम के निवासी थे । इनके विचार अधिकतर सत कबीर के विचारों से मिलते ह । इन्होंने निर्गुण विचार धारा को परिपुष्ट करते हुए इनों ग्रंथ लिखे हैं ।

३—इस महान् मत-सम्बन्धी अन्वेषण और इनकी कृतियों क प्रकाशन स जहाँ हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि होगी वहाँ बिहार प्रदेश का भी गौरव बढ़ेगा । यह पोथी परनासिगी क माल्गन-निवासी प वासुदेव शर्माजी क सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[१८] रामचरित मानस—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास । लिपिकार—श्री रामसहाय सिंह । अवस्था—अच्छी, कागज—हाथ का बना देशी । पृष्ठ-सं०—३६६ । प्र पृ प लगभग—४२ । आकार—१०" × ७½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष शुक्ल सप्तमी मगलवार स १८६४ वि० ।

प्रारम्भ— जदी शुमीरत शीधी हाए गननाऐक करीवर वदन
करहु अनुग्रह शाए बुधी राशी शुभ गुन शदन
मुक हाऐ वाचाल पगु चढ़ गीरीवर गहन '

अन्त— "नि श्रीरामचरीत मानसे शकल कलीक लुक वाशगना नाम उप्रकाश रामान्न श्रातुलशीदाशशपुन्य पया दरस्त तथा लीकयते स्मदाय नदीयन धन्तिजनशानीनती मारी दुग्न अष्टनेवगब जोरी श्री

सम्वत १८६० साल पुस सुदी रोज सगत को पोथी तेग भरोन सु तैयार हुआ' । श्री रामसहाय शीर काशि गा मो जन्द्दि प्रगने हाजीपुर ।"

विषय— राम-जीवन-संबंधी काव्य ।

टि०— इस पोथी की लिपि प्रचलित, प्राचीन कैथी लिपि से मिलती-जुलती है। पोथी में कई स्थानों पर प्रचलित प्रतियों से पाठ-भेद है। पोथी के लिपिकार ने, प्रतीत होता है, इसके अतिरिक्त अन्य पोथियों की भी प्रतिलिपियाँ की है। यह पोथी 'बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्' के दफ्तरी राम हरन प्रसाद सिंह से प्राप्त हुई।

[१६] वैद्यरत्नार्णव—ग्रंथकार—रामाप्रसाद शुक्ल। लिपिकार— ×। अवस्था—साधारण हाथ का बना कागज। पृष्ठ-१०—८७। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—६' × ८'। भाषा—हिन्दी। लिपि— नागरी। रचनाकाल-चैत्र शुक्ल १३, १२७७ साल, बृहस्पतिवार। लिपिकाल— ×।

प्रारम्भ०—"अथ अनलपित्त रोग प्रनारिकेल लवनलिपिह्य ॥२६॥ नारिकेलजलतोला ८ सिंघानोनतोला ८ पोरानालिवचनोला ८ तिनो दवा को नारिकेल जलमाहिपलरिनारिकेल के भित्र भरिक पति नाड को निल पादरपठ मृतिकादेक गज पुठमाहि फुंक देना खित महीपन काठमासा ८ यम्य जललेपायतो दिन १४ माहि अम संचित जाय अगर भूमि के नाश पायतो सूप अधिक लावय ॥२॥८०॥३०॥ अथ दवावायु ८॥८४॥ओरारि वायु का लिपिह्य ॥३०॥ आठ किसिम के वायु कि गोलि ॥३०॥ मूलक। जावनि। लवंग।"

अन्त०—"मोदक शतावरा वर्णास्रदमनापाखिरोग ॥ कुनजम १ कयाय विजरटारचिनि ३ चामाद का बिज ४ गाज बिज ५ जायफल ६ जावतृ ७ पिप्रली ८ चतरा ६ केशर १० हभिमस्तक ११ असगननागोरि १२ चिरिचिरि का बिज १३ पत्रज १४ अकरा १५ चरकसि १६ धनिया १७ रेनका १८ काकोलि १६ तालमखाना २० पोस्ते का दाना २१ अजवाइन २२ असिम २३ कमलगठा २४ कुकाटिविज २५ इन्द्रजव २६ मृग २७ नाहिनाबिज २८ लौग २६ सवद भस्मभारोचूर्न के समहित मिलाय मासा ६ प्रमानमोदक बनाय साय पायतो दिन २१ माहि निस्चय रोग का नाश ॥ इति श्री रामप्रसादशुकुलपोशतक वैद्यरतनार्नवस्त्रीचिकित्सावानक रोगचिकित्सानानारोग चिकित्सा अस्टमोनाम अध्याए समाप्तातेथि १३ सुकुलपक्षचैत्रमास वार ब्रहनपति सन् १२७७ साल।"

विषय— आयुर्वेदीय चिकित्सा।

विवरण—यह पोथी प्राचीन है और आयुर्वेद की जिन औषधियों का वर्णन किया है उन सब का महत्त्व की है। इसमें अनेक रोगों, उपरोगों तथा उनके निराकरण की आयुर्वेदीय दवाइयों तथा उनका उपयोग-पद्धति आदि का विस्तार के साथ आठ अध्यायों में समझाया गया है। पोथी के साथ ही उर्दू लिपि में छपी पुस्तिका है जिसमें यूनानी पद्धति के साथ समन्वय किया गया है। ग्रंथ में चिकित्सा-सम्बन्धी अनेक मन्तव्यों का संग्रह है। आयुर्वेद और यूनानी पद्धति का तुलनात्मक विश्लेषण हिन्दी में किया गया है। ग्रंथ शेष है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठ नहीं है। प्रारम्भ में जो पृष्ठ हैं भी वे बीच बीच में फटे हैं। यह पोथी विहार आयुर्वेद भवन चम्पानगर भागलपुर के कविराज नरेन्द्रनाथजी के सौजन्य से प्राप्त हुई।

[७०] चित्तौरोद्धार—ग्रंथकार—अवधकिशोर सहाय वर्मा। लिपिकार—बद्री प्रसाद सुधाकर। अवस्था—अच्छी। पृष्ठ-सं०—८८। प्र० पृ० पं० लगभग—३६। आकार—१०" × १६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—भाद्र कृष्ण १४ सं० १९६८ वि०।

प्रारंभ०—'वन्दना (डमरू) मजल जलद तन अगम निगम मन
रत सुख विहरत, भगत-सकल कर।
जगत रत भ्रमत जन मन विचरत
ज्ञान-सुख बरसत कमल-नयन वर॥
बन बन विरमत, तन-मन विभ्रमत
ललत चरण रत बनत जगत नर।
कहत अधम नर चरण शरण धर
युगपाल नगधर त्रिविध अखिल हर॥१॥

प्रथम सर्ग (मन्दाक्रान्ता)
शोभाधारी प्रमित सबेरा काम की है कली-सी।
चिन्तीभूता भरत-भुवि के भाल में है भली-सी॥
आभावेला नवल-लतिका भाल लावण्य शीला।
नाना भावा प्रकट करती अप्सरा प्रेम-लीला॥२॥
सा है भाग भरत भर तो पद्मिनी-सी खिली है।
प्यारे प्यारे नभ नगन में चान्दनी आ मिली है॥
मानों स्थिया परम-सुखद स्वर्ग की भूमि न्यारी।
मेरी पूरी समान अलका अप्सरा भूमि प्यारी॥३॥'

अन्त०— अगों त्याग सकल मन से वैर मार मिला के
हाँ माने निज निज घरा सौम्य मेरे डग के

वार्ता ऐसी सुखद करते देश के प्रेम वोवैं
प्यारी श्रद्धा मधुर-सरिता बीच में खायें गोते

(६१)

ऐ कान्हा जी भरत-भुवि में फेर हम्मीर होवें
ऊँचा हो जो रत सकल हो लाडले देश जोवें
एका प्यारी यह विमल-सी युग्म के बीच होवें
दोनों हिन्दू यवन यक हों फुट की मीच होवें
इत्यलम् हरि ऊँ तत्सत् ।।

विषय— चित्तौर की लडाई और राजपूती इतिहास से सम्बन्धित वीरकाव्य।

टिप्पणी—बिहार प्रान्त के पलामू जिले के डालटेनगंज के आस-पास कचनपुर ग्राम-वासी प्रसिद्ध कवि और साहित्यवाचस्पति अवध किशोर सहाय वर्मा की यह सत्रह सर्गों की रचना है। यह रचना हरिऔधजी की शैली तथा 'संस्कृतछन्द-चुनाव' से प्रभावित है। इसमें अनेक स्थलों पर साहित्य सम्बन्धी तथा कविता, छन्द और अलंकार के नियमों की त्रुटि रह गई है, जिसे स्वयं कवि ने ग्रंथ के प्रारंभ की भूमिका में स्वीकार किया है। कई स्थानों पर शब्दों के चुनाव में भी अस्वाभाविकता है। वर्णन में कहीं-कहीं प्रसंग-दोष भी स्पष्ट है। ग्रंथ की समाप्ति तथा मध्य में भी यत्र-तत्र हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा बुलंद किया गया है। रचना में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी है। इसका यह भी कारण हो सकता है कि इसकी रचना का समय भी वही था जब देशभक्ति और असहयोग से भारत गुजर रहा था। ग्रंथ का प्रकाशन होना चाहिए। इससे (हरिऔध-जी की शैली के कारण) बिहार का गौरव बढ़ेगा।

[२१] शिव-पुराण-रत्न—ग्रंथकार—कुंजन दास। लिपिकार— × । अवस्था—अच्छी। पृष्ठ-सं०—६५२। प्र० पृ० पं० लगभग—३०। आकार—६"×११"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

प्रारंभ०—दोहा। व्रण शकर उर दंभ अति, जाति ऊँच निज जान।
निज-पतिवंचक नारि जग, पर पति के मन-मान ।।
चौपाई ।।
बालक मातु पिता नहि मानी। गुरु मत खंड विवाद गुमानी ।।८६।।
विद्या हीन लोग संसारी। अपर देश जा विरति विचारी ।।६०।।
जो कदापि कोउ मिलहि सहाई। मातु पिता कह निन्द सुनाई ।।६१।।
अघकरनी ते दुख जग माही। जप पूजा माला तेहि नाही ।।६२।।
इच्छा नारि प्रसंग मँडाई। चिन्ह जनेऊ ते विप्र बडाई ।।६३।।
छलि तपशी कलि करि अशनाना। पुत्र विचार करिहे धरि ध्याना ।।६४।।

कृप मनुगन मनगनाड । नान सुखीगन नाम दश ॥६५॥
कारज नम रद्द न भगना । नान सभा कुल पालन करना ॥६६॥
दोहा ।—छी द्वुः क गागता करहा सुचतुर नगान ।
नाग तगन कला मँह सजन अधिक प्रमान ॥ ८॥

अंत०— माग भव गनि ध्यान रह भीन गीर गहे टेक ।
निसि दुनन मन गाँगि शिव उपज प्रेम विवेक ॥१८॥
कालन नम न चूक मेग राम गन भर पाप
अ कु जन पर करहु कृपा हरहु सकल मन ताप ॥१७॥
जन अगरगु नन में रहे, नि शरण तुम नाथ
अन कु चन एक ताहि तनी काटि नवावँ माथ ॥१८॥
तुम ठाकुर तिहु लाक क हेरहु शिव निज भ्रार
कुन्न हा अपनावा प्रभु ससुमि निरद बर जार ॥१६॥
कना लौं कहौं तहि नाथ ना जानहु सब तुम आप
कुचन निज है करहु कृपा जाय संताप ॥ ०॥

विषय—शिव का आराध्य मान कर शिव-पुराण क आधार पर रचित सगुण भक्ति का काव्य ।

टि०-१-ग्रंथकार मन कुचन शास्त्र आरा जिले क पँवार नामक स्थान क निवासी थे । ऐसा निर्देश ग्रंथकार न ग्रंथ में किया है । विहार प्रदेश के निवासी इस सत ने इस महाकाव्य की रचना करत हुए जीवन की कई उपयोगी समस्याओं का समाधान किया है । पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों में विभाजित तथा अनेक सर्गों में वर्णित यह पोथी पठनीय और विवेच्य है । प्रत्येक अध्याय क अंत में कवि न अपने नाम और शिव क प्रति आत्मार्पण का भाव प्रकट किया है ।

२-पोथी यत्र-तत्र फटी हुई है । प्रारंभ में चार पृष्ठ नहीं हैं । ग्रंथ के अंत में भी पृ० सं० ६७२ क बाद क पृष्ठ नहीं है । ग्रंथ के प्रारंभ या अंत में लिपिकार क नाम का निर्देश नहीं है ।

३-ऐसा प्रतीत होता है कि कवि किसी 'दीनबंधु दयाल' नामक राजा के आश्रित थे और उनके एक 'कुंजबिहारी' नामक क मित्र थे जिनसे अभ्यंतर शिवभक्ति सम्बन्धी विचारों का परस्पर आदान प्रदान होता था । इनका मत या पंथ मुंगेर जिले तक प्रचलित था । यथा-ग्रंथांत में—

"अति सुगम पथ कनेश बिनु बर दुलभ फल कर पावहू ॥२॥
कर जोरि विनवौं भवानि शंकर चरित रत मोहि दीजिय ।
प्रभु दीनबंधु दयाल ज्ञानी दास आपन कीजिय-॥३॥
यह करत सुनत कनेश छूटे भक्ति प्रेम दिखावहीं ।
गिरिजा कुंजबिहारी उर बसे ।

कथा समस्त श्रवण करि, पाठ हृदय विश्राम ।
गावत शिव गुण हर्ष अति, सबन कीन्ह सुनिधाम ॥१०॥
जिले मुंगेर में मालूर, अहै रजौन ग्राम ।
मोर नाम के मित्र एक, कुंज बिहारी नाम ॥११॥
लेखक कवित्त प्रबन्ध शिव, ताके सुमति सर्वीन
गाइ लिखी शिव यश विमल, पायउ परम प्रवीन ॥१२॥"

ज्ञात होता है कि कविवर कुंजनदास गाते या रचना लिखाते थे और उनके मित्र कुंजबिहारी उसे लिखते थे । राजा 'दीनबन्धुदयाल' का नाम भी पोथी के अनेक स्थलों में आया है। पोथी में शिव-पुराण की कथा का आश्रय लिया गया है। प्रारंभ के पृष्ठ फटे होने तथा पाँचवें पृष्ठ के बीच के अक्षरों के फट जाने के कारण इस विवरण में प्रारंभ की पंक्तियाँ छठे पृष्ठ की हैं। यह पोथी मुद्रित है, किन्तु दुर्लभ है। इस पोथी के आधार पर यदि कुंजनदास की अन्य रचनाओं की खोज की जाय तो हिन्दी-साहित्य के इतिहास के लिए बहुत बड़ी सामग्री मिल सकती है।

[२२] **हितोपदेश**—ग्रंथकार— पदुमनदास । लिपिकार— मिश्रीलाल । अवस्था— अच्छी । प्राचीन देशी-कागज । पृष्ठ-सं०—८५ । प्र० पृ० पं० लगभग—४२ । आकार—८" × ४½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ल पंचमी, बुधवार, सं० १७३८ वि० । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ल एकादशी, सं० १९१९ वि० ।

सोरठा ॥

प्रारंभ—सिद्धि दे इस देव ॥ सदा साधु के काम में ॥
गंग फेनल्ले—सेव ॥ जासु सीस सोम के कला ॥१८॥

दोहा ॥

जे हित उपदेशहि सुनै, संसकार पटु होय ॥
जामे बचन विचित्र सब, नीति सुघट है सोय ॥१९॥

सोरठा ॥

अमर जानि है काय, विद्या धन चितत चतुर ॥
केस गहे जमराय, धर्म करत अनुमानि है ॥२०॥

दोहा ॥

सर्व द्रवते द्रव्य अति, विद्या द्रव्य अनूप ॥
धन देती परचत अछै ॥ अरचत जाने भूप ॥२१॥
विद्या मिलवै भूपतिहि ॥ सलिता सिंधु समान ॥
तापर अपनी भागफल ॥ भोग करै मतिमान ॥२२॥
विद्या विनय हि देति है ॥ विनय ख्याति अनुकूल ॥
ख्यातिभए धन धर्म सुख ॥ ताते विद्या मूल ॥२३॥

पवनन्द्र [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] न [illegible] रमै ॥ [illegible] [illegible] पन [illegible] ॥ ४॥
[illegible] [illegible] [illegible] म ॥ कुमकार [illegible] ॥
[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ५॥
मित्र [illegible] [illegible] [illegible] मुनि ॥ [illegible] [illegible] [illegible] न ॥
पवनन्द्र [illegible] मन ॥ [illegible] कथा [illegible] [illegible] ॥२६॥

[illegible] ॥

[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] कथा पूरन [illegible] ॥ ५४॥

[illegible] ॥

[illegible] विष्णु [illegible] [illegible] ॥ [illegible] रामकुमार ॥
[illegible] [illegible] पूरन [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] बार ॥२५६॥

[illegible] ॥

[illegible] श्री [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥२५७॥

विषय— [illegible] [illegible] [illegible] हिन्दी पद्यानुवाद ।

[illegible]—[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

सेवक गरट हुँ नहीं ॥ प्रभु अनुशासन पाय ॥
कवि जन सिप आसिप युअन ॥ इन्हहा पाय भुराय ॥७॥
प्रथम भूप कुल नाम कहि ॥ जहाँ कथा टानहास ॥
सुवरन वलित सुहावनी ॥ भापन पदुमन दास ॥८॥
पैरा पूर्व निवास तें परिवार गर्ड ग्यानि ॥
वेनु वंश विग्यात जग ॥ जानैं सबही जानि ॥

छप्पय ॥

वाघवंश भूपाल भूमि भुजबल जिन्ह लीन्हें ॥
कीतिसिंहसुतनय सिंह विक्रम जिन्ह कीन्हो ॥
रामसिंह तपनिन्ह कृष्ण उद्योत गयो द्विज ॥
मावो सिंह महीप भयो तसुनन्द महाभुज ॥
तसुनन्दन जगत जहाज नृप हेमत सिंह तसुधर्मधुर ॥
श्री राम सिंह सुत तासु पुनि नीति निपुन जसु चन्द फुर ॥१०॥

दोहा ॥

पु अरु करेरो बहु पितु ॥ कृष्ण सिंह मात मान ॥
प्रेम सिंह दलेल को ॥ जिन्ह के सरिस न आन ॥११॥
परम पितामहुँ ते पिता ॥ राम सिंह रणधीर ॥
तिन्ह के पुत्र पवित्र भुवि ॥ सिंह दलेल गभीर ॥१२॥
करनी सिंह दलेल के ॥ वरनी जात न काहु ॥
धरनी तल में धन्य तम ॥ गुन गन सिंधु अगाह ॥१३॥
तिन्ह श्री पदुमन दास को ॥ दीन्हो बहु विधि दान ॥
मार्थान अवर सिहात हैं। निरपि जासु ननुमान ॥१४॥

२—कवि ने ग्रंथ के अन्त मे महाराज दलेल सिंह के पुत्र, जिनके लिए राजा ने ग्रंथ का अनुवाद कराया था, की ओर भी संकेत किया है.—

"भूपति सिंह दलेल के ॥ रुद्र सिंह जुवराज ॥
जिनकी जलगुजल गग अरु ॥ शभु शीश शीश छाज ॥२५८॥"

३—निम्नलिखित पदों मे कवि और उनके वंश तथा रचनाकाल का पता चलता है—

"दामोदर कायथ करन ॥ जिन्ह के धर्म प्रगाम ॥
चारि पुत्र तिन्ह के भयो ॥ जेठे मकर दास ॥१५॥
मध्यम पदुमन गुन गरुअ ॥ तथा लाज मनि जान ॥
अनुज कृष्ण मनि गुन-निते ॥ अग्रज उच अभिमान ॥१६॥
सत्रह सै अड़तीस जब सवत विक्रम राय ॥
सित पाचै मधु बुध दिवस ॥ रच्यो गनेस मनाइ ॥१७॥
(ग्रन्थसमाप्ति-काल) सत्रह सै छयासठि कै ॥
पुप पचमी सेत ॥ पदुमन लिखि पूरन कियो रुद्र सिंह के हेत ॥२५६॥

४—ग्रंथ की समाप्ति पर लिपिकार ने अपना परिचय देते हुए लिखा है —

"अक वरानिधि विधु सहित ॥ सवत विक्रम भूप ॥

फागुन शुक्ल पञ्चदशी ॥ रविवासर अनूप ॥१॥
मिसरी लाल विचार करि ॥ हित उपदेश विचित्र ॥
लिख्या चाव सों भाव करि ॥ है यह अग्नि पवित्र ॥२॥ १६१६॥
श्री सीतारामाय नमः ॥

१—इसमें सन्देह नहीं कि पद्मनदास एक महान् कवि थे। इतने बड़े पद्य-गद्य मय ग्रंथ का हिन्दी पद्यानुवाद करना साधारण बात नहीं है। इन्होंने पद्यानुवाद करते हुए पोथी की मौलिकता को समाप्त नहीं किया है अपितु उसमें और भी प्राण डाल दिये हैं। रचना अच्छी और सुपाठ्य है। इसमें कई नवीन एवं अप्रचलित छन्दों का भी प्रयोग किया गया है। ग्रंथ के प्रकाशन से बिहार का गौरव बढ़ेगा।

—ग्रंथ की लिपि अच्छी और स्पष्ट है। यह पोथी मन्नूलाल पुस्तकालय में भी है। वहाँ की प्रति से यह मिलती-जुलती है। मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के संस्थापक और संचालक श्री सूरज प्रसाद महानन्द की कृपा से प्राप्त।

[७३] (क) हनुमानबोध—ग्रंथकार—कबीरदास। लिपिकार—श्यालदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२। प्र० पृ० पं० लगभग ४। आकार— ×८। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण पंचमी रविवार सन् १२७८ साल।

प्रारंभ— सतसुकृत आप अन्नी अनर अमात पुरुषमुनिन्द्र करुना मैं कबीर सुरत जाग सतारन धनी प्रेमदास ॥
सुकृतमनी नाम सुरामनी नाम ॥ सुदरसन नाम कुल पतनामप्रबोध गुरवाला पीर (अस्पष्ट है पृष्ठ के कुछ अंश फटे हैं)
(२ पृष्ठों के बाद) माया॥ सुनासुनीद सार गात। ।राम नाम है आहा ॥
सो दसरथ घर अवतर ॥ जानकी सता अगाध
॥सुनीद्रवाच॥
कहै मुनींद्र बचन हमारी ॥ साधु भाव तुम सुनही जानी ॥
राम राम सम जगत कहाइ ॥ कहै साधु जन लाहा भाइ ॥
राम नाम हम नीके जाना ॥ तुम का हमसे करहु बखाना ॥
रमता राम सब सर मानी ॥ साहा राम तुम जानत नाही ॥
ऐह तो राम है अवतारा ॥ जीन लकापती रावन मारा ॥

अंत— जाती रूप वस्तु है सूपा ॥ नीरंजन है का आ माही ॥
माया करी क है छाही ॥ ररंकार गरज अहमदा ॥ सपतदीप प्रगटे नवदना ॥ प्रथम ॥ असथीर बसत सत घरबारा ॥ ताही को काइ चीन्हत नाही ॥ ताते सभ जग रहै भ्रमाइ ॥ ।

विषय— कबीर-साहित्य।

टि०— यह ग्रंथ अपूर्ण है। इसमें राम और हनुमान के जीवन-चरित्र के आधार पर कबीर के दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन किया गया है। यद्यपि ग्रंथकार का नाम स्पष्ट नहीं है, तथापि कई स्थानों पर पदों में 'कबीर' का नाम आने से उनकी ही रचना प्रतीत होती है। कहीं-कहीं 'मुनींद्र' नाम भी आया है। हो सकता है, इसी नाम के कोई ग्रंथकार या कबीरपंथी हों जिन्होंने स्वयं कबीर से वार्तालाप के द्वारा विचार व्यक्त किये हों। इस पोथी में 'काया' शरीर को 'माया' तथा शरीरस्थ आत्मा या परमात्मा को 'निरंजन' कह कर निर्गुण ब्रह्म की विवेचना स्थान स्थान पर की गई है, जिससे कबीर के सिद्धान्तों की पुष्टि होती है। यह भी संभव है कि 'मुनींद्र' से सनकादि मुनियों की ओर संकेत हो, क्योंकि ग्रंथ के प्रारंभ में सनकादि मुनियों की अवतारणा की गई है। प्रारंभ के तीन पृष्ठ फटे होने के कारण कुछ अंश ठीक से नहीं पढ़े जाते हैं। यह पोथी अनांगी गुरुध्यान प्रकाश तथा अगीगी गुरुशरण प्रकाश (स्व० कबीरी भानु प्रकाश द्वारा संगृहीत) अनीसाबाद, गर्दनीबाग (पटना) के सौजन्य से प्राप्त।

[२३] (ख) गोरख-गोष्ठी—ग्रंथकार— धर्मदास। लिपिकार—ज्ञानदास। अवस्था—अच्छी। हाथ का बना, देशी कागज। प्र० पृ० पं० लगभग—८०। आकार—६"×८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन कृष्ण पंचमी, रविवार, सन् १२७८ साल।

प्रारंभ—सतनाम सत सुकृत आदि अदली ।। अजर अमीत पुरुष मुनीदर करुनामय कबीर ।। सुरत जोग संतायन ।। धनी धर्मदास पारखुद वस आसीस की दया सो लीखते गरन्थ गोरख गुस्टी ।।

कबीरवाच ।। साषी ।। सतसत सत सब कोई कहै ।। सत ना चीन्हे कोऐ ।।
सत सरूप चीन्हे वीना ।।जीव सत जाही वीगोर ।।

चोपाई ।। सत वचन सुष अमृत वानी ।। सतही चीन्हावै सो गुरु ग्यानी ।।

अन्त०—साषी ।। मुनीगोरष सत मानी आ ।। छुटी गऐ भ्रमफंद ।।
गुरु कबीर समुझाई आ ।। मेटेवो सकल दुष दंड ।।
नवो नाथ चोरासी सीध्या ।। इन्हको अनहद ज्ञान ।।
अरथीर कर है कबीर को ।। ऐह गती वीरले जान ।।
अक्षरमे नीह अक्षर ।। नीह अक्षर मे नीजनान ।।
तीनो अक्षर जो परषै ।। पावै पद नीरवान ।।
सत कबीर की साषी ।। आदी पुरुष को ध्यान ।।
सीषा भई गोरष की ।। पा आपद नीरवान ।।

गनी दास गोरखनाथ को ॥ गुरुगम सपुरन ॥
जो देखा सो लिखा मम दोष ना दन ॥
सकल संत सज्जन को बंदगी मोरी दुरगम अछर पठा सव जोग ॥
श्वसन ध्यान नाम सुमिरन के दास ॥
शामक सनावामा तैयार हुआ ॥ अवरहा का हरापुर ना ॥
सन् ॥१२॥०८॥ सन ॥ फागुन वदी ॥ पचमी ॥ रोज ॥ रवीवार ॥

वि०— कबीर-साहित्य। धर्मदास और गोरखनाथ के बीच होनेवाले प्रश्नोत्तर के रूप में।

टि०— यह पोथी धर्मदास के साथ गोरखनाथ या किसी अन्य गोरखपंथी संत के साथ हुए वार्तालाप के रूप में लिखित है। ग्रंथ के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इसमें कबीरपंथ और गोरखपंथ की तुलना की गई है। इसमें चौरासी सिद्धियों तथा अनहद-नाद के ऊपर भी प्रकाश डाला गया है। ग्रंथ विचार्य एवं पठनीय है। ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। पृष्ठ यत्र तत्र फटे हैं। यह पोथी अघोरी गुरुशरण प्रकाश, अनाआबाद गन्नाबाग, (पन्ना) के सौजन्य से प्राप्त हुई।

[७०] (ग)—गरुड़बोध—ग्रंथकार—×। लिपिकार—वैरागीलाल दास। अवस्था—प्राचीन। दशा—कागज। पृष्ठ-सं० ३। प्र० ४ पं० लगभग—४। आकार—६ × ५। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ कृष्ण तृतीया बुधवार सं० १९३ वि ॥

प्रा०—चौपाई ॥ तबही गरुड़ जो बोलही बानी ॥ कवन देश बसता है ज्ञानी ॥
हम बासन है अमर के भाई। तीन की गति कौन नहीं पाई ॥
नाम लोक के ठाकुर आहीं ॥ ॥

अंत—साखी ॥ कहहीं कबीर धरमदास सों ॥ ऐही बोधी भव पार ॥
गरुड़ ध्यान जब कीना ॥ हरष बहुत भुआल ॥
धजा फरके सुन में ॥ बाजे अनहद तुर ॥

अधन ध्यान कबीर को ॥ गहो दरगा नाशान ॥
हीनाए हीने नहीं ॥ सागे सकल जहान ॥
ऐसा श्री ग्रंथ गरुड़बोध ॥ सपुरन ॥ जो देखा सो लीखा मम दोष न दीजन ॥ सकल साधु की बंदगी मोरी ॥ दुरगम सहज अधरपढ़ीहो सब जाई ॥ समत १९३० के साल ॥ महीना माघ ॥ रोज बुध ॥ साधी मीत्र ॥

वि०— कबीर-साहित्य।

टि०—१—ग्रंथ प्राचीन है। इसका लिपि अस्पष्ट है। पोथी में कबीर के सिद्धांतों का विशद विवेचना हुई है, ऐसा प्रतीत होता है।

२—ग्रन्थ के आरंभ या अन्त में ग्रन्थकार के नाम का उल्लेख नहीं है। प्रतीत होता है कि ग्रन्थ [illegible] का [illegible] है। ग्रन्थ में यत्र-तत्र इनका नाम आया है।

३—ग्रंथ लिपिकार ने अपने विषय में और अपने निवास-स्थान के विषय में निम्नलिखित शब्द लिखे हैं—"[illegible] ॥ [illegible] बरमपुर ॥ [illegible] चतुर्दशी [illegible] ॥ [illegible] के वैरागी लालदास के [illegible] लीला [illegible] सुन्दरदास [illegible] ॥" लिपिकार मुर्शिदाबाद जिले के ब्रह्मपुर [illegible] के किसी अखाड़े में (साधुओं के स्थान) रहते थे और ग्रंथ लिखकर अपने शिष्य 'सुन्दरदास' जी को दिया। यह ग्रंथ [illegible] गुरुशरण प्रसाद, [illegible], गर्दनीबाग (पटना) से प्राप्त हुआ।

[२३] (घ)—सुमीरन-दानलीला—ग्रन्थकार—× । लिपिकार—वैरागी लालदास । अवस्था—प्राचीन । देशी कागज । पृष्ठ-सं० ८ । प्र० पृ० ५० लगभग-८१ । आकार—६" × ८" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ— क—लीखते सुमिरन ॥ दया सागर ग्यान आगर ॥ [illegible]बुधीनत-गुरु ॥ तासुवचनसरोजवंदो ॥ सुखदाएक सुखसागरं ॥ जोग-जीतअजीतऊभर ॥ [illegible]तसतसुकरीत ॥

ख—श्रीगनेसाऐनमह ॥ श्रीसरोसतीजी सहाऐनमह ॥ श्रीसुरुजदेवताजी सहाऐनमह ॥ श्रीजगवरतीजीसहाऐनमह ॥ श्रीसीस्ताऐनमह ॥

चौपाई ॥—प्रभुपुरनब्रम्ह अखंडा ॥ [illegible]कोटीब्रह्मंडा ॥ [illegible]तगुरुब्रह्मकहो, ॥ मथुराते वीरदावन आऐ ॥ तहादेवलोगनभजेन ॥

अन्त—क—धरमदास तत जोली देखो। ततु मैनहितनु है ॥ कहै कबीर नीह-तत् दरसे ॥ आवागवन नेवारिऐ ॥

ख—कीरत घट बजाऐ आरती ॥ जोती वदन सबकरैं ॥ गीरजा प्रसाद पावै ॥ जनम जनम को दुख हरै ॥

जो नर गावही दानलीला ॥ सुनैमनचीतलाऐ हैं ॥ कोटीजगफल तवही पावै ॥ बीसनलोक सीधावही ॥ चौपाई ॥ ऐती श्रीपोथी दानलीला ॥ सपुरन ॥

[२३] (ङ) ज्ञानप्रकाश—ग्रंथकार-धर्मदास । लिपिकार—वैरागी लालदास । अवस्था-प्राचीन । हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-सं० ४८ ।प्र० पृ० ५० लगभग—८१ । आकार—६" × ८" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—फाल्गुकृष्ण चतुर्थी, रविवार, सवत् १९३२ वि० ।

प्रारम्भ—मननाममतसुकीत ॥ आद अदनी । अमर अमीत । पुरुष मुनीश्र ॥
कन्नमेकवीर मुरतओम ताज्न ॥
धनीअमदास ॥ चुरामनी नाम ॥ सुदरमन नाम ॥ वृत्तपति नाम ॥
पग्मोधगुरुवालापीर ॥ कवलनाम ॥ अनीलना ॥ सुरतसनेही नाम ॥
हकनाम । पाकनाम । प्रगटनाम ॥ साहेब नागगुरुममवामीसवीदमामा
लिवन ॥ श्रीगरथ ग्यान प्रगास ॥

॥चोपाइ॥

सतगुरुमतपुरुषमतानाम । मतपुरुष तसमुवधाम । मनमुकीत लोकनेरामी । ग्यनामी ।

अंत— मानी । गाधु ओसा चाहीये । अकाटु है । औगुन पर जो गुन करे । सागुन चाटु सुनै ॥
गुरु ओसा चहिये । नामीकम गर हाते ॥ जन्म जन्म की सुरचा । गुरचरन आलारैपाते ॥
चोपाई । ऐती गी गरथ ग्यान प्रगास ॥ धरमदास सबोधकथा । सपुरन । समापत । जा देखा सा लिखा ॥ ममनाम न दोसन । हस्तअक्षरमहर पत्तीदा मयनारा । सरजमतमहल-मावदरी मोरी ॥समत ॥ १६३२ ॥ फ गान महीना फागुन । क्रीस्न पक्ष तीथी चौथी । रोज आदतवार ॥

वि०— कबीर-साहित्य ।

टि०—१—इस पोथी में आरम्भ, चौपाई दोहा और छंदों में कबीरपंथ के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है । इसमें कबीर, सद्गुरु और धर्मदास के साथ कहीं 'उवाच' और कहीं 'वचनम्' कह कर लिखा गया है । प्रतीत होता है कि कबीर परंपरा के संत साधु धर्मदास कृत यह पोथी है ।

२—इसकी लिपि अस्पष्ट तथा प्राचीन है । लिपिकार ने अपना पूरा पता निम्नलिखित शब्दों में दिया है—
"सीता मसुनाबाद । कसुयान गुरुकीन्या महत ममलदास के अखाकमा ॥ बैरागी लालदास । मरफलीमीतेयारकीया । सेवक सुन्दरदासवादीका गामही ॥ (इससे स्पष्ट होता है कि लिपिकार जिला मुर्शिदाबाद डाका के निकट) किसी अखाड़े के साधु थे । लालदास लिपिकार ने इस पोथी को लिखकर सुन्दरदास को सौंपा । यह पोथी विवेच्य और अनुसंधान के योग्य है । विस्तृत विवेचना के पश्चात् संभव है कबीर साहित्य की अभिवृद्धि हो । यह पोथी अघोरी गुरुशरण प्रसाद अघीसावन, ग्रा नौडीहा, (पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[२४] दुर्गा प्रेमतरंगिनी—रचयिता—नरनारायण सिंह । लिपिकार— × । अवस्था—अच्छी । पृष्ठ-सं०—१०८ । प्र० पृ० पं० लगभग—३० । आकार—१०½"×८½" । भाषा—हिन्दी । लिपि-नागरी (कहीं-कहीं उर्दू) । रचनाकाल-सम्वत १८८७ वि० । लिपिकाल— ×

प्रारंभ०—१—तरङ्ग । अथ श्री पोथी "दुर्गा प्रेमतरंगिनी लिख्यते १ । श्री गणेशायनमः ॥ आरती । श्री दुर्गा जी की ।"
करन आरती दुर्गा जी की ॥ जड़ तिमिर हरन सबही की ॥
प्रथम आरती उग्रासुरारी ॥ गजमदन गंभीर तवारी ॥
जब मधुकैटभ मिलि आरति कीन्हा । जग प्रतिपाल करन हर लीन्हा ॥१॥
द्वितीय आरति ब्रह्म संचारे । मधुकैटभ न जन लखन प्रचारे ।
तजि निद्रा श्रीपति तेहि मारे । मधुकैटभ के प्रान उतारे ॥२॥
त्रितीय आरति शंकर साजैं । त्रिपुरासुर जबहन के गाजैं ।
चौथी आरति सुरपति कीन्हा । उग्रासुर बध को वर लीन्हा ॥३॥

अन्त०— गीत-देवी पद ।
ऋतु सावन हिमवन हिमनंदिनी रत गावैं गिरिनन्दिनी नवीन घन वन में ॥
चन्द्रमुखी बदन नागी रवि दुति ज्योति बागी भूषन वसन सब दमकि के तन में ॥१॥
बनमाहि डोलति सो बोलति मधुर बानी गावती बजावती मृदंग संग छन में ।
चुनरी कुसुम रंगी चपलनि की तरंगी । सुथी दामिनी गिरिनन्दिनीके तनमें ॥२॥
ल्याइके बैठाई रचि सुमन हिंडोले सुनि गोहिवर वनन तड़ित जिमि घनमें ।
हृदोंका हूलावनी सुनावती मधुर राग लखि अनुराग ते मगन नर मनमें ॥३॥
इति ३ तरङ्ग ॥

वि०— दुर्गा-सम्बन्धी भक्तिकाव्य ।

टि०—१—सम्पूर्ण पोथी १६६ पृष्ठो मे है । किन्तु 'दुर्गा प्रेमतरंगिनि' की पृ० सं० १०८ है । इस ग्रन्थ के अतिरिक्त नरनारायण सिंह एवं अन्य कवियों की रचित रचनाएँ भी हैं।

२—नरनारायण सिंह की निम्नलिखित अन्य कृतियाँ भी इसमें हैं—
क—दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र—पृ० १ से ७ तक ।
ख—शतनाम स्तोत्र—पृ० ७ से १२ तक ।
ग—दुर्गा नाम माहात्म्य—पृ० १३ से १६ तक ।
घ—दुर्गा नमस्कारादिस्तोत्र—पृ० १६ से २० तक ।
ङ—दुर्गा निवार स्तोत्र—पृ० २० से २२ तक ।
च—दुर्गास्तोत्र—पृ० २२ से २४ तक ।
छ—दुर्गानाम मालाष्टक—पृ० २४ से २६ तक ।
ज—दुर्गास्तव—पृ० २७ से २८ तक । इसमें 'कमल-बन्ध' है ।
झ—शिवपंचाक्षर स्तोत्र पृ० २८ से २६ तक ।

ग—रामपद्धर स्तोत्र—पृ० ६ से ■ तक।

ट—द्वादशाक्षर स्तोत्र—पृ० ० से ३१ तक।

ठ—गंगा स्तोत्र (उदाहरण नाम)—पृ० ३१ से ३३ तक।

(उपर्युक्त सभी रचनाएँ संस्कृत में हैं।)

ड—दुर्गानामाथ नामावली—पृ० ३४ से ३५ तक—इसके अंत में लिखा है "दुर्गा का नामा। नग निचिन किया प्रकाश। भैरव वेदहि मह समी सुम्बत माघहि मास ॥२८॥" अर्थात् सभी रचनाएँ (पोथियाँ) सं० १६४८वि० में या इससे पूर्व लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त इनकी निम्नलिखित अन्य रचनाएँ भी इस जिल्द में हैं—

ढ—छप्पै मध्यावरी यह रचना अच्छी है। उदाहरण—तरुन प्रमुख कहि कहत रंग कैसा पना का। वैदेही पितु कवन भूमि-सुत कहिअत काका॥ नासिक का का कहत कवन वाहन विधि माहै॥ का गिरजा का मातु शत्रु पाले कहिअत का है॥ आदि अंत दुइ परिहरा मध्यवरन में नाम है। कायस्थ वंश में है निपुन कवन पनेही नाम है—॥१॥ उपर्युक्त पदों में रेखांकित शब्दों का क्रमशः अर्थ या भाव है—जवान मुकुन जनक मंगल अनार, मराल मयना और कनक। इन शब्दों के मध्य वर्ण का मिलान से बाबू जगनारायण होता है जो ग्रन्थकार का नाम है। यह अंत पोथी के पृष्ठ-सं० ४४ में है।

ण—दोहावली—(१) इसमें दोहा कवित्त चित्र-काव्य के उदाहरण हैं। बीच में एक अध्याय ऐसी रचनाओं का है जिसका शीर्षक है—(श्यवहार पत्र) लेफ्टर। उसमें कायस्थ वंश का इतिहास भी है। इस ग्रंथ के प्रथम में ही पत्रिका नामावली नाम की भी एक रचना है। उसमें लिखा है—

स्वस्ति श्रीसवगुननिपुनगिरिजुतानंदभाद।

सकल कार्य कारिन चतुर बाबू महेन्द्रप्रसाद॥१॥

नारायन गुनसिन्धुगनपतिशुभअनुराग।

रत्न चकाभा चनगुरुजन्तुभगन्तक॥२॥

जगतहितकारी नरवत गुननर अभिमान।

अर्जुन लसक सकल मनोज दिनेश प्रभाव॥३॥

जगनारायन अस्तिरत स्वर रघुवीरदास।

कहि नाम बहुविनयगुनकारिदुर्गा गुनवाद॥४॥

इति कुशलप्रश्नमय सत्कार सुमन करैन।

चाहत सब मंगल कुशलपत्रपत्रअनन्तरैन॥५॥

आयो तव शुभपत्रिका फागुनयुत शनिवार।
पढ़त सुखद तन को भयो आनन्द देव अपार ॥६॥
सरजु पावन ते विमल आयो मीन "समाह"।
किंचित बरनन किन्ह कवी याञ्लोक मन्हार ॥७॥
'मीन' कहि जल थोड़ेहि घाते अधिक पियास।
तुलसी प्रीति सराहिए सुए मीन की आस ॥८॥
तेहि राखेव अति प्रेमते गादर हर्षवशाए।
लखि सूरत तव प्रीत की प्रेम हिये न समाए ॥९॥
जन्मपत्रिका तव सुभग निरखि परखि सब रीत।
लै सम्मत सब गणकसों निर्णय किहौं तुमप्रीत ॥१०॥
सौंपे निसदिन राखिये कृपादृष्टि अनुकूल।
भेजत रहिये पत्रिका कुशल सुमगल मूल ॥११॥"

इस 'पत्रिका' से जहाँ कवि की रचना-शैली का पता चलता है, वहाँ इनकी प्रतिभा तो परिलक्षित होती ही है, साथ ही यह भी प्रकट होता है कि इन्होंने जीवन के सभी क्षेत्र और व्यवहार में कविता को अधिक स्थान दिया था।

(२) यह पोथी तीस पृष्ठों में समाप्त है। दोहावली आरंभ होने के पूर्व विषय-सूची और कविताओं की सूची भी दे दी गई है। प्रारंभ में लिखा है—

"सारन में छपरा जिला बरड परगन जान।
ग्राम पट्टे ही बसतु हों गंगसमीप प्रधान ॥४॥
चित्रगुप्त के वंश मे श्रीवास्तव्य सुकाम।
है कायस्थ सुवश में 'नर नारायण' नाम ॥५॥
छन्द भग अनमिल वरन व्यर्थ उपमा होय।
कवि-कोविद तेहि क्रिपा करि शुद्ध बनावहु मोय ॥६॥
सम्वत् नखि ग्रह ग्रह वेद दिन दिनकर मिथुना जान।
कृपा देवगण से भयो . . . ।"

(३) कवि की यह कृति सं० १६४७ वि० की है। इस ग्रंथ में मुख, केश, भृकुटी, नयन, नासाबुलाक, अधर, दशन, हास्य, वाणी, भुजा, कटि, जंघ, चरन, पद-नख-शोभा, गति, तन, तन-सुगन्ध, भूषण, षोडश शृंगार, नख-सिख आदि के आधार पर भिन्न-भिन्न छन्दों मे वर्णनात्मक रचना की गई है।

(४) पुस्तिका की पृष्ठ-सं० २३, २४ और २५ मे चौपडबन्ध, डमरुबन्ध, और छत्रबन्ध की कविताएँ है। ग्रंथ मे दिये गये निर्देश से प्रतीत होता है कि इस प्रकार के चित्रात्मक बन्धपरक रचनाओं की कुल संख्या ५८ है।

(५) पृष्ठ-सं० २६ से व्यवस्था पत्र (लेक्चर) प्रारम्भ होता है। इसमें कायस्थ जाति और उसके विवाह तिलक तथा अन्य सामाजिक कृत्यों के सम्बन्ध में व्यवस्था दी गई है। जैसे—

श्लोक — 'अशुद्ध शुद्धता यानि शुद्धो भवति किल्विषी।
न च गया गया काशी जातिगंगा गरीयसी॥"

तथा दोहा (उपर्युक्त श्लोक का अनुवाद)—
होत अपावन पावनो पावन पापी जान।
नहिं गंगा काशी गया गंगा-जाति प्रधान॥"

दोहावली—यथा—व्यवस्था—

' प्रथम सुमिरि गणपति चरन गिरिजा पद धरि ध्यान।
समाचार मंगल कहौं कायथ जाति प्रमान॥
भये पितामह काय ते चित्रगुप्त गुणवान।
द्वादश सुत तिन्ह के भये जग मह विदित प्रधान॥
श्रीवास्तव्य बसिष्ट पुनि माथुर अरु सकसेन।
बर्ण सूर्यध्वज गौड कहि अपर निगम सुख देन॥
अरिष्ठन अम्बष्ठ अरु भटनागर कुलश्रेष्ठ।
ऐ द्वादश कायस्थ है ज्योतिष्ज्ञ तांत इष्ट॥
चतुर विचक्षण शास्त्रविद धर्मशील जयशील।
प्रगट व श्रीवास्तव्यकुल मुंशी प्यारेलाल।
पेषि दशा स्थान की मन में किया विचार।
ब्याह होसला के जलधि बुड़ सब संसार॥
खान्दान स्थान के कैत बहुत कुलान।
ब्याह समय अति सुचहि भये सकल धनहीन॥

इसी प्रकार इस व्यवस्था पत्र में विवाह-समस्या सम्बन्धी उपयोगी व्यवस्था दी गई है जो पठनीय है। इसके अन्त में संवत् कार्तिक कृष्ण एकादशी गुरुवार १६३० लिखा है।

(६) *वर्णी प्रेम तरंगिनि के प्रारम्भ होने के पूर्व प्रेम तरंगनी की व्याख्या के रूप में कुछ दोहे लिखे गये हैं जो पृष्ठ सं० १०१ में है। उस व्याख्या-भाग के अन्त में निम्नलिखित दोहा है जिसके विषय में कहा जाता है कि ये बाबू साहब ने मृत्यु के दो दिन पूर्व बनाया था—*

सम्वत् राशी ग्रह वेद निधि दिन कर मिथुना जान।
कृपा देव गुरु ते भयो शुभ समाप्त अनुमान॥ ५॥

इससे सिद्ध होता है कि इनका देहान्त १९४७ में मिथुन राशि के उपस्थित होने पर हुआ था। यह इनकी सबसे अन्तिम कृति प्रतीत होती है।

(३) इसमें कोई सन्देह नहीं कि विहार के इस गौरवशाली कवि की प्रतिभा विचित्र थी। इन्होंने न केवल संस्कृत और हिन्दी में ही पद्य-रचना की है, अपितु इनकी फारसी की भी रचनाएँ इस पोथी में हैं। कई स्थानों पर तो एक विषय को ही तीनों भाषाओं में, बड़े सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया गया है। यह ग्रंथ पठनीय और प्रकाशनीय है। ग्रंथाकार के वर्त्तों' के आधार पर की गई रचनाएँ अधिक द्रष्टव्य हैं।

(४) पृष्ठ-सं० ३२ में, इनके मथुरा जाने पर पंडा की वही में लिखी गई रचना है। पृ० ३३ में तम्बाकू के ऊपर लिखी गई एक कविता है। मथुरा के पंडे की वही वाली कविता सं० १९२८ में लिखी गई थी,जिसमें कवि के साथ ही परिवार के अन्य व्यक्तियों की भी चर्चा की गई है।

(५) ग्रंथ में कविवर नगनारायण सिंह के अतिरिक्त प्रान्त तथा विशेषत छपरा जिले के कई अन्य कवियों की भी कविताएँ हैं--जिसमें ग्रंथकर्त्ता की ही प्रशंसा की गई है। इससे प्रान्त के कतिपय कवियों, साहित्य-सेवियों के नाम, स्थान आदि का पता मालूम हो जाता है—(१) वंशावली तथा प्रशस्ति में, पृष्ठ सं० ३६—पं० प्रयागदत्त, (२)—पृ० सं०-३७ नावापार वसवली के पण्डित के आशीर्वाद, (३) रीठ ग्राम के छठु पण्डित की रचना। पृ० सं० ३८, (४)—पं० हृदयगुरु—इनकी रचना पृ० ३८ में है—

"सद्देशे सरकार सारणवरे जिल्लासुछपराह्वये।
परगन्ना वरई शुभा सुरसरित्सौम्ये हरित्कोशके।
तत्रास्ते नगरी वरा शिवकरी विद्वद्भिराकर्णिता।
कूजत्कोकिलकीरसारमधुपव्यू है पटेढी वृता ॥१॥
आस्ते तत्र सुधामभूपविलसत्कीर्तिश्रिया मण्डितो।
विद्याया कुशलो विवेकदिनकृत्सौजन्यरत्नाकर ॥
कायस्थानन्वगुं जगु जितमनु भ्रातरलंवाग्मो।
नीहाराद्रिसुतासरोजपदसंख्याता नगादिनृप ॥२॥

(५) मकौल के पं० राजमणि–पृ० ४० में। (६) पं० तिलक त्रिपाठी—ग्राम नरौली, थाना दरौली। (७) पं० यशोदानन्द जी, ग्राम-शीतलपुर, (सारन)। (८) पं० जनारदन जी, पटेढी पुरवासी। (९) पं० गणेशदत्त पाण्डेय, पण्डितपुरवासी। (१०) पं० रामचरित्र त्रिपाठी तकीपुर। (११) श्री बाबू अयाशरण जी। (१२)श्री बाबू अम्बिका शरण जी। (इन दोनों ने बाबू साहब के देहान्त के बाद इनकी प्रशस्ति में रचना की है—पृ० सं० ८३। (१३) बाबू रघुवीर दत्त जी, (१४) बाबू धनुषधारी प्रसाद सिंह। (१५) श्री फुल्लेश्वर बाबू, मोतीहारी (इन्होंने २१—७—१९७० को एक कुण्डलिया लिखी थी जो-पृ० सं० ५८ पर है)। (१६) श्री सुरेश्वरी शरण सिंह, गोपालपुर, भागलपुर (इन्होंने अधिक ज्येष्ठशुक्ल पञ्चमी रविवार सं० १९८० वि० को बाबू साहब की प्रशंसा में लिखा)। (१७) बाबू राजेन्द्र प्रसाद सिंह (ये सम्भवत कविवर नगनरायण सिंह जी के पुत्र थे। इनकी रचना 'चित्र काव्य' और 'दोहावली' के रूप में पृ० ५५ से ६० तक में है जो ११-११-१९१६ वि० की है। इन्होंने एक स्थान पर वर्णन करते हुए लिखा है—"गोरी नाइन पातरी लचकि

लक गात मान। नैनन चितवा चारती उरत उचकि भनि मौन ॥३॥ अधर लाल कु चित अलक गीरघ चख वरवाम। दमन दारि हँसि सैन कर चला जात नितधान ॥४॥ यहान 'परिसख्या अलकार' में छप्पै की रचना की है जो पृ २७ पर है। (१८) बाबू जानकी दास (१६) बाबू वृन्दावन बिहारी (२०) बाबू भुनेश्वर दत्त (२१) बाबू रघुवीर नारायणसिंह (२२) बाबू मगनप्रसादसिंह। इस प्रकार स्पष्ट ज्ञात होता है कि बाबू जगनारायणसिंह के साथ रावयों का एक विशाल परिवार रहता था, जो सदैव साहित्यिक चर्चा किया करता था।

श्री बाबू राजेंद्रप्रसाद सिंह भी हिन्दी संस्कृत और उर्दू फारसी में रचना करते थे—

(क) वनिता क ठुड्डी लस लागी तिल अभिराम।
मानो भँवरा कमल तन सम्पट किया विश्राम ॥१॥ (हिन्दी में)

(ख) अन्दर ने जनदाँ खाल गिलवर बा स्याम जे वदार।
हम चो अन्दर नीलाम्बर जम्बूर जे वद आवदार ॥२॥ (फारसी में)

(ग) रनम क ठुड्डी के भीतर सियाहा तिल क यों झलक॥
कमल क वर्ग भीतर में भवर रस लेन का ललक ॥३॥

पृ०स ७२। (उर्दू में)।

(६) पृ सं० ४७ से ४६ तक कवि की 'विरहिनी प्रश्नावली' नामक रचना दी हुई है जिसमें बुलबुल कबूतर आदि क माध्यम से कवि ने विरह वर्णन किया है जो मनोरम हृदय तथा प्रभावशाली है।

(७) इस ग्रथ की लिपि स्पष्ट है, किंतु प्रतीत होता है कि लिपिकार ने भिन्न भिन्न समय पर लिखा है अत लिपि तथा स्याही में भिन्नता है। ग्रथ में कवि की रचनाएँ—जीवनी प्रशस्ति-काव्य तथा विभिन्न बन्ध-क्रम-हीन और अस्त-व्यस्त रूप में है, अत पुस्तकाकार मुद्रण के पूर्व क्रम आदि ठीक करना उपयुक्त होगा।

यदि इस पोथी के आधार पर (ग्रथ में आये विभिन्न व्यक्तियों तथा कवियों की रचनाओं की) खोज की जाय, तो साहित्य की तो बहुत बड़ी सामग्री मिलेगी ही बिहार के साहित्यिक इतिहास के निर्माण में भी बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त होगा और बिहार के छपरा जिले से सम्बद्ध इन कवियों की एक विशाल परम्परा का पता लग सकेगा।

यह पोथी 'बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्' के मंत्री श्रीशिवपूजन सहाय के द्वारा प्राप्त हुई है।

[२५]—शिव-सागर—ग्रथकार—शिवनाथ दास। लिपिकार—×। अवस्था-अच्छी। प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ २३०। प्र पृ० प० लगभग ४। आकार— • × ६। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल—पौष शुक्ल पंचमी स १८५०।

प्रारंभ— "शतनाम ।। ग्रंथ शीवसागर । भाखल जीवनाथ दास फकीरद ।
प्रथमं ही वंदो शत पुरुख पुराना जाकर जाप करही भगवाना ।
तव पनु वंदो अलख जगदीशा । बीमल नाम मनी पात्रो पदमूला ।
ब्रमा विस्नु वदो गौरी महेशा वदो गनपति अवही गनेशा ।
वंदो राम कीशुन जगनाथा । भगतवछल भने ही सनाथा ।
बरनो श्रोशती जमुन मेंवु गगा । बनो अहीपती अरु पतगा ।।
वदो माता आदि जोती कै प्रना । जाकें शुरनर मुनी ध्यान धरेशा ।
अन्त— पुत्र पुत्री रहे मातु पीतु भरोशे ।। गाफील रहे शदैव नैंते ही पोशे ।।
दीशे हंमरन्ही रहीले आपुकें आशे रही दुरंतरन् भ्रान्ति कट रही पाशे ।
रहीहो चेत नीशती जुगती जो गही दुमती कुमती रही जीव्हो छेमशना ।
तेलपा शेवरा ऐक शनेही ताके नाउ, रानि वो प्रेम वोर छोर प्रशेवो पाउ ।
ग्रथ शपुरनं प्रेमगती भाखल जन शीवनाथ गहता शुनत कहंता पठे प्रेम शों
करींहि शाहब तेही शतगुरु के हाथा''' ।
छं० ' '''४८—भाखा पान ब्रम प्रमेशर शें रीझि कु भजे पूझा
कुंभ जोरिके शुजगंजनके भगती महीमा ग्यान वीराग वीवेक शी
गुंन शदैव देत त्रिप नैरके ' जोग जुगती शमाधी जगमें वीद्या
वेदकितेव शास्त्र मत्र ताहा शहारे । में जाके जाहा शीवत्रीथ व्रत मख
दान कीती शेवाशत ' जोगी मुनी ताहा दैही ' ' '।
सोरठा ।
फलचारी दैही कतार. अरथधरमकाममोत्तशो
हंश उतरि भवपार कर गही हश के लोक ने आवही
विषय— दर्शन—निर्गुणधारा ।
टिप्पणी–(१)–इस ग्रथ के निर्माता शिवनाथदास एक दरियापथी सन्त प्रतीत होते हैं। इन्होंने स्थान-स्थान पर सन्त दरियादास के नाम का स्मरण किया है तथा उनके प्रति श्रद्धापूर्ण विचार व्यक्त किये हैं—
'दरीया शाहबकर दाश में दरीआ मोर शतगुरु'
यह पद प्रारंभ की पहली साखी का है। पोथी के अन्त में भी कवि ने गुरु के सम्बन्ध में निम्न-लिखित विचार प्रकट किये हैं—
गरथ शपुरंन पत्रचारीशें भाखा
ताहीके छोट छोट हुरुफ .. ।।
जो देखा लीखा शो भाखा कही दीन्हा ।।
गुनगंमी नाम दीपक हीरें कीन्हा ।।
अभीलाख शास्त्र के शो शाहबे पुरावा ।।
(२)–ग्रन्थकार ने अपनी रचना में संत दरियासाहब के समान ही सत्-पुरुष, निरजन आदि के द्वारा निर्गुण साधना की स्थान-स्थान पर विवेचना की है। प्राय. इस

प्रकार का विवेचन गुरु और साहब के आपसी वार्तालाप के ढंग से दिया गया है। ग्रन्थ के स्थानों पर उक्त हिन्दी सैद्धान्तिक पक्ष की पुष्टि की गई है तब वहाँ 'गुरु वचन' पश्चात् 'साहब वचन' ऐसा लिखा है—

साहब के पारे का आग बनावे ॥
आग गुरुजीनीतु मार है आगजीनानादीरीय
नाग वीतु बीमी गुरुनी है आग वीतु रेखमानाच
सर्गमध्न गुरुनी आगराध बालामहानिरंजन
धारचीनीरगुरुशीसनार शारभेशगमनार्थगुनी जन
धरनामरा मारतनीय नय शीमनीराधीगुरनरन
आगमेंधीपरीषिमारनुड तागुनगमदापनपन

दोहा—
मननाम महनहाराय अमरलोक शा जनगए
गुना गुमन शीश है भाव भगतीआगे जगत र'

इस प्रकार याग के साथ नाम स्मरण की ओर संकेत करते हुए कवि ने लगभग ५ग ५ाइयों में याग की महिमा गाई है। यह उद्धरण पृ० ७३,७४ और ७५ का है।

ग्रंथ में साधु-गुना निजात्म प्रेम, धर्म अर्थ, काम और मोक्ष का विवेचन किया गया है। एक स्थान पर—

"शनगुनीर नीगुरु तानाहाद जम दारोहुनीपहीतअगगहर
नीगुनमीरजन गगुनआमगनी पागुनध्यान सीना दव
दशान्द मत शीध दान ।

(१) ग्रन्थ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। प्रतीत होता है लिपिकार और ग्रन्थकार दोनों एक ही हैं। लिपिकार ने ग्रन्थ में लिखा है—"सम्वत १८२० में ग्रन्थ गावनाथ सागर भावन लीगन भगत तलरा के मठ में साधु पुरा धरनी।

(२) ग्रन्थ में, आनुग और न्युरकरी भाषा का प्रयोग किया गया है। ग्रन्थकार का ५व नकल मा ए या जा भैंवय शरन जिले में है। भाषी अनुमित है। विचार स्पष्ट हैं और ग्रन्थ शैली की महत्वपूर्ण रचना प्रतीत होता है।

प्र० १ ॥ डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, उपनिदेशक, शिक्षा-विभाग (बिहार) के पत्र प्राप्त हु०।

[३६]—हनुमानजी —रचनाकार—१ धनन्य। लिपिकार—जगेश्वर। प्राप्यदा-मधी। हस्त लिखित ग्रन्थ देशी कागज। पृ० ४० । प्र० पृ० ५० लगभग—१८। आकार—५½ × ६"। भाषा—हि । लिपि—नागरी। रचना काल—×। लिपिकाल—सं ज इतना उनकी दनेवार। सं० १८६४वि०।

प्रारंभ—साहब श्री दया से लिपते श्री ग्रंथ हंसमुक्तावली ॥ गीतका छंद ॥
धर्मदासो वचन धर्मदास विनय करै ॥ विहसि गुरुपंकज गहे।
हो प्रभु होहु दयाल। दासचित्त अति देह ॥
आदनाम स्वरूप शोभा। प्रगट भाष सुनाइए।
मलदावन अनि सक्वर। कीट भृंग बनाइ पे ॥
सतगुरोवचनं ॥ आदनाम निह अक्षर अविगतनिजसारनू ॥
सो प्रगटे सुरूप सो हंस उवारनू ॥
मन गुरु चरन सरोज जेजनमन ध्यावहीं। सुगमरत दुपनासत अचलपरपावहीं।
महाकाल अहि दारननाम हैं पगपती। मयामोहतमपुंज दहन रवि ते अती ॥
गरलसुभावसोमनसर ॥ नाम पीउदनसुरामर नाम अमित विघ ॥

अन्त— धर्मदासोवचन ॥ हे प्रभु मैंउगत अत आमिकहीजीऐ ॥
निज किंकर यह जान दयामोहेमीजीऐ ॥
सतगुरोवचनं ॥ दीन्हेउतोहे अमें पद गत समजानेउ
ईढ्उग स्वय आनहिनिश्च अनुमानेउ ॥
छंद ॥३५॥ अनुमानहित टिटआमिका ॥ विविअग्र चालितसंभवा ॥
अपवर्गनेहे अविचलमई ॥
भव भेद गयदुहुस्रभवा ॥ नाउमापाअनंपजुय ॥ जेहि विननसोभापावही ॥
गज गिरजोकु सन्जलजउपजै ॥ अनतछविरहपावही ॥
नदी विन जल पौन विन वल ॥ चद विन जिमि जामनी ॥
तिमि नाद विननहिंवार सोभित ॥ ससुमकसमनि आमिनि ॥
ईढ्यामेंभवअभिमनसुतजनरपु गेवजावयउ ॥
ईनभक्तलीनअधीनता विन ॥ परम पद नहीं पावउ ॥

छंद ॥

तोहे देय दीन अधीन धर्मनीता हेतै मनराचेउ ॥नादवींद अधीनता जिन ॥
हंस सो फल चापेउ ॥ मानसरोवर हंस विहरत कमल सुधनिरनाल का ॥
सुगतमुक्तापरमहृक्ता ॥ दरसतेहि अननालका ॥
निसीदन प्रति मुक्तावली ॥ सुनके जो सादर गावही ॥
सतगुर कृपा परसाद अविचल ॥ अहै सुपदपावही ॥
परसत्र उतरतरनि दुहुतर ॥ सौलीनसुर्त जोराप है ॥
कामदिपलटलजीतके अपवर्ग अमित सोचाप हैं ॥
धर्मदास समोवनारस ॥ धर्म विक्त सुनावऊ ॥
वैरगलुविघीरंकजिमी ॥ मागन परसमनपावऊ ॥ जनमजन्म पातिकमिटै
गुरनाम विरद जोगाय है ॥ कहे कबीरपरचारतेहे ॥ आराम आतै पावहै ॥
ऐते श्री ग्रंथ हंसमुक्तावली ॥ संपूर्ण ॥ सुभमस्तु ॥ समाप्तं ॥

विषय—दर्शन—निर्गुण-साहित्य।

टि०– (१)–यह पुस्तिका कबीर साहब और धर्मदास के प्रश्नोत्तर के रूप में रचा गइ प्रतीत होती है। इसमें 'धर्मदासो वचनम्' से जीवन मुक्ति-नाद, बिंदु, ध्यान भक्ति विधि आदि विषयों पर प्रश्न किये गये हैं और सतगुरो वचनम्' से प्रश्न का समाधान किया गया है। ग्रन्थ सुपाठ्य और विवेच्य है।

(२)–ग्रन्थ की लिपि-शैली प्राचीन है। लिपिकार एक कबीरपंथी साधु हैं जिन्होंने सिंघोरी मठ में श्री श्रुतसनेही दास जी की आज्ञा से ग्रथ की लिपि की है। जैसा कि–अन्त में– ग्रथ हंससुक्तावलीसपूरण ॥ सुभमस्तु ॥ समाप्त ॥ समत १८५४ ॥ के साल ॥ महीना ॥ कुआर ॥ क्रस्नपक्ष ॥ तिथ द्वादसी ॥ वार सनीचर ॥ अस्थान सिंघोरी ॥ गोसाइ सुर्त सनही साहेब क हजूर में लिखा ॥ वैरागी परमे दास ॥ —लिखा है।

(३)–ग्रन्थ की समाप्ति के बाद पाताल पाजा और 'वशारली' नाम की पुस्तिका ६ पृष्ठों में है। इसमें कबीर के कुछ स्फुट पदों का सग्रह प्रतीत होता है। पुस्तिका अनीसाबाद (गदनीबाग, पन्ना) निवासी अखौरी गुरुशरणप्रकाश से प्राप्त हुइ है।

[२७]—शब्द— ग्रथकार—कबीरदास। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सख्या १२०। प्र० पृ० प लगभग २२। आकार—६" × ५$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ— प्रथम वचन रमैनी—अतरजोती सब्द ऐक नारी ॥
हरि ब्रह्मा ताक त्रीपुरारी ॥
तेत्री अनता ॥ काउन जानल आदि आ अता ऐक बीधाता कीन्हा ॥

अन्त— हम कुसेवक तुम प्रभु ग्याना ॥ तुइ मइ दास काही भगवाना ॥
हम चली अइली ताहर सरना। कतहु ना देखा हरी क चरना ॥
हम चली अइला तोहरे धामा। दास कबीर भल कइल नीरासा ॥११३
सब्द सपुरन हुआ—

विषय— कबीर-साहित्य।

टि०–(१)–इस पोथी में कबीरदास ने अपने सिद्धान्तों का विशद विवेचन किया है। ग्रन्थ पठनीय है।

(२)–ग्रन्थ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है।
यह ग्रन्थ अनीसाबाद (गदनीबाग पन्ना) निवासी अखौरी गुरुशरण प्रकाश से प्राप्त हुआ है।

[२८]—श्रीरामार्णव—ग्रथकार—कामदास। लिपिकार—शिवबोध तिवारी। अवस्था—प्राचीन जीर्ण-शीर्ण। पुराना देशी कागज। पृष्ठ-सख्या ३१०।

प्र० पृ० पं० लगभग–३६ । आकार १०"×६" । भाषा—हिन्दी । लिपि–नागरी । रचनाकाल–× । लिपिकाल–वैशाख, शुक्ल तृतीया, सं० १६५३ वि०, वृहस्पतिवार ।

दोहा ॥१॥

आरंभ— तन ए विहिन मलिन नृप जिमी सुमंत समुफाई ॥
ऐहि तरंग मोई वर्णिहो रिपी आगमण उपाई ॥

चौपाई ॥

वसै अवध दसरथ महिपाला । वरनि सकै को विभव विसाला ।
सरजु निर अवधपुर सोहु द्वादस जोजन आपनजोहु
विस्तर जो जगतिनि निहारी ।
वसहि तहा निर्मल नरनारि । जहा अपुनि तन कोऊ निहारे ।
नहि अवड नितविविधि विचारे ।
नहि असुर बाहुज तहा कोई । दया विना वैस्वन जोइ ।
सेवा विना सूद्र तहा नाही । कोस्त्र धर्म तनि पगुण धराही ।
अंसपन नहिकोऊ तेही माही । धनपति सधुलपितेन्द्र सव काही ।
कोउ न असुन्दर तेहि पुर जोहे । सवही विलोकि मारमण मोहे ।

छंद ॥

यण मोही मार निहारी सव कह रूप रानि प्रकाशि है ।
असतीन तहातिय देषि तिन्हके रूप पररति हानि है ।
गजवाजिवृंदविलोकिनिवरहरिहयलाजही ।
नहि गाई जातविभूतिअवध अकृतिसुपमा साजही ।

दोहा ॥

मत्र आठ महिप के दगितत्र सरसोई ।
राजकाज समुझहि सदा सपनेहु अवरन जोई ।

अन्त— निकसिनगरबाहरप्रभु आए । जनुघनतेंविधुउदयदेपाए ।
कोटिकलानिधिकीछविछाजहि । वामभागपुनिरमाविराजही ।
स्वेत सरोरुह सोहत हाथा । गमनकरत सोउरघुपति नाथा ।
शोण कुंजकरदछिणभागी । चलिभूमिदेविअनुरागि ।
शस्त्र सहित विधानधनुतीरा । चले संगधरि पुरुष शरीरा ।
वेद विवुधकरि द्विजवरदेहा । चले राम सगसहितसनेहा ।
वेद मातुजुत प्रण वसि धाई । गवने सनकादिक रिपीराई ।
महा भूमिधरवरेशरीरा । गवनहि राम सग धरिवीरा ॥

दोहा ॥

अंतहपुर नरनारी जो बालवृद्ध समुदाई ।
भरत शत्रुहन सहित सव रघुपति संग सिधाई ।

चौपाइ ॥११॥

लघु शालपुर क नगनारा। सकल रघुपति गतिधारी।
पुनेरानरूपवांकवारा। ... चेननमनमुदित सिधारा।
मुग्रिवह दे२ बानर भानू। चले उग मन मुदी विरान्नू।
अलवहितपुर महजाकोन। रघुपति सग चने सकाल।
निशाचर निकर सिधावहि सगा। किहे राम पर प्रेम अभगा।
आत चराचर जस नहि होइ। रहे अवध तजि रामहि जाइ।
सुत सजन परिवान अनहान। नहीं काल दीन दुर्यादेयरान।
नहिकाल्जनु अवधमहरहेन। सबहि राम सगचितचहेन॥

दोहा॥

गवनऊ आसन अद दमितहा लापसरतुनीर।
जग अरूप निजहियनिरखो प्रदिन मएरघुबार।

चौपाइ १२॥

तहि अवसर चतुरानन आये। अमित विमान गगन मह छाए।
अति प्रकाशमय भयउ अकासा। बहु सुरनायक सहन बलासा
हरषि विबुध प्रसुन झरि लावहि। करहि गान सुरनारीनचावही।
भरतु जल पदपरसि उदारा। तबहि पितामहविनय उचारा।
कहत जोरिकर कृपानिधानहि। पुरुष पुरान प्रभुहि हम जानहि।
आनद रुप एक अविनाशी। जगतपालपति वेदप्रकासी।
करिहपन्न ममविनय। सदा भक्तहितवेदबखाना।
करि अनुज निज देहनवेशा। शालहु अखिल भुवनममदेशा॥

दोहा॥

इमि भनि बहु विनय करि कीन्ह विरंची प्रनाम।
निज मन गवित करिउ प्रभु सुन भुवन सुधाम।

इति श्रीमद्रामचरित्रे रामपावनुकनपाप प्रशमन विमलविग्यानानन्दभक्ति-
प्रदायक ...रामहेश्वर सवादेममात्रवे रामप्रयाणवे २१ तरंग।

विषय— रामचरित्र-काव्य।

टि०—(१)-यह ग्रथ लगभग २०० वर्ष का प्राचीन है। ग्रथकार कालनाथ
ने यद्यपि अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा है, प्रत्येक तरंग के अंत
में केवल अपना नाम दे दिया है किन्तु ज्ञात होता है कि कालनाथ
मिरजापुर जिले के ...ड़ी नामक ग्राम के निवासी थे। यह ग्रथ पूर्वीय
रेल पथ के विन्ध्याचल स्टेशन से एक स्टेशन आगे पहाड़ा के करीब
...दाही स्टेशन के पश्चिम है।

(२)-ग्रथ और ग्रथकार के विषय में निम्नलिखित बातों का भी पता चला है—
... का एक लिपिका पात्र... है। ग्रंथ में अध्यात्म और

सुन्दरकाण्ड नहीं है। दोनों काण्ड क्रमश —पं० रामयत्न तिवारी और उसी ग्राम के एक साधु के पास है। ग्रंथ और ग्रंथकार के विषय में अन्य विशेष बातों का पता उसी ग्राम के एक जमीन्दार तथा पत्थर और कपड़े के व्यापारी ठाकुर राजधारी सिंह से चल सकता है।

(३)–पोथी में—बाल, अरण्य, किष्किन्धा, लंका और उत्तर—ये पाँच काण्ड है। इन काण्डों की पृष्ठ-संख्या उसी पोथी में ही पृथक् दी हुई है, जो क्रमश –८८, ३७, ४०, १२२ और ६५ है। लिपिकार ने इन काण्डों को भिन्न-भिन्न समय में लिखा है और सभी काण्डों के अन्त में लेखनकाल पृथक्-पृथक् दिया है, जो इस प्रकार है—

(क)–बालकाण्ड—(कथा-वस्तु की समाप्ति के पश्चात् कवि ने अपने विषय में लिखा है)—

छन्द ॥

निगमादि पाउनपार अति अविकार जन जागृत महा।
सतत सुहावण पतित पावन जानी जन श्यामहु कहा।
एह सियराम बिवाह अति उत्साह मंगल करन है।
गावत सुनत नरनारी जो ताके अमगल हरन है॥

दोहा ॥

गावत सुनत सप्रेम जो नर निती नेम निहारी।
वसत सदा ताके निकट अविचल अवधबिहारी।१३।
कलिमल हरण सरिर अति नहि लोप अपर उपजाइ।
एह रघुपति गुन सिधुमरु मज्जत उज्जलताइ।१४
वर्ण अलकृत छदरस कवित भेद बहु थाइ।
होनहि जानत एक उर सत्य राम गुन गाइ।१५।
अधम उधारण राम के गुण गावत अति साधु।
श्यामदास तजि त्रासतेहि उर अतर अपराधु।१६।
दिनबधु रघुबिर के बानु सकल जग जानु।
श्यामदास उर आस यह नहि उपाय कछु आनु।१७।

इति श्री मद्रामचरित्रे रामर्णवे सकल पाप प्रसमने विमल विज्ञानानन्य-भक्तिप्रदायके उमामहेस्वर सवादे प्रथमार्णवे अजोध्याभिनिवेशो नाम पचत्रिसस्तरग ३५ सोरठ १ दोहा १७ चौपाई १०४ छन्द ११ सब १३३ श्लोक ११ सोरठ ६६ दोहा ४२० चौपाई ३५६८ छन्द १०० सब ४२०० श्री समत १६५६ मीती माघ वदी ८ वार मगर लिपा सीवबोध तेवारी गाव अक्रोधपुर।

(ख)–अरण्यकाण्ड–(इसकी कथा 'शबरी' की वन्दना के साथ समाप्त होती है)।

दोहा ॥

करि एहि बिधि बिनति बिपुल जोग अगिन तनुजारा।
सेबरीरघुपतिभगतनल रघुपतिसरनसिधारा ॥
अधम जाति हरिमगतबल पाय मुक्ति जगजानु।
जो दरम कुल भगतहो तो करिकहाबखानु ॥
राम चरण सुरधेनुसम सवतमबक्रहमुषदानी।
रामदास निरवासकरि सुमिरहुध्यानन्खानी ॥

इति श्रीमद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमन बिमल विज्ञानानन्यभक्ति प्रदायक उमामहेस्वर सवादे तृतीयार्णवे सेबरी मोक्ष पावननाम नवमहतरंग ६ इति सपुण ॥ श्री समत १६६६ मीती फागुन बदी ६ लिखा सीन्बोध तेवारी वार बुध गाव अकोढी ॥ राम राम राम राम ॥

(३)—किष्किन्धा काण्ड—सोरठा। सकल सकमबयक बहु कलकलाला दुषद महावीर श्रुति अक रसना रमत बिलास तब।

दोहा ॥

एहकनिपारावारमह परानपावतपार।
रामराम गुन गावत बिनु प्रयास बिस्तार।

इति श्री मद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमन बिमल विज्ञानानन्य भक्ति प्रदायक उमामहेस्वर सवादे चतुर्थार्णवे समुद्रसतरणो निचपानामेकादसमस्तरंग ॥११ दोहा ॥ २०६ चौपाइ १२७६ छन्द २५ सोरठा ७६। इति श्री चतुर्थार्णवे बरनन समाप्तम शुभमस्तु समत १६५३ मीती बैसाष सुदी ३ बार बृहस्पति लिषा शिवबाध तेवारी साकीन अकोढी।

(४)—लंकाकाण्ड—पापपकतनलसितअतिनिपुणमसकलनसाइ।
राम रामचरितार्णव न्महमेभ अरहाइ।
बलि कानन अध ओघ अति बिकटकुमृग हसमातु।
हारे ज्ञा प्रनल सहे इतैध्यानबिरागकृपानु।
रामराम सुमिरन बिना देहन आवै काम।
इतै उतै सुष कतहु नहि जथाडापन कर दाम।
राम भजनन काम सुर उभय लोक आनद।
तात भजुमन मुद अब छोडी सकलप्रपंद।

इति श्रीमद्रामचरित्रे रामार्णवे सकलपापप्रशमन बिमलविज्ञानानन्य भक्तिप्रदायक उमामहेस्वरसंवादे षष्ठार्णवे रामराज्योपासमनो नाम द्वात्रिंशस्तरंग ॥३२॥ तरंग ॥ सोरठा ४४ दोहा ४२१ ॥ चौपाइ ४०६५ ॥ छन्द ११४ ॥ इति श्री षष्ठार्णवे बर्णनं समाप्तम् रामार्णव शास्त्र आनंदप्रापनम्। श्री समत १६६४ लिखा शिवबाध तेवारी जिला

मिरजापुर, थाना विन्ध्याचल, गाँव अकोढी, समत १९६८ मिती कुआर वदी १ वार इतवार।

(५)—उत्तरकाण्ड—(इस काण्ड की कुछ अन्तिम पंक्तियाँ प्रस्तुत ग्रंथ के परिचय के प्रारभ में 'अन्त' शीर्षक अवतरण में लिखी जा चुकी है, उसके वाद की अन्य अन्तिम पंक्तियाँ इस प्रकार है)—

रामदास पदपाई झामदास मृगपतिसूपनस्यारहिकाई
कहाचद्रमा गगन में कहा चकोर दीतीमाही।
झाम जोहि मे नेहरी तोहि तेड निकट देषाही राम राम
सम्वत् १९५८ मिती माघ वदी ८ वार शुक्रवार लिषा शिववोध तेवारी, गाँव अकोढी में।

इस प्रकार लिपिकार द्वारा सभी काण्डों के अन्त में दिये गये विवरण से कई बातों का सकेत मिलता है—

(क) किष्किन्धाकाण्ड के अन्त की—"महावीर श्रुति अरु रसना विलास तव"—पक्ति से ग्रंथ-रचनाकाल का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता है। प्रतीत होता है १४१६ कोई संवत् है, जब इसकी रचना की गई है। इसके अतिरिक्त (ख) उत्तरकाण्ड के अन्त में 'रामदास पदपाई झामदास' पंक्ति से इनके गुरु का नाम 'रामदास' था, ऐसा बोध होता है। सभी काण्डों के अन्त में दी गई—दोहे, चौपाइयों, सोरठों और छन्दों की—सूची भी विवेच्य है।

(४)—ग्रंथ की लिपि पुरानी, किन्तु स्पष्ट और सुन्दर है। लिपिकार का निवास-स्थान ग्रथकार के ही ग्राम में था। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है। इसमे श्री गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस की शैली का अनुकरण किया गया है। कथानक भी प्राय वैसा ही है। किन्तु ग्रथकार ने इस कथानक के वर्णन को कहीं-कहीं विस्तृत भी कर दिया है। कई स्थानों में ग्रथकार की स्वतन्त्र सूझ, विशिष्ट कल्पना और बोझिल वर्णन-शैली के रहने से प्रस्तुत ग्रन्थ में विशेषता आ गई है। संभव है, इस पोथी के अनुसधान से हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा मिले। यह ग्रन्थ श्री वागीश्वरी पुस्तकालय, उनवास, डाकघर—अन्दौर, शाहावाद से प्राप्त हुआ। (उक्त पुस्तकालय को यह ग्रन्थ २६ मई १९२९ रविवार को, श्री सर्वदानन्द सिंह (काशी) के सौजन्य से प्राप्त हुआ था। सिंह मोगलसराय से पूरव धीना रेलवे-स्टेशन के स्टेशन-मास्टर थे)।

[२६] श्री ब्रह्म-निरूपण—(सटीक) ग्रन्थकार—सत धर्मदास। टीकाकार—भजनदास। लिपिकार—मगलदास साधु। अवस्था—अच्छी, प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-स०—२२५। प्र० पृ० प० लगभग—२५। आकार—१२" × ८"।

भाषा—संस्कृत और हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×।
टीका-काल—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया गुरुवार सं० १९२३। लिपिकाल—
पौष शुक्ल चतुर्दशी सोमवार सं १९३२।

प्रारम्भ—(मूल) सतनाम ॥

सतनाम मुक्ति आदली अग अचित पुर्म मुनि ॥
दुकरनामे कबीर मुर्तजोग सतायन धनी धर्मदास ॥
मुक्ता मणि नाम ॥ सुदर्शन नाम कुलपति नाम ॥
प्रमोध गुरु बाला पीर ॥ कवल नाम ॥ अमोल नाम मुर्त सनेही नाम ॥
हक नाम पावक नाम ॥ प्रगट नाम ॥ साहेब चार गुरुवंश न्याम ॥
ब्रह्मनिरूपण नाम ॥
॥ ॐ नमाम्यादि ब्रह्म सर्व कारण कर्ण तथा ॥ तद्रूप ॥
सद्गुरु वन्दे कर्म रेषा प्रशान्तये ॥१॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
सद्गुरो पादपद्म ये निश ध्यायति मानवा ॥ नास्ति ॥
दुख भय तेषान्नाम सत्पुरुष नो तथा ॥२॥
परम पुरुषाय नमः सत्सुकृताय नमः ॥ दोहा ॥
आदि ब्रह्म सतपुरुष गुरु उरधर करके ध्यान।
बारबार बदन करूं दुष हर कर कल्यान ॥१॥
मगल रूप प्रकाश गुरु सत कबीर कृपाल।
बदो प्रथमारंभ में साहेब दीन दयाल ॥२॥
सत्सुकृत सुकृत करो भाषाकरण हमार।
विघ्न विनाश विनास फल मगल नाम तुमार ॥३॥
प्रगट नाम गुरु प्रगटहे सकल तारन हार।
धीरज धरम प्रकाश जग धीरज नाम जुसार ॥४॥
अंश बंस सत सतगुरु भये होय अरु आहि।
सबकू मेरी बंदगी बारबार करूं जा चाहि ॥५॥
ब्रह्म निरूपन ग्रंथ के संस्कृत श्लोक बिचारि।
भाषा सुगम बनाइके करत चहूं निरधारि ॥६।
आदिब्रह्म ॐनमामि० किं इत्यमादिब्रह्म० सर्वकारण० तथा करण ॥
तद्रूप सद्गुरु कर्म रेषा प्रशांतये० अग वंदे० इत्यन्वय ॥१॥ टीका ॥
अनंत रूप प्रकाशमान ऐसे सतपुरुष की प्रेरणा धर करिके अमरलोकते
आय कबीर साहेब ॥ जगत मे बांधू गढ़ नामक विषे धर्मदास प्रति शंसय
निवारणार्थ ब्रह्मनिरूपण संस्कृत भाषा करिके कहते भये ॥ तिनकी प्राकृत
भाषा करिके सुगम विचारणार्थ ॥ टीका ॥ यथा बुद्धि चार गुरुवंश
नियालिस की कृपा से कह देता हूँ ॥ आदि ब्रह्म ॐनमामि नाम आदि
ब्रह्म सत्पुरुष जो है तिनोकू मैं ॐकार सहित नमस्कार करता हूँ ॥

आशंका वे आदिब्रह्मतो अनादिकाल के स्वत सिद्ध है तिनोकूं आदि ब्रह्म क्यौं कहिये ॥ तहा कहेते है ॥ जा कालके विषे जगत की उत्पत भई ताके आदि प्रथम ब्रह्म है ताते आदिब्रह्म कहिये ॥ तिनोकूं मे ऊंकार सहित नमस्कार करता हूं ॥ यहा ऊंकार को क्या प्रयोजन है ॥ तहा कहते हे ॥ ऊंकार जो है सो अकार उकार मकार बिंदु अर्धमात्रा संयुक्त है ॥ वा मे स्थूल सूक्ष्मादि बहुत प्रकार के भेद है तिनो में से परापस्यंति मधिमा वैषरीवाचा चतुष्टय ग्रहण करिके नमस्कार करते हे ॥ वा पालन पोषन अर्थ ग्रहण करिके ग्रंथ आरंभ के लिए नमस्कार करते हें ॥ कि दृश्यमादिब्रह्म नाम वे आदिब्रह्म कैसे हें सर्वकारण नाम समग्र जगत के कारण रूपी हे ॥ आशंका ॥ कारण दो प्रकार के है ॥ निमित्त कारण—उपादान कारण ॥ जो कार्य सहवर्त्तमान रह्यो है सो उपादान कारण कहिये जैसे सुवर्ण के भूषण अरु मृतका के घट यह उपादान कारण कहिये ॥ अरु जो कार्य ते भिन्न रह्यो हे सो निमित्त कारण कहिये ॥ जैसे चक्र दंड कार्य करिके भिन्न है इनकूं निमित्त कारण कहिये ॥ ऐसे वे आदिब्रह्म जो है सो निमित्त कारण है वा उपादान कारण है तहा कहे हें वे आदिब्रह्म जो हे सो निमित्त कारण है तिनो की सत्ता रूपी निमित्त सें ॥ जगत रूप कार्य बन्यो है ॥ अरु आप जगत से भिन्न है ताते निमित्त कारण कहिये ॥ अरु माया उपादान कारण है सा कार्य सहवर्त-मानरहित है ताते उपादान कारण कहिये ॥ आशका ॥ ब्रह्म तो सर्व व्यापक है तिनोकूं भिन्न क्यौं कहिये ॥ तहा कहते हे ॥ वे आदिब्रह्म सत्पुरुष जो है सो सर्वलोकन तेऊर्द्ध अमरलोक के विषे विराज-मान है ताते भिन्न कहिये ॥ अरु तिनो की सत्ता जो हे सो सर्व व्यापक है ॥ जैसे सूर्य ऊपर आकास देस के विषे दृस्यमान है ॥ अरु प्रकाशरूप से सर्वव्यापक सत्ता है ऐसे वे पुरुष की सत्ता सर्वव्यापक है अरु आप भिन्न है ॥ ऐसे कारण रूप है ॥ तथा नामता प्रकार करिये करण नाम सर्व जगत के कारण रूप है ॥ जा करिके जो कार्य होवे ताकू करण कहिये ॥ ऐसे आद ब्रह्म सतपुरुष है ॥ तद्रूपं सद्गुरु नाम वे आदिब्रह्म सत्पुरुष जो है वोही रूप सद्गुरु है ॥ कैसे जा कालके विषे पुरसने कवीर साहेब कूं बुलाय के तिनकूं मूलमंत्र दियो है ता ते वेही सद्गुरु रूप है और कोई नहि है ॥ वे पुरस रूप सद्गुरु कूं कर्म रेषा प्रशातये नाम करे तिनकूं कर्म कहिये अरु कर्म की जो रेषा ताकूं कर्म रेषा कहिये अरु कर्म रेषा की जो प्रशाति तिनकू कर्म रेषा प्रशाति कहिये सो कर्मरेषा की प्रशाति के अर्थे ॥ ये समासा अर्थ भयो ॥ अब इनकू स्पष्ट करिके कहते हैं ॥ देषो जगत में अनेक प्रकार के नित्य-नैमित्य यज्ञायादि बर्णाश्रम के कर्म अनेक हें ॥ तथा गुरु विप्र बालस्त्री मित्रादि जीव-

इत्यादि पाप कर्म बहुत प्रकार के हैं तिनके फलभाग भावरूी रूप रेषा समग्र प्राणि मात्र के बुद्धि में परी है ॥ सो कर्म रेषा की अभाव रूप शान्ति के अर्थ अर्हवदे नाम मैं बदगी करता हूँ इत्यर्थ ॥

ये मानवा सद्गुरु पादपद्म अनिशय ध्याति तेषपा दुःख भय नास्ति च पुन ॥ तथा जन्ममृत्यु रचना इत्यर्थ ॥२॥ टीका ॥ ये मानवा जे निष्काम कर्म उपासना करिके प्राप्त भया ज्ञानाधिकार ऐसे जो मनुष्यों सो ॥ सद्गुरो पादपद्म नाम ये जो ब्रह्मस्वरूपाकार बोध रूप सद्गुरु है तिनके पादपद्म नाम चरणकमल जो है तिनकू अनिशा ध्यायंति नाम निरंतर ध्यान करे ॥ तथा वे मनुष्यों के दु:खभय नाम अनेक प्रकार के दुःख अनेक प्रकार के भय जो होय सो नास्ति हो जावे ॥ च पुन तथा तें प्रकार के जन्म मृत्यु नाम अनेक कीटपशु पक्षी जलजन्तु बहुत प्रकार की योनि के विषे जन्म लेना नहि प्राप्त होवे ॥ च पुन तथा मृत्यु नाम मरण काल के विषे अनेक प्रकार के व्याधिकृत दुःख रूप मृत्यु जो है सो नीके देता नहि होवे मिट जावे इत्यर्थ ॥

अथ तत—(मूल) ज्ञानध्यानविलाशकंहि सततं मायच पूर्णं गुरु ।
ओं ब्रह्म निरूपणं सुगुरु प्राचीनकं स्तोत्रकम् ॥
नत्वातत्कृपयामया भगवतीदासेन मशोधितं ।
शीघ्रं पाठविवादिनाच सुगमार्थस्यैवलाभा भवेत् ॥३७५॥

टीका ॥-हि निश्चय करिके ज्ञानध्यान विलाशकं नाम ज्ञान करिके अरु ध्यान करिके बिलाश करने वाले ऐसे अरु पुनि सततं नाम निरंतर माया नाम मायायुक्त ऐसे अरु पूर्णं नाम समग्र शुभ गुण से सम्पूर्ण भरे हुए ऐसे गुरु नाम गुरु जो है तिनोकू ॥ नत्वानाम नमन करिके बदगी करिके ॥ तत्कृपया नाम तिनोंकी कृपा करिके मयानाममैंने भगवती दासेन नाम-भगवती दासेन नाम-भगवती दासने इदनाम यह सुगुरु यदनाम वर्णन किया जो अच्छे प्रकार को मार्ग सुप तादृ देने वाले ऐसे ॥ अरु प्राचीनकं नाम बहुत कालका ऐसा ब्रह्म निरूपण स्तोत्र नाम ब्रह्म निरूपण स्तोत्र जो है याकू मशोधितं नाम अच्छे प्रकार से व्याकरण शास्त्र के प्रमाण से अक्षर अधिविभक्ति संयुक्त करिके शोधन किया है ॥ पाठविवादिना—नाम यह ग्रंथ का पाठ की है इच्छा जिनाकू तिनाकू सुगमार्थस्य नाम सुगमग्रंथ का हि निश्चय करिके ॥ शीघ्र नाम तत्काल लाभ भवत्नाम लाभ होवे ॥ इत्यर्थ ॥३७५॥

(मूल)—इति श्री सद्गुरु चित्त मुकरदुपदेश कलिमल विध्वशकं ॥ धर्मशास्त्र संबोधन सारमयं ब्रह्म निरूपण स्तोत्र सपूर्ण भवेत् ॥

(टीका)—इस प्रकार करिके सद्गुरु कबीर साहेब ने रचित किया ऐसो अरु मुक्ति का उपदेश याम ऐसा ॥ अरु कलिमल जो पापनिकू विध्वंस

नाम करने वाला ऐसो ।। अरु धर्मदास साहेब को अच्छे प्रकारको बोध है यामे ऐसो ।। अरु सार विचारको संग्रह कियो ऐसो यह ब्रह्म निरूपण स्तोत्र है सो सपूर्ण भयो ।।

विषय—दार्शनिक, कबीर-साहित्य ।

टिप्पणी—(१)—यह ग्रंथ कबीरदास के शिष्य धर्मदास की दार्शनिकता का परिचायक है । इसमें ग्रंथकार ने संक्षेप में और संस्कृत भाषा में ब्रह्म अर्थात् ईश्वर के सम्बन्ध में कबीरदास और उनके पथानुमोदित सिद्धान्त का विशद विवेचन किया है, साथ ही इस पोथी में स्थान-स्थान पर अपने पथ के लोगों को सामयिक तथा उचित उपदेश भी दिया है । ग्रथकार ने इसे एक स्तोत्र-ग्रंथ का रूप दिया है और इसके पाठ की अनिवार्यता में कई श्लोक लिखते हुए व्यक्त किया है कि यह ज्ञान उन्हें संत कबीर साहब से प्राप्त हुआ । सपूर्ण ग्रथ गुरुशिष्य-संवाद—कबीर साहब और धर्मदासजी के परस्पर वार्तालाप तथा प्रश्नोत्तर के रूप में है । ग्रथकार ग्रथपाठ की विशेषता में लिखते हैं—

"प्रसन्नेन मया दत्त चैतद्गुह्यतर परम् ।।
तुभ्यं सुखाधवेज्ञानं तज्ज्ञात्वात्व सुखी भव ।।३४८।।
पठनादेद्ग्रथस्य श्रवणाद्वा तथैवच ।।
निष्कामा प्राप्नुयुर्मुक्ति सकामास्तु फलानिवै ।।३४९।।
एक श्लोक तथा चार्द्ध पठति शुद्धमानसा ।।
जनास्तेपि सुखंचैव यान्ति मुक्तिंन संशय ।।३५०।।
एतस्य पठनादेव सर्वेविघ्नाः विनिश्चितम् ।।
नश्यतेच तथा रोगा लतानिस्फोटकादय ।।३५१।।
दैविका दैहिकाश्चैव भौतिका वा तथैवहि ।।
विनश्यति त्रयस्तापाश्चैतस्य पठनादपि ।।"३५२।।

इस प्रकार ग्रथ और ग्रथपाठ की विविध विशेषता और फल दिखाने के बाद ग्रथकार ने अन्त में ब्रह्मस्तुति करते हुए—

"नमोस्तुते त्वादि ब्रह्मन्सदैव श्रद्धाय बुद्धाय निर्मायिकाय ।।
ज्ञानस्वरूपाय तथा चयाय ... ... ह्यनंतकाय ।।३६८।।
नमोस्तु पुरुषाय निरञ्जनाय निष्कामरूपाय प्रशातमूर्तये ।।
तथाव्ययाय स्वजनोपकारिणे प्रभावाय च सत्यनाम्ने ।।३६९।।
नमोस्त्वदेहायह्यनादयेच सत्य चिदानद विलाशकाय... ...।।३७०।।
संकल्पभिन्नाय भद्रस्वरूपिणे सर्वोपसर्ज्जायनिस्तत्त्वव्यक्तये ।।
स्वत प्रकाशायच ह्य बुजाग्रे त्वज्ञानध्वंसाय नमोस्तुनित्यम् ।।३७१।।
ज्ञानोदयकरं ह्येतत् तथा च भक्तिवर्द्धकम् ।।
ब्रह्म निरूपण स्तोत्र कथित सारसग्रहम् ।।३७२।।

गुरुमूर्तीरात्तर्यस्य चेच्छिन्न मायुमगमम् ॥
तस्यैतद्दीयत ग्रंथ नाभक्तस्य कदाचन ॥३७३॥
प्रातरुत्थाय यो नित्य पठान भक्तिपूर्वकम् ॥
निश्चय गच्छत प्राणी सत्यलोक सनातनम् ॥३७४॥

आदि में ग्रंथमाहात्म्य लिखा है कि इस ग्रंथ को प्राप्त करने का अधिकार सभी को नहीं है अपितु जो गुरु के प्रति श्रद्धावान् है वही इससे लाभ उठा सकता है। ग्रंथकार ने अपने परिचय काल आदि के विषय में कहीं संभवतः कुछ भी नहीं लिखा है।

(२)–ग्रंथ के टीकाकार श्री भजनदासजी गुजरात देश के सूरत जिला के निवासी हैं। इन्होंने ग्रंथ के अन्त में अपने विषय में निम्नलिखित रूप में लिखा है—

"साक्षाद्ब्रह्म कबीर सत्पुरुषनामस्वरूप गुरु स्मरवा हृदनिशनिर्च रमखड्ग नद्लाकस्थितम् ॥ तस्यप्रेरणया मया भजनदासनस्फुरीतार्थिका श्रेष्ठा सत्यथ भाषिणी सुफलदा टीकाकृता भाषया ॥१॥ साधोमत दयानिधे प्रगन्नामाचार्य सन्गुरा वेदांतस्यहठस्यपचीकरण यायस्यशाख्यस्यवै ॥ ज्ञानध्यान परच भक्तिविविधा सवाभया वर्णिता अस्याशुद्धमशुद्धता भवतिचे वरक्षात्वाक्षमाकुरु ॥२॥ प्राकृतश्लोक ॥ आद ब्रह्म समान सद्गुरुमय शब्दार्थ दाता धनी तातया पद बोधिनी सुसरलाभाषा सुटीका बनी ॥ बारबारहि मोर भ्रातसहित साष्टांगहै यन्न यामेमेरिजु भूल चूक मनहीमाफाकरानंदन ॥३॥ इति श्री सद्गुरु पादपंकजरज भजनदास कृत पदबोधिनी ॥ प्राकृत भाषाया टीका समाप्ता ॥ सत्कबीरार्पण मस्तु सद्गुरु अर्पण मस्तु ॥

कवित्त ॥

गुजरात देशमाहि नग्र सूरत नाम वश
गुरु साहेब का प्राचीन कोधाम है॥
तामे गुरु अमरदासजी के सिष किसनदास
तिनाकी चाहत किया टीकाका काम है॥
गुरु लछमनदासजी को सिष है दासादास
भजनदास टीकाकृत बोलवे का नाम है॥
मोकू अभिमान नाही ज्ञानका विचार आही
सतन की दाया चाही और तन काम है॥

सोरठा ॥

एक नवहि दो तीन साल तिथि तृतिया गुरु ॥
ग्रंथ समापत कीन ज्येष्ठ मास शुध पक्ष में ॥

उपर्युक्त श्लोक में ग्रंथकार का स्थान, गुरु और टीकाकार का विषय स्पष्ट होता है। टीकाकार ने कहीं-कहीं भूल से टीका को दुरूह कर दिया है। टीका की भाषा 'सधुक्कड़ी' है और यत्र-तत्र संस्कृत के श्लोक को तथा उद्धरणों का भी प्रयोग किया गया है। टीका की शैली प्राचीन है। टीकाकार संस्कृत के अच्छे विद्वान् प्रतीत होते हैं, फिर भी, कहीं-कहीं व्याकरण की अशुद्धियाँ हैं।

(३)-ग्रंथ के लिपिकार मङ्गलदास भी क्षत्रि एवं कबीरपंथी साधु हैं। लिपिकार ने ग्रंथ के अंत में "इतिश्री ग्रंथ ब्रह्म निरूपण सटीक समाप्त ॥ सम्पूर्ण शुभमस्तु जसप्रत दृष्टितः लिखितं मम दोषो नदीयते ॥ संमत १६३२ के साल पूस सुद शुक्ल पक्ष चतुर्दशी पुनों ॥१४॥ सोमारवार के दिन सम्पूर्ण भवेत् ॥ दोहा ॥ टूटा जो कुछ होयगा मात्रा बिंदु विचार ॥ कर जोरी बिनती करों लीजो संत सुधार ॥ बैठक कसदीमध्ये प्रगट नाम साहेब का वास अस्थान तहा पर बैठ के लिपे हस्त अक्षर मङ्गलदास साधु ॥ श्लोक ॥ जादृश्य पुस्तकं दृष्ट्वा तादृश्य लिखितं मया ॥ यदि शुद्ध मशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥२॥ साषी ॥ बंदो पुरुष कबीर बदो पोडश अंसको ॥ बंदो परमातमधीर बंदो एकोत्तर बंस को ॥१॥ मेरी बुद्धि मलीन है शुद्ध लिपो नहि जाय ॥ वारवार बंदगी करूं लीजो अर्थ लगाय ॥१॥" इन दोहों में अपना परिचय दिया है। ग्रंथ में मूल मोटे अक्षरों में और टीका पतले अक्षरों में लिखित है।

(४)-यह पोथी अनुसंधेय और विवेच्य है। इसमें कबीर-दर्शन की समीक्षा की गई है। कबीर-दर्शन के सम्बन्ध में ग्रंथकार का अभिमत देखिए—पृष्ठ-सं० १३६।

मूल—सद्गुरुवाच ॥ ज्ञान योगेहठेचेदंनास्थित चचलं मन ॥
शिवादीना शुकादीना भ्रामयत्यनिशंचतत् ॥२५॥
गोरक्षमहम् कोपि नान्यज्ञाता जगत्यभूत् ॥
सोपिमनोवशीभूत्वा शापं दत्तौनरान्त्र हून् ॥२५३॥

टीका—सद्गुरुवाच ॥ ज्ञान योगेचपुन हठे इदं चंचल मन नास्थितं भवेत्। किंतु यत् शिवादीना च शुकादीना तत् अनिश भ्रामयति इत्यन्वय ॥२५२॥ टीका ॥ अत्र ता ब्रह्म को उत्तर जो है सो सद्गुरुकबीर साहेब वर्णन करिके कहते भये ॥ ज्ञान योगेनाम। स्थूल सूक्ष्मादि सहित अकार उकार मकार विंदु-अर्द्ध मात्रा को वर्णन करिके नि क्षर नामको भिन्नरूप-दरसायोताकूं ज्ञान योग कहिये। ताके विषे ॥ अरुहठनाम। यम नियमादि साधन सहित समाधिजो है ताकूं हठयोग कहिये ताके विषे ॥ इदंनाम। यह चंचल नाम श्रोत्रादिइन्द्रिय द्वारा करिके शब्दादिविषे ये के निरतर वृत्तिचलायमान होवे। किंतु नाम क्यों यत् नाम जो शिवा-

दानों नाम—शिव आदि सबै देव आ है निर्नोद् । अरु गुरुगीता नाम—गुरुदेव आदि जेपक सदसद् तुनि ना है जिन् । तर नाम मे मन आ है मा अभिनाम निलरं मानयति नाम—चढके चैत्रे दिरावता है ॥ [illegible] ॥२५७॥ नगति गारबन्ध जनमाना क अपि न अमृत ॥ [illegible] अपि मन वशीभूता बहून् नरान् शाप दमी इत्यत्र ॥२५३॥

॥ टीका ॥ [illegible] —यह जगत के विषे गारडबन्ध नाम गारुड भागी जा सबै हाक [illegible] बराबर ॥ [illegible] और [illegible] अपिनाम—रा, भी न अमृतनाम—नहि भया ह अपि नाम—जा मा यत नन वशीभूता नाम यह चचलमन जो है सन्तू समदायक ॥ बहून् नरान् नाम—बहुत नरनके शापनाम शाप जो है [illegible]—[illegible] नाम—दिये है—नाम ह धननादिया यह जगत के विषे गारुड के ध्यान और भागी काई भी नहिं भया न बहा गारुड भाना हुआ । परंतु गामा यतमन के बहुत के बहुत नानद् [illegible] अप शीघ्र गेया ये मन चचल है [illegible] है ।

यहाँ [illegible] न मन और उसके निग्रह के सम्बन्ध में विवचन किया है । यह ग्रंथ [illegible] ([illegible] पन्ना) के [illegible] हुआ ।

[३७] तुलसीमानसोपनिषद्—रचयिता—×। लिपिकार—×। पृष्ठ—८। प्र० पृ० पं० लगभग १०। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना देशी कागज। आकार—[illegible]। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—ॐ नमस्तुलस्यै ॥ अथ तुलसी [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥१॥
[illegible] ।
[illegible] ॥२॥
[illegible] ।
[illegible] ॥३॥
और [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] है [illegible] ॥१॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥२॥

अन्त०— अथ हैतामुपनिषदन्न परशिष्याय ब्रूयात् न नास्तिकाय नानृजवे नासूयवे न शठाय ना शान्ताय ना दान्ताय ना समाहिताय प्रब्रूयात् ज्येष्ठपुत्राय परा तामुपनिषदम्प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापन्नाशयति सायमधीयानो दिवसं कृत पापन्नाशयति स विष्णुलोकं गच्छति य एवं वेद य एवं वेद ॥ इत्यथर्ववेदीया तुलसीमालोपनिषद् संपूर्णा ॥

जो यह उपनिषद् परशिष्य को नहीं कहे नास्तिक को नहीं कहे निन्दक को नहीं कहे शठ को नहीं कहे अशान्त को नहीं कहे अदान्त को नहीं कहे असमाधान को नहीं कहे ज्येष्ठ पुत्र को कहे, यह उपनिषद् को प्रात काल अध्ययन करने वाले मनुष्य रात्रि का किया पाप को दूर करता है। जो सायकाल अध्ययन करनेवाले दिन का किया पाप को दूर करता है सो से पुरुष विष्णुलोक को प्राप्ति करता है जो यह जानता है सो ॥ इत्यथर्ववेदीया समापा तुलसीमालिकोपनिषद सम्पूर्णा ॥ शुभमस्तिरस्तु ।

विषय— धार्मिक-साहित्य। तुलसी माला से सम्बंधित स्तोत्र एवं माला जप-विधि।

टिप्पणी(१)—यह ग्रंथ तुलसी-वृक्ष की बनी माला के सम्बन्ध में है। ग्रंथकार ने 'अथर्ववेदीय' लिखकर ग्रंथ का गौरव बढाया है। ग्रंथ में, प्रारंभ करते हुए नारद आदि के परस्पर वार्तालाप की प्रसंग-चर्चा की गई है।

(२)—ग्रंथ में, मूल मोटे अक्षरों में और भाषा-टीका पतले अक्षरों में लिखी गई है। टीका की शैली पुरानी और कथा-शैली से मिलती-जुलती है। ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और प्राचीन है। लिपिकार ने 'ब' के लिए 'व' और 'व' के लिए 'व्' का प्रयोग किया है। इसी प्रकार य के लिए 'य' और य के लिए य् लिखा है। लिपि की यह शैली ग्रंथ की प्राचीनता सूचित करती है।

(३)—इस ग्रंथ के साथ ही एक और 'शख-चक्र-धारणे वैदिक प्रमाणानि' नामक तीन पृष्ठों का उपग्रंथ है। ये दोनों पुस्तिकाएँ वैष्णव आचार से सम्बन्ध रखती हैं। यह ग्रंथ केदारनाथ चौरसिया, (गया) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[३१] विचार-सागर—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ—१६७। प्र० पृ० पं० लगभग—२८। भाषा—हिन्दी। लिपि-नागरी। आकार—५¾"×६"। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—श्री गणेशायनम ॥ अथ वस्तुनिर्देशरूपमंगल ॥

दोहा ॥

जो सुखनित्यप्रकाशविभु ॥ नाम रूप आधार ॥
मति न लखै जिहि मति लखै ॥ सो मैं सुद्ध अपार ॥१॥

का प [illegible] स्वरूप मन ॥ नहीं विष्णु महेश ॥
सिद्धि रवि [illegible] बन्न बन ॥ [illegible] धनेश गणेश ॥२॥
[illegible] कृष्णु [illegible] धा ॥ द्विय धारा मुनि ध्यान ॥
[illegible] का [illegible] [illegible] ॥ मा [illegible] मान ॥३॥
[illegible] सिद्धि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] धरी माप ॥
[illegible] गुरुन [illegible] नहै ॥ [illegible] [illegible] आप ॥४॥
[illegible] [illegible] गुरानि ॥ मझल राम निष्काम ॥
[illegible] मता है [illegible] ॥ [illegible] [illegible] प्रनाम ॥५॥
[illegible] सिद्धान्त [illegible] ॥ जाम अति गंभीर ॥
[illegible] विचार सागर [illegible] ॥ पावै मुमुक्षु है धीर ॥६॥
[illegible] [illegible] प्रगट ॥ ग्रंथ बहुत गुरबानि ॥
[illegible] भाषा [illegible] ॥ [illegible] मति [illegible] अज्ञानि ॥७॥

टीका ॥

[illegible] सूत्र [illegible] उपनिषद् आदि नेक ॥ गुरबानि कहिये [illegible] ग्रंथ बहुत हो ॥ [illegible] प्राचन सैं मन्दबुद्धि पुरुषन कौं बोध होवै नहीं ॥ औ भाषा ग्रंथन सैं मन्दबुद्धि पुरुषन कूं विबोध होवै है ॥ यातैं भाषा ग्रंथ का [illegible] निष्फल नहीं ॥ किंतु संस्कृत ग्रंथन के विचारनै [illegible] जिनकि बुद्धि समर्थ नहीं है ॥ तिनके निमित्त ग्रंथ का आरंभ [illegible] है ॥८॥

दोहा ॥

[illegible] भाषा बहुत ॥ ग्रंथ [illegible] विख्यात ॥
[illegible] विचारसागर [illegible] ॥ नहि [illegible] [illegible] ॥८॥

[illegible] ॥

[illegible]— [illegible] [illegible] पैन मुनि ॥ [illegible] गुरु [illegible] ॥
[illegible] [illegible] यह [illegible] ॥ [illegible] मुख्य सिद्धांत ॥२३॥
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥२४॥
[illegible] [illegible] प्रारंभ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] यह ॥
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥२५॥

टीका ॥

[illegible] [illegible] [illegible] प्रारंभ [illegible] होवै है ॥ यह पूर्व [illegible] है ॥ [illegible] है ॥ और बहुत [illegible] [illegible] मिथ्या है [illegible] [illegible] ॥ [illegible] का यह [illegible] [illegible] ॥ [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] होवै नहीं करे [illegible] [illegible] [illegible] है ॥ [illegible] [illegible] [illegible]

के सत्वगुण का कार्ज कह्या है ॥ तथापि रजोगुण तमोगुण सहित सत्वगुण का कार्ज है ॥ केवल सत्वगुण का नही केवल सत्वगुण का कार्ज होवै तौ चलस्वभाव अंत करण का अंत करण का नही हुवा चाहिये ॥ तैसे राजसी वृत्ति काम क्रोधादिक ॥ औ मूढतादिक तामसी वृत्ति किसी अंत करण की नही हुई चाहिये । यातैं केवल सत्वगुण का अंत करण कार्य नही । किन्तु अप्रधान रजोगुण तमोगुण सहित ॥ प्रधान सत्वगुण वाले भूतनतैं अंत करण उपजे है । यातै अंत करण मैं तीन गुण रहै है ॥ सो तीन गुणकवीपुर्षन के जितनैं अंत करण है ॥ तिन मैं सम नहीं किन्तु नून अधिक है ॥ यातै गुणोन की नूनता अधिकता सै सर्व के विलक्षण स्वभाव है ॥ इस रीति सैं तीनू गुण का कार्य अंत करण है ॥ जितने अंत करण रहै उतनै रजोगुण का परिणामरूप इछा का अभाव बनै नही ॥ यातैं ज्ञानी कूं इछा होवै नहीं ताका यह अभिप्राय है ॥ अज्ञानी औज्ञानी दोनू कूं इछा तो समान होवे है ॥ परन्तु अज्ञानी तो इछादिक आत्मा के धर्म जानै है ॥ और ज्ञानी कूं जिस काल मै इछादिक होवै है तिस कालमैंवीआत्मा के धर्म इछादिकन कूं जानै नहीं किंतु काम, संकल्प सन्देह राग द्वेष श्रद्धा भय लज्जा इछादिक ॥ अंत करण के परिणाम है ॥ यातैं अंत करण के धर्म जानै है । इस रीति सैं इछादिक होवै वी हैं ॥ आत्मा के धर्म इछादिक ज्ञानीकूं प्रतीत होवै नहीं । या तै ज्ञानी मै इछाका अभाव कह्या है ॥ तैं सैं मनवानी तन सैं जो व्यवहार ज्ञानी करै ॥ सो सारा ज्ञानी कूं आत्मा में प्रतीत होवै नहीं ॥ किन्तु सारी क्रियामनवानीतनमें है ॥ औ आत्मा असग है यह ज्ञानी का निश्चै है ॥ यातैं सर्व व्यवहार कर्त्ता वीज्ञानी अकर्ता हैं ॥ इसी कारण तैं श्रुति मै यह कह्या हैं ॥ ज्ञान तैं उत्तर किये जो वर्तमान सरीर मै सुभ असुभ कर्म ॥ तिन कै फल पुण्य पाप का संबध होवै नही ॥ प्रारब्धवल तैं अज्ञानी की नाई सर्व व्यवहार और ताकी इछा संभवे है ॥ सुभ संतति नाम राजा कूं त्यागि कै तीनूं पुत्र निकसे ॥ तहाँ पुत्र की कथा कही अबपिता का प्रसंग कहै है ।

दोहा ॥

पुत्र गयेलाप गेहतैं पितुचित उपज्योपेद ॥
सूनो राजनतिनतज्यो ॥ नहिजथार्थ निर्वेद ॥२६॥

टीका ॥

पुत्र ग्रहतैं निकसे तब राजा कूं तीव्र वैराग्य कै अभाव तैं ॥ तिनके वियोग कादप हुवा तैं से मंदवैराग्यहु······ ।

टिप्पणी-(१)—यह ग्रंथ खण्डित है। पुष्पिका (अन्त) के पृष्ठ खण्डित होने के कारण ग्रन्थकार, लिपिकार, टीकाकार के सम्बन्ध में तथा इनके काल आदि किसी भी बातों का संकेत नहीं मिलता है। ग्रंथ के मध्य में भी यथासम्भव कोई परिचयात्मक संकेत नहीं दिया हुआ है। अतः नहीं कहा जा सकता कि इसके लेखक और लिपिकार कौन हैं और उनका समय क्या है?

(२) इस ग्रंथ में श्री दादू के निर्गुण ज्ञान की बड़ी सुन्दर तथा सारगर्भ विवेचना की गई है। ग्रंथकार ने दोहे और चौपाइयों में जिस भाषा का प्रयोग किया है वह खड़ीबोली भाषा कही जा सकती है। इसकी भाषा में स्थान-स्थान पर 'ब्रज' का और यत्र तत्र 'अवधी' का प्रभाव परिलक्षित होता है। जैसे—

जन्म मरन गमना गमन ॥ पुण्य पाप सुष पेद ॥ निजस्वरूप मैं भान है ॥ भ्रांति विपानी बन्द ॥१००॥ (पृष्ठ संख्या ६१) में 'भान है' और विपानी वे, ब्रज भाषा का शब्द है। और इसी प्रकार शिष्य कयो जो ताहि मैं ॥ सब वेद का सार ॥ लहै ताहि अनयासही ॥ सम्रतिनके अपार' ॥१२॥ (पृष्ठ-संख्या १२६) में कयो, 'ब्रज' का और तहि लहै आदि 'अवधी' का प्रतीत होता है। इससे ज्ञात होता है कि ग्रंथकार अवश्य अवध या ब्रज के निवासी हैं। टीकाकार ने भी प्राय: ऐसी भाषा का ही प्रयोग किया है। यातैं और 'ताकू' के प्रयोग का तो बाहुल्य है ही अन्य खड़ीबोली शब्दों का भी प्राचुर्य है।

पूरा ग्रंथ सात तरंगों में विभक्त है। तरंगों के अनुसार निम्न लिखित प्रतिपाद्य विषय हैं—(१) साधन और स्वरूप वर्णन (२) अनुबंध विग्रह निरूपणम् (३) गुरुशिष्यलक्षणम्, गुरुभक्तिप्रकारनिरूपणम्, (४) उत्तमाधिकारी उपदेश निरूपणम्, (५) वेदादि व्यावहारिक प्रतिपादन मध्यमाधिकारी साधन वर्णनम्, (६) गुरु वेदादि साधन मिथ्या वर्णनम्, (७) उत्तम महात्मक निष्ठाधिकारी वर्णनम् ॥

ग्रंथकार दादू मतानुयायी और दादू के परम शिष्यों में थे। इन्होंने ग्रंथ में यत्र तत्र गुरु शिष्य के रूप में अपने को दादू के साथ संकेत किया है। जैसे—दादू दिनदयाल अमृतसुखरसधाम। जामैं मति की गति नहीं माइ निरंजन दाम। तन मन धन वानी करथी जिही सेवत चितलाय सहज रूप सा आप हैं दादू सदा सहाय और 'ओंकार का अर्थ निर्णि मयाङ्गनाय अपि पहुँसुषहितरूप लिरि दादू काहूगदरि' में दादू दास के नाम की बार-बार चर्चा की है। यद्यपि ग्रंथकार के नाम की चर्चा न तो ग्रंथ के आदि में और न अन्त में हुई है किन्तु इन स्थलों में नाम मिले हैं जो अनुसन्धायकों के लिए विचार्य है। पृष्ठ ११

मे (जा मे मति की गति नहीं सोई निश्चलदास) और पृष्ठ १३० के सोरठे के अन्तिम चरण मे—('मंत्र को बनाइ जाल बन को विभाग कीन्ह करन प्रनामताहि निश्चल पुकारिकैं') दो बार 'निश्चल' नाम आया है जो रचयिता ग्रंथकार के नाम की ओर संकेत कर रहा है। ग्रन्थ मे, दोहे, चौपाई, सोरठे के अतिरिक्त इन्द्रवजा आदि छन्दों तथा दृष्टान्त, परिसंख्या आदि अलंकारों में रचना की गई है। पृ० सं० १३१ में अर्द्ध दोहा—'सतचित आनंदघनहूँ ब्रह्म अलख अभंग'—में रचना है।

(३) ग्रंथ की लिपि प्राचीन किन्तु स्पष्ट है। लिपिकार के सम्बन्ध में प्रारम्भ, मध्य या अन्त में कोई भी संकेत नहीं है। लिपि पत्थरों के अक्षरों की (लीथो) जैसी है। लिपिकार ने दीर्घ ऊकार की मात्रा को अक्षरों के नीचे न देकर बगल मे (अक्षर के बाद) दिया है।

(४) ग्रंथ की टीका अत्यधिक विस्तृत और जटिल है, किन्तु टीकाकार का श्रम श्लाघनीय है। मूल ग्रंथ को टीकाकार ने बहुत बढ़ा दिया है। ग्रंथ विवेच्य और पठनीय है। ग्रंथकर्ता का 'निश्चल दास' नाम भी नवीन-सा प्रतीत होता है। ग्रंथ की विवेचना के पश्चात् दादू पंथ के साहित्य पर नवीन प्रकाश पड़ सकता है। यह ग्रंथ अनीसाबाद, (गर्दनीबाग, पटना) निवासी अघोरी गुरुशरण प्रकाश के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[३२] शब्दावली—ग्रंथकार—कबीर साहब। लिपिकार—साधुप्रकाश अघोरी। अवस्था—अच्छी। पृ० १८६। प्र० पृ० पं० लगभग २०। आकार—६$\frac{1}{2}$" × ८$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

आरंभ—संतो गगन मंदिल लागि तारा ॥

खोलेंगे कोई संत जौहरी, कोटिन मद्ध विचारा ॥टेक॥
प्रथमहि सोहंग ध्यान लगावे, ताविच सुरत करे पैठारा।
तब आगे की संध दीजिए, ता भीतर निज रूप हमारा ॥१॥
मंदिर भीतर पुर्ष विराजे, कुल्फ तीन तहा अगम अपारा।
ताकी कुंजी गुरु गम माहीं ज्ञान ग्रंथ सो न्यारा ॥२॥
जुग भर जोग समाध लगावे, कोटिन करे विचारा।
पुर्स रूप कबहूं नहीं दरसे, जो गुरु मिलें न सारा ॥३॥
जब गुरु वहिया मिलें कृपानिध, निज का भेद सुधारा।
तबे हस को मारग सुझे, खोले कुलुफ केवारा ॥४॥

अन्त—रागदेवगन्धार ॥

मनुआ राम के व्योपारी अब के खेटाभरकती लादो वनीज कीयो ते भारी ॥
पाच चोर सदा सगरोके इनसे करतु छुटकारी ॥
सतगुरु नायक के संग मीली चलुलादस कैन हारी ॥

छाड़ गमार मारग माहीं मानेगे एक कनक एक नारी ॥
सावधान होइ पचन खड्यो रहा आप सम्भारी ॥
हरी के नगर जाइ पहुचोगे पइहो लाल अगारी ॥
चरनदास ताको समझावे राम न मीले रामवासी ॥

विषय— कबीर साहित्य ।

टिप्पणी–यह ग्रंथ कबीरदास धर्मदास और चरणदास प्रभृति संतों के शब्दों और साखियों का संग्रह प्रतीत होता है। यह कोई मौलिक ग्रंथ नहीं कहा जा सकता। अघोरी साधुप्रकाश ने अपने जीवन-काल में कबीर-सम्बन्धी भिन्न भिन्न पदों का एकत्र कर दिया है। इसमें कई पद प्रकाशित प्रतीत होते हैं। कबीर साहब के बाद एक परंपरा सी रही है कि कबीरपंथी साधुओं ने दार्शनिक पदों को रच कर अपनी ओर से उनमें कबीर साहब का नाम जोड़ दिया है। यह ग्रंथ भी उसी प्रकार का प्रतीत होता है। ग्रंथ में लिपिकार ने लिपिकाल का संकेत नहीं किया है। लिपि स्पष्ट और सुन्दर है। यह ग्रंथ अनीसाबाद (गर्दनीबाग पटना) निवासी अघोरी गुरुशरण प्रकाश के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[३२] कबीर भानुप्रकाश—ग्रंथकार— परमानन्द दास । लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन-जीर्ण शीर्ण। पृष्ठ—८४२। प्र पृ प लगभग—२१। आकार—६ × ६¾ । भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी सं० १६१५ वि । लिपिकाल—सं० १६३६ वि १८८३ ई ।

प्रारंभ— ॐ सत्तनाम। अथ लिख्यते ग्रंथ श्री कबीर भान प्रकाश प्रथम पूर्वार्ध भाग जम्बूद्वीप भरथ खंड का सर्व राजी धर्मानि कथा मनन कबीर भानु अरत सध्या वदन छं, सिखरणी।

कबीरभानभास्करनिकरज्ञानविधिमय
परम्धान धीरनगत गुरपीर निधिजय
महानेजोराम अम्नतदनाम नृप कृपा
प्रताप तापता दमुनै दलन्पतम कृपा १
तरत तारन लहततनमार बसुमती
महरव धारत अनधिन अननपसुवती
गुराधीस धीर ह्यितिमिपीमजयन्ये
भन माव भगरतिरकदनामय पमपगे २
नकतर नर म प्रमभन्धतहित
निहार हारहानिमिरहरपारगतत्रिन
सनीगुलसान निजग निलगान दिनकर

जती भोगं भागंगत विगतभागं क्रिनकरा ३
प्रजा पीढा ब्रीडाघनतिमिर क्रीडामहिमहाहते
मुद्रानिद्रा समदमन च्युद्रागतिगहा
सतो संगरगुवसतप्रसंगभसकरा
उमगं अंगं ये कममस अनंगं तसकरा ४
नमस्कारंकारं क्रमरक्रमकारंकक्रुते
ववंवंदेवंदेभनत भवफंदेवचवृते
रमं रामंरम्यं ररतररकल्यान करनं
प्रनम्यंतौपीष्टे परमपरमीष्टेश्वरनं
इति सिखरनीछ्द

अथ कबीर भान वियोग सवैया—
सत नाम अतीवरसंतमती दिन अंत भयेभगवंत पयाना
जगनैन महा सुख दैनदुरे वरिवीर वरोपदपकजध्याना
दृढ इंद्रिनदौन तेमोनगहो थिर आसन हो अनुसासन माना
यहिस विसचेत-मतो गुनते मतधारहि ये सत रूप समाना १"

अन्त— जिनकी नेह नाथ चरणन की औंर उपायन विसरणन की
लाज करे अपने परणन की दीन देखिदेनिजुपुरवासा ५
आगति हंस अमरपुर गाये इच्छा मूल अकूर सुभाये
सहज सोहंग अचित पै आये अक्षरहू वने जाको दासा ६
सुरनर प्रभु आरति कीने धर्मदास गरतीन सहींत
गावैं संत महंतमग्रीते परमानन्दविती जमत्रासा ७ इति आरती ॥

विषय— कबीर-साहित्य ।

टिप्पणी— यह ग्रन्थ कबीर साहब के विचारों का एक लघु संग्रह तो है ही, साथ ही ग्रन्थकार ने इसमें अपने मौलिक विचार भी दिये है। जहाँ कबीर के दार्शनिक पक्ष की उत्तम विवेचना की गई है, वहाँ ईसाई, मुहम्मदी, कादियानी, स्मार्त्त, शाक्त, शैव, वैष्णव, वाममार्गी आदि विभिन्न धर्मों और विचारों की भी परिचयात्मक आलोचना की गई है। ग्रंथ विवेच्य और पठनीय है। ग्रथकार ने ग्रथ के अन्त में लिखा है—

सत गुरु की दायामय पूरी लिख्यौ धर्म जो भूतल भूरी
रच्योंजोतिबुधि यहुवा हुलासा ग्रथ कबीर भानु प्रकाशा
पंडित जनसे विनय हमारी भूलचूक जौकतहु निहारी
टूटै अक्षर जह लखिपाई सो सुधारि कै पढै बनाई

इसमें ग्रथकार ने, 'लिख्यौ धर्म जो भूतल भूरी' कहकर स्वयमेव समस्त धर्मो के परिचय के सम्बन्ध मे ग्रथ का अभिप्राय व्यक्त किया है। ग्रंथ में स्थान-स्थान पर कबीर, बुल्लाशाह प्रभृति विद्वानों तथा

यागवाशिष्ठ, वेदान्त,-दर्शन न्याय दर्शन आदि की उक्तियों को साक्षी रूप में रखकर अपने मन्तव्य की पुष्टि की गई है।
जैसे—पृष्ठ-सं० १८४ देखिए—

'भक्त कबीर वचन साखी — कबीर कबीर तु क्या करो साधो आपन शरीर
पाचो इन्द्री वश करो तुमहीदासकबीर०

बुल्लेशाह वचन०— काम क्रोध लोममोह हजार पर्दों कलवानुदामार
दन्हा करनी है बदला बुल्ला आपे अल्ल हा,

रामानंद वचन (पृष्ठ स -१७२)—पढि पढि रान गुनि गुनिमति हृदया मुद्दन होद०
जबूर में अंकब के रतात में— चतुरन की चतुरा० को प्रभु मिथ्या करतार
ानुमनोरथ निनु करन त सके न कबहु सवार
विद्वन का चातुरी में चाखत सदा पसाय
टेटे तिरछे लोग मत प्रिर की बल उलगाय"

ग्रंथकार ने ग्रंथ के अ त में ग्रंथ और अपने विषय में लिखा है—
'सम्वत उनिस सौ पैंतीसा शुक्ला यकादशी तिथि दीसा
मगल अह ज्येष्ठ महीना तादिन ग्रंथ समापित कीना
महि पंजाब देश के मांगी शहर सिरोमपुर यक आही
ममसुकतसरतहयक अहई दादा ग्राम निकसतहिकहई
ताहि ग्राम में जब आगीना भजनध्याग प्रभु के लालीना
ग्रंथ रचन गुर आना पा लिरा रच धर्म रगा समुझाइ
नन अखर लिखे बनाइ जा काइ घटि बढि नाहि मिनाई
सागुर सन्मुख लेखा भरिहे भिन्य भन ना काइ करिहे इति

ग्रंथ की लिपि पंजरों के अक्षरों (प्राचीन लीया) का प्रतीत हाती है। लिपि स्पष्ट है। यह ग्रंथ अनीसाबा (गन्नीराम, पन्ना) निवासी अघोरी गुरुशरण प्रकाशना के सौजन्य स प्राप्त हुआ।

[३८] राममाला—ग्रंथकार—कशवानन्द गिरि। लिपिकार—लक्ष्मण तिवारी। अन्य स्था—क्ष्ट्छा, प्राचीन-देशी कागज। पृष्ठ-१४। प्र० पृ० प० लगभग-२८। आकार-८ × ६ ½। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल— सं० १९४६ वि

प्रारंभ— चूचराना तिनूलसोम १ मगनवामीमाम ॥ इ उ ए आ वा वि वु व वा ॥ उप राव क नि गु घ ल ६ क को ह मि गुन ही हु हे हा टा टी डु उ हा र र म मि मु म मा ग गी ढु ठ मिह डीपपीपुवणठपपो कया रहिरनरानातीनून तुना ७ ता ना निनु न ना जानिनु गरवक ८ नचामभिमुनुठभ धन ८ भानर्नी बीपु पया गाग मकर १० गुग गाशा मगुशेशा कु भ ११ दियक ना न ा चची मीन १२ अथ प्रथमे मघगाम वर्णन।

॥ दोहा ॥

मेषराशिहै जाहि कितारु मीठ सुभाव

अन्तर झूठ फरेब बहु बाहर कपट बनाव ८

अन्त— सुनो नवे वृश्चिक का हाल। सफर करैं बहुमाल न पावै।
खर्च खाय खालि घर आवै। दसंमे धन जुबो करी करै॥
तहनुकसान उठाना परैं॥ एकादशे मकर का भेद।
मंनकि पुजें सकल उमेद। द्वादस कुभ जो वैठे पास
सो दुश्मनी करैगा खास। मुख पर करैं खुशामद तेरो समान ठीक मे ॥पतीतखरो॥
बुडत ही मझधार मिंतु भव जल ते वेड़ा पार करो॥
कर्म प्रधान विश्व मे जो ता कृपा करो यह अर्ज कहौं॥
तु मे कर्म नाशावैं है॥ अपकर्म कर्म सर्व तुमी गहो।
जो करनी जोकी सोई भेगें तों एक नाम निहोर सुनी।
मे तो हहौ अवधुत सन्यासी सुभ औ सुभ न एक शुनो॥
इति श्री योतिषसार निर्णय भाषा छन्द में राशि माला बनाइ।
कशवानन्द गीरी सन्यासी अवधूत मे ठिकाना वशी गेवी॥ शुभमस्तु

विषय—ज्योतिष्-शास्त्र।

टिप्पणी-(१)-ज्योतिष-शास्त्र से सम्बन्धित दोहा, चौपाई और सोरठा में लिखित यह ग्रंथ बड़ा ही अच्छा है। इस ग्रंथ मे सभी राशियों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त उनके फलाफल, राशियों का एक-दूसरे से अन्योन्य-सम्बन्ध, राशिस्वामी का प्रभाव तथा राशि के द्वारा होनेवाली विपत्तियों के निराकरण का समुचित समाधान अत्यन्त संक्षेप में किया है। रचना सरल और पठनीय है।

(२) ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। लिपिकार देवली के निवासी हैं। जैसा कि 'शम्वत १६४६ मे पुस्तक लीपीतं लछुमन तिवारी देवली ।' लिखा है। लिपिकार ने सर्वत्र 'ख' के लिए 'ष' और 'ज' के लिए 'य' का प्रयोग किया है। 'ट' की आकृति 'ठ' जैसी है। 'स' के लिए 'श' का व्यत्यय तो प्राय. संपूर्ण ग्रंथ में है। यह ग्रंथ शकरवार टोला, मोकामा-निवासी केशवप्रसाद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[३५] ज्ञानरतन—ग्रंथकार—दरियासाहब। लिपिकार—बालकदास। अवस्था—अच्छी, पुराना, मोटा देशी कागज। पृष्ठ—१०८। प्र० पृ० पं० लगभग—४०। आकार—६" × ६½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—अगहन शुक्ल, पचमी सन् १२१६ साल।

आरंभ—सतनाम। गरथ ग्यान रतन भाखल दरीआसाहब सतगुर सुकीतबक उबारन साहब बदीओर प्रुखपुरान साहब जींदा साहब प्रुखपुरान साहब ग्यानरतनमनीमगल वीमलसुधानीजुनाम करोत्रौवेकरीचारी के जाये अमरपुरधाम

वीमलनाममनामरनग्गीरा वीनावीरे अमसमपाका
नारगीनामभीतुरे मम्मता कार्गमम्लीमगलहता

अंत— छंद नाराच। हानुमग्रागरशमगुनगागर नीगर्ताशभावरी
शातपनालही जवाहीनमनीनहा ग्रनी जलमेनमे
कालवीमनमर्ते शतमन को पीरी करनी
हारीग्रामनमेवीवीचारा कम जीमीशालीमुगजसद्दामग्नी ॥
शोरटा। नराथ नीष लमा नामवीमलगुनवीमन है
समुझीपकरीऐबाही मवनालीगुरज्ञानग्रह

विषय—निर्गुण दर्शन।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्रसिद्ध संत दरियासाहब का है। इसमें श्री दरियासाहब के दार्शनिक विचारों का संग्रह है। ग्रंथ के लिपिकार बालकृष्णदासजी ने ग्रंथ के अंत में दरियापंथ के अन्य अनेक साधुओं के नाम तथा परिचय देते हुए लिखा है—'गरथ नपुरन लीगलभअल ग्यानरतन सतगुरुदरीआसान जो मालनहो भारानवालरीरनदास श्रीग्रामादन के फकीर अपना दसतका साहवदभइल साहब का सलाम पम्नेदस्तनारीपरा मीती अगहनसुदीपचमी सुमनीन बुध के पुरनगरथमइल। गगादास की हार ।' इससे दरियासाहब के बाद उनके दो शिष्य बालकृष्णदास और गंगादासजी का पता चलता है।
यह ग्रंथ गीवान मुहल्ला (तुलसीघाट परनामिरी)—निवासी मोतीलालजी आर्य के द्वारा प्राप्त हुआ।

[३६] आत्म प्रबोध—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—जीर्ण शीर्ण प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं —६८। प्र पृ प लगभग २४। आकार—, ˈ×१० । भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

प्रारंभ—गुरुदेव की सत्ता द्वारा सोसागर में राम आत्मा को चाहता है। सो इस आत्मा आपणो आप प्रसिद्ध की वेदने भी उपमा भारी कही है ॥ सो अब आत्मा हमको भूल गया है ॥ सो तीसकी ग्यानवासतेमत न कीया चहता है। शिष्योवाच। हे गुरो आगे प्राथने यह कहा था ॥ जो राम आत्मासुख तुरीया है सोए तेरा स्वरूप है ॥ सो अब जिस प्रकार इस अपणे आप सुखस्वरूप को जाणे। सोई प्रकार आप निपा जणाईये। श्री गुरोवाच। हे शिष्य जो तुम्हारा आप सुखस्वरूप है सो जिसका तुम ऐसा भूला है। तीन इस्थानो विषे आयके। सो जिस प्रकार इनिने तुमको जीवभावविषे कीया है सेंमण ॥ सो तीन स्थान यह जाग्रत सुप सुषीप्त ॥ सो सात को ।

अंत—स्वान की न्यायी मस्कता रहता है। सानिसपुर्पको की न्यायी कछु खबर नहा पवती इम प्रकार की।

सो इस संसार विषेसुभक्या है असुभक्या है।
सोय सुनी न्याडी आयके फिर चला जाता है॥
सो इसलेय अहाढ ध्यान के आसरे है॥
सो जिन पुर्ष को इसका ज्ञान नहीं॥ सो इसलेय कछू है नहीं॥
हे नारद सो इस ध्यान का आत्मा भीनूऔर है॥
हे प्रभो सो अन इस यान का आत्मा और कौन होयेगा
सोचित की इकागरता विना कछू सिध नहीं होता॥

विषय—दर्शन।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खंडित है। प्रारंभ में एक पृष्ठ नहीं होने के कारण ग्रंथकार और लिपिकार के नाम तथा काल आदि का पता नहीं चलता है। ग्रंथ के मध्य में भी यथासंभव कहीं भी इनका संकेत नहीं मिलता है। ग्रंथ भागवत महापुराण के आधार पर लिखित प्रतीत होता है। ग्रंथ में गुरु-शिष्य संवाद के रूप में, ईश्वर, जीव, आत्मा, मृत्यु, मोक्ष, जीवन, बन्धन, पाप, पुण्य और कर्म-अकर्म की सुन्दर विवेचना की गई है। बीच-बीच में दृष्टान्त देकर प्रतिपाद्य विषय को समझाया गया है। यत्र-तत्र, नारद, उद्दालक, श्वेतकेतु, जावालि आदि ऋषियों के नाम तथा परस्पर के वार्तालाप की चर्चा है। ग्रंथ मननीय तथा अनुसंधेय है। ग्रंथ की भाषा सधुक्कड़ी तथा पंजाबी से मिलती-जुलती है। ग्रंथ मे 'न' के लिए 'ण' का तो प्रयोग है ही 'इ' और 'ई' के लिए ह्रस्व और दीर्घ मात्रा लगाकर 'इ,' 'ई' का प्रयोग है। विषय का प्रतिपादन गद्य में किया गया है। ग्रंथ की लिपि, अस्पष्ट और प्राचीन है। यह ग्रंथ दहियावाँ (छपरा)-निवासी अवधेन्द्र-देव के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[३७] अमुसागर—ग्रंथकार—धर्मदास। लिपिकार—रामभरोसदास। अवस्था—अच्छी। प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—८२। प्र० पृ० पं० लगभग—२२। आकार-६¾″×८½″। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्र शुक्ल द्वादशी। सं० १३०८ साल।

प्रारंभ—"सतसुक्रीत आदअदली अजर अचींत प्रुसमुनींद्रकरुनायेक वीर के दासा धनींध्रमदास के दाआनकलसंतकेदाआसेलीखते ग्रंथ अमु-सागर—

॥ दोहा ॥

ध्रमदास सीरनाएके वीनेे कीन्ह करजोरी।
तुम्हवहीऑसभजीव कहकीएअनुग्रहमोरी॥
तुअचरननवलीहारी जुगलेजातु अभालह।
जेहीवीधी हंस उबार मरदनकीन्हीकालकह॥

॥ छन्द ॥

आनीवहा आनन्दअनमसब यापीअजमीर्न हो ।
आनन्दरूपमीडगग तुम्हअथाकाडअमय ।
अपआवद्धपारजनके यचसममीअन्तर ।
तुम्ह अपनकेगनी दनके दामानन ।

सोरठा ॥

हवरानकहकथा जीव मार हथर पथयहे ।
असुसागर अथ सावरन प्रभुकीचीरो ॥

॥ चौपाइ ॥

घमनदासपुरुगुन गाव तुमजुगन्ने नाम सुनाउ ।

अन्त—' पुर्डन्पवरनाअनीपावन । एके पुरमीआगीनजावन ॥
हमन्पशीमानतुमाती । सोन्समानुरमहेकाति ।
मुक्तीअमरपदजहलाजाऊ। दरशनपाऐ रोगअपनासा ॥
आसेपरसा नीवर मीन्हा । पहु चलाअपसजी हचीन्हा ॥
आनीअवसागरमेंमाना । कमीतचारीगुरतीजीन्हराजा ॥
मीनी जीवभाइ । जमहमीवमरलोकपहुँचाइ ॥
इनिकयापावमअतीशोहायनअमुशागरवरननकीवो
जहीकरहीभजनसतउपन अकथनीचीग्रचीनधरो ॥
खन्मनाहरयारशाओशान्तिगाइ चढेहसतहीवाम सुक्सागर
पहुँच सही इती अथ ममाप्त ।'

विषय—दर्शन । निर्गुण-साहित्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ चावह खन्डों में है । इसमें जीवन, मोक्ष आदि दार्शनिक विषयों की निर्गुणात्मक विवेचना की गई है । कथोपकथन के माध्यम से विषय का प्रतिपादन किया गया है । पूरे विषय का एक हंस के द्वारा कहलवाया गया है । ग्रंथ विवेच्य और पठनीय है । यह ग्रंथ प्रकाशित-सा प्रतीत होता है । ग्रंथकार धमदासजी ने इसे बड़े ही रोचक ढंग से लिखा है । प्रारंभ में आदिपुरुष के दर्शन होते हैं । पश्चात् आदिपुरुष के यहाँ से सत्गुरु अपने संदेशवाहक हंस को भेजते हैं । वह हंस इनके सभी प्रश्नों के उत्तर के अतिरिक्त साधुओं के आचार विचार निर्गुण ब्रह्म कलियुग में जीवन बिताने की रीति आदि विभिन्न विषयों पर अपना विचार व्यक्त करता है । पृष्ठ सं० ५ ६ ७, ८ और ६ में हंस ने अपना परिचय दिया है और अपने आपको कबीर के रूप में प्रकट किया है— अमरदेह हंसा तेही पावइ ' । सतगुरु अमर पुरुष के पास अनेक हंस (जीव) रहते हैं—

"सुन उमपत पुर्स जब कीन्हा । स्वामा नव्दने सबकुछ कीन्हा ।।
अछयदीप ऐक गुप्त रहाई । .... ।।
तीन्हकेवहुतजीवहैमाया जीवनमायत्नीआवाद्राथा ।।"

आगे लिखते है—"कोटीहंमाताहामाथनबाई । नामकबीरहंसग्जबारा ।
जीव अवानटीन्ह जग आई । जब तुम्हार कीन्ह वहुताई ।
तब तुम्ह नींदा जागा स्वामी । हमहींकोजेगए सुरधामी ।।"

हंस अपने निवास-स्थान के विषय में कहता है—
"दीप ऐक मानीकपुर गाउ । आदीपुर्सजाहाआपुरहाउ ।।
रूपरंग तीन्ह कछु नाही । वरनत वचनवने कछु नाही ।।
हीराछत्रमाथेपरछाजे । अनहदधुनी ताहाअतिप्रीअजागे ।।
कोटीन्हरविऐकरोमलग्नाही अमीसम्पदसमहवीराजही ।।"

आगे और भी स्पष्ट करते हुए लिखा है—
"उत्तर दिशा लोक कहे भाई । अगमपुर्सजाहाआपुरहाई ।।
ताकेनाम पावप्रेमाना । कोटीन्हम यहंसकोई जाना ।।
तमगुरुमीले जेही देही लखाई । सुरतिनीरंतरध्यानवताई ।।
मकरतारजाहालागे डोरी । पहुँचे हमनामकीसोई ।।
ताहीलोक के नाम अपारा । षोडश नाभ ताहा अनुसारा ।।"

ये सारी बातें हंस द्वारा कही जाने के बाद धर्मदास जी ने कहा है—
"सब्द तुम्हार सुनत प्रीअ लागा । तुअदरसनपाऐमदभागा ।।
अकथकथासुनीचीतमम मोहा । तुम्ह पारस हमहेजीमीलोहा ।
आगे और कहो मोही स्वामी । चरन गहो प्रभु अतरजामी ।।

इसके बाद कथा का विस्तार प्रारम्भ होता है और हंस अपने पूर्वजन्म की बातें करता हुआ 'सत पुरुष' को 'हंस उबारण' की संज्ञा देता है। इसमें एक 'कदम पक्षी' की कथा के माध्यम से 'पापी जीव' के जीवन पर संकेत किया गया है। स्थान-स्थान पर 'ब्रह्म' पुरुष को निर्गुण सिद्ध किया है। ग्रंथ बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है।

ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। यह ग्रंथ कबीर मत के वचनवंशीय मठ के महंथ आचार्य बलदेवदासजी, रोसड़ा (दरभंगा) से प्राप्त हुआ।

[३८] विचार-गुणावली—ग्रंथकार—कृष्णकारख दास। लिपिकार—श्यामदास। अवस्था—अच्छी, प्राचीन। देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२४। प्र० पृ० प० लगभग—२८। आकार—७$\frac{1}{6}$"×७"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—'सतनाम सत सुकृत आदि अदली अजर अचिंत पुरुष मुनींद्र करुनामय कबीर धनी धर्मदास वंश नाद्र सुदर्शन सकल संत के दया से लीखते ग्रंथ विचार गुण।

साखी॥

'यारथ बीचार ग्रंथ है। सुनाम तब ही तनाइये॥
औरध्यान अनुवाद है। सातोंही सहीं तुम पाइये॥
सुरति को चाम्हानु मरीहे। तासोंही रखे अगाध।
और पाख गी नीच करे। सोइ अगम कहे चाहुँगे॥

अंत—'गुरुशाता भेद नगन में। तामीसरी गगने कोइये॥'
पीरपराबीनमार स। पारनगावहीसाये॥
इतीश्रीग्रंथबीचारगुण समापत।'

विषय—कबीर-साहित्य।

टिप्पणी—यह ग्रंथ धर्मदास जी के द्वारा कबीर साहब द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर के रूप में लिखित है। ग्रंथ के प्रारंभ में ही—
'धर्मदासभरनीकरमुनिऐपुरुषपुरानकानविधिहमपाइहाबाहयतुम्हर ध्यान म ऊपरमधागमनक ाँकीपाकहीयाजेआकतुमरनीसुनहैसोदीनहमसाये।
धर्मदास जी द्वारा किये गये इन प्रश्नों के उत्तर में 'परम पुरुष ने पहले अपना ध्यान बनाया है। इसके बाद आगे की कथा में 'गुरु का महत्त्व अनहद नाद सुरति ध्यान आदि की चर्चा की गई है। ग्रंथ ध्येय है। इन ग्रंथों के प्रकाशन और अनुसंधान से संभव है, कबीर-परम्परा के साहित्य में कुछ वृद्धि हो। ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। इसके साथ एक ही जिल्द में दो और 'गियाबोध' तथा 'आदि उत्पत्ति' नामक लघु ग्रंथ भी सम्बद्ध हैं। यद्यपि ग्रंथ का रचना काल और लिपिकाल का स्पष्ट संकेत नहीं है तथापि ग्रंथ के प्रारंभ में '? फागुन सं० १११४ स्नान आरम्भ कीता' तथा 'गियाबोध' के प्रारंभ में '६ फागुन सं० १११४ स्नान' लिखा है और आदि उत्पत्ति के अंत में "१४ फागुन सं० १३१४ स्नान" लिखा है। किन्तु यह प्रतीत होता है कि लिपिकार ने लिपि का समय लिखा है। ग्रंथ की भाषा पूर्वी अवधी है। सधुक्कड़ी भाषा का प्रचुर प्रयोग किया गया है।

यह ग्रंथ राघवा (दरभंगा) के कबीरपंथीय मठ के महंथ महाराज बलदेवदास जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[३६] विनयपत्रिका—रचयिता—गो० तुलसीदासजी। लिपिकार—×। प्राप्तिस्थान—स्थान, ? ग्राम ? ? ? ? ? कागज। पृ० सं०—१२६। प्र० पृ० ? पंक्ति—? । आकार—६ × १०। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"श्री गणेशाय नम राग बिलावल ।
गाइए गणपति जगवन्दनशंकरसुअनभवानीनंदन टेक
सिद्धिसदनगजवदनविनायक कृपासिंधुसुंदरसबलायक ।।
मोदकप्रियमुदमंगलदाता । विद्यावारिधिबुद्धिविधाता ॥
मागततुलसीदासकर जोरे । वसहिरामसियमानसमोरे १ ।।
दीनदयालदिवाकरदेवा । करमुनिमनुजसुरासुरसेवा टेक
हिमतमकरिकेहरिकरमाली । दहनदोषदुखदुरितरुजाली ।।
कोक कोकनदलोकप्रकासी । तेजप्रतापरूपरसरासी ।
नागविपंगुदिव्यरथगामी । हरिशंकरविधिमूरतिस्वामी ॥
वेदपुराणप्रगटजसजागें । तुलसीरामभक्तिवरमागें २ ।।"

अन्त—"सकलसभासुनिलीउठी जानिरीतिरहीहै ।
कृपागरीवनेवाजकी देखतगरीबकीसहनाबाहगही है ।।
विहँसि राम कह्यो सत्य है सुधि मैं हू लहीहै ।
मुदितमाथनावतबनीतुलसी अनाथकीपरीरघुनाथसहीहै २७८ ।।
इतिश्री गोसाई तुलसीदासकृतविनयपत्रिका समाप्त शुभमस्तु ।।"

विषय—तुलसी-साहित्य ।

टिप्पणी—यह गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रसिद्ध ग्रंथ है। प्रकाशित ग्रंथों से इसमें यत्र-तत्र पाठभेद प्रतीत होता है। लिपि स्पष्ट और सुंदर है। यह पत्थर के अक्षरों (लीथो) में लिखा है। इस ग्रंथ का लिपिकाल स्पष्ट नहीं है, तथापि संवत् १८०६, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी होना चाहिए। सन्नूलाल-पुस्तकालय, (गया) में स्थित प्रति का लिपिकाल सं० १८६६ है और नागरी-प्रचारिणी सभा में स्थित प्रति का सं० १८७६ है। यदि यह लिपिकाल ठीक है तो यह ग्रंथ अबतक प्राप्त सभी ग्रंथों से प्राचीन है। ग्रंथ प्राचीन होने के कारण यत्र-तत्र कीड़ों से छिन्न भिन्न हो गया है। यह ग्रंथ बजाजा लेन, बाकरगंज (पटना) निवासी लगनलाल गुप्त द्वारा प्राप्त हुआ।

[४०] रामचरित-मानस—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—× । अवस्था—अच्छी। देशी कागज। पृष्ठ सं०—८१। प्र० पृ० प० लगभग—३०। आकार—६¾"×१०"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—×।

॥ दोहा ॥

प्रारंभ—"गिरा अर्थ जल बीचि सम। कहियत भिन्न न भिन्न।
बन्दो सीता राम पद। जिन्हहि परम प्रिय खिन्न १७।।

॥ टीका ॥

कपि पति सुग्रीव ऋक्षराज जामवंत निशाचरराज लंकेश विभीषण और अंगदादिक जो समस्त वानरों का समाज १ सब के सुन्दर

चरण कमलों को मैं वंदना करता हूँ जिन्होंने अधम शरीर ही में राम पाये २ अन्य निखिल धारानिचरण न्यासकृत इस संसार में हुए हैं सब जगत् इत्यादि मृग राजेन्द्र सुर ब्रह्मादि असुर प्रह्लादादि नर अम्बरीष इत्यादि जो निष्काम भगवद्दास हैं तिन सब के चरणकमलों को मैं अभिनंदन करता हूँ ४

॥ सोरठा ॥

अंत— 'अस बिचारि मति धीर। तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर। करुनाकर सुंदर सुखद॥
निज मति सरिस नाथ मैं गाई।
प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥१।

विषय— रामचरित्र।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खण्डित है। प्रारंभ के चौबीस पृष्ठ नहीं हैं। अंत में भी कुछ पृष्ठ नहीं हैं। खण्डित होने के कारण प्रारंभ की पंक्तियाँ पृष्ठ-संख्या २५ से लिखी गई हैं। ग्रंथ की टीका अच्छी है। टीकाकार शुकदेवजी हैं। बाल काण्ड के अंत में लिखा है 'इति श्री शुकदेव [illegible] मानसरहस्य नाम भूषण बालकाण्ड संपूर्ण शुभमस्तु'। टीका की भाषा ब्रजभाषा से प्रभावित मध्यकालीन हिन्दी है। ग्रंथ में यत्र तत्र पाठभेद भी है। ग्रंथ प्राचीन पत्थर के अक्षरों (पुराना लीथो) में लिखित है। यह ग्रंथ पूर्णिया जिले के कस्बा ग्रामस्थित गदाधर पुस्तकालय के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[८१] रामायण—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना मोटा देशी कागज। पृष्ठ-सं०—१९३। प्रति पृ० पं० लग भग—२७। आकार—८ × ११½। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—श्रावण-कृष्ण पंचमी सं० १८३६।

प्रारंभ— 'श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बालकाण्ड लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥१॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥२॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ॥
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥३॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥४॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणी क्लेशहारिणीम् ॥
सर्वश्रेयस्करी सीता नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥
यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमं ॥
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां ।
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥
नानापुराणनिगमागम सम्मतं—
रामायणे निगदितं। क्वचिदन्यतोपि ॥
स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गा ॥
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥

सोरठा ॥

जो सुमिरत सिधि होइ ॥ गननायक करिबर बदन
करौ अनुग्रह सोइ ॥ बुद्धिरासि सुभगुन सदन ॥१॥
मूक होइ बाचाल। पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सु दयाल। द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥२॥"

दोहा ॥

अन्त—"मो सम दीन न दीन हित। तुम समान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुबंसमनि। हरहु बिषम भवभीर ॥१२२॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि। लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरन्तर। प्रिय लागहु मोहि राम ॥१२३॥

श्लोका ॥

यत् पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्री शम्भुना दुर्गम
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्
मत्वा तद्रघुनाथनाम निरतं स्वान्तस्तम शान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसी दासस्तथामानसं ॥१॥
पुण्यं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभं ॥२॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्ग घोर किरणैर्दह्यन्ति नो मानवा।

इति श्री रामचरित मानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादिनो नाम सोपान समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥ समाप्तोयं ग्रंथ ॥"

विषय— रामकाव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ लीथो टाइप में लिखा गया है। ग्रंथ में यत्र-तत्र पाठभेद है। ग्रंथ के प्रारंभ के पृष्ठ जीर्ण-शीर्ण हैं। मुखपृष्ठ के ऊपर लिखा है—

'मुद्रक राम नन्दनराम भगत ने छपवाया'। कागज प्राचीन है। यह ग्रंथ श्री राजनन्दन शर्मा, चिन्तामणिचक, मोकामा (पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[४२] रामचरित-मानस—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—खण्डित प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं०—४६१। प्र० पृ० प० लगभग—३०। आकार—८ × १०'। भाषा—हिन्दी। लिपि—प्राचीन कैथी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— गुरुपदरजम्रीदुमजुलअंजन। नायनअमीअ दिगदोषवीभंजन॥
तहाकरवीमलवीवेक वीलोचन। बरनौ रामचरीत भवमोचन॥
बन्दौ प्रथम महासुरचरना। मोहजनीतसशंसवहरना॥
सुजनसमाज शकल गुनखानी। करौ प्रनाम सुप्रेम सुवानी॥

अंत— राम अजोध्या छाइन कारी। बात सनावन कहेवासा कहइ॥
लक्ष्मनपुरतमरनालयामा। चलेआपसुरआगरराामा॥
श्रीपुलचीदाइरशत्रुघ्न कीन्हा। भूमीवारी नीच धुरन दीन्हा॥
मथुरा दनुजनासकी शीन्हा। दुशरशुत स्वबीधतम कीन्हा॥

विषय— रामकाव्य।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्राचीन कैथी लिपि में लिखा गया है। लिपि अस्पष्ट है। इसमें प्रचलित (मुद्रित) रामचरित मानस से कई पाठभेद हैं। ग्रंथ के अंत में उत्तरकाण्ड के बाद कुछ भाग अधिक है जो संभवतः प्रक्षिप्त 'लवकुश काण्ड' प्रतीत होता है। अंत में पोथी खण्डित है। पुष्पिका न होने से लिपिकार का नाम तथा लिपिकाल स्पष्ट नहीं है। तथापि लंका-काण्ड के अंत में "इति श्री रामचरीत्रे मानसे शकल कलाकलुषनावशने बामलनाग्यानशापारनो नाम रावन्मा शोपान लंका काण्ड सम्पुरन जा देखाशानीखामम दासनगीश्रते पन्नीतजनशो श्रीनर्वीसारी कुष्ण अछर पन्न जारी मीती असाढ़ वदी ६ १२६१ शाल बै० आसरनाथशाप शा शोभानगर लिखा हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि कोई ईश्वरनाथ सिंह नामक व्यक्ति इस पोथी के लिपिकार हैं। यह ग्रंथ जौहरी मावजी, कस्बा, पूर्णिया से प्राप्त हुआ। ग्रंथ के अधिकारी द्वारा ज्ञात हुआ कि उनके पिता मुरारी लालजी ने यह संग्रह किया था। यद्यपि ग्रंथ में लिपिकाल का संकेत नहीं है किन्तु जौहरी जानजी ने उसका लिपिकाल लगभग ई० १२५२ साल बताया।

[४३] सूर-सागर—ग्रंथकार—सूरदासजी। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२१६। प्र० पृ० प० लगभग—१८

आकार—८" × १०" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल—अगहन, कृष्ण १५, सं० १८७५, बृहस्पतिवार ।

राग गौरी ॥

प्रारंभ— हरिगोविन्दराधेमाला ॥ धनि धनि आठैं भादों पुरवाला ।
जसुमति अपनो पुन्य बिचारै ॥ बार बार सिसु बदन निहारै ॥
अगरस कर अरु आतप सुगरनौं ॥ ... उदमातौ जानौं ॥
हलरावति गावति कहि प्यारे ॥ बालगोविंद कौतिक भारे ॥
महरि निरखि मुख हिय हुलसानी ॥ सूरदास प्रभु सारंगपानी ॥३५॥

राग कान्हरा ॥

पलना स्याम हलावति जननी ॥
अति अनुराग परस्पर गावति प्रफुल्लित मगन मुदित नवघरनी ॥
उमगि उमगि प्रभु भुजा पसारत हरषि जसोमति अंकम भरनी ॥
सूरदास प्रभु मुदित जसोदा पूरन भई पुरातन करनी ॥३६॥

राग बिलावल ॥

गोपालमाई पालने झुलाए ॥
सुरमुनि कोटि देवतैतीसौ देखन कौतिक अंबर छाए ॥
जाको अंत न ब्रह्मा जानत सिव सनकादि न पाए ॥
सो अब देखौ नंदजसोदा हरषि हरषि हलराए ॥
हुलसत हंसत करत किलकारी मन अभिलाष बढाए ॥
सूरजस्यामभगतहितकारन नानाभेष बनाए ॥"

रागमारू ॥

अन्त— अति सुख कौसिल्या उठिआई ॥
मुदित बदन मन मुदित सदन ते आरति साजि सुमित्रा लाई ॥टेक॥
ज्यो सुरभी बन बसत बछ बिनु परबस पसुपति की बिहराई ॥
चली साँझ समुहाई स्रवत थन उमगि मिलन जननी दोउ आई ॥
दधि फल दूब कनक के कोपर साजत सौंज बिचित्र बनाई ॥
अमी बचन सुनि होत कुलाहल देवव्योम दुंदुभी बजाई ॥
अनेक रंगपट परत पवांरे बीथी सुमन सुगंध सिचाई ॥
हरषित रोम पुलकित गदगद ह्वै जुवतिनि मंगल गाथा गाई ॥"

विषय— काव्य । सूर-साहित्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ अबतक प्राप्त सभी हस्तलिखित प्रतियों से प्राचीन है । नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस में 'सूर-सागर' की ४ प्रतियाँ हैं जो सं० १८६२, १८७३, १८६६ और १८५३ में लिखी गई हैं । श्री मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के संग्रहालय में प्राप्त दो प्रतियों का

लिपिकाल सं० १८५७ और सं० १८७४ है। ग्रंथ खंडित है। बीच के पृष्ठ १०७, १०८ और १११ से १५७ तक तथा २७८, २७८ ३४२, ३८३, ३८८, ३६४, ३६८, ४२२ एवं ४२७ से ४३२ तक नहीं है। पृष्ठ सं० ५३६, ५३२, ५४७, ५४८, ५४६ और ५५० भी नहीं है। इस प्रकार कुल पृष्ठ-सं० ७४० में ११५ पृष्ठ नहीं है।

संग्रह विस्तृत है, अतएव ध्येय है। प्रकाशित ग्रंथ से कई स्थानों में पाठभेद है तथा पौर्वापर्य का विपर्यय भी। संभव है, इसके अध्ययन-अनुसंधान से सूर के कुछ नवीन पद भी प्रकाश में आयें। ग्रंथ का अंतिम पृष्ठ नहीं है। लिपिकाल ग्रंथ के अंतिम पृष्ठ में ही लिखा था किंतु ग्रंथ के मालिक से वह खो गया। प्रारंभ के १६ पृष्ठ भी नहीं हैं। प्रारंभ की पंक्तियाँ १७ पृष्ठ से लिखी गई हैं। ग्रंथ की लिपि प्राचीन और स्पष्ट है। लिपि की शैली पुरानी है। यह ग्रंथ विन्देश्वरी प्रसाद वर्मा, ग्राम मैनपुरा, (गया, पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[८४] शब्द—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—शिवप्रसाद दास साधन दास तथा रामदत्त दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना कागज सजिल्द। पृष्ठ-सं०—३५४। प्र० पृ० पं०—लगभग—१६। आकार—५½"–१०"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—बैशाख कृष्ण षष्ठी, मंगलवार, सं० १६५५ वि० (फ० १३ ५ साल)।

सतनाम

प्रारंभ—स्वद के गरथ भाख ल दरीया साहब हंस उबारन स्वद कबीरय लीख्यत काहे के आसन वासन बाधल काहे के पवन पीवें दिन राती।१।

मध्य— धन्य सतगुर सत सब्द नीवारा।
मानुष से देवता जिन्हि कीहो मन सकल विकारा।१।

अंत—कहैं दरीया दरवेस कोई हरिकृश महल मासुक, महबुब जानी।

× × ×

मास बैसाख कीस्न पछ, षष्ठी मंगरवार
दुइ पहर के भितर ग्रंथ भया तइयार॥

विषय— दरिया साहब का यह सबसे बड़ा ग्रंथ है। इसमें विभिन्न रागों एवं छंदों के द्वारा सद्गुरु एवं ईश्वर का माहात्म्य वर्णित है।

टिप्पणी—यह ग्रंथ सिद्धान्त-ग्रंथ है। कबीरदास के 'बीजक' के समान ही यह ग्रंथ भी दरिया पंथियों में सम्मानित है। विभिन्न छंदों में ग्रंथ रचना हुई है। दरिया-पंथ के प्रायः सभी दार्शनिक और साम्प्रदायिक

सिद्धांतों एवं मान्यताओं की इसमें विवेचना है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। इसकी संग्रहालय संकेत क्र०-संख्या ३३ है। ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरियामठ के महंत साधु चतुरीदास से डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (क) ज्ञानदीपक—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—नरहर दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं०—१६७। प्र०पृ०पं० लगभग—१८। आकार—'१०½–११½'। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ल द्वादशी। फ० १२६६ साल।

आरंभ—प्रेम मुक्ति निजु मूल है, गुरु गमी करो सुधार
दया दीपक जबही बरै, दरसन नाम अधार॥

मध्य—विनय कीन्ह कर जोरि, सभ भव भर्म नशाइया
विमल मती सब मोरि, धन साहब दरसन दियो।

अन्त—तहां देखी दरसन मूल, सब मेटि भेतियाशूल
तब गवन भव छपलोक, सब छुटी जमके शोक॥

× × ×

भयो सपूरन ग्यान, सतगुरु पद पावन करो
उबरे संत सुजान, जिन्हि गमि कियो विवेककरी।

विषय—सद्गुरु और संत की वंदना। निर्गुण तथा त्रिगुण ज्ञान-द्वारा मुक्ति। तीर्थ और अन्य पाखंडों का उपहास।

टिप्पणी—ज्ञानदीपक दरिया साहब का अनुपम ग्रंथ है। आत्म निरोध, अहिंसा, ईश्वर, माया आदि विषयों पर कुंभज और भारद्वाज के बीच वार्तालाप का प्रसंग दर्शन-जैसे शुष्क विषय को सरसता प्रदान करता है। मुक्ति (दरिया) के विभिन्न जन्मों की कथा बड़े सुंदर ढंग से लिखी गई है। सृष्टि के संबंध में शिव-पार्वती-संवाद तथा सत्पुरुष के पुत्रों के विषय में कुंभज और नारद-वार्तालाप बड़े रोचक हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। इसकी संग्रहालय की संकेत क्र०-संख्या ३४-क है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया मठ के महंत चतुरीदास से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है।

[४५] (ख) दरियासागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—नरहर दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं०—७२। प्र०पृ०पं० लगभग—१६। आकार—'१०½–११½'।

भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सावन बदी नवमी, शनिवार फ० सन् १२६८ साल।

प्रारंभ— अथ शब्दसागर [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] विवेकिना सो [illegible] उतरहीं पार ॥

मध्य— निश्चै ब्रह्म सत है नाम निश्चै न्यारही भवजल पारा
निश्चै [illegible] [illegible] करतारा, निश्चै भक्ति प्रेम निजुसारा ॥

अन्त— [illegible] महल अगारिया, [illegible] सुनै पडुराग
सतगुरु शब्द [illegible] [illegible] [illegible] पड़िन महँ काग ॥

विषय— शब्द और नाम की महिमा। [illegible] का प्रकार। निर्गुण सगुणत्व और सगुण अवतार का वर्णन। सत्गुरु द्वारा मुक्ति का उपदेश। साधु संगति से लाभ। मूर्ति-पूजा-खण्डन तथा जाति-प्रथा के विरुद्ध आक्षेप।

टिप्पणी—शब्दसागर में शब्द और नाम का माहात्म्य वर्णित है। इसमें निर्गुण और सगुण का बड़ा सुन्दर विवेचन हुआ है। प्रयान्त में संसार की अनित्यता तथा माया की प्रबलता का वर्णन है। यह ग्रंथ परिषद् संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी हस्त० क्रम संख्या १४—क है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया मठ के महत [illegible] से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है।

[४४] (ग) भक्ति हेतु-रचनाकार—सन्त कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं० [illegible]। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—१ [illegible]"—११½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सावन सुदी नवमी, शुक्रवार फ० सन् १२६६ साल।

प्रारंभ— [illegible] भक्ति निजुसार है, सुनो [illegible] चितलाय
[illegible] [illegible] यह, ब्रह्म अनूप [illegible] ॥

मध्य— [illegible] [illegible] पै [illegible], [illegible] [illegible] निरवान
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], लीला अगम [illegible] ॥

अन्त— [illegible] [illegible] के [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] में [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥

विषय— [illegible] [illegible] [illegible] द्वारा [illegible] [illegible] का [illegible] वर्णन। [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] तथा [illegible] से लाभ। सत्गुरु का [illegible], [illegible] [illegible] आदि का वर्णन।

टिप्पणी—[illegible] के [illegible] १० [illegible] का है। [illegible] [illegible] विषय [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] के द्वारा ज्ञान [illegible] [illegible] की

विशद-व्याख्या इसमें की गई है। साधु-असाधु-वर्णन उपदेश-प्रद है। इस पुस्तक में दरिया साहब ने जाति-पाँति का खंडन करते हुए विश्व-बंधुत्व पर बल दिया है। ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कं० क्र०-संख्या ३४ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) मठ के महंत चतुरीदास से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (घ) ज्ञान-सरोदे-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृ०-सं०—२३। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार १०½"—११½"। भाषा—हिंदी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—श्रावण शुक्ल-एकादशी, सौमवार, फ० सन् १२६६।

प्रारंभ— दरिया अगम गँभीर है, लाल रतन की खानि
जो जन मिलै जौहरी, लेहि सब्द पहिचानि ॥

मध्य— पाँच तत्त की कोठरी, तामे जाल जंजाल
जीव तहावासा करै, निपट नगीचै काल ॥

अन्त— दरियानामा फारसी, पहिले कहा किताब।
सो गुन कहा सरोद में, गहिरि ग्यान गरकाब ॥

विषय— ईश्वर, आत्मा और शरीर आदि विषयों के अतिरिक्त इसमें स्वरोदय (स्वास की क्रिया-प्रक्रिया) के विज्ञान का वर्णन है।

टिप्पणी—ज्ञान सरोदै (जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है) प्राणायाम के माध्यम से ज्ञान-प्राप्ति का पथ-प्रदर्शन करता है। 'ज्ञान स्वरोदय' और 'दरियानामा' मूल फारसी ग्रन्थ का रूपान्तर है। ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कंध क्र०-संख्या ३४ (क) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया मठ के महंत चतुरीदास से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (ङ) प्रेममूला-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-संख्या—१५। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—१०½"—११½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार, फ० सन् १२६६ साल।

प्रारंभ— प्रेम कवल जल भीतरै, प्रेम भँवर लै बास
होत प्रात सूरज खुलै, भान तेज परगास ॥

मध्य— कहे दरिया सतगुर खोजो सत सब्दही करो विचार
वो गुर रासता जगत मे निर्मल मिला न सार ॥

अंत— प्रिया भवन बिच भगति है, रहै पिया के पास
मन उदास नहि चाहिए, चरन कँवल की आस ॥

विषय— ईश्वर और सद्गुरु के प्रति प्रेम की दृढ़ता का प्रतिपादन।

टिप्पणी—इस छोटी सी पुस्तक में भी पशु पक्षी और की पतगों के उदाहरण द्वारा ईश्वर के प्रति प्रेम का अनूठा प्रदर्शन किया गया है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी रक्षक क-संख्या १४ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरियामठ के महंत चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४४] (च) ब्रह्म विवेक-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना कागज। पृष्ठ-सं०—३०। प्र पृ० प० लग भग—२०। आकार—१०½–११½। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी, बुधवार फ सन् १२६६ साल।

प्रारंभ— ब्रह्म विवेक ग्यान एह, दाता सुमति सुधार
ग्यानी समुझि विचारही, उतरहि भौजल पार ॥

मध्य— देख ही कौतुक नर औ नारी, कामल बालकुमारी
भीना उठि महाऋषि देख ही, मुनी प्रेम पिआरी ॥

अन्त— ब्रह्म विवेक ग्यान यह, पढे सुन चित लाए
मुक्ति पदारथ पावइ, सदा रहै सुख पाए ॥

विषय— सत्पुरुष के सत्यस्वरूप का वर्णन। विवेक-बुद्धि की आवश्यकता। पाखण्ड का भंडाफोड़। हठयोग के विरुद्ध सहजयोग का प्रतिपादन।

टिप्पणी—यह पुस्तक सुंदर अवस्था में है। इसमें सत्पुरुष तथा छपलोक का बड़ा अच्छा वर्णन है। आदि भवानी (माता) और ब्रह्म (पुत्र) के बीच वार्तालाप कथनों बीच-बीच में बड़ा रोचक है। दुर्वासा-उर्वशी प्रेम तथा पराशर के वेश्या प्रेम की कथा और अन्त में दरिया के अवतार की भी कथा है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी रक्षक क-संख्या १४ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) ग्राम के दरिया मठ के महंत चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (छ) अमरसार—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृ-संख्या—२४। आकार—

१०½"-११½" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल—कार्तिक वदी नवमी, गुरुवार, फ० सन् १२६७ साल ।

प्रारंभ— अरज कीन्ह सिरनाय, दयानिधि सुनु लीजिये
सदा सब्द समुझाय, बहुरि ना भव जल आवही ॥

मध्य— सत गुर चरन सनेह करो, भगति दया धरो
प्रेम प्रीति नीति नेह, भवसागर तरिजाइही ॥

अन्त— वेवहा पुरुष अमान हहि, दरसन दीन्हों आए
सहि जादा मुकित हहिं, सभ निधि कहा बुझाए ॥

विषय— सत्पुरुष और सद्गुरु की स्तुति । दरिया साहब का सत्पुरुष से साक्षात्कार । पाषण्ड की निंदा आदि ।

टिप्पणी—इस ग्रंथ में माया का प्रपंच और हिंदू देवताओं तथा ऋषियों पर प्रभाव दिखला कर भक्ति का पथ-प्रदर्शन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध क्र०-संख्या ३४ (क) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरियामठ के महंत चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (ज) निर्भय ज्ञान-ग्रन्थकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—रघुनाथ दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृ०-संख्या—१२। आकार—"१०½—११½"। भाषा-हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी, मंगलवार, सं० १९५२ वि० (फ० सन् १३०२ साल)।

प्रारंभ— आदि पुरुष कर्ता हहिं, जिन्हें कीन्हो सकल संसार
पृथिमी नीर अकास जत, चंद सुरज विस्तार ॥

मध्य— घर घर सत गुरता कही, ग्यान कथही विस्तार
मुकित कहा सतगुरु कही, हंस उबारही पार ॥

अन्त— सतगुरु सब्द प्रतीति करि, गहो सन्त चितलाय,
छप लोक के जाइहो, बहुरि ना भव जल आय ॥

विषय— सद्गुरु और शब्द में विश्वास की आवश्यकता, सत्पुरुष का गुणानुवाद, आत्मा पर सद्गुरु का शांति-प्रद और सुधार-पूर्ण प्रभाव ।

टिप्पणी—ग्रंथ अच्छी अवस्था में है। नागरी और कैथी—दोनों लिपियों में ग्रंथ लिखा गया है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है।

सभ्र हालय में इसकी रक्षा क्रम संख्या १४ (क) है। यह ग्रंथ परर्वधा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंत चतुरीराम के सौजन्य से डा॰ धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सम्प्राप्त हुआ।

[४०] ज्ञानदीपक—ग्रंथकार—कृत कवि दरिया साहब। लिपिकार—रामफलदास। अवस्था—आधुनिक। यंत्र का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं॰—१२१। प्र॰ पृ॰ प॰ लगभग—२७। आकार—६½-१०½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पूस बदी सप्तमी, मंगलवार सन् १३३० फ ।

प्रारंभ— सतनाम ॥
सतबानी ग्रंथ मंगल
सतबानी सतगुर दरिया साहब कृत
ग्रंथ ज्ञानदीपक मंगल सुक्ति के दाता
हंस उबारन बंदी छोड़-छोड़ साखी।
प्रेम सुक्ति जीव सुख है, गुरगमी करो सुधार
दया दीपक जबहीं बरै, दरसन नाम अधार ॥

मध्य— छपलोक में मन रहै सत पुर्ष के पास
तीनिलोक हद लुगिया, काह निमरीत बैनाही दास ॥

अंत— मैव सपूरन ज्ञान, सतगुर पद पावन करो
उबरे हंस सुजान, जिहि गमी किरा बिवेक यह ॥

विषय— सद्गुरु भजन कथा, भवानी-कथा आदि।

टिप्पणी—ग्रंथ की लेखन शैली प्राचीन है। कागज आधुनिक यन्त्रालयों का बना है। किसी किसी पृष्ठ पर अँगरेजी के अक्षर एवं अंक छपे हैं। ग्रंथ सुपाठ्य है। ग्रंथ के अंत में छंदों की निम्नलिखित प्रकार से गणना की गई है—

साखी	चौपाई	छंदतोमर	छंदनारायन	सोरठा
२२०,	२२६,	४१,	४१	४१
११२,	१२०१,	जामा १६३२ ॥		

यह ग्रंथ परिषद् सम्रहालय में सुरक्षित है। सम्रहालय में इसकी रक्षा-संख्या—१४ (ग) है। यह परर्वधा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंत साधु चतुरीराम के सौजन्य से डा॰ धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ है।

[४१](घ) ज्ञानरतन-ग्रंथकार—कृत दरिया साहब। लिपिकार—कमलनाथ। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना—मोटा कागज। पृष्ठ-सं॰—१०६। प्र

पृ० १० लगभग—१४। आकार—"६½ × ८½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पौष, शुक्ल पक्ष षष्ठी, फ० सन् १२७८ साल।

प्रारंभ— ग्यान रतन मनि मंगल, विमल सुधा निजुनाम
करो विवेक विचारि के, जाए अमरपुर धाम॥

मध्य— मारा रघुवर वान ते, लङ्का परि गव दक
लंक वंक गढ टूटि है, कोइ ना रहा निहसंक॥

अन्त— भादो वदी चउथी दिन, गवन किवो छपलोक
जो जन सब्द विवेकिआ, मेटि जाए सभसोक॥

विषय— रामकथा तथा सगुण, निर्गुण आदि विषयों पर शुजाशाह और संत दरिया साहब का वार्तालाप।

टिप्पणी—इस पुस्तक में संतकवि दरिया और शुजाशाह (नोखा गढ, आरा के जमीन्दार) का वार्तालाप बडा सरल है। संक्षेप में राम कथा वर्णित है। सतनाम तथा सद्गुरु विषयक वर्णन बड़ा मनोहर है। ग्रंथ की लिपि-शैली प्राचीन है। किंतु लिखावट स्पष्ट और सुवाच्य है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। सग्रहालय में इसकी स्कंध-सख्या—३६ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४७] (ख) ज्ञानदीपक-ग्रन्थकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—कमलदास फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथका बना मोटा कागज। पृ० संख्या—२१४। प्र० पृ० ५० लगभग—१४। आकार—"६½×८½"। भाषा-हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—अगहन, पूर्णिमा, शनिश्चर, फ० सन् १२७६ साल।

प्रारंभ—सतनाम
सतपुर्ष साहब जींदा जाग्रीत हंस उवारन सूकित दरिया साहब सतगुर ग्रंथसापल ग्यान दीपक" साखी सतनाम।

प्रेम जुक्ति निजु मुल है, गर गमि करो सुधार।
दिया दीपक जवहि वरे, दरसन नाम अधार॥

मध्य— करो भक्ति ग्रीह जाएके, रानी लेहुली आए
सो जीव जम शे वाचि है, सतनाम गुन गाए॥

अन्त—जो सतगुर कह चीन्हि के, ग्यानहि करै विचार
सोइ दफा मोइ वंस है, गुन गहि होखै पार॥

विषय— सद्गुरु और सत्पुरुष-माहात्म्य-वर्णन ।

टि०— यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । लिपि स्पष्ट और कागज मजबूत है । ग्रंथ में सम्भवत रचना-काल का निर्देश नहीं है । लिपि काल और दरिया साहब का निर्वाण काल लिखित है । उनके निर्माण काल के सम्बन्ध में अधोलिखित पद पठनीय हैं—

'सम्वत अठारह से सैंतिस, भादो चौथी अधार
सावा जाम जब रहलि गयवा, दरीया गौन विचार ॥
भादो बदी वार शुक्र गवन किया सत लोक
जो जन शब्द विवेकिया, मेटे सकल सब शोक ॥

यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी संख्या-संख्या—३९ (ग) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महथ साधु अनुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५८] विवेक सागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार— × । अवस्था प्राचीन । हाथ का बना हरे रंग का मोटा कागज । पृ० सं०—४६ । प्र०पृ०प० लगभग—१४ । आकार— ६¾ × ८½ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल— × । लिपिकाल—माघ, कृष्णपक्ष, एकादशी, मंगलवार फ० सन् १२७८ साल ।

प्रारंभ—सतगुरु सत ही नाम, पद पकजे कदयान
लोचन कंज मंजन करु, सुमर सत सुजान ।

मध्य— अब माजन गर्व मजन हो मम तोहरे साथ
करो पतन सिरओपन ही तुम्हके करौं सनाथ ॥

अंत— नीच भया नाचत फिरे बाजिगर के साथ
चाव तुम्हारी मारिया, गर्हित भए । हाथ ॥

विषय— ज्ञान, भक्ति और सद्गुरु में विश्वास आदि ।

टि०— यह ग्रंथ सुन्दर कागज पर लिखित है । लिपि सुस्पष्ट है । ग्रंथ के अन्त में लिपिकार के नाम का निर्देश नहीं है । प्रतीत होता है, पूर्व ग्रंथ के लिपिकार ने ही इसकी भी लिपि की है । दोनों ग्रंथ एक ही जिल्द में हैं । सद्गुरु माहात्म्य वर्णन विस्तार से है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी संख्या संख्या—३९ (क) है । यह धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महथ साधु अनुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[४६] शब्द अरजी—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब । लिपिकार—ठाकुरदास । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना जीर्ण शीर्ण कागज । पृ० सं०—४४ । प्र० पृ० पं० लगभग—१३ । आकार—'४$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$" । भाषा—हिन्दी लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ—सब्द अरजी । ।

तुम बिनु सरन राखै कवन
भगत जन सभ तुम्है जानत
दनुज दानव दवन ।१॥

मध्य— हरिनाकस जो गर्व किवो है
गर्व गई मिलि जाइ ॥
नखते फारा उदर वोई बिदारा
हाथ के हाथे पाइ । २॥

अन्त—जोगी जंगम सेव डाइन्ह तें पंथ निनारा
हरे हारे अबधु कहै दरिया
दरसेउ सोइ है संत पिआरा ।

विषय— ज्ञान और भक्ति का गीति-काव्य ।

टि०— इस छोटी-सी पुस्तक में विभिन्न प्रकार के पदों में सत्पुरुष की स्तुति की गई है । पद गेय हैं । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३७ (क) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है ।

[५०] (क) शब्द अरजी—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब । लिपिकार—फकीर रामधन दास । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना जीर्ण-शीर्ण कागज । पृ० सं०—५२१ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—"५$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ—शब्द अरजी सत

तुम बिनु सरन राखै कवन
भगत जन सभ तुमै जानत
दनुज दानव दवन ॥

मध्य— जोग जागे काल-भागे करम कलि कवलेस छूटे
जुगुति जोगी जानी ।

× × ×

मह टहके साधी धाय
अरथ नेह उरथ बांधे।
जाय अजपा धनी ॥

अन्त— अति सोहाग भाग गनिका का राग
बिरह रस पाना जा पी है वा
प्रेम प्रीति करि एहि मन
नीति ज्ञान बिना दुख दारुन वा है
कहैं दरिया दर छहेव काम न
लाज बिसारि हारि प्रभु दीहवो ॥

विषय— ज्ञान और भक्ति।

टि०— ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है। कुछ पत्र अप्राप्य हैं। ग्रंथ के अधिक भाग पठनीय हैं। यह ग्रंथ परिषद्-ग्रंथागार में सुरक्षित है। ग्रंथागार में इसकी हस्त-संख्या—१८ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से श्री धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४०] (ग) गनेशगोष्ठी-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—रामागिर दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना जीर्ण शीर्ण कागज। पृ० संख्या—१२। प्र० पृ० प० लगभग—१४। आकार—"५½ × ८½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— सतनाम
ग्रंथ गुरुजी हुआ है गनेश पंडित
औ दरियासाहब से धरकन्धा में
दरिया वचन—
पंडित राज सुना गुनखानी
यही मरम कछु लाख न जानी
वेद पढ़ा पर भेद न जाना
ताते अमल हाथ बिकाना।

मध्य— अलख्या निरखो ज्ञान, हिन ना उपजे प्रेम।
जो लागी हृदय ना कल्पही, धम बिन [illegible] नेम ॥

अन्त— ज्ञान रूप उर्देगी, जैसे दर्पन पतंग
का जम कृमिन टारही, पम दास न्यारा [illegible] ॥

विषय— मूर्ति-पूजा का खंडन, आध्यात्मिक भाव का प्रचार आदि।

टि०— यह गणेश पंडित और दरियासाहब के बीच हुए विवाद के आधार पर रचित एक छोटी-सी पुस्तिका है। यह ग्रंथ परिषद्-ग्रंथागार में

टिप्पणी--ग्रंथ की सुन्दर अवस्था है। लिपि स्पष्ट है। माया की व्यापकता एवं सत्पुरुष के सोलह पुत्रों की कथा वर्णित हुई है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३६ (क) है। यह ग्रंथ घरकन्धा (शाहाबाद) दरियामठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५१] (ग) विवेकसागर–ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—दलोरीदास। अवस्था–सुन्दर, प्राचीन। हाथ का बना कागज। पृ०-सं०—४६। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—"५$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भादो सुदी द्वादशी, बृहस्पतिवार, संवत् १८६३ वि०।

प्रारंभ—सतनाम
सत सुक्रीत साहब
जोग जीत हंस उवारन
मुक्ति के दाता दरिआ सा
हब ग्रंथ बीवेक साग्र भाखत
दरीयासाहब : साखी :
सतगुर मतहिंदआ मम : पद पकज करु घ्यान ·
लोचन कज मंजन करो : सुपर संत सुजान : :

मध्य— आतंम दरस बीबेक करि : कहि दीन्हो प्रभूग्यान .
दरपन दुकरी रहै नाही दुजा कोइ आन ।

अन्त— सबसें बडा हे साधु है साधु सें बडा ना कोऐ :
दंसन प्रसन प्रेम रस · आनंद मगल होऐ :

विषय— ज्ञान, भक्ति और सद्गुरु-माहात्म्य-वर्णन आदि।

टि०— ग्रंथ सुवाच्य है। ग्रंथ के प्रतिपाद्य विषय जहाँ-तहाँ फटे हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३६ (ख) है। यह ग्रंथ घरकन्धा (शाहाबाद) के महन्थ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५२] (क) प्रेममूल–ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना चिकना कागज। पृ०-सं०—१२। प्र० पृ० पं० लगभग–२०। आकार— ५$\frac{1}{2}$ × ६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फ० सन् १२८६ साल।

प्रारंभ—सतनाम
अथ प्रेम मुला भाखल ।
साखि ।
प्रेम कमल जल भीतरे ।
होत प्रात सुपर्ण सुने मा ।

मध्य— तीली का तेल फुने लाय, मेंगे तील को नाम
सतगुर सब्द समानव, बसेव अमै पुर गाव ॥

अंत—इया भवन बिच भक्ति मे, रहे पिया के पास
मन अनाष्ट न चाहिये चरन कमल की आस ॥

विषय— सद्गुरु भक्ति प्रतिपादन ।

टि०— इस ग्रंथ में सद्गुरु और इश्वरभक्ति का सुन्दर प्रतिपादन है। लिपि नागरी है। जहाँ-तहाँ कैथी अक्षरों का प्रयोग भी हुआ है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में संगृहीत है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या ४० (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५२] (ख) ज्ञानमूल—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना चिकना कागज। पृ० सं०—२१। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—$5\frac{1}{2}$″ × ६″। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फ०सन् १२८६ साल।

प्रारंभ— सतनाम
अथ ग्यान मुल
भखन दरीआ साहब मुक्ति साहन, सतनाम साखी
सतवर्ग सब उपरें, सखा पत्र सम जीव
जल थल सम मे व्यापिया, सरब सुधारस पीव ॥

मध्य— कपट कारी कग करो, काढु कुबुधि बन ठाय
सतगुर दाम न जानिये, जम रोकेगा बाय ॥

अंत— रवी का छवी एह छीत पर, यह निर्गुन का भाव
छवी ते रवी नहि होत है। निर्गुन सर्गुन को राव ॥
यह घट पट जब सुमन है छन्क्त कवि तब जाए
आ छवि उल्टी न आवही फेरि ना हि घरनि समाए ॥

विषय— त्रिगुण देवों से सत्पुरुष की विभिन्नता, सत्पुरुष का स्वर्ग से जंबूद्वीप आकर मुक्ति के प्रचारों के हेतु उन्हें रत्न-प्रदान करना, मन की व्यापक-प्रबलता का वर्णन आदि।

टिप्पणी—यह ग्रंथ सुंदर अवस्था में है। लिपि अस्पष्ट है। लिपि-काल स्पष्ट नहीं है। विषय का प्रतिपादन बड़े सुंदर ढंग से हुआ है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४० (क) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५२] (ग) ब्रह्मविवेक-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना चिकना कागज। पृ०-सं०—२७। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—'५½ × ६"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फ० सन १२८६ साल।

आरंभ—सतनाम

ग्रंथ ब्रह्मविवेक भाष ल दरिया साहब : साखी
ब्रह्म विवेक ग्यान एह, स्रोता सुमति सुधार।
ग्यानी समुझि विचारही, उतरहि भौ जल-पार॥

मध्य— तीनि लोक के ठाकुर, भुली परा भव ग्यान
जो मोहनि सुरनर मुनी उडेव सो न परा पहचान॥

अन्त— ब्रह्म विवेक ग्यान एह पढ़े सुने चितलाए
मुकुति पदारथ पाइ है, सदा रहै सुख पाए॥

विषय— सत्पुरुष-स्वरूप-वर्णन, पाषण्ड-भण्डाफोड़ आदि।

टिप्पणी—ग्रंथ कथा-कहानी के माध्यम से लिखा गया है। दर्शन—जैसे नीरस विषय को दरिया साहब ने कथा-कहानी के साँचे में ढाल कर सर्व-जन-सुलभ बना दिया है। अन्त में दरिया के अवतार की कहानी है। ग्रन्थ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४० (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५२] (घ) भक्ति-हेतु-ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ बना खंडित किंतु चिकना कागज। पृष्ठ-संख्या—२५। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—"५½ × ६"। भाषा—हिंदी।

लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—फ० सन् १२८६ साल कार्तिक, कृष्ण पक्ष, बुधवार।।

प्रारंभ—सत्नाम

गरय भक्ति हेतु भाजन ही—
या साहब सतगुर हम उबारन
सत्नाम उजी
ग्यान भगति निज सार है सुन सर्वन चितलाय
जिति बिधि निमाल एह मत अनूप देखाय।।

मध्य— कहिं दरिया पाए अमर हरी सत्नाम म धाम
तहवा काल न आवही बहु विधि करहिं बेनाम।।

अंत— हीरामनि निज दास है, सब दासहि का नाम
सतगुर क परच भए जीवका प्रेम परगास।।

विषय—सत् कतनु चना, श्री गणपति साम त्याग आत्मा की अमरपुण्याना का वर्णन आदि।

टिप्पणी—कीर पनगों के उदाहरण द्वारा भक्ति और ज्ञान का उपदेश पूर्ण वर्णन। निर्गुण और त्रिगुण विवेचन। अन्त के कुछ पन्ने फटे हैं।

यह ग्रंथ परिषद् संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी क्रम-संख्या ४० (ग) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ सन्त चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४० (ङ) अमरसार-ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना चिकना कागज। पृ०-सं० —१६। प्र० पृ० प० लगभग—२०। आकार—"५½ × ६"। भाषा—हिंदी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—कार्तिक षष्ठी रविवार फ० सन् १२८६ साल।

प्रारंभ—सत्नाम

अथ अमर सार मा
सत्त दरिया साहब मुक्ति नाम सत वर्ग दरि छन्द सु
सतगुर साहब हम उबारन स्वामी
सतगुर चरन सुधा मन दीनन मुक्ति के मुल
सर पंकज तन नाम हामा, अमर अनुप सहुल।।

मध्य— कहें दरिया जग ऊ है या बिन काल कर्मनि
जिन्ह कब न हृदय रहे नाम एर्मीन।।

अन्त— गुरु मुरती गति चंद्रमा सेवक नैन चकोर
पलक-पलक निरखत रहो, गुर मुरती के वोर ॥

विषय—सत्पुरुष और सद्गुरु की स्तुति, दरिया साहब का सत्पुरुष से साक्षात्कार, पाषण्ड की निंदा आदि ।

टिप्पणी—ग्रंथ सुपाठ्य है । छंद, सोरठा, चौपाई और साखी आदि छंदों का प्रयोग हुआ है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या–४० (ख) है । ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५२] (च) विवेकसागर–*ग्रंथकार*—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादास । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना कागज । पृ०-सं०—३२ । प्र० पृ० पं० लगभग—२० । आकार—"५½×६ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—संवत् १९३८ वि०, कार्तिक वदी, शनिवार ।

प्रारंभ—सत्तनाम
गरंथ बीबेक सागर भाखल दरिया साहब
साखी
सतगुर सत हीर्दए स्मः पद पकज करु ध्यान
लोचन कंज मनन करो सुरर सत सुजान ॥

मध्य— राज काज सब देखिया : गज गर्जहि तेहि द्वार
बाज परेरु हाथ लेइ यह सोभा दरबार ॥

साखी

अन्त— सब से बडा साधु है साधु से बडा ना कोए ।
दरसन परसन प्रेम गति आनन्द मंगल होए ॥

विषय—ज्ञान-भक्ति, सद्गुरु में विश्वास-वर्णन आदि ।

टिप्पणी—ग्रंथ में अन्य ग्रंथों के समान 'पुष्पिका' वाक्य नहीं दिये गये हैं । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध संख्या—४० (ख) है । यह ग्रंथ धरकधा (शाहाबाद) के दरियामठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५२] (छ) अग्रग्यान–*ग्रंथकार*—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादास । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना चिकना कागज । पृ०-सं०—२३ । प्र० पृ० पं० लगभग २० । आकार—"५½×६" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी ।

रचनाकाल—× । लिपिकाल—अगहन सुदी पष्ठी, रविवार, सवत् १६३७ वि ।

प्रारभ—सत्तनाम

गरथ अग्र ग्यान, मागल दरिया साहब
मुक्ति हंस उबारन सत गुर बदी छोर

साखी

अरज कीन्ह सीरनाग दया नीधि सुनो लीजिए
सार सब्द समुझाए बहुरी न भव जल आवही ॥

मध्य— तन मन धन अब तुम पर यह सभ अरपन कीन्ह
करो दया बहु भाति यह रहा कबही जनही जनि मीन्ह ॥

अत— बेवाहा पुर्ख अमान है दरसन दीन्हो आए
सरहीनदा मुक्ति है सबबोधि कहा समुझाए ॥

विषय—माया की व्यापकता, निर्गुण वर्णन तथा जोगजीत (मुक्ति) की चर्चा ।

टिप्पणी—इस ग्रथ में सृष्टि-रचना तथा माया की व्यापकता का सविस्तार वर्णन है। सत्पुरुष के सोलह पुत्रों की कथा में पाप और पाखण्ड की बड़ी तीव्र भर्त्सना है। यह ग्रथ परिषद्-सग्रहालय में सुरक्षित है। सग्रहालय में इसकी क्रमसख्या—४० (ख) है। यह ग्रथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ।

[५३] (क) गणेश-गोष्ठी—ग्रथकार—सन्त कवि दरिया साहब। लिपिकार—सुकुल दास। अवस्था—प्राचीन। हस्त निर्मित मोटा कागज। पृ०स—२१। प्र० पृ० प लगभग—१३। आकार—६×६। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कातिक बदी अष्टमी, शनिवार सवत् १८६४ वि ।

सतनाम

प्रारभ—आ जग मे पढ़ी पढ़ी बेद पूराना
जाति शम्भि जाके कहाये नरें, जीवन्ह के घाता।

मध्य— ठाढ़ा बोल मारू मैदान टगर म लाल धमका
सुनहि सूर जो हो दिन गर मे
ढाल ले जर हाथ तग दहिने भला ॥

अत— गध सुगध शमे तुंठि आवे
रत ना तुर खाहे शमसारा ॥
ताह पर करे नेम अजारा

फहँ दरिया सेह जरा को रगरा
शतनाम गहर मे दौ रगरा ॥

विषय—मूर्ति-पूजा, कर्मकाण्ड आदि का खण्डन ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खण्डित है। प्रारम के सात पृष्ठ नहीं है। कागज प्राचीन है। पृष्ठ-क्रम ठीक करने के लिए पुन पेंसिल से पृष्ठ-संख्या लिखी गई है। दन्त्य 'स' के लिए 'श' का ही प्रयोग है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कंध-संख्या—४१ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंत साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५३] (ख) ज्ञानमूल (मुलज्ञान)—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—शुकुलदास फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना कागज। पृ०-संख्या—१८—(२२–४०) प्र० पृ० पं० लगभग—१४। आकार—"५½×५½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कार्तिक वदी, एकादशी, मंगलवार।

प्रारंभ—शतनाम

बेग्राहा शाहेब बे कीमती गरथ मुल ज्ञान भाखत
दरिग्रा शाहेब गरीब नेवाज वदि छोड़
शत वर्ग शर्व उपरे शाषा पत्र शभीवः ।।
जल थल शभ मे व्यापिग्रा शासगुवार शपीव
ग्राठि ग्रत के उपमुला ॥

मध्य— शोइ हश गुन शार है जीन्हि मानहि कहा हमार ।
शब्द तेग यह गहि कै उतरै भव जल पार ॥

अन्त— जाके नीगुन बेद यह कहइ शगुन शरुप देह धरी लहइ ॥
रवी को न छवी यह न छीत पर, यह नीगून को भाव
न छवी ते रवी नाहि होत है, नीगून सगून को राव. ।।।

विषय—त्रिगुण देवों से सत्पुरुष की विभिन्नता, सत्पुरुष का जंबूद्वीप में प्रचार-कार्य।

टिप्पणी—यह ग्रंथ सुंदर अवस्था मे है। कागज प्राचीन है। ग्रंथ की लिपि पुरानी है। लिपिकार ने चवर्ग 'छ' का प्रयोग 'ज' के समान किया है। दन्त्य 'स' के स्थान मे तालव्य 'श' का प्रयोग अधिक है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में संगृहीत है। संग्रहालय में इसकी स्कंध-संख्या—४१ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा-(शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५३] (ग) अग्रज्ञान—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—शुकुल दास फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—

२० (४१ ५६)। प्र पृ पं लगभग—१४। आकार—५$\frac{1}{2}$"×
५$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—
कार्तिक सुदी, नवमी, संवत् १८६४ वि०।

प्रारम्भ—शतनाम ॥

बेवाहा नाम नीशान
शत बरग जीशा श्यामान जा
प्रीत औद दरीश्रा शाहेब दरीश्रा
गरी मेवाज ॥
अर्ज कीन्ह शीरनाए, दया नीधि मुनिसीश्रीये
शार शब्द शमुझाए बहुरि न मौ जल आवही ॥

मध्य— तन मन धन सब तुम्ह पर यह सम अरपन कीन्ह।
करो दया बहुमांनि यह रहो क्वही जनि भीन्ह ॥

अन्त—बेवाहा पुरुष अमान है दरश हो आए
शाही नदा शुभीत है शम बीधि काहा सुझाए ॥

विषय— माया की व्यापकता, निर्गुण निगुण विवेचन आदि ॥

टिप्पणी—यह ग्रंथ यद्यपि अति प्राचीन है, फिर भी इसके अक्षर साफ एवं सुन्दर हैं। ग्रंथ में तालव्य 'श' का अधिक प्रयोग हुआ है। लिपि अस्पष्ट है। अन्त के कुछ पन्ने दीमक द्वारा नष्ट कर दिये गये हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में संगृहीत है। संग्रहालय में इसकी क्रम संख्या—४१ (ग) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५४] गणेशगोष्ठी—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—रामधीत दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना कागज। पृष्ठ-संख्या—१७। प्र पृ पं० लगभग—२४। आकार—४"×६$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ता० १२ ६ ४०।

प्रारम्भ—शतनाम ॥

गुप्त महल काशी में अस्सी बरना के तीर
गदारा पण्डित आ दरिया साहब स

साखी

पण्डितराज सुनी लीजिये बचन सत सुजान
यही ग्रंथ कछु साज रा मन भरक सुजान ॥

मध्य— चारी सु क भय सब, नना रंग तरंग
कहे न पंग बांझिया, जहा सुरति मा अंग ॥

अन्त— साधु साधु सब कहत है, साधु समुद्र वार
अलल पक्ष कोई एक है, पच्छी कोटि हजार ॥

विषय—साम्प्रदायिक भेद-भाव, मूर्त्ति पूजा, कर्मकाण्ड, वेद आदि के खंडन तथा ईश्वर का प्रतिपादन।

टिप्पणी—ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। लिपि आधुनिक एवं सुस्पष्ट है। अक्षर सुन्दर हैं। पंक्तियाँ सीधी हैं। लिपिकाल एवं लिपिकार के लिए दो तरह के परिचय प्राप्त हैं। ग्रन्थ के अन्त में उपर्युक्त तिथि-निर्देश है, किन्तु दूसरे पृष्ठ पर "सम्वत् १८८३ पूस साल, सन् १३४७" लिखा है। इसी तरह लिपिकार के लिए—"लिखा था दसखत दीलराम दास जी के था" लिखा है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी क्रमांक-संख्या-४२ (ग) है। यह ग्रन्थ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महन्थ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५५] मूर्त्ति-उखाड़—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना मोटा कागज। पृष्ठ-सं०—३६। प्र० पृ० पं० लगभग-१७। आकार-'८×६½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—सतनाम।

सत सुक्रीत जोग जीत अर्ज अचीत
पुर्न मुनीदं कह नामे कबीर दरीया
नाम अ मोल हन हसारन बदी छोर
गरंथ मुरति उखार भाखल दरिया
साहब धरकधा मो तख्त कीया०।

॥ चौपाई ॥

जाहाँ बसे सतगुर सतपुर देसवा
भेसवा धरीय पगु टारही रेजी।

मध्य— अमल अमान तो ही पावे उरेजी
दुनो दीन मे खलल परा है।
मारी की हिसी कुकुरा नेउर जी
दुनो दीन के ऐक मीलावै॥

अन्त— पवन सबद ले गान करत है
बीरह सबद सीख पैठे

धका देखी शुन्न त्यागिया
त्यागवा धन और धाम ॥

विषय—मूर्ति पूजा-खण्डन एवं कृष्ण के विभिन्न अवतारों का खण्डन युक्त वर्णन।

टिप्पणी—ग्रंथ खण्डित है। लिपि सुन्दर है। स्थान-स्थान पर काला और लाल चक्र बनाकर दरिया पंथी विचारों को स्पष्ट किया गया है। ग्रंथ के खण्डित होने के कारण लिपि काल का उल्लेख नहीं है। विषय का प्रतिपादन सुन्दर ढंग से किया गया है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी क्रम-संख्या—४१ है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु चतुर्भुजदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५६] ज्ञानमूल—ग्रंथकार—सन्त कवि दरिया साहब। लिपिकार—प्रतापनाथ फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना मोटा कागज। पृष्ठ-संख्या—२९। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—"६ × ८½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कार्तिक बदी पूर्णिमा (?) सोमवार, वि० सं० १८६६ सन् १२५० फसली।

आरंभ— सतनाम
नाम ना ज्ञान मुरत
दरीआ [illegible]
न ध्यान मूल [illegible]
मीसन हंस उबारन [illegible] नाम
[illegible], [illegible] जीव ॥१॥
[illegible] में [illegible] पीव ॥

मध्य — [illegible]
[illegible] में [illegible] है जो [illegible] ॥

अन्त— दरीआ [illegible] यह [illegible], यह निर्गुन का भाव
[illegible] दरी [illegible] है, निर्गुन सगुन का भाव ॥

विषय— [illegible] वर्णन।

टि०— ग्रंथ पूर्ण है। कागज सुन्दर है। भाषा शुद्ध एवं लिपि स्पष्ट है। ग्रंथ के अन्त में दरिया साहब के स्थान का पूरा नाम उल्लिखित है—'[illegible]'। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी क्रम-संख्या—४४ (क) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ

के महंत साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५७] (क) दरियासागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—फकीर गिरधारीदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना हरे रंग का कागज। पृ०-सं०—८२। प्र० पृ० पं० लगभग—१५। आकार—"६ × ८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—वैशाख सुदी पंचमी, शुक्रवार, फसली सन १२६० साल।

प्रारंभ— सतनाम ॥
सत सुकृत दरीया साहेब
सत वरग नाम नीसान ग्रंथ
दरीया सागर सतन
सुकीत—साखी
ग्रंथ दरीया सागर मुक्ति भेद नीजुसार
जो जन सब्द बीबेकीया सो जन उतरे पार ॥

मध्य— मरकठ नग नाही चीन्हही, नगन फीरे बनमाभ
नाम बेमुख नर बीकल है, बलु जननी होए बाफ ॥

अन्त— कोठा महल अटारिया सुनो सखन बहुराग
सतगुर सब्द चीन्हे बीना जेवो पंछीन्ह मे काग ॥

विषय— शब्द और नाम की महिमा, निर्गुण सत्पुरुष और सगुण अवतार का वर्णन, साधु-संगत से लाभ आदि।

टि०— यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। ग्रंथ की भाषा और वर्णन-शैली अच्छी है। लिपि स्पष्ट है। ग्रंथ के अन्त में लिपिकार का पूरा पता लिखित है। चौपाई और साखी की लेखन-प्रणाली पुरानी है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४६ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५७] (ख) ग्यानदीपक—ग्रंथकार—संत कवि दरियासाहब। लिपिकार—गिरधारीदास फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना हरे रंग का कागज। पृ०-संख्या—१५५। प्र० पृ० पं० लगभग—१५। आकार—"६ × ८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चतुर्दशी, मंगलवार, सावन शुक्लपक्ष, संवत् १६४१ वि०; फसली सन् १२६१ साल।

प्रारंभ—सतनाम

सत सुकीत हंस उबारन चौरी (बंदी) छोर
सत वरग नाम नाशन भ्रम ग्यान
दीपक मग्गत दरीया साहेब सत
गुर सतनामा साखी
प्रेम जुगति नीजु मुल है गुर गमी करो सुधार
दायान्दीपक जबही बर दरसन नाम अधार ॥

मध्य— काया कछाआ भस धरी, नाची का छोगुनगाए
चार साहु पन्चानी हो, प्रेम भगतीलव लाए ॥

अंत— भया उपूरन ग्यान, सतगुर पद पावन करा
उबरे हत मुजान, जीही गमी किवो बीवेक यह ॥

विषय— सत्पुरुष और सद्गुरु-माहात्म्य-वर्णन।

टि०— ग्रंथ की अवस्था अच्छी है। लिपि सुस्पष्ट है। शिव-पार्वती और गु भवनारद-वार्तालाप दार्शनिक भित्ति पर आधारित है। दरियापंथ के दार्शनिक तत्त्व का सुंदर परिचय मिल जाता है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी क्रम संख्या—४६ (घ) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु अनुपदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४७] (ग) नौमाला—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—लछुमनदास। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना हुए रंग का कागज। पृ० सं०— २। प्र० पृ० में लगभग—१८। आकार—६×८। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चइत (चैत्र) सोमवार, पंचमी सन् ११०४ साल। संवत् १८५४ वि०।

प्रारंभ— अथ नौ माला
प्रथम नाम सतनाम सजीवन
समरथ दीन देयाला।
सत साहेब गुरु सागरगमी
सुख सपूरन कन्ता ॥

मध्य— का हीर मनीहरिमाके छोर, छुक अनगमी
मौना परवर दीगार हक छत्रपती सुखधामी ॥

अंत— सत पुर्ष सत नाम सतधर्म सत
धाम सत बरन सतरयान सतसंग गहुँ ॥

अजर अंग अजर गुन अजर रंग
अजर लोक अम्रित अगम पंथ रहु रे ॥

विषय—सतनाम-माहात्म्य-वर्णन।

टि०— इस दो पन्ने के ग्रंथ के पद सुललित हैं। लिपि नागरी है। इसमें ईश्वर-भक्ति के उपदेश हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४६ है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५७] (घ) अग्रग्यान—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—गिरधारीदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना हरे रंग का कागज। पृ०-संख्या—२६। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—६"×८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—कुआर सुदी, बृहस्पतिवार, ता० २१ संवत् १६४१; सन १२६१ फसली साल।

प्रारंभ—सतनाम
ग्रंथ अग्रग्यान
भाखल दरीआ साहेब
मुक्ती के दाता हंस उबारं व
न बंदी छोर दरीआ साखी।
अरज कीन्ह सीरनाए, दा अ (दया) निधी सूनी लीजीए
सार सब्द समूकाए बहुरी ना भौ जल आवही ॥

मध्य— नीर्गुन नीयछर नाम है सरगुन सरीर तोहार
ऐन झरोखा देखिये हम रहो दुनो सोन्वार ॥

अन्त— हीरा मनी नीजुदास हए, सभ दासन्ह को दास
सतगुर से परचे भइ, औगसा प्रेम परगास ॥

विषय—माया की व्यापकता, निर्गुण-त्रिगुण-विवेचन।

टि०— यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। कागज प्राचीन है। लिपि स्पष्ट है। चौपाई और साखी आदि का यथा स्थान ठीक उल्लेख हुआ है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४६ (घ) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५८] अलिफनामा—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—प्रताप फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना साधारण मोटा कागज। पृष्ठ-

संख्या—७ । प्र० पृ० प० लगभग—२३ । आकार—६×८½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—वि० १८६ संवत् सन् १२५१ साल ।

प्रारंभ—सतनाम

गर्थ अलिफनामा भाखल दरीआ साहब हंस उबारन दआ को सार्ग
अलिफ अलाह सभना सीरताज अव्वल आखिर बाहि काज ॥

मध्य— अलीफ नीशान इलाही कुदरत अलीफ दीदार देखै सो हजरत ॥

अन्त— इआ बेबाहा है साहब मेरा हीं आसिक दील बदा तेरा
दरीआ दिल जो करै सफाइ ऐन दीद परगट सो पाइ ॥

विषय— सत्पुरुष-माहात्म्य वर्णन ।

टिप्पणी— ग्रंथ बहुत छोटा है । इस छोटे से ग्रंथ में सत्पुरुष का माहात्म्य वर्णन हुआ है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी क्रम-संख्या ४७ है । यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[४६] सहस्रानी—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—प्रताप फकीर । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना मोटा कागज । पृष्ठ सं०—५३ । प्र० पृ० प० लगभग—१८ । आकार—६×६' । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष कृष्ण पक्ष ११, शनिवार, संवत् १८०० वि० ।

प्रारंभ—सतनाम

गर्थ सहस्रानी साखी भाखल दरीआ साहब सतगुर सतनाम ।
बेगहा नीजु जानहु जाकथा न हाए
आरी मत गुन सत है हुआ आरी नाही काम ॥

मध्य— ग्यान हुआ तब ध्यान है, भगती हुआ तब जाग
जहां दया तहां धरम है सीगरा प्रेम सोहाग ॥

अंत— संत सुरत सुमिरन करो सम धीधि होत आनन्द
सकल सभा मह सत साभे ज्यों उडीगन मह चंद ॥

विषय— दरिया साहब के विभिन्न विषयों पर १०५१ पदों का संग्रह ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ दरिया साहब के अन्य ग्रंथों से उद्धृत कुछ पदों का संकलन है । जहाँ तहाँ कुछ मौलिक रचनाएँ भी हैं । सामान्य धारणा के अनुसार इसका प्रारंभिक रूप 'सतसइ' के रूप में था । केवल सात ही पद

इसके प्रारम्भ में लिखे गये थे। शनैं-शनैं इसमें पद बढ़ते गये और उनकी संख्या बढ़कर १०५३ तक पहुँच गई। इसलिए इसका नाम 'सहस्रानी' पड़ा। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या ४८ है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६०] (क) प्रेममूला—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—बाबू जंगबहादुर राय। अवस्था-अच्छी। आधुनिक यंत्र का बना कागज। पृ०-सं०—१२। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—"६½ × ६¼"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—श्रावण शुक्ल पक्ष १३, संवत् १६८६ वि० बुधवार।

प्रारभ— 'म कमल जल भीतर, प्रेम भवर ले वास
होत प्रात सुपट खुले, भान तेज प्रकाश ॥

मध्य— तन कर मटुकि प्रेम कर पानी, निकले घृत सुवास बखानी
कर्म जीव मलिन जो चीन्हा, सत्य विना ब्रह्मय छीन्हा ॥

अन्त— प्रेम भक्ति जाके बसे, निस दीन रहे अधीन
दरिया दिल कहं देखिये, रहे चरण लव-लीन ॥

विषय— सद्गुरु-भक्ति-प्रतिपादन।

टिप्पणी— ईश्वर-भक्ति और सद्गुरु-माहात्म्य-वर्णन पठनीय है। यह ग्रंथ आधुनिक कागज पर प्रचलित (नई) लिपि में लिखा गया है। ग्रंथ खण्डित है। प्रारम्भ की कुछ पंक्तियाँ नहीं हैं। जहाँ-तहाँ लिपि में अँगरेजी का भी व्यवहार हुआ है। ग्रंथ के अन्त में लिपिकार का नाम अँगरेजी और नागरी दोनों लिपियों में है। ग्रंथ का प्रारम्भ बारहमासा आदि गीतों से हुआ है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या ४६ (घ) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६०] (ख) दरियासागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—छेदीदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना खण्डित जीर्ण-शीर्ण कागज। पृ०-सं०—६४। प्र० पृ० पं० लगभग—१७। आकार—"६½ × ६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ल पक्ष, रविवार,

प्रारंभ— आमा अगम अपार हम बम सुख पावही।
काइ ग्याना कर विचार, प्रेम तत्त् जाके बसे॥

मध्य— हम नाम अग्रिन नाहि चाप, नाहि पावै पइसार ।
कहँ रिया नग अम्मवा नाम बिना मसार॥

अंत— कोग महल अगरीया सुनवा सर्वन बहुराम।
मन गुर शब्द चिन्हे बिना, जवों पड़ीह मे काग॥

विषय— निर्गुण और सगुण अवतार वर्णन तथा शब्द-नाम माहात्म्य प्रसंग।

टिप्पणी— यह ग्रंथ अत्यन्त प्राचीन है। कागज जीर्ण शीर्ण और ग्रंथ का अन्तिम भाग खण्डित है। अक्षर और लिपि मनोहर हैं। ग्रंथ के अन्त में दरिया साहब का निर्वाण-काल निम्न लिखित है- संवत से अठारह शे सैतीस पग्रानकी वो छपलाक जो जन शब्द विवेकिया मन मकल शम सोक॥

भादो बदि चौथि अधार के दिन रहेवा सुकवार।
सबा काम जरौनि गवा दरिया गवत विचार॥
यह ग्रंथ परिषद संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी ग्रंथ-संख्या-८६ (ग) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महथ साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६०] (ग)अमर सार—(अमर सार)-ग्रंथकार-संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—सुनआद दास। अवस्था-प्राचीन, हाथ का बना जीर्ण शीर्ण कागज। पृ-सं०—१०। प्र पृ० पं० लगभग—१५। आकार—९६½×६। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— सतनाम
सत वर्ग नाम
नाशान शुक्रीन दरी
श्री साहब दया अवारन ग्र
हि दास ग्रंथ अम ग र सास
म दरीया साहब सतनाम साखी १
शान गुर बन सुया गम बीमन धुनि का मूल
पर रकज न्याय तहाँका अजर अनुपम फूल॥

मध्य— दरपन दाग न लागहि नैंन रहै भरीपूर ।
ऐन ऐन मे दीशै कहैं दरीआ सोऽमूर ॥

अन्त— मूल नाम गति पार कथाव हुत बीस्तार है ।
शतहि करो विचार शंगें शकल बीशारिकैं ॥

विषय— सद्गुरु और सन्तपुरुष की स्तुति, पाखण्ड-खंडन आदि ।

टिप्पणी— ग्रंथ जीर्ण शीर्ण कागज पर लिखित है । लिपि अस्पष्ट है । लिपिकाल अज्ञात है । लिपिकार का भी पूर्ण पता नहीं चलता । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४६ (ग) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६०] (घ) यज्ञ-समाधि—(जग्य समाधी)–ग्रंथकार–संत कवि दरिया साहब । लिपिकार–ठाकुर फकीर । अवस्था—प्राचीन हाथ का जीर्ण-शीर्ण कागज । पृष्ठ-संख्या—१६ । प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । आकार—६½"×६" । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । रचनाकाल–× । लिपिकाल—संवत् १६०६ वि० ।

प्रारंभ— सत्तनाम
गंथ जग्य समाधी
श्री क्रीस्न दुदीस्टील
का बोध जानब ॥ छन्द ॥
एही भाती कोप री पचके सोभा रथ को महिमा कीबो ।
मुकुति कारन जुधी ठानेवो तीन्हकी गती कैसे दीबो ॥

मध्य— चारी खुट के भेख सभ नाना रंग तरग ।
काहे ना घट बाजीआ महा सुरति भौ भंग ॥

अन्त— साधु साधु सभ एक है, जब पोसता कर खेत
कोइ कुदरती लाल है अवर सेत का सेत ॥

विषय— कृष्ण-युधिष्ठिर–संवाद के द्वारा ज्ञानोपदेश ।
पाखण्ड का वहिष्कार, सद्गुरु में विश्वास आदि ॥

टिप्पणी— ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । कागज जीर्ण-शीर्ण है । लिपि स्पष्ट है । लिपिकाल अपूर्ण है । श्री कृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद के द्वारा 'ज्ञानोपदेश हुआ है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४६ (ख) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-

मठ महन्थ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६१] (क) दरिया सागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—उमराव दास फकीर। अवस्था—अच्छी। हाथ का बना मोटा कागज। पृ० संख्या—८४। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—६ × ६'। भाषा हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सम्वत् १८८५ वि०, वैशाख सुदी त्रयोदशी, एतवार।

प्रारंभ— सतनाम
मुक्त दरीआ माइ
ये हंस उबारन मुकुति दाता
अथ दरीआ सागर साखल दरी ॥ साखी ॥
अथ दरीया साग्र मुक्ति भेद नीजु सार।
जो जन शब्द बीबेकीआ सोतन उतरही पार ॥

मध्य— हंस नाम अप्रीत नाही चाखेवा नाहि पाए पइसार।
कहं दरीआ जग अरुझेवो एक नाम बीना ससार ॥

अंत— कोठा महल अटारीआ सुन शर्वन बहुराग
सत गुर सब्द चीन्हे बीना ज्यों पछीन्ह में काग।

विषय— नाम की महिमा तथा छप लोक का वर्णन आदि।

टिप्पणी— ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। लिपि स्पष्ट है। लेखन शैली पुरानी है। रचनाकाल अज्ञात है। ग्रंथ के अन्त में लिपिकार का पता लिखित नहीं है। यह ग्रंथ परिषद् संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या-५० (घ) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महन्थ साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६१] (ख) भक्ति-हेतु—(भगतिहेतु)—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—उमराव दास फकीर। अवस्था—अच्छी, प्राचीन। हाथ का बना मोटा कागज। पृ० संख्या—३२। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—६' × ६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सम्वत् १८८५ वि० साल ज्येष्ठ बदी नवमी।

प्रारंभ— सत्तनाम
ग्रंथ भगति हेतु भा
सत दरिआ साहव सतनाम
ग्यान भगति नीजु सार है सुनो सर्वन चीत लाइ।
विगति चीगति वीखान एह, अहा अनुप देखाए ॥

मध्य— ब्राह्मन सो जो ब्रह्म ही चीन्है करै भगति लौ लीन
कहे दरीआ सो वाचीहो पंडीत पर्म अधीन ॥

अन्त— भादो वदि चउथ दीन गवन कीवो छपलोक
जो जन सब्द वीवेकीआ मेटै सकल सभ सोक ॥

विषय— अनेक उदाहरणों द्वारा ज्ञान-भक्ति-विवेचन, सद्-गुरु-स्तुति और साधु असाधु-वर्णन आदि ॥

टिप्पणी— ग्रंथ के अन्तिम कुछ पन्ने दीमकें चाट गई हैं। लिपिकार ने ग्रंथ की लिपि करने में बड़ी सावधानी से काम लिया है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—५० (घ) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महन्थ साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६२] (क) दरियासागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहव। लिपिकार—लालधारी दास। अवस्था—सुन्दर, हाथ का बना प्राचीन मोटा चिकना कागज। पृ०-संख्या—८४। प्र० पृ० पं० लगभग—१७। आकार—६" × ६½"। भाषा-हिन्दी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— वैवाहा साहव
सुकरीत दरीआ साहव
ग्रंथ दरीआ सागर भाखल ॥
॥ साखी ॥
ग्रंथ दरीआ सागर मुक्ती भेद नीजुसार
जो जन सवद वीवेकीआ · सो जन उत्तर ही पार ॥

मध्य— यह मन काजी यह मन वाजी·
यह मन करता यह मन दरवेश
यह मन पाडे यह मन पंडीत
यह मन दुखीआ नरेश ॥

अन्त— कोठा महल अटारीआ सुनै सर्वन वहुराग
सतग सब्द चीन्है वीना · जेव पंछीन्ह मे काग ॥

विषय— छपलोक, सत्गुरु-माहात्म्य एव नाम की महिमा का सविस्तार-वर्णन ।

टिप्पणी— यह ग्र थ सुदर अवस्था म है । कागज मोटा है । लिपिकाल का उल्लेख सम्भवत नहीं है, क्योंकि ग्रथ के अ त में केवल—

'समपुरन—

'दसखत लालधारी दास' ही लिखा है । यह ग्रथ परिषद् सग्रहालय में सुरक्षित है । सग्रहालय में इसका क्रम सख्या-५१ (ख) है । यह ग्रथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया मठ के महन्थ साधु चतुरा दास क सौजन्य से—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ ।

[६२] (ख) ग्यान रतन—ग्रथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—लालधारी दास का पत्रार । अवस्था—अच्छी, हाथ का बना प्राचीन मोटा मजबूत कागज । पृष्ठ-स०—१०६ । प्र पृ प० लगभग-१७ । आकार—६ × ६½' । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना काल—× । लिपिकाल—सम्वत् सन मावन सुदी गुरुवार ।

आरम— सत्तनाम—
सत्त पुर्ख साह
य सुकीत नाम सत गुरु गो
म जात दरीया साहब गर्थ
भाखल ग्यान रतन मुक्ति क
दाता हम उबारन बदी छोर

॥ समो ॥

ग्यान रतन मनि मगल बीमल सुधा नीजु नाम
करा बीबेक बीचारा न नाए अमर पुर धाम ।

मध्य— कहे सीव सुनु बचन भवानी माआ गर्व उतपात
नाम म भगत ना दास राम का मर्मी रसातल जात ॥

अ त— सोरठा सत्तनाम—
नवा तरनी उनमाह नाम बीमल जग बीदीत है ।
समुमि पकरीये बाह भव नाही बुड अहाज एह ॥

विषय— ज्ञान भक्ति, सगुण, निर्गुण आदि का सविस्तार वर्णन सक्षेप में राम कथा आदि ॥

टिप्पणी— यह ग्रथ आद्योपान्त सुवाच्य है । लिपि स्पष्ट है । लिपिकाल का उल्लेख अपूर्ण है । समत सन लिखने क बाद तत्सबधी

अक्षर या अङ्क कुछ भी लिखित नहीं है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय मे सुरक्षित है। संग्रहालय मे इसकी स्कंध-संख्या ५१ (ख) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा०धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६२] (ग) ब्रह्म विवेक—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—लालधारी दास। अवस्था—अच्छी, हाथ का बना प्राचीन मोटा मटमैला कागज। पृष्ठ-सं०—३३ । प्र०पृ०पं० लगभग—१७ । आकार—६"-६½ । भाषा—हिन्दी। लिपि--नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल— × ।

प्रारंभ— सतनाम—
बेवाहा साहब सुकरीत
दरीआ साहब गरथ ब्रह्म
बीवेक भाखल . साखी ।।।
ब्रह्म बीवेक ग्यान एह स्रोता सुमती सुधार
ग्यानी समुझी बीचा ही उतं ही भवो जल्पारपार।।

मध्य— तीनी लोक के ठाकुर ' भुली प्ररा भवो ग्यान
जे मोहनी सुर त्र (नर) मुनी उड वौ सोन परी यह धान।

अन्त— ब्रह्म बीवेक ग्यान यह . पटे सुने चीत लाए
मुक्ती पदारथ पावए. सदा रहे सुख पाए।।

विषय— सत्पुरुष के सत्य-स्वरूप का वर्णन। विवेक-बुद्धि की आवश्यकता। पाखंडादि-खंडन। सहज-योग-प्रतिपादन।।

टिप्पणी— ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। लिपि स्पष्ट और अच्छी है। लिपिकाल का उल्लेख सम्भवत. नहीं है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कंध-संख्या-५१ (ग) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६३] ज्ञानरत्न—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार --प्रताप फकीर। अवस्था-नवीन यन्त्र-निर्मित (फुलस्केप) कागज। पृष्ठ-सं०—११७। प्र० पृ० पं० लगभग—२४। आकार-८"×१३½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत् १८ ३४ साल, फाल्गुन कृष्ण पक्ष, सोमवार।

प्रारंभ—सतनाम

अथ ग्यान रतन प्राम्भ

दरीया साहब सत गुर सुकी

■ दया उचारे मुकुति के

दाता नाम नीशान बनी छार

दीन दयाल सरन सामथ क ॥

॥ सामा ॥

ग्यान रतन मनी मगल बीमल सुधा नीजु नाम

कागे थावेक बीचारी कै आए अमरपुर धाम ॥१॥

मध्य— चले भभीखन राम पहः तजी सकल परीवार

बहुरी भवन में आइक देखन लक दुआर ॥

अंत— गुर सो मम जनी राखउ भीती साद नीजु सार

सुकीन भवन बीचारीया उतरी चहु भवपार ॥

विषय—सगुण निर्गुण भक्ति-प्रतिपादन, ज्ञानोपदेश, तथा संक्षेप में राम कथा-वर्णन ॥

टिप्पणी—ग्रंथ की स्थिति अच्छी है। कागज नवीन (फुलस्कप) है। लिपि स्पष्ट एवं आधुनिक है। लिपिकाल स्पष्ट नहीं ज्ञात होता क्योंकि कागज की नवीनता और सम्वत् की प्राचीनता दोनों असंबद्ध हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध संख्या ५२ (ग) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया मठ के महन्थ साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६८] ग्रंथ-विवरण—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—दिलराम दास। साधु अवस्था—सुन्दर, हाथ का बना प्राचीन मोटा कागज। पृष्ठ-सं०—१७। प्र० पृ० पं० लगभग—८। आकार—४½"–५½"। भाषा—विकृत संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—चैत्र सुदी, पंचम शुक्रवार।

प्रारंभ—सतनाम सतसुकृत नाम [illegible] भाष्य

ब्रह्म श्री मनि साहब सत [illegible] नाम [illegible]

गुरु [illegible] दिन दरियो साहब भाष्य

[illegible] देव ब्रह्म [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ब्रह्म दिसर [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] ॥१॥

मध्य— दीण दयाल दा आलरच, पमि पटरज मगायक्रम्
कात कर्म मर्व नाम च ईभि प्रभुता वल जाणितम् ।।

अन्त— पूरर्व मव्द च मेद मेदो स्वेत ब्रह्म मन्पणम्
दरिया भाग्य तत्त्‌मारं ज्ञाण ब्रह्म निम्पणम् ।।

विषय— द्वैताद्वैतवाद, निर्गुण-सगुण ब्रह्मनिरूपण, विहगम-योग और पीपिलिक-योग-वर्णन, सद्‌गुरु-कीर्तन तथा हिंसा और पाखण्ड बहिष्कार आदि ।

टिप्पणी—ग्रथ सुन्दर अवस्था में है । लिपि अस्पष्ट है। भाषा (विकृत) संस्कृत है। हस्तलिखित प्रति हाल की है, परन्तु पोथी पुरानी है, क्योंकि १६१० ई० में बुकानन ने इसका उल्लेख किया है । कुछ लोग इसे कोकिल साहब की भी रचना मानते हैं * । यह ग्रंथ परिषद्-सग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कध-संख्या—५३ है। यह ग्रथ धरकन्धा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ ।

[६५] (क) ग्यान दीपक—ग्रंथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—लोकराज दास । अवस्था—सुन्दर, हाथ का बना प्राचीन मोटा कागज । पृष्ठ-सं०—१८ । प्र० पृ० प० लगभग—१७ । आकार—४½" × ६¾" । भाषा–हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल–× । लिपिकाल—सम्वत् १६१३ वि० सन् १२६३ साल, चैत्र वदी कृष्ण-पक्ष, नवमी, एतवार ।

आरंभ— सत्तनाम
ग्रथ ग्यान दीपक
भाखल दरीआ साहब हंस
उधारन मुकुति के दाता दीन देयाल
।। साखि ।।
प्रेम जुगूति नीजु मुल है ।। गुर गमी करो सुधार
दआ दीपक जबही बरे ।। दर्सन नाम अधार ।।

मध्य— छप लोक मे ममरेहउ।। सदा पुर्खं कए पास
तीनि लोक जम लुटीआ ।। कोइनी मरी सके नाही दास ।।

अन्त— हीरा मनी नीजु दास है ।। सभ दासन्ही को दास
सतगुर से परचै भइ ।। ग्रीगमा प्रेम परगास ।।

* देखिये डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री कृत "दरिया एक अनुशीलन" ।

विषय— सद्गुरु और संत की वन्ना। निर्गुण तथा त्रिगुण ज्ञान द्वारा मुक्ति। अमरपुर का वर्णन। पाखण्डों का उपहास।

टिप्पणी— ग्रंथ की अवस्था अच्छी है। विषयों का प्रतिपादन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। पाखण्डों का उपहास, आत्म निरोध, अहिंसा और ईश्वर भक्ति आदि विषय पठनीय हैं। लिपि सुवाच्य है। यह ग्रंथ परिषद्-ग्रंथागार में सुरक्षित है। ग्रंथालय में इसकी क्रम-संख्या—५४ (ख) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) स्थित दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है।

[६५] (ख) भक्ति हेतु—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—हीरादास, लाकराज दास। अवस्था—अच्छी, प्राचीन, हाथ का बना मोटा कागज। पृष्ठ-संख्या—६६। प्र० पृ० पं० लगभग—१४। आकार—४½ × ६¾। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत् १९१० वि० माघ सुदी प्रतिपद् बुधवार।

प्रारंभ— "सतनाम।
सत सुकित साहब ग्रंथ भगत हेतु भाग
स दरीआ साहब मुक्ति के
दाता अगम अपार॥ साखी॥
ग्यान भगति नीजुसार है सुना सबन सीतलाए
कीनि भक्ति श्रीग्यान एह ब्रह्म अनुप देखाए।"

मध्य— "अदीगती रूप ऊपार है धावरन तहीठाए॥
सत शब्द पहचानहिं साई बसही नीजुगाव॥"

अंत— "सुननाम गतिपार कथा बहुत बीस्तार है
मनहि करो बाजार सब सुकल बीमारी कै॥

विषय— अनेक उदाहरणों द्वारा ज्ञान भक्ति-विवेचन, सद्गुरु-स्तुति और साधु असाधु वर्णन।

टिप्पणी— ग्रंथ सुवाच्य है। कागज टिकाऊ है। लिपि स्पष्ट एवं सुन्दर है। लिपिकार दो हैं अतएव दो प्रकार के अक्षर लिखित हैं‡। यह ग्रंथ परिषद्-ग्रंथागार में सुरक्षित है। ग्रंथालय में इसकी

‡ ग्रंथ के अन्त में अनुराग ग्रंथ सम्पूरन अमरसार सीतल ग्रन्थ लिखा गया है।

स्कंध-संख्या-५४ (ख) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद)-स्थित दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६५] (ग) ब्रह्म-विवेक—ग्रंथकार-सतकवि दरिया साहब। लिपिकार—लोकराजदास फकीर। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना मोटा कागज। पृ० सं०—६७ से १०८। प्र०पृ०प० लगभग—१६। आकार—४½"×६¾"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत १६१३ वि०, मिति (२) दूज, चैत्र-शुक्ल, सोमवार।

प्रारम्भ— "सतनाम।

अथ ब्रह्म बीबेक भाखल
दरीआ साहब सुरूति के दाता
हंस उबारन ॥ साखि १ ॥

ब्रह्म बीबेक ग्यान गह ॥ स्रोता सुमती सुधार
ग्यानी समुझी बीचा रही ॥ उतरही भव जल पार ॥"

मध्य— "मन के रेख पहचीकें ॥ सोआ सडपे तेहीं जानी
जब लागी राम पलटी दम आवही ॥ सीआ बचन लहुमानी ॥"

अन्त— "ब्रह्म बीबेक ग्यान गह पढ़ै सुनए चीतलाए
मुकूती पदारथ पाइ है सदा रहे सुखपाए ॥"

विषय— सत्पुरुष-माहात्म्य-वर्णन, पाखण्ड-खण्डन तथा सहज-योग-प्रतिपादन।

टिप्पणी— ग्रंथ सुव्यवस्थित है। लिपि स्पष्ट है। इस ग्रंथ की पृष्ठ-संख्या पहले ग्रंथ से सम्बद्ध है। शैली सुंदर है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—५४ (घ) है। यह धरकन्धा (शाहाबाद)-स्थित दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६५] (घ) प्रेममूल—ग्रंथकार—सत कवि दरिया साहब। लिपिकार—लोकराज दास फकीर। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना सुंदर मोटा कागज। पृ०-संख्या—१०६ से १२५। प्र० पृ० प० लगभग—१६। आकार—४½"×६¾"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत् १६१३ वि०, कृष्णपक्ष नवमी, मंगलवार।

प्रारंभ— 'सतनाम ।
सत भक्ति साहब
ग्रथ प्रेम मुला भाम्रल
दरीआ साहब मुउति क न्ना
ता हस उवारन ।। साथि १
प्रेम कमल जल भीतरे ।। प्रेम मर्म से वाम
हान प्रान मधुर सुने ।। भान तेज परकास ।।"

मध्य— "क्हैं न्राया सतगुर खाआ ।। सत सब्द ही करा बिचार
अवगुर समता जगत मे ।। नीरमल मीला न सार ।।'

अंत— "भीया भवन बीच भक्ति है रहे पीआ के पास
मन उन्नास नाही चाहाए चर्न कमल की आस ।।'

टिप्पणी— ग्रथ क कुछ पन्न फट चुके हैं। लिपि स्पष्ट है। ग्रथ के अंतिम भाग के कुछ पृष्ठों को दीमकों न चाट लिया है। ग्रथ में लिपिकार न अपना पता नहीं दिया है। लिपिकाल में मास-नाम निर्देश सम्भवत नहीं है। यह ग्रथ परिषद्-सग्रहालय में सुरक्षित है। सग्रहालय में इसकी स्वध-सख्या—५४ (ग) है। यह ग्रथ धरकधा (शाहाबाद) स्थित दरिया-मठ के महथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ।

[६६] रामचरितमानस *—ग्रथकार—तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-स०—२३। प्र पृ० प० लगभग—१६। आकार—"८ × १ । भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— 'नैरामअातासहीत नैकपीसमुग्रीव
भजीकहरीनाल्करी भालुमाहावलमीव
चौपाइ
धरागीकक्कराचनुदीसघेरी मुखहीनीसानवजावहीभेरी
भऐउकोलाहलनग्रसमरारा सुनउन्मानननग्रतीहकारी
देखहुवानरकेचठीठाइ वीहसीनीसाचरसैनवालाइ
ग्रमकहाग्रस्हाम मवकी हाथमैठग्रहासीपीदीहा'

मध्य—(प्र स ४) "मुनीदसरघरीमाननवतेइकी हमनहीवीचार
"

अन्त— 'नाककानकाटेतहीजीग्रनारी फीराकोघमनभइगलानी
महनभामपुनावीतुरतीनासा देखतकपीदलउपजीत्रासा"

---

* क्रम सख्या ६९ से १०० तक के ग्रथ चौबे सग्रह [बेगरी मोतिहारी (चपारन) निवासी प गणेश चौबे द्वारा सगृहीत और प्रदत्त] के हैं।

विषय— रामचन्द्र जीवन-गाथा। गोस्वामी तुलसीदास के प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस के लंकाकाण्ड का खण्डित भाग।

टिप्पणी— प्रकाशित अन्य प्रतियों से पाठान्तर। प्रकाशित प्रति के उनचालीसवें दोहे से छियानठवें दोहे के पूर्व की चौपाई तक। ग्रंथ की लिपि पुरानी है। प्रारंभ और पुष्पिका भाग के खंडित होने के कारण न तो लिपिकार का पता चलता है और न लिपिकाल का ही। यह ग्रंथ प० गणेश चौबे, ग्रा० बँगरी, मोतिहारी (चपारन) के सौजन्य से प्राप्त।

[६७] श्रीमद्भगवद्गीता—हिंदी-रूपातरकार—भुवाल। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज। पृष्ठ सं०—४४। प्र० पृ० प० लगभग—८२। आकार—५½" × ६"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

दोहा

प्रारंभ— "आरजुन सो प्रभुभाखा गीता ग्यान अपार।
जन भुआल के स्वामी करहु मोर उवार॥

चौपाइ

धीतरास्टकग्जैशोस्हइ ध्रमछेत्र कुरुछेत्रजे अहइ
ममसुतपंडोहैनरनाहा उस समजुधी करे ..."

मध्य—(पृ० सं०-२२) "मोरीभगतीकरुआरजुन दुरलभभौसार
औरदेवतहीपुजेसोनहीउतरेपार"

अन्त— "गीतामहजोकहा वीचारी सोउभाखाप्रभुसेस्त.. ...
शुनतकाथाचीतभेउ अनदा गीताशुनत गऐस ....

दोहा

हरीजनशोकरोवीनती दोमनलावहु मोही
जन भुआलके स्वामी शाचीधी से वातोही
ईतीश्री.भागवतगीता सुपनेख अमतुती ब्रम्हवीधे आजोग्य
कीसनआरजुन शंवादेसन्यासिजोगवरनो नाम
आठाहमो अध्याए॥१८॥"

विषय— प्रसिद्ध संस्कृत-गीता का दोहे-चौपाइयों में हिंदी-रूपातर। कृष्ण और अर्जुन का संवाद।

टिप्पणी— कवि भुवालस्वामी खोज में नये मिले हैं। नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) की खोज में यह ग्रंथ मिला है, जिसमें लिपि-काल सं० १७६ वि० है। दे०—खो०—वि० '१६०६—१६११—ग्र० सं०—१३२। ग्रंथकार ने प्रारंभ या अंत में अपने संबंध में स्थान, काल तथा रचना आदि का कोई भी संकेत नहीं किया है। दोहे-चौपाइयों में रूपातरित यह ग्रंथ भाषा, रचना

तथा वर्णन की दृष्टि से सग्रहणीय है। प्रारभ का प्रथम पृष्ठ जीर्णता के कारण अवाच्य है। लिपि-शैली पुरानी कैथी से मिलती-जुलती नागरी है। यह ग्रथ प० श्री गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[६८] भक्त-विवेक—ग्रथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—जीर्ण शीर्ण पुराना, देशी-कागज। पृष्ठ स०—६४। प्र० पृ० प लगभग—२८। आकार—७½' × ६। भाषा-हिन्दी। लिपि नागरी। रचना काल-×। लिपिकाल—×।

प्रारभ— "नामप्रतापतेभएरेनघीरा नामथीमीखनरहापद्चारि नामप्रतापनभएेग्रधीकारि भीलनीशवरी मलादनिखाग नामप्रतापत कीवाप्रसादा"

मध्य—(पृ० स० ४६) चोपाइ। "कहेनारदशुनुकाशीपराइ भेखप्रतापकहीस गाइ अनीमाहीवेकरप्रवकारा भेखप्रतापताहिकेतारा हारीहेतुरह की हमुग्रारा"

अ त— 'तेहीतेनानुमकलमवसारा अुरुकहतजानहीग्रबका" अस्तुतिनीदादुइसमहोइ गुरमुमहातमननावीने भजन मुधानीरपीने"

विषय— रामनाम-महिमा-वर्णन और 'गुरमुख' विशेषता प्रतिपादन।

टिप्पणी— ग्रथ का प्रारभ और अत खडित है। ग्रथकार और लिपिकार का नामोल्लेख ग्रथ के मध्य म भी नहीं हुआ है। ग्रथ की यत्र-तत्र अवाच्यता का कारण ग्रथ की जीर्णता है। दोहे चौपाइयों में लिखित यह ग्रथ भक्तो की गाथा तथा भक्तिविशिष्ट-द्योतक कथाओं के उदाहरणों से भक्ति के महत्त्व को पुष्ट करता है। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) के ग्रथ-विवरण के अनुसार इस ग्रंथ के रचयिता बाधीदास हैं। उक्त सभा की खोज में उपलब्ध दो पाण्डु-लिपियों का लिपिकाल क्रमश ॥ १६३ वि० और १६३ वि० है। सरभग साधुओं में भी एक बाधीदास हो चुके हैं, किंतु य उनसे भिन्न प्रतीत होते है। द —खो०-वि — १६२६ ३१ ई० ग्रथ-सख्या ५५ और ५५ (बी)।

ग्रथ की लिपि पुरानी है। गणेश चौबे, बँगरी, मोतिहारी (चपारन) के सौजन्य से चौबे-सग्रह के लिए यह ग्रथ प्राप्त हुआ।

[६६] ज्ञानसरोदै— ग्रथकार-श्री चरनदास। लिपिकार—×। अवस्था-प्राचीन, मोटा, देशी कागज। पृ० स०—३२। प्र पृ प० लगभग—१६।

भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—
फाल्गुन कृष्ण १२। संवत्—१८७७ वि०।

आरंभ— "रामजी
श्रीगनेसाऐ नम.।
सुखदेवजी सहाऐ ।। ग्रंथ ग्यान सरोदै ।। श्री चरनदास कीत ।।

दोहा ।। नमोनमो सुखदेवजी ।। प्रनमो गुरु अनंत
तु प्रसाद सचर भेद को ।। चरनदास बरनत ।।
परमोतीम पर आतमा ।। पुरन बीस्वो बीस
आदो पुरस अवीचल तंही ।। ताही नवावो सीप ।।

कुंडलिया ।। छरछड सो कहत है । अछर सो टंग जान
नीह अछर स्वामा रहीत ।। ताही कोमन आन
नाही को मन आनी ।। राता दीन सुरती लगावो
आप आप वीचारी ।। औरन सीस नवावो ।।"

मध्य—(पृ० सं०-१६)
"हानी होई बहरै नही, आवन की नही आस
दहीने चलत न चलीऐ, दछीन पछीम जानी।
जारे जाऐ बहुरे नहीं तहाँ कछु आवै नाही
दहीने स्वर मह जाइऐ पुर्व उत्तर मत जी"

अन्त— "प्रीथी के प्रगास मे जुधी करै जो कोऐ
दोउ दल रहे बराबरी हारी वाऐ सो होऐ
अग्नी मत के बहतही जुधकरन मती जाव
हारी होऐ जीतै नही और आव तन घाव ।।"

विषय— संत-साहित्य। कबीर-दर्शन से मिलती-जुलती भावना। नाद, विन्दु, इडा, चक्र, अनाहतनाद, शब्द, बैन, पहिया, काल और निकाम आदि का विवेचन। निर्गुण-विचारधारा की मीमांसा से ओत-प्रोत। देखिए—

"निराकार अलीप्कतु देही जानी अकार।
आप न देही मानते ऐही तन तनु प्रसार ।।
देह मेरे तु अमर अविनासी जीवान।
देह नही तु ब्रभ है व्यापो सकल जहान ।।"

योग की स्वर प्रक्रिया और गमनागमन से सम्बन्धित श्वास के फलाफल का दिग्दर्शन। विभिन्न दिशाओं की यात्रा में दक्षिण, वाम एवं मध्य श्वास की प्रक्रिया एवं आरोहावरोह के परिवर्त्तन की विधि और उसका प्रभाव। पाप, पुण्य, सद्गति, सत्पुरुष, नाम और परमलाभ आदि का पुन-पुन. प्रयोग और मोक्षधाम तथा निर्वाण की विशिष्ट व्याख्या।

टिप्पणी— इस ग्रंथ के ग्रंथकार चरणदास हैं। जैसा कि पुस्तक के नाम से ज्ञात होता है सम्पूर्ण पुस्तक स्वर प्रक्रिया-विधि का अवबोधन करती है। भाषा सरल है। हस्तलिखित प्रति अव्यवस्थित है। दोहा कुण्डलिया और चौपाई ये तीन प्रकार के ही छन्द इस पुस्तक में मिलते हैं। कबीर के समान 'अनहद', 'सूक्ष्म' आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'प्रेम' शब्द का प्रयोग ब्रह्म के अर्थ में किया गया है। स्वर प्रक्रिया को ब्रह्म प्राप्ति (निर्वाण) का माध्यम बताया गया है। देखिए—

'आसन पद्म लगाइके ऐक ध्यान नीत साच।
बैठ नेत डालत स्वास ही ग्रव राव ॥

ग्रंथकार चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक और प्रसिद्ध संत थे। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज विवरणिका के अनुसार इनका पहला नाम रणजीत था। सुखदेव के शिष्य डेहरा (अलवर राजस्थान) निवासी जाति के घूसर बनियाँ, सहजोबाई नाम की एक स्त्री इनकी शिष्या थी। जन्मकाल सं० १७६० वि० और मृत्युकाल सं० १८३८ वि०। इनके अठारह ग्रंथ खोज में नागरी प्रचारिणी-सभा को मिले हैं। देखिए— खोज विवरण १६०५, प्र० सं०—१७ १८ १६ १६ ६—८ प्र० स —१४७ १६०६–११, प्र० सं०—४५ १६१७–१६, प्र० सं०—३७ १६२०–२२, प्र० सं०—२६ १६२३–२५ प्र० सं०—७४ १६२६–२८ प्र० सं०—७८, १६२६–३१, [illegible] सं०—९५ १६३२–३४, प्र० सं०—३८। ग्रंथकार ने स्वयम् एक ग्रंथ में लिखा है—'चरनदास हित सूँ कियो ग्रंथ अनेक प्रकार। अष्टादस और मारके काढि लियो तत्सार ॥' यह ग्रंथ पं० श्री गणेश चौबे ग्राम बगरी, जिला चंपारन के सौजन्य से प्राप्त।

[ं०] स्वासागुंजार—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी प्राचीन देशी कागज, आदि खंडित और मध्य का एक पृष्ठ भी। पृष्ठ-सं०—८०। प्र. पृ० पं० लगभग—१४। आकार—५½'×७¾'। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ— 'कामक्रोधममीतान्यग्नी ॥ श्रतकालमनजुगकरभैऐउ।
चारीउजुगपरलैतरगऐउ ॥
ममौ
ऐकजुगकेबीतचारौजुगमऐनासा ॥ ऐकनादवारीजुगमाऐमनजुगकी हप्रास"

मध्य—(पृ० सं० १५)
चौपाइ। "ऐहीबीर्यागहैसबदकाभासा नीसुवासरहमताकेपासा ॥

अतीअवीरकरनीकलुग   करनीकीऐमीलैगुरुपुजा ।।"

अन्त— "जीन्याकहीतोजगतरे ।। प्रगटकहोनजाए ।। गुपतप्रवानदेतहीं ।। राखीसीमवढाऐ ।। हंमातुमतीडरपीं ।। कालकीरुरुमोपरती ।। अमरलोकपहुचाटहीं ।। चलीत्वमवजलजीती ।। गेतोगरंथस्वानागु उदेरेकगारसंपुरन ।। जोपरतीदेखादेन्वाखोलीन्वानमटोसनदीअतेपंडीत जनसोमीनतीमोरीटुटलअछरलेवसमजोरीसुभमस्तु"

विषय— ग्वान के विचारों का वर्णन, गुरुपूजा का महत्त्व और मोक्ष-प्राप्ति के साधन का प्रतिपादन।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खंडित है। आरंभ के ११८ पृष्ठों का अभाव। ग्रंथ के केवल मात्र अवशिष्ट ८० पृष्ठों के कलेवर में ही सन्त-साहित्य के उत्तम-विचारों का प्रस्फुरण होता है। अन्त में ग्रंथकार, लिपिकार अथवा ग्रंथ-रचनाकाल या लिपिकाल का संकेताभाव है। नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को कबीरकृत ग्यानगुंजार की प्रति खोज में प्राप्त हुई है। दे०—खो० वि०–१६०६–११; ग्रंथ-सं०–१४३ जे०। ग्रंथ की लिपि-शैली प्राचीन है। कैथी अक्षरों से मिलती-जुलती लिपि है। यह ग्रंथ देगरी (मोतिहारी)-निवासी प० गणेश चौबे के सौजन्य से 'चौबे-संग्रह' के लिए प्राप्त हुआ।

[७१] लक्ष्मी-चरित्र—ग्रंथकार—×। लिपिकार—मोहनलाल। अवस्था—प्रचीन, हाथ का बना देशी–कागज। पृ० सं०–८। प्र० पृ० पं० लगभग—२८। आकार—६' × ५३/८"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२७० साल (सं० १६१६ वि०, १८६३ ई०)।

प्रारंभ— "श्रीपोथीलछीमीचरीत्र ।। चौपाइ
जटामैंपुरवीतसमैसाचीतयमैआऐचरनतुम्हमाची
जुगजुगमोहीचरनतुम्हआमातवहीदरसजीपुरुषहीआमा
लछीमीकारनराखेटनाउटाआकरहुरहोतुम्हठाउ
कैथीरजनीतुम्हठाकुरमोरीचरनकमलसेवककरजोरी"

मध्य—(पृ० सं०-५) "वोलैलछीमीप्रानपीआरी
कहहीचरनसोअप्रीत नारीमैतुमत्रीआमदामगवामी"

अन्त— "... नगुन कछु न करीहै प्रगानी
वनवोहलछीमीकेमहीमाजनमीटेनुससार
दुखसुख लीखा वीधाता सोकोउ मेटैपार
इतीश्रीलछीमीचरीत्रसंपुरनजोदेखासोलीखाममदोसनडीअते
पंडीतजनसेवीनतीमोरीटुटलआखरलेवसबजोरी"

पार्थीदुखीतत्तरदारत्तीखनीहारमाहनलालचन्द्रोबालमौबे
हुमखानागालासरैश्रा ता० १ जेठ शन् १२७० शाल"

विषय— अवतरण और विष्णु का आत्मनिवेदन—समुद्र मथन से लक्ष्मी का जन्म-चर्चा। लक्ष्मी का पुलकित होना। लक्ष्मी का विष्णु से रति। विभिन्न तिथियों में लक्ष्मी-पूजन का महत्त्व वर्णन और नारी-सम्मान तथा पूजा की विशेष चर्चा।

टिप्पणी— यह ग्रंथ खोज में नवोपलब्ध है। ग्रंथकार का नामोल्लेख नहीं है। ग्रंथ संभवतः अप्रकाशित है। भाषा में यत्र-तत्र भोजपुरी के भी शब्दों का प्रयोग हुआ है। ग्रंथ की लिपि पुरानी है। यह ग्रंथ श्री गणेश चौबे जी के दिवंगत पिता श्री प० भरथरी चौबे जी के द्वारा संगृहीत हुआ था। परिषद् संग्रहालयस्थ चौबे संग्रह के लिए प्राप्त।

७] **बिहारी सतसई**—ग्रंथकार—बिहारी लाल। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज जीर्ण शीर्ण। पृ० सं०—१६। प्र० पृ० प० लगभग—४८। आकार—८$\frac{1}{4}$" × ५$\frac{1}{4}$"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— "श्रीगणेशाय नमः॥
मेरीभवबाधाहरौराधानागरिसोइ
जातनकीझांईपरतस्यामहरितदुतिहोइ १
निकटइअनाकनीफीकीपरीगाहरिदामतें
तारगविन्दवारकेवारणतान
जमकरिमु हरिपरयोंदहिधनहरिचितलाइ
विषैत्रेपापरिहरिभज्यौनरहरिकेगुनगाइ २"

मध्य—(पृ० सं० १५)
"प्यासेदुपहरजेठकेरहेमतीरनसोचि
मरुधरपाइमतीरहीमारुकहतपयाधि ॥६१४॥
कुमहदुराजप्रजानिकोक्योंनवन्दुखदंद ॥
अधिकअंधरेजगकरतमिलिमावसरविचंद ॥६१५॥"

अन्त— "इहीआसअटक्योरहेअलिगुलाबकेमूल
ऐहेंफेरिवसन्तरितुइनडारनिवेफूल ॥६२८॥"

विषय— शृंगार-रस के दोहों में शृंगार-रस-वर्णन।

टिप्पणी— हिन्दी के प्रसिद्ध कवि, ग्वालियर राज्य के निवासी सं० १७३० वि० के लगभग वर्त्तमान, जयपुर नरेश जयसिंह मिर्जा के आश्रित महाकवि विहारीलाल (दास) की प्रसिद्ध रचना की खंडित प्रति। पृ० सं०-३, ४, ७, ८, ६, १५-२२ नहीं है। पृ० सं०-२८ के बाद ग्रंथ खंडित है। ग्रंथ की लिपि पुरानी है। मध्य के पृष्ठ कीटाणुविद्ध है। यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए प० गणेश चौबे, बंगरी (मोतिहारी-चंपारन) से प्राप्त हुआ। श्री चौबेजी को उक्त संग्रहालय के लिए यह ग्रंथ सतवरिया (चंपारन)-निवासी श्री जीतन चौबे तथा उपेन्द्रनाथ मिश्र के सहयोग से मिला था।

[७३] विज्ञान-गीता—ग्रंथकार—केशवदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना-देशी-कागज, जीर्ण-शीर्ण और खंडित। पृष्ठ-सं०—५२। प्र० पृ० प० लगभग—३४। आकार-८½"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"दोहरा॥ बीरसिंघत्रिपकीभुंजा। जयपिकेसवतूल
एकसाहिकौसूलसीएकसाहिकौफूल॥२०॥

कवित्त॥ लूटिवेकेनातैंपुरपदनुतौलूटीयतुतोरिवेकेनातैंगढतोरिडारीयतुहै॥
घालिवेकेनातैंगर्वघालियतिराजनिकेजारिवेकेनातैंअरिउरजारीयतुहै॥
राजाबीरसिंघजूकेराजगुनीतीयतुहारिवेकेनातैंआनजन्मुहारीयतुहै॥
बाधिवेकेनातैंतालबाधियतिकेसौराइमारिवे-
केनातैंतौदरिद्रमारीयतुहै॥२१॥"

मध्य—(पृ० सं०-२६)
"कुसलप्रदनसबबूझिकैतबबूझीनृपनाथ॥
करुणापतश्रवासकलकहौआपुनीगाथ॥"

अन्त— "किधौवत्सवत्सलजानियै॥
अधसिंधुग्रस्तकरयौअगस्तिसदाप्रसस्तिवपानियै॥
मनमारकंर्डुविहीनहौमुनिमारकंडुपमानियै॥"
(इसके आगे के पृष्ठ कीटाणुविद्ध होने के कारण अस्पष्ट है।)

विषय— विज्ञान-गीता का पद्य में वर्णन। विभिन्न ऋतुओं पर रचना।

टिप्पणी— ओरछा के सुप्रसिद्ध कवि केशवदास (मिश्र) के अन्य कई ग्रंथ खोज में मिले हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-विवरणिकाओं में इनकी उपलब्ध पाण्डुलिपियों की चर्चा हुई है।

यह पाण्डुलिपि आदि और अंत में खण्डित होने के कारण लिपि काल का अवबोध नहीं कराती है। लिपि पुरानी प्रतीत होती है। आदि के २ पृष्ठ नहीं हैं। मध्य के भी कइ पृष्ठ खंडित हैं। यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए प० गणेश चौबे (बँगरी चपारन) न सतवरिया (चपारन) निवासी श्री जीतन चौबे और श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र के सहयोग से प्राप्त किया।

[७४] रामचरितमानस—(बालकाड) ग्रंथकार—तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२६०। प्र० पृ० प० लगभग—१४। आकार—८"× ४½"। भाषा—हिन्दी (अवधी)। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— प्रभुसुतकानाचरीत बहुतवीधीकी हबहे ॥
कहीकथानूनाइमानुषूफाइजेहीप्रकारमूतप्रे मलहे ॥
मा तापूनीबोलीसीमती नेलीतजहुतातऐहरूपा ॥
कीजैसीसूलीलाअतीप्री असीला ॥"

मध्य— (पृ० स० १०७)
साप्रभु जानहु अतरजामी। परब्रह्ममोर मनोरथस्वामी ॥
सबलहीबीहाऐमाग्रुनीपमोही। ।"

अंत— "बीरचवीजैजमूजानकी पाई। आऐमवन ब्याही सब भाइ ॥
सकलमानुस करम तुम्हारे। केवलकौसीक क्रीप तुम्हारे ॥
जहीदीनगऐउब्रुम्हैबीनुदेने। तेवीरंचीजनुपारहीनेके ॥
दाहा ॥ की हवी जयसहजमुची। सरीतापुनीत नेहाऐ ॥"

विषय— गो० तुलसीदास-विरचित रामचरितमानस का बालकांड।

टिप्पणी— ग्रंथ की लिपि पुरानी है। प्रचलित रामायण से पाठभेद है। ग्रंथ खंडित है। 'चौबे-संग्रह' के लिए प० गणेश चौबे (बँगरी-चपारन) द्वारा संगृहीत और प्रदत्त।

[७५] रामचरित मानस—(उत्तरकां) ग्रंथकार—तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज खंडित। पृ० सं०—५०। प्र० पृ० पं० लगभग—४५। आकार—८½"×४¾"। भाषा—हिंदी (अवधी)। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— 'महीमं लम नचाह प्रीत। साठेकचाप निरागवर।"

मध्य—(पृ० सं० २५)   दोहा

"अैसीप्रसंगवीहंपयतीकीन्हकाकमौआऐ ।
घोसवसादरकहीहै । सुनहुउमाचीतलाऐ ।।"

अन्त— "नमोमुतीकोटीप्रमासनी·········।
सघुरनीकलंक लोलनी·········।।"

विषय— रामचरित-मानस का उत्तरकांड (खंडित)

टिप्पणी— इस खंडित ग्रंथ की लिपि-शैली पुरानी है । प्रचलित प्रतियों से पाठभेद है । 'चौबे-संग्रह' के लिए बेगरी (चंपारन)-निवासी श्री गणेश चौबे द्वारा प्रदत्त ।

[७६] सूर्यकथा— ग्रंथकार—×। लिपिकार ×। अवस्था—हाथ का बना देशी कागज, जीर्ण-शीर्ण और खंडित । पृ० सं०—२५ । प्र० पृ० पं० लगभग—२६ । आकार—५"×६½" । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—×।

प्रारंभ— "तेजप्रतापहै आगीनी समाना । तुम आदीतपरमेस्वर स्वामी
अलंखरंजनीजनअंतरजामी । वरनीनजोई आदीतके लीला
धरमधुरधर परम सुनीला
जोतीकलाचहुवोरवीराजैं । जगमगकानन्हकुंडलछाजै
नीलचरनछ वीतुरगसवारी । ग्यान नीधानधरमव्रत धारी
जासुकथामैं कहीनजानी । सोपुरुष है आगीनी समानी
महिमा आदीत अगम अपारा । तीनीभुअनमैं जोतीउजीआरा

दोहा ।। आदीतकथा पुनीत है गावही संभु सुजान ।।
तीनीभुअनछवीजोतीहै करो प्रताप वखान ।।"

मध्य—(पृ० सं०-१२)

"नीसीसमनप्रसकल अंध्यारा । उगहीनभानुनहीजोतीउजीआरा
सहाथासकलजुगकरहोई । तवसोपापमलीछ न सोई ।।
ऐहीवीधीकवहीउगहीनभाना । मैंतोहीवचनकहौ परीमाना ।।"

अन्त— "अवसुनुऐहअस्थानन्हकहई । पाटजोगपुजाकह गहई ।।
वीवुधनदीवासरजुतीरा । वासी मंदीर उत्तीमनीरा ।।"

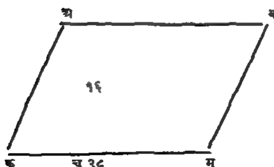
विषय— पद्मपुराणांतर्गत सूर्य भगवान् की कथा, माहात्म्य और व्रत-फल का वर्णन आदि ।

टिप्पणी— ग्रंथ का आदि और अंत खंडित है । नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण के अनुसार रामायण के रचयिता तुलसीदास से भिन्न तुलसीदास की यह रचना है । उक्त खोज

विवरणिका में इस ग्रंथ के ग्रंथकार का रचनाकाल सं० १८७० वि० (सन् १७१३ ई०) है। उक्त विवरण में दिये गये उद्धरणों से प्रस्तुत ग्रंथ के दोहे—चौपाइयों से तुलना करने पर कई पाठ भेद भी हैं। दे०—काशी-नागरी प्रचारिणी सभा का खो० वि० १९२६–२८ ई० ग्र० सं०—४८५ ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्० जी०, एच्०, और आइ०। अब तक अप्रकाशित यह ग्रंथ खंडित है। 'चौबे संग्रह' के लिए श्री गणेश चौबे (बँगरी चंपारन) द्वारा संगृहीत और प्रदत्त। यह ग्रंथ चौबे जी को अपने स्वर्गीय पिता (स्व० भरथरी चौबे) से प्राप्त हुआ था, जिसे चौबे जी के पितामह (स्व० भगत चौबे) ने संकलित किया था।

[७७] क्षेत्रमिति और पहेलियाँ—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज, जीर्ण शीर्ण और खण्डित। पृष्ठ-सं०—५० । प्र० पृ० पं० लगभग—१२ । आकार—८"×५"। भाषा—हिन्दी। लिपि— नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ— "अर्ध विषमकोण और आजात्यायत चतुरभुज के मापने के यह काम दाहे की किसी एक कोण से लंब करके लंब भुमी से गुण कर देने से क्षेत्रफल मालुम होता है जैसा (अ क म ब) क्षेत्र का (अ) कोण से (अ च) (१६) है और (क म) (२८) है तो क्षेत्रफल बताओ।



२८ + १६ = १४४८ ÷ ४०० = [illegible]
१४८ + ७० = १२६ } ३।।२।३ यही उत्तर हुआ

(विषम चतुर भुज)

(दोहा) (६)

दोहे भुजा एकत्र करी अर्ध २ करीताही

(४) गुनहु युगल तम फल मिलै विषमचतुरभुज आहि "

मध्य— (पृ० सं० २६) "(अंडाकृति के माप) अंडाकृति का क्षेत्र निकालने कायदा। (दोहा) (३०)

(१) "युगल व्यास के घात करु पुनि श्रुति नर वसु सुधात
यह दशमलवे गुनन करी फल सु अंडहोइ जान"

अन्त— "घंटा के सुइ (ज) घरी के सुइ (ग) है जबसटा के सुइ (१) घटा चलता है.तब मीन्ट १२ घटा चलता है इससे मालुम होता है के जब घटा के सुइ १ घंटा चलेगा तो मीन्ट १२ बजा · ·····।"

विषय— "ज्यामिति-गणित-संबंधी दोहे-चौपाइयों में रचना और अर्थ तथा उदाहरण-सहित विवेचन। विविध ग्रामीण मंत्रों तथा पहेलियों से युक्त।

टिप्पणी— ग्रंथ खंडित है। लिपि-शैली प्राचीन है। ग्रंथ संभवत अप्रकाशित है। ग्रंथ-संकलयिता पं० गणेश चौबे के अनुसार इसमें सकलित पहेलियाँ खुसरो की हैं और बिहारी के दोहे भी। 'चौबे-संग्रह' के लिए बँगरी (चंपारन)—निवासी प० गणेश चौबे ने मुंशी धनुषधारी लाल के संग्रह से उनके कर्मचारी के सहयोग से प्राप्त किया।

[७८] सिद्धांत पटल— ग्रंथकार—रामानंद (गुरु)। लिपिकार—×। अवस्था-प्राचीन, हाथ का बना-देशी कागज। पृ०-सं०—२५। प्र० पृ० पं० लगभग-१२। आकार—६"×४"। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— "श्रीमतेरामानुजायनम अथ सिद्धातपटल प्रारंभ श्रों अब जागे श्रीरामानंद अवधूत शेली सिंगीजंघजंघोटा· ···बटीद······ छोटा ··· · एटाचमरअडानींदिट्ठीअल्·· ···अचराटो······ विरलाहोई·· ········ ···· ··कानकीकुंचरीसकेसनकादिक मायेकामुकुटसिंदुरकीश्रीअंगुरीकीअंगुठी हाथ का कडाजहा·· "

मध्य—(पृ० सं०-१२) "श्रोंप्रथमजगतहेतप्रगटेसनकादिकाकाहासे आयेकोनफुर ······वरग···नसुआ ·श्री गुरुशिषमुनीफुरगयेदूरवासा ऋषिश्वरायेशोसनकिलकडीसुरतिकाभंडाररत्नाकर जानकी माता इतियुगलभंडारविजमंत्र"

अंत— अथमभुतिपटलनमत्र
सेतसमुदतेतइमदीरचोनघवद्वायाउलटत भभुतीपलटतकाया कोरसिधनकाजोगसादी कपाया उलटेपलटे खडेराग श्रीगुरुरामानदनी कहेवचाआचाचोम इति श्रीगुरुरामानदजीवीरचित सिधातपटलसम्पुरणम्"

विषय— 'गुरुरामदास के सिद्धात । गुरुरामानंदनी ध्वमात्र, गुरुरामानदजी का अमृतवाणीमत्र, अघीमत्र सनकादिकमत्र कूचीमत्र, निरंजनमत्र, सिंदुरमत्र, यज्ञोपवीतविधि, कानपरचढावनमत्र, यनोपवीतमुद्रमत्र, महातारकमत्र, भर्तरीमत्र कामधेनुमंत्र मुल्हाचेतावनमत्र, युगलभडारबीजमत्र, तिलकमत्र, भागवती मत्र भण्डारमत्र धूनीमत्र, और पचधूनीमत्र, पर आधारित रचना ।

टिप्पणी— गुरुरामानद विरचित यह ग्रथ खोज में नया है । अन्य खोज विवरणों में इस ग्रथ की चर्चा नहीं है । नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज विवरण में सिद्धांत' नाम ग्रथ का उल्लेख मात्र हुआ है । दे०—खो० वि —१९२६–२८ पृ० स – ७८३ । यह ग्रथ 'चौबे-सग्रह' के लिए बैंगरी (चपारन)— निवासी प० गणेश चौबे स प्राप्त हुआ ।

[७६] कोकसार—ग्रथकार—आनन्द कवि । लिपिकार—रामलोचन । अवस्था— अच्छी आदि-खडित । पृ -सख्या—४२ । प्र० पृ० प० लगभग— १६ । आकार—६' × ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल— × । लिपिकाल—११ भाद्र, १२७० साल, सवत् १८८३ वि० ।

प्रारम्भ— 'मदनाकुशनेशाचरत तीमूखहानसरीर काकसारभूमीउचरत
दोहा नाहिंनियाकोरतीध्यीनाह पीयबीलसतजोताहि
मामीनीमूरतिनहोइकछु प्रीयासकलतवआहि
आजनजानेकोकपढ़ी करहामुअतनवीचार
अतिमुरूरूपीनेरमनीको यन्मूखमाननारि ६
अनर्भचितियप्रुहिमीने कहेकोकयहभारि
जेसेराजीनीवको आखीमूदीपीतजाय १०॥
इतिकोकवीआनन्दकृतेकोकसारभाखापारतिभेदत्रितीयखड समाप्तम् १"

मध्य—(पृ सं २१) दोहा
'सुरतीसमयमुखमन्नाहे सुन्तीकरेकोकाय
सुरतीसमयहारेनही सुरतीसराहेतहाय ६"

अन्त— "अथपदमीनीआसन चौपाइ
आसनजानीपरस्परनाम ताकोकरतपुरुखओवाम
.... पंनादसआसनरहैतेपुरुखैकरावेकोकहै :

दोहा

सुनलरसीकजनसवनेधनी कोकमारसुखनास
चहैतचतुरमूनैंचहैररतसुदअतिहास
इतीश्रीकोकसारकथासमाप्तप्रतीजोदेखासोलीखाममदोसनदीअतेसजन-
जनसोंवीनतीमोरीछुटलआखरपरहवजोरीलीखीरामलोचनजी. . "

विषय— पुरुषों तथा स्त्रियों के भेद और उनके लक्षण, दिनानुसार शरीर के विभिन्न स्थानों में काम-निवास वर्णन, चुम्बन-आलिंगनादि-वर्णन, विभिन्न आसनों-सहित वन्ध्यात्वदोष-परिहारोपाय और विविध औषधियों से अनेकविध उपचार-प्रक्रियाओं का निर्देश। पद्मिनी, चित्रिणी, शखिनी, हस्तिनी आदि स्त्रियों के लक्षण तथा आसनों का वर्णन।

टिप्पणी— ग्रंथ के आदि दस पृष्ठ खंडित हैं। कवि ने अपना परिचय नहीं दिया है। अध्याय-समाप्ति तथा ग्रंथ-समाप्ति में 'आनन्दकृते' ऐसा लिखा है। ग्रंथ में कोकशास्त्र सम्बन्धी-विषयों का दोहे-चौपाइयों तथा अन्य विविध छन्दों में सविस्तर उल्लेख हुआ है। रचना हृद्य और पठनीय है। ग्रंथ-अप्रकाशित है। कवि और कवि-कृतियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं। इनकी अन्य 'कोकविलास', 'कोकमंजरी' और 'आसनमजरी' नाम रचना उक्त सभा के अन्वेषकों ने प्राप्त की है। इनका रचनाकाल सोलहवीं शती का मध्य माना गया है। टे०—खो० वि०—१६०२, ग्रं० सं०—५; १६०६–८, ग्रं० सं०—१२६, १६१७–१६१६, ग्रं० सं०—७, १६२०–१६२२, ग्रं० सं०—६ ए०, बी०, १६२३—२५, ग्रं० सं०—१३, ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच्०, आई० और जे०; १६२६–२८, ग्रं० सं०—१० ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच्०, आई०, जे०, के०; १६२७–३१, ग्रं० सं०–११ ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच०।

कवि की कृतियाँ जो खोज में मिली हैं और जिनका खोज-विवरणों में उल्लेख हुआ है; उनका रचनाकाल और लिपिकाल अधोलिखित-क्रम से है—

ग्रन्थनाम	लिपिकाल	खोज विवरण की प्र० सं०
१—कोकसार (३८ प्रतियाँ)	१७३४ ई०, १७४८ ई०, १७६५ई०, १७८१, १८४६, १८५३ ई० १८८४ १६०१ ई ।	१६ ०, ५ १६०, ८, आर १६१७ १६,६७ १६२३ २५, १३ डी , ई०, जी ,एच्०, आइ , जे० ।
	१८१७, १८३५, १८६६, १८७५, १८६८, १६०१, १८२८ ई० ।	१६२३ १ २८, १० सी , डी०, ई , एफ्०, जी , एच् , आइ० जे ।
२—कोकमंजरी (१ प्रतियाँ)	१८ १, १७६८, १६८६ आर १८०२ ई० ।	१६२६ ११ डी , ई०, जी , और एच् ।
३—कोकविलास (१ प्रति)	१७३४ ई० १७६६, १८ ० ई० १७५३, १८६६ ई०	१६२० २२, ६ ग । १६२६ २८, १० ग०, सी० १६२६ ३१, ११ बी , सी० ।
४—आसन-मंजरीसार (१ प्रति)	१७७१ ई०	१६२६ २८, १० वे, १६२६ ३१ ११ एच् ।

उपर्युक्त विवरणों से प्रतीत होता है कि कोकसार के ग्रन्थ कार का रचनाकाल सोलहवीं शती का मध्य या सत्रहवीं शती का प्रारम्भ रहा है। 'मिश्रबन्धु-विनोद' में ग्रन्थकार का रचनाकाल १७११ ई० दिया गया है, किन्तु इसके किसी स्पष्ट प्रमाण का उल्लेख 'विनोद' में नहीं किया गया है। 'कोकसार' की अबतक उपलब्ध प्रतियों का लिपिकाल १७३४ ई से १६ १ ई० तक है। इस ग्रन्थ का लिपिकाल है १८८३ वि (१८२६ ई०) ग्रन्थ की लिपि शैली पुरानी है। प्रारम्भ भाग खण्डित है और अन्त में कुछ अन्य दोहे लिखे गये हैं। ग्रन्थ प्रकाशित है। यह ग्रन्थ 'चौबे-संग्रह' के ग्रन्थ दाता श्री गणेश चौबे (बँगरी मोतिहारी, चंपारन) को मानउमर (बड़ुराज, मोतीपुर, जि —मुजफ्फरपुर)-निवासी श्री रामदयाल ओझा से मिला।

[८०] बीजक— ग्रंथकार—कबीरदास । लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, हाथ का बना कागज । पृ० स०—१५८ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—६"×३½"। भाषा—हिंदी । लिपि-नागरी । रचनाकाल—×। लिपिकाल १२१२ साल (१६५१ वि०, १८०५ ई०) ।

प्रारभ—"दया गुरुकिलीष्यतेवीचारप्रथमाअनसारपदरमैनी
अंतरजोतीसहदयक नारी ।। हरी ब्रह्माताके त्रीपुरारी ।।
तेतीरीयाभगलिंगअंनन्ता ।। ते उनजानेउवादीअवंता ।।
वापरीयकविधातेंकीन्हा ।। चौदाठहरपाठसो लीन्हा ।।
हरिहरब्रह्मामहंतोनाउ ।। तीनपुनीतीनवसावलगाउ ।।"

मध्य—(पृ० स०-७६) "संतोजागतनीदनाकीजे ।।
कालनापाऐकल्पनहीवीआपेदेहजरानाहीछीजे ।।
नुलीटागंगसमुद्रहिंसोपेस्सिऔसुरगरासे ।।
नौगृहमारीरोंगीआत्रऐठेजलमहंवेसुप्रगासे ।।"

अन्त—"हींदुतुरुककीवूटोवारा ।।
नारीपुरुषकीमीलिकरदुवीचारा ।।
कहिएकाहिकाहानहीमाना ।। दासकवीरमोइयेजाना ।।
वाहाहैवहिजातु हैकरगहेंचहुंवोरजौंकाहानाहीमानेतौ
देधकायकवौर ।।१ अतिवप्रमतीसीसपूर्ण"

विषय—कबीर के निर्गुण-दर्शन का प्रसिद्ध ग्रंथ ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ कबीरपंथ का प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रथ है। ग्रथ की लिपि पुरानी है । 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे से प्राप्त हुआ । चौबेजी ने प० मथुरा चौबे द्वारा मठगोपाल के एक कबीरपंथी साधु से प्राप्त किया था ।

[८१] छप्पयरामायण—ग्रथकार—तुलसीदास । लिपिकार—× । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना, मोटा देशी-कागज । आदि और अंत खंडित । पृष्ठ सं०—१२ । प्र० पृ० पं० लगभग—१७ । आकार—६"×४" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारभ—"अस्तुतिकरतकपोतनाथप्रनतारनहारी ।।
सोप्रभुवेरिगिदया लहोजोकपोतसरनअपना ।।
कीपाकरिश्रे श्रीराचचंद्रममहरिश्रे सोक संतापनो ३"

मध्य०—(पृ० सं० ६) "चीत्रकूटवसि अमितकोल भीलन्हकितपावन ।।
रहेतहामुनिवृंदसकलभएसोकनसावन ।।

प्रभुहिमनावनभरतआपतप्रोचनमनमाही ॥
पुरवासीतीअैर्मगजा, पहुँचेप्रभु पाही ॥
मीनेभरतअस्तुतकरतभरनरावप्रभु आपना ॥
क्रियाकरिअेश्रीरामचंद्रममहरिअेसोकर्दवाप्रना ॥१५"

अन्त— 'वीरहमननतपनआपुन्तिगपनिनैना ॥
अर्वालिख जनिकरनुमाआकहिआरतवैना ॥
मकमुम्रनमृगहेमजानुप्रभुवानप्रतापा ॥
आनुक्रचलखबानिकहामैमारचोपा ॥

विषय— गोस्वामी तुलसीदासकृत छप्पय छंद में रामायण का वर्णन ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्रकाशित है और प्रसिद्ध भी। इसकी अनेक पाण्डुलिपियाँ विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में सुरक्षित हैं। 'चौबे-संग्रह' के लिए प० गणेश चौबे ने साठा (चंपारन) निवासी प० श्री भागवत ओझा से प्राप्त किया।

[८०] विष्णु पुराण—ग्रंथकार—×। लिपिकार—रमनदास अवस्था—अच्छी, देशी कागज। पृ सं०—३०। प्र पृ प० लगभग—२०। आकार—६½'×४। भाषा—हिंदी नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१२ सावन ११३१ साल।

प्रारंभ— 'सतगुरुकीनाआसालीपतेवासुनपुरान
श्रीरामजी साहाऐ ॥ श्रीगनाजी साहाए ॥
श्रीभावानी जी महाऐ ॥ श्रीठक्लादंरजी साहाऐ ॥
श्रीपायाश्रीमुनपुरानलीषने।

चौपाई

कैसेन्तजुगभेतागऐउ ॥ कैसेध्यापरकलजुगभऐउ ॥
कैसे योधम अवतारा। कैसे ग्राकिरे सकल पसारा ॥
कैसेवानपरन अनुसारा। कैसे कलजुगलीह पैसारा ॥"

मध्य— (पृ० सं० १६)
सुनहराजनहरीके गुनगाई ॥ कानचरीप्रचीनह रघुराई ॥
नपध्यारीकाशीमनवासा ॥ दानपुन्यमहादासुपवासा ॥"

अन्त— "इंद्रदवन्पवसही प्रभुअना ॥ इहपापावैह प्रमाना ॥
राजाकहहीमन्हैम उनालोई ॥ अपनहृष पालदुदोई ॥
तवजोगीबरसैंकारा ॥ रवनेहन्प्रनायमवारा ॥
पहुचनहीआइहाराएउ ॥ रवनेहन्मेंसुरन भऐउ ॥

॥ दोहा ॥

दोषनामभएउजोगीका ॥······ ···रजाए ॥
देहअभंत्रमागु ॥ जै जै जादोराऐ ॥"
"इतीश्रीहरीचरीत्रेबीस्नपुरानजोगीदुस्ननामत्रनो दसोमो अध्याऐ १० इतीश्रीबीस्नुपुरान स्मपुरन जो देखा स्मदोषनादेत सावसतकेबंदगीडडवत पहूचेवार मवाग पडीतजननोबीनती मोर टुटल बढल अक्षरबाजीर।"

विषय— विष्णु पुराण पर आधारित कृष्ण चरित्र।

टिप्पणी— दोहे-चौपाइयों में रचित इस ग्रंथ के आदि और अंत में ग्रंथकार के नाम, स्थान तथा रचनाकाल का उल्लेख नहीं हुआ है। भाषा और कालपक्ष ग्रंथ का दुर्बल है, किन्तु पुराणान्तर्गत कथा का रूपांतर अच्छा हुआ है। ग्रंथ सम्भवत अप्रकाशित और खोज में नवोपलब्ध है। लिपि पुरानी है। मूर्धन्य 'ष' का प्रयोग 'ख' के लिए हुआ है। यह 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे (ग्रा० बेगरी, मोतिहारी, चंपारन) को पं० मथुरा चौबे के सहयोग से मठगोपाल के एक कबीरपंथी साधु से प्राप्त हुआ।

[८३] ज्ञान-सम्बोध—ग्रंथकार—कबीरदास। लिपिकार—मथुरा चौबे। अवस्था—अच्छी। पृ०-सं०—१८। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—८"×६½"। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१।१०।१९३२ ई०।

प्रारंभ— "सतनाम सती कबीर जी।
श्रीसुकीत आदि अदली अजरअचित ग्र ····नाम कबीर सुरती जोग्यसंताएनवनी धरमदास··· लिकादश्राते

साखी ॥

संतसमाजसमधनीनही, सुनोमतचिलाए।
पुरबीलपुन्यअमीतहोही तौसतसमाजेएनेती
पवित्रेजुगजुगजीवे, जोसतो र भाए।
क्रमकोटीत्रीगुनफंदसो···प्रीतपीए अघाए ॥"

मध्य—(पृ० सं०-१६) "॥ सोरठा ॥
मनकैलहरी अपार, छीनमहदे उतपातकरी।
बीहेबहुजाएगवार। बहरी रहै कोई सुरमा।
जीमी सपने मह देखिये, लेई कोई शीशबीदारी।
तीमीमनकौतुक झूठ हैए, करै अनेक पसार ॥'

अंत— "॥ साखी ॥
आठ ग्यान विवेक है सो यह ग्यान विचार।
और सकल जग अधर, बुझै ग्यान विचार॥
इति श्री० ज्ञानसम्बोध ग्रंथ सम्पूर्ण शुभमस्तु जो देखा सो लिखा मम दोष नहीं दीयते। पंडित जनसे विनती मोरी। टूटल अछर लेव सब जोरी॥ श्री रामचन्द्राय नमः॥

विषय— संतों की महिमा का वर्णन। संत-साहित्य (कबीर) का ग्रंथ।

टिप्पणी—१–प्रसिद्ध संत कवि कबीरदास की यह रचना सम्भवतः अप्रकाशित है। इसकी एक प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, (काशी) को खोज में मिली है। द०—खोज वि० १६ ६११, प्र० सं०—१४३। अन्य किसी खोज विवरण में कबीरदास की कृतियों में इसका नाम नहीं है।

२—इसके साथ ही एक ही जिल्द में 'पानीपद' और 'अनुभव-सागर' भी क्रमशः १० और १३ पृष्ठों का है। मूल प्रति से १९३३ ई० में श्री गणेश चौबे के प्रयास से उपर्युक्त तीनों ग्रंथों की प्रतिलिपि हुई। 'अनुभव-सागर' की मूल प्रतिलिपि का समय १८७७ वि० है।

३—ग्रंथ-लिपिकार ने मूल प्रति से इकार, उकार आदि मात्राओं की प्रतिलिपि करने में विपर्यय कर दिया है।*

४—मूल प्रति बेलवनवा (चंपारन) निवासी श्री धनुषधारी लाल के पास सुरक्षित है।
ग्रंथ की लिपि शैली अच्छी है। प्रायः अन्य प्रतियों से यत्र-तत्र पाठ-भेद प्रतीत होता है। यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे से प्राप्त।

[८४] हवासगुजार (सहसगुजार)—ग्रंथकार—कबीरदास। लिपिकार—गणेश चौबे। अवस्था—अच्छी। पृ० सं०—२७। प्र० पृ० पं० लगभग—२१। आकार—८¾ × ६¾। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१९३३ ई०।

प्रारंभ— 'सहसगुजार॥ चौपाई—
सत्यनाम सुकृत गुन गावों। अविचल थाइ अमै पद पावों॥
सबै हरित मन सो गाउ। सीत रूप सभउ के भाउ॥
करै कोलाहल हंस उजागर। मोहरहित सब सुग के सागर॥

*पं० गणेश चौबे (मु०-बंगरी, पो० बिहारी, चंपारन) की टिप्पणी ऐसी इस ग्रंथ की प्रतिलिपि में।

तेहीपुर जुरामरन नाही। मनवेकार इन्द्री तेहा नाही ॥
सत्यलोक हसन सुख होई। सो सुख इहा जानने कोई ॥
जानै सो जो इहाकर होई। इहा आएके करै बुझाई ॥"

मध्य—(पृ० सं०-२८)
"करि असनान पुरुष पगु परसै। निरमल जोति अखंडित दरसै ॥
जब फिरि चंद सरोवर आवै। बहुरि जीव सगटि फिरि वावै ॥
आवत जात वार नहीं लावै। पल पल जीव दरस तहाँ पावै ॥
कृष्णपक्ष अमावस जब आवै। तब फिरिजीव तूरघर जावै ॥"

अन्त— सर्मा
"एक जुग के वीते, चारो जुग मैं नास।
एकनाद चारी जुग खाये, सतजुग कीन्हे ग्राम ॥

चौपाई
किलक कमोद चंद से नेहा। कामत वंकव नूर दरेहा।"

विषय— स्वास के जानने की रीति। कबीर-पंथ की योगसाधना का आध्यात्मिक विवेचन।

टिप्पणी— कबीरदास का यह ग्रंथ संभवत: अद्यावधि अप्रकाशित है। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की भी खोज में यह ग्रंथ मिला है। उक्त खोज में प्राप्त पोथी का लिपिकाल है—१८४९ वि०। दे०—खो० वि० १९०७—१९११, ग्रं० सं०—१४३ जे०। ग्रंथ का नाम 'स्वासागु जार' है, किन्तु 'सहनगु जार' नाम से भी यह मिलता है। 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे (बँगरी, मोतिहारी, चंपारन) से प्राप्त।

[८५] भागवतभाषा—ग्रंथकार—कृपाराम। लिपिकार—महेशदास। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२४४। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—६$\frac{३}{४}$"×६$\frac{१}{२}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१९५० वि०।

प्रारंभ— "॥१॥ श्री· गणेशाय नम। श्री राधाकृष्णाय नम। श्री· पोथी भागवत भाषाकृ· त्पकृपाटामजी एकादशस्कध पोथी लीखलवा· महेशदास।

शोरठा ॥
वन्दौ श्री रघुरकृपारोंसुशंततशुखद
प्रनतपालरणधिरदुखहरनदारिद्रदमन

दोहा ॥

हरनमोहतमन्द्र शब श्री गुरुपदकरीध्यान
रामकथावरणौंवीमल अघहरनकरनकल्यान

सोरठा ॥

भैमतीमन्मलीनतुरकपट कलीमल चह्यो
जानौंअनीशैंनिगुर दकपालपावनकियौ'

मध्य—(पृ० स० १७७)

"श्री मद देउवाच ॥
अथअध्यायसत्रहकेमाही भक्तीनछण अर धर्म महानी
ब्रह्मचर्यग्रहत्गेगहवाशी तासुधर्मकहीहेशुपराशी"

अंत—

'सुनै सुनावै पुनी कहै कृष्ण कथा सुख कन्द
उपचत्र भक्ति अनन्यताई मीटै जगत न्य न्द
ध्याणयागतपनानमवपुनाअरुवरतनम
मकनलीपिनहिहोइकल कृष्णकथानेषेम
इतीश्रीभागवतेमाहापुरानएकादश्कध श्रीशुकदेव परिछीन उवादे
भाषानीबंध कृपारामकृतश्रीकृष्ण बैकुंठपयानननाम एकतीसमा
अध्या ॥३१॥ सूभसम्वत १६५० । शाके १८१५ ।
समयनाम कृष्णनसर्यो भामवासरपोथी एकादस स्कंध
समाप्त कपुरनभैलदशपनीवा महेगरन्मशसाधु । समैनाम
अवदृता । राजसुत क तैआर भएल जा देषा सो लीषा मम
दोषनदीअन । सूभ सम्वत १६५० । शाके १८१५ । सन
१२१० माल माजेगीद्रुग्रा (द्रुग्गिश्रा) ताषापगहा प्रगनामकोंम्रा ।
पाथी दशपनीतापनत्रा महेशरदास साधू दश्वन शदि ॥"

विषय— भागवत के एकादश स्कंध का अनुवाद । कृष्ण-कथा वर्णन ।

टिप्पणी— इस ग्रंथ में ईश्वर-भक्ति का सामान्य वर्णन हुआ है । कहीं कहीं अव्यक्त ब्रह्म का निरूपण किया गया है । देखिए —

"तीन क तनर भग शन एका ।
ब्रह्म तार भए शहीन विवेका ॥"

भगवद्भक्ति से पूर्ण उपदेश अधोलिखित पदों में—

'हरि बीनु रहित शकल ज करमा
शराबजानहु मायके भरमा
श्री गुरु साधु कम्ना उपदेशा
सहे जीव जहाँ बीधी करीदेशा ॥'

उद्धव का ज्ञानोपदेश और गोपियों की अनन्य कृष्ण-भक्ति का वर्णन। संपूर्ण पोथी ३१ अध्यायों में विभक्त है। लेखक ने विषयों का वर्गीकरण बड़े सुन्दर ढंग से किया है।

(क) ईश्वर-गुणानुवाद, (ख) जाना नारद का बसुदेव कीहा; (ग) कवीनाम प्रथमे योगी ने बोले, (घ) हरी नामा नाम दूसरा जोगी बोले, (ङ) दस औतार कथा, (च) भगवत उद्धव जी, (छ) संतो का हाल बरनन, (ज) उधोजी का बदरीकाशरम जाना।

इसके ग्रंथकार हैं कृष्णराम। यह ग्रंथ भागवत के एकादश-स्कंध का अनुवाद है। प्रारंभ सोरठा से हुआ है। सोरठा, दोहा, चौपाई और छंद प्रयुक्त हुए हैं। भागवत की कथा के अतिरिक्त ईश्वर के अव्यक्त स्वरूप का विस्तृत-विवेचन, भागवत के मूल पाठ का स्मरण दिला देता है। उपदेश और कथा-प्रसंग का निर्वाह सुन्दर है। भाषा हिंदी के प्रारंभ-काल की है। नागरी लिपि में कहीं-कहीं कैथी का भी प्रयोग हुआ है। पुस्तक सजिल्द है। यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए बंगरी (मोतिहारी-चपारन) निवासी पं० गणेश चौबे द्वारा संगृहीत हुआ।

[८६] रसिक प्रिया— ग्रंथकार—केशवदास। लिपिकार— × । अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज, खंडित। पृष्ठ-सं०—६ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—८"८½ × ४½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी। रचनाकाल— × लिपिकाल— ×।

प्रारम्भ— "श्रीगणेशायनम ॥ षट्पदीवार्वितवं ॥
एकरदनगजवदनसदनबुधिमदकदनसुत
गौरिनंदआनदकंदजगवदवदयुत
सुखदायकदायकसुकित्ति गननायकनायक
खलघायकघायकदलिद्रलायकलायक
गुरगुणअंतभगवतभवभगवंतभवभयहरण
जयकेशवदासनिवासनिधिलंबोदरअसरणसरण १
दोहरा । नदीवेतवैतीरतहतीरथतुंगारन्पुरनगरओडछो
बहुबस्यो धरनीतलमयबन्यर

मध्य—(पृ० स० ८) "अथशठलच्छन दोहरा
सुहमीठीबातैं कहै निपटकपटजियजानु
याहिनडरअपराधकोशठकरितहिवषानु

अन्त—"प्राड़ाअधीरायथा ॥ पतिकैंआत्अपराधगनिहितनहर्इनिन्तमानि
कहनिअधाराप्रान्तेहिकशनप्रगन्वपानि ॥"

कावत्त–हितकेदूतदम्पौतुदेप्यास्वैहितुवानमुनाजुमुनीसही है ।
तौवजुआखेहे सबहा अवधौहकरातुकरीतुनही है
समुम्ाइकहानमुर्मीसवकरावमन्मिवैहमर्मोजुकहात्है ॥

विषय— नायक-नायिका हाव भाव और शृंगार आदि रसों का वर्णन ।

टिप्पणी—क— प्रमद्ध कवि कशरनाम-कृत रसिकाप्रिया का सचित्र पाडुलिपि । प्रारेकृष्ट पृष्ठ-सख्यानरन्ति । पुष्पिका-भाग सहित । इस ग्रन्थ की रचना कवि ने स० १६४८ वि में की थी । इसके हस्तलेख नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) का भी स्मान में मिले है । द०—ना वि १६०, प्र० स —४२ १६ २ प्र० स – २६ २ ० १६०३– प्र० स —८६ १६०८ प्र० स —१२८ १६२ –२५, प्र० स०—२०७ १६२६ २८– प्र० स —२३३ एफ् और जी० । मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के सग्रहालय में भी पाडुलिपियाँ सुरक्षित है द्र०– बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) से प्रकाशित प्राचीन हस्त लिखित पोथियों का विवरण (दूसरा खड), ग्रथ स० ५६ और ५७।

ख—ग्रथ की लिपि पुरानी है । 'चावे-सग्रह' के लिए बैंगरी (माझिहारी, चपारन) निवासी प० गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त ।

[८७] रामलीला— ग्रंथकार—हरिदास । लिपिकार—आम्बिकानारायण । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृ० १०—३ । प्र० पृ० प लगभग—१० । आकार—१०½ × ८ । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ, शुक्ल द्वादशी, रविवार स० १७२७ ।

आरम्भ— "श्री गणेशायनम ॥
वृन्दावन स्याम पधार रहे राति बड रुचियार
परमत्ता विन्गम फुलै बहुवेली चमनीफुनै
ताहारान्वरन मनवही है न्न्मौन्मारकरहिन
तनेकामेनाका मनजागे वृन्दावन मयव भागे

मध्य—(पृ १०३) 'बारान्दरान्दमारी ॥ जाडान्पाढ्दीपुगरा ॥
मुरगेहनदीन्नारी ॥ अवदन्यारामदमारी ॥

असकहीऊ जग नन्दालाला ।। नभकोउठीरीन्हार्मींगारा ।।
कोउपीतपीतभरपहीरा ।। जामेजागो मोनीवो हीरा ।।"

अन्त— "लरीकानर्जीयेजासो भाउ ।। एहगानऊरेजीवजाउ ।।
एहलीला अगमअपारा ।। भवसागरमेउँरपारा ।।
एहरामकीयोनंदलाला ।। तामे गावतपुरुषविसाला ।।
एहप्रेमगनहोइ गावै ।। सोउदिव्यपरमपदपावै ।।
एहसस्कृततेहै भाषा व नयोहैहरिश्रीदाना ।।
जाकोछुटीगयोभवत्रासा ।। जाकेकीन्हेविहारीके आसा ।।
इतिश्रीकृष्नकृतरामलीलानपुर्णम् ।।"

विषय— राधाकृष्ण के विहार का वर्णन ।

टिप्पणी— ग्रथकार हरिदास नवोपलव्ध है । नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में राधाकृष्ण के विहार से सर्वधित 'हरिदास स्वामी की बानी' नामक रचना मिली है । किंतु, ये उनसे भिन्न प्रतीत होते है। दे० खो० वि० १९०५, ग्र० स० ६७ और १९०६—१९११, ग्र० स० १०६ बी० । ग्रथ की लिपि-शैली पुरानी है । यह ग्रथ 'चौबे-संग्रह' के लिए बगरी (मोतिहारी-चपारन) निवासी प० गणेश चौबे से प्राप्त ।

[८८] समुद्रि (रमल)—ग्रथकार—×। लिपिकार—शुकेश्वर शर्म्मा । अवस्था—अच्छी, प्राचीन, देशी-कागज । पृष्ठ-स०—१३ । प्र० पृ० प० लगभग—२४ । आकार—८½"×५"। भाषा—हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पौष, शुक्ल एकादशी, शनिवार, सं०—१६४२ वि० ।

प्रारभ— "पोथी रम्हल प्रारभ श्रीगणेसयेनम
११८ येह सगुन आछा है बुलके बीचहै सरवतिमीले गाथीत्रसोमीलापहोगा तथा पत्रफूलहोगा तुम्हाकोतीन महीनामो-आछाहोगा अपनाइष्टगुरुकपूजाकरोगेमन कामना सुफलहोगातेरे छातिआपेटर्पतीलवाहै सोदेपलेना ।।"

मध्य—(पृ० सं०-६) "२४४ ऐहसगुनसुनोधरमकाहैधमर्पतीतरहेगा
सर्वकामतेरासीधहोगातुम्हारक्रोधकादिनजाताहै
संतोषराखनाऐकआदमीतुम्हारासर्वकामवीगारताहै"

अन्त— "४४४ऐहसगुनकाफलसुनीऐजोकामबीचारतेहोसो मीधहोगाधनलाभहोगाकइपरत्रिमीलेगा सत्रुतुमारा आडे-कआपुपाऐलेपरेगावैपारमोलाभहोगा राजामानकरेगामनमो वहुतपातिररापनातेरा इद्रीपरतीलहैसोदेखीलेना इति श्री पोथी समुंद्रि समाप्त-संपुरणा सुधवाअसुधवममदोखोनदीअतेजोदेयासो

लाथामन्नोयानगग्रन्ने समाप्त सुंगा सवत १६४२ साके १८०७
पौष मासेसुक्ल पक्ष ११ येकादस्यावारेसनीकौतीकानहन
लीपीत्वमुकरवरसमाह सुभमस्तु ।"

विषय— रमल (ज्योतिष्-सामुद्रिक) ।

टिप्पणी— यह ग्रंथ खोज में नया है । ग्रंथकार का नामोल्लेख संभवत ग्रंथ में नहीं हुआ है । ग्रंथ लिपिकार बिहार के चंपारन जिलांतर्गत महेसी ग्रामवासी हैं । देखिए ग्रंथ पुष्पिका—
'लीपीत्वासुकेश्वरसमाह ग्रामग्रहीतपैसिरवना
मजुमतापेमानामहसीम'
ग्रंथ की लिपि पुरानी है । यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए श्री गणेश चौबे से प्राप्त ।

[८६] रमल— ग्रंथकार—× । लिपिकार—सुकरवर शम्मा । अवस्था—अच्छी, पुराना देशी कागज । पृष्ठ स०—११ । प्र पृ प० लगभग—२६ । आकार—८¾ × ५ । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—स १६४१ वि ।

प्रारंभ—"अ अ अ १ सुनो ये साहेब फलसुफो जा कुछ दिन में रपैहासोआछा होगाअरमाचमतकरानीनहाणा ॥१॥
॥ अ ज द ॥ सुनोयसाहेबकलकामतुम्हाराआछानहि है
याराराजससुरकरौत्र देसामतकरा ।'

मध्य—(पृ स० ८) 'द अ न ५८ सुनोऐहारनकामतुम्हाराकतीनहै,
हलाकीतकरगाजलदिमतकरोरामजीकावचनहै ।'

अंत—"दपज ६३ ऐसुछनवालासुनाकामतुम्हाराकरनाहाएलवजलदीकरोमछापाहुगे
द अ प ६४ सुना ऐसाहेबकामदीलमेरत्तनहैतोहरमतकरानातीरजमा
रखोऐरामजीकावाक है श्रीरामचन्द्रकेहीतरम्ह्लसमापतसुभ

विषय— फलित ज्योतिष से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर के रूप में फलाफल का विचार और सगुन वर्णन ।

*टिप्पणी—*१—यह ग्रंथ खोज में नवीन है । ग्रंथकार का नामोल्लेख नहीं हुआ है । ग्रंथ स० ८८ के लिपिकार ने ही इस पाण्डुलिपि को प्रस्तुत किया है । दोनों ग्रंथ एक ही जिल्द में सुरक्षित हैं । ग्रंथ-पुष्पिका में लिखा है कि दक्षिण के राजा सुकरवर रावण को पराजित करने के लिए चौंसठ-चौंसठ पण्डितों की सभा बुलाकर रामचंद्र ने इस रमल प्रश्न का उपयोग किया और रावण को सर किया । २ —
"रामचन्द्रजीसुघराम आन्का के सरकरनके चौसठ चौंसठदित मरन्यु म'हाजीरपासम्धीनकरावनकोनतरहमरकरनगम पढीत मीन हरेहुम्मजन उतामवनामाजनमवानकहुमनहाऐजतनवातके

पुछनेहोएमोडसी मे मालुम होगा" । शगुन से सम्बन्धित प्रश्न तथा उनके फल-ज्ञान की विधि का उल्लेख—"वारपहलकालके दीपदान गुलकोवनावेपहीले अ लीगेटोमरपर ४ लीगेतीमरपर ज लीगे चौथपर ६ लीगेतीनवाग्के · · के देवताजा अ कौन-कौनहरफपरतादेतेकरबीचारकरे पुछनेवाराहोएवीरजमकरेकीरामजी कावचनहै वीस्वासकरोगतमानी इतिश्रीरामचन्द्रकीतरम्हल समापत संपुरणसुभ"—हुआ है ।

२–ग्रंथ की लिपि-शैली पुरानी है । ग्रंथ में प्रयुक्त गद्यशैली पुराने कथावाचक पण्डितों और ज्योतिर्विदों की भी है । यह ग्रंथ 'चौबे संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त ।

[६०] नौमाला— ग्रंथकार धर्मदास × । लिपिकार—रूपदास । अवस्था—अच्छी । पृ० सं०—२४ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार–८' × ५' । भाषा–हिंदी । लिपि–नागरी । रचनकाल—× । लिपिकाल–× ।

प्रारंभ— "सतनाम सतसुकीत आद अदली अजर अचीता पुरुसमुनींद्र करुनामे कबीर सुरतजोगसं नताऐनवनी ध्रमदास पुरामनीनामसुदसननामकुल पतनामप्रमोधगुरवालापीरकवलनामअमोलनामसुरतसनेहीनामहकनाम प्रकनामामाहियपार गुरुवनावालीमकोदाआसोलीजते श्रीप्र थमनोयमाला–

चौपाइ ॥

कथारीसालकहोकत्तुवानी वुझेमोहोऐब्रह्मग्यानी
ऐह गुरामसतकरी लखो प्रगटेग्वानतवयेरखो
अनभौआदीकछुकहोवखानीरुनहुमतगुरगमकीवानी
अनंतकोटजुगअकहमलीगेंऐड टीकोठजुगअैमेगेंउ"

मध्य—(पृ० सं०—१२)

"ताकरगुरुआनकरी लीन्हा नामरतनधनतीनकहदीन्हा
जवगुरुनाहीसमनीकहाऐ भगतीहेतुकहकैसेकेजानी"

अन्त— "ताहाजाऐ अमरपदपावे गुरकीसब्दहीहै समावे
कोटीनअसुरफीरिजवआइ हीदवीसवासतेजीनहीजाइ
ऐहतेजाऐजोप्राना सतगोवीदजोममआना
कहहीकवीरऐहसब्दरहेला गुरुपुरामेलाहोऐवुना

॥ दोहा

गुरुपुरालीखसुरावागमोररेनपदै
सतसुकीतकेचीन्हके असलकथारहजाऐ
ऐतीश्रीगरंथनौमाला समापत"

विषय— कबीर पंथ से संबंधित रचना।

*टिप्पणी—*संभवतः धर्मदास-कृत यह रचना खोज में नई मिली है। अन्य खोज-विवरणिकाओं में यह ग्रंथ संभवतः उल्लिखित नहीं आ है। इसके साथ ही अंत में दो पृष्ठों 'गुरुअष्टक' नामक ग्रंथ भी संयुक्त है। यह ग्रंथ चौबे-संग्रह के लिए पं० गणेश चौबे से प्राप्त हुआ।

[६१] नाममाला—ग्रंथकार-अवतार मिश्र। लिपिकार—गोपाललाल। अवस्था—अच्छी। पृ० सं०—२७ (१७५)। प्र० पृ० पं० लगभग—२४। आकार—८¼ × ६¼। भाषा हिन्दी। लिपि नागरी। रचनाकाल—१३१६ फसली (१९६४ वि०, १९०८ ई०)। लिपिकाल—१९३० ई०।

प्रारंभ— "श्री गणेशाय नमः। ।। गणेश ।।१।। दोहा—
गौरीसुत द्वैमातु पुनि, धूमकेतु गणराज
मूषक वाहन एकरदन, पूर्ण करिय मम काज ।।१।।
गणाधीप गणपति गणप गणनायक सुरवेश।
कपिल गजानन गजवदन विघ्नराज विघ्नेश ।।२।।
द्वैमातुर हेरम्बविनायकौं, लम्बोदर इभदंत।
नमो स्थायक गजवदन अग्रगाधिप इकदंत ।।३।।'

मध्य—(पृ० सं०—११) "।। शराब ।। ६६ ।। दोहा
मधु माध्वी मदिरा सुरा दारुणी मैरेय।
सुरा वारुणी कुदिहा, कश्य प्रसन्ना जेय ।।१।।
आसवमद कादम्बरी, सिन्दूर मद जानय।
गन्धोत्तमा हलाहली तव अवगुण अनवद्य ।।२।।'

अंत— "।। सवैया ।।
सुन सान्तत मूखे शरीर सबै दखहू न मिट्यो नहि आशाभगी।
भगवान के नाम रतन करी कबु नाहि लिया हिमसा उमगी।।
जपयाग सुसाधन नहि किया नवाला कान्ना तब प्रेम पगी।
भयो कान्त कहा अगजग्म लिय सरस्वति लगी न सबलि लगी ।।४।।

दोहा।।
तेरह सौ पन्द्रह फस्लि उदयमास भृगुवार।
शुक्लपक्ष नवमी तिथि पद का किया तैयार।।"

विषय— विभिन्न १७५ शब्दों के पर्याय-वाचक।

टिप्पणी— चंपारन जिला (बार्स्मरिया ग्राम) निवासी श्री अवतार मिश्र 'कान्त' की यह रचना सरल और सुबोध शैली में एक सौ पचत्तर शब्दों के

पर्याय के रूप में रची गई है । लिपिकारकी टिप्पणी के अनुसार यह रचना अपूर्ण है । 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त ।

[६२] विरहमासा—ग्रंथकार-परमानंद । लिपिकार—गणेश चौबे । अवस्था—अच्छी । पृ० सं०-१० । प्र० पृ० प० लगभग-३६ । आकार-६$\frac{१}{८}$" × ८$\frac{१}{८}$" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—१८५५ वि०, १७९८ ई० । लिपिकाल—१९४१ ई० ।

प्रारंभ— "विरहमासा परमानन्द के
वन्दो श्री गुरु गौरिगनेशायनमः । वन्दौ ब्रह्मा विशुन महेशायनम ॥
वन्दौगुरुपदकंजचरनगुरगुरु विमल । जामे पाटग्रं मपदारथ ग्यानकल ॥
वन्दौ नारदसारदशीशमुनीशको । वन्दौरीनवरीनिसर चद्रदिनेशत्र ॥"

मध्य—(पृ० सं०-८) "मास फागुन
फागुन फाग मचावत आयेधूमसे ।
सखि सब होरी खेलहि बहुतहजूमसे ।
बरबरतालमृदंग परवाउजबाजरी ।
खेलहि फागबनाय हरख मन गाजहि ।
कोई सखिताल बजावहि होरी गावहि ।
कोई सखि डेडडेडतालमृदंग बजावहि ।
आउर बाजे पायल झनझनकारिया ।
अरूढ चले गज चाल जोवन मतवालिया ॥"

अन्त— 'मस्त भइ मद अधर रस रसावहि ।
पीवनतीरछि नैन चितरि चोरावहि ।
मिलि जुली गले लगाइ पलंग पर सो रही ।
करी सुगंध रस टानी एकसग होरही ।
एक ओर नारी नारी एक ओर होय रहे ।
धरम अकुला गरी गरीहोनी होयनेहोयहै ।
बहुभाति को आशा देइके काम बढावहि ।
नारी वारि के मन्त्र अवाररसावहि ।"

विषय— बारहो महीनों पर आधारित शृंगार-रचना ।

टिप्पणी-१-इस ग्रंथ के कवि बिहार के शाहाबाद जिलान्तर्गत कोरी ग्राम वासी हैं । कवि के शब्दों में ही परिचय है—

"हिन्दुस्तान के सूबे में सूबे बिहार है ।
वाये साहाबाद सुजस सरकार है ॥

प्रगने पवारा के कारी में मेरो ग्राम है ।
बदो परमा ” हमारा नाम है ॥'

२—रचनाकाल के सबंध में कवि का सकेत है—
'सन् अठारह सो पचपन के सवत आइया ।
कहो कहानी बिरह सो प्रेम पिलाइया ॥

रचना हृद्य और मनोहर है । इसमें आइया, पिलाइया छाइया, छातिया और नारिया आदि का प्रयोग विचेय है । एक पद देखिये—

' बोलत अनमाल पपिहरा पाव पीव ।
कहा गये निठुराइ हमार कन्त जीव ॥
कन्त गये परदेश सभे सुख लेइ गये ।
छतियनि वजर केवार जन्दिरा दे गये ॥

ग्रंथ की भाषा खड़ी बोली के प्रारंभ-काल की है । सभवत ग्रंथकार सदल मिश्र के समकालीन थे । ग्रंथ अप्रकाशित है और बिहार के साहित्यिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है । ग्रंथ सकलयिता श्री गणेश चौबे का यह ग्रंथ श्री तारकेश्वर प्रसाद (मोतीहारी, चपारन) के लोकगीतों की कापियों में मिला । इसके साथ ही चपारन जिले के अनेक अज्ञात तथा बेतियाराज से सबंधित कवियों की भी रचनाएँ हैं । दूलमदास, चिंतामनि माधोदास, हरिदास, माखनलाल, सुन्दर, आनद (बेतिया के महाराजा) नवलकिशोर (बेतिया के महाराणा) रामनारायन (दामोदरपुर-गोविन्दगंज) और नवल प्रमुख कवि हैं, जिनके पद इस सग्रह में हैं । चौबे-सग्रह के लिए प० गणेश चौबे (बगरी-मोतिहारी चपारन) के सौजन्य से प्राप्त ।

[६३] सूरज पुरान—ग्रंथकार—× । लिपिकार—अवस्था-प्राचीन हाथ का बना देशी कागज । पृ०-स०—१ । प्र० पृ० ९० लगभग-१७ । आकार—४½ × १० । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ— "श्रीगणेशायनम श्री दोहा
चरनकमलजोराके मती प्रेम लवलीन
महीमा आग अपार है आदेवाग्यानप्रवीन

चौपाइ
मरजदेवताजुगीतादा सुमीरन ग्यानसुधारसमादी
जोतीशरूप आदीतवनवाला तेजप्रतापनुमग्रनीशमाला

तुमही आदी परमेशरस्वामी अलखनीरंजन अंतरजामी
वरनी न जाइजोतीके लीला धरमधुरंधरपरमसुशील।"

मध्य—(पृ० स०—५) "दोहा
तवमुनीवोलवचनशोहाइ वरीपदकमलशुरनगाए
कहेमुनीशशुनुपंचनहमारे मोशेचुकीभएअतीभारे
एहअपराधक्षमहुप्रभुमोरी बीनतीनाथद्दुवोकारजोरी
तवप्रभुकहएशुनहुममवानी इहाकेंलोगशकलगुनखानी"

अन्त— "धरमकयाचलीहेदीनरातीनेमधरमचलीहेवहुभाती
वीप्रजेवाइ आयुतव खेहि नीश्जेनामशुर्ज के गैहे
लछमीघरघरलेहीनेवाशा धरमकथातवहोएप्रगाशा
ग्रोथावचनकोडनाकहीहे धर्मवीचारशुर्जतबकरीहे
द्वादशकलाजोतीलेकरीहे द्वादशकलालेइतवउगीहे
आदीततवहीआके पुरवजन्मके पातख कथाशुनतछएजइ
इति शुर्जपुरानशपुरनोनाम. अष्मो अग्याय"

विषय— सूर्यकथा और व्रत के फल का वर्णन।

टिप्पणी— ग्रंथ संख्या ७६ की टिप्पणी देखिए।
ग्रंथ महत्त्वपूर्ण और अप्रकाशित है। 'चौबे-संग्रह' के लिए श्रीगणेश-चौबे (बँगरी, मोतीहारी, चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त।

[६४] **हनुमानचालीसा**—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, पुराना कागज। पृ० स०—४। प्र० पृ० पं० लगभग—१४। आकार—३½"×५"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— "श्रीगनेसायनमः॥ अथ श्रीहनुमानजीकौग्रस्तोत्रलिख्यते॥
वालसमैंरवभक्षकियौजवतीनौहुलोकभयौअंधिआरौ
औसीत्रासभईसवकौ अतसंकटकाहुपैजातनाटारौदेवनआइ
करीविनतीजवछोडिदियौरविकष्टनिवारौ
कोनहिजानतहैजगमैयहसंकटमोचननामतुमारौ १"

मध्य—(पृ० सं०-२)
"रावनत्रासदईसियकौ तवरक्षकसोकहिसोकनीवारौ
तेहीसमैंहनूमानमहाप्रभुजाईमहारजनीचरमारौ"

अन्त— "वेधसमेततवैंमहिरावनलैरछवीरपतालसिधारौ
देवीकौपूजभलीविधिसौजवदानभ••• ••"

विषय— हनुमान् की शक्ति और उनके जीवन से सम्बन्धित स्तोत्र-साहित्य। प्रसिद्ध जेगीयमान ग्रंथ।

टिप्पणी— प्रसिद्ध हनुमानचालीसा की खण्डित पाण्डुलिपि। अंतिम पृष्ठों के खण्डित होने के कारण लिपिकार तथा लिपिकाल का ग्रंथ में उल्लेख नहीं हुआ है। लिपि-शैली पुरानी है। 'चौबे संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे से प्राप्त।

[६५] बेतियाराज वर्णन—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन। पृष्ठ सं०—४। प्र० पृ० पं० लगभग—८। आकार—३'×५'। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— दोहा

"गणपतिपदउररासिके शिवाशीवशिरनाइ ॥
जगन्नाथरविचदिके बिलतकहौंनृपगाइ ॥१॥
अवधनगर वरबेतिआ घरघरमंगलचार ॥
फूलिरहेपुरकन्सम लखिनृपखिततमार ॥२॥
विधियतनृपनवलाङ्के पितितितदियेन्हिकाइ ॥
मानामधवाप्रबनिमे ठवरठवररहछाइ ॥३॥"

मध्य०—(पृ० सं० ३)

"सकलदेशकेलागसम लखतसमाशाम्राइ ॥
मंगलमयबेतिआमये शोभावरणिनजाइ ॥४॥
सुमगलमनलखिसुभधरि सकलमगलियेलाइ ॥
रचासुआविनृपरचने सुमिरतश्रीगणराइ ॥५॥

अंत— 'धनिधनिनृपकाशहरवर धानधनिधरमनरश ॥
धनिधनिकविकोविदकहे धनिधनिदेसविदेस ॥६॥
धनिधनिसमअमसाचने नामरकौनहिगाइ ॥
निमिगुरेरामरागमे विपुधनामनकहाइ ॥७॥'

विषय— बिहार के अंतर्गत चम्पारण जिले के प्रसिद्ध और अनेक कवियों का आश्रयदाता बेतियाराज्य का वर्णन।

टिप्पणी— यह ग्रंथ खंडित है। यद्यपि आदि और अन्त में ग्रंथकार का नामोल्लेख नहीं हुआ है, किन्तु प्रथम पंक्ति 'जगन्नाथरविचदिके'—से प्रतीत होता है कि किसी जगन्नाथनामा कवि की यह रचना है। यह ग्रंथ बिहार के साहित्यिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है। 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त।

[६६] सूर्यमाहात्म्य—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, जीर्ण-शीर्ण खंडित। पृष्ठ-सं०—३२। प्र० पृ० पं० लगभग—१४।

आकार—५" × ६"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— चौपाइ ॥

"कहौकथारविअमृतवानी ॥ मन अस्थिरकरिसुनहुभवानी
पुस्ठवरणहोइजाकेअंगा ॥ सुनइमनुजसोनूर्य्यप्रसंगा ॥
रविदिनभोजनकरेअलोना ॥ पुन्यसुनामचढावैदोना ॥
विप्रबोलिरविहोमकरावै ॥ सोइभस्मलैअंगलगावै ॥
निस्चैपुस्ठवरणछैजाइ ॥ बनमहिमाआदित्यगोसाइ ॥"

मध्य—(पृ० सं०-१७) चौपाइ ॥

"गिरिजाकहैदोउकरजोरे ॥ एकसंदेहअपरमनमोरे ॥
उत्तरदिसिकहउगहिगोसाइ ॥ सो मोहिनाथकहहुसमुझाई ॥"

अन्त— "ज्येष्ठमासकीभावविवादी ॥ तीनहि अंगुलजलअन्यादी ॥
मासअसाढव्रतकोवरई ॥ तीनमिरिचओलम्चमोदरई ॥
सावनमासवरतरजनीका ॥ खादतीनपलहैसहरिका ॥
भादोमासअमिनवुसदाई ॥ त्रैअगुल सुनहिखाई ॥"

विषय— सूर्य माहात्म्य की कथा और व्रतफल आदि का वर्णन।

टिप्पणी— ग्रंथ-संख्या ८६ की टिप्पणी के समान। इस ग्रंथ में अन्य प्रतियों से पाठान्तर है। 'चौबे-संग्रह' के लिए गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त।

[६७] विज्ञान-गीता—ग्रंथकार—केशवदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। जीर्ण-शीर्ण और खंडित। पृ० सं०—७० । प्र० पृ० ५० लगभग—३६। आकार—६" × ८½"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम— "॥ रति ॥ नगस्वरूपिणीछंदु ॥
प्रसिद्धपापिकारिणी। अशेषपंसहारिणी ॥
विलोकि सम्मिता भई ॥ किधौ असम्मतादई ॥२३॥
करैविनासु जुवैरको ॥ ताकौ नित्यनिवासु ॥
केसवदासप्रकास जग ॥ ज्योंजदुवंसविवासु ॥२४॥
कामकहमौ तवकलहसौं ॥ दिल्ली नगरी जाइ ॥
दंभहिदैरपदेसुपुनि ॥ प्रभुकेदेषहुपाइ ॥२५॥

इति श्रीमंचिविध्य केयपरार्व्विरचितायाचिदानंदमगताया
विग्याननीतायाकामरनिकन्दस्वान्वर्ननोनाम द्वितीयोप्रकाश ॥२॥

मध्य—(पृ० स ५४) ॥ विगार सवैया ॥
'कौनहुँ आयोकहा कहि केसवकोयपुनीपरिपूरनकाहै ॥
बंधुमबधुहियेग्रहिहेरतौ पानैउ छितिसाधुमु ोहै ॥
आयोजहातेहाजातहीभ्रवचाकिनमा चयकाहूनमोहै ॥
नित्यऊनित्यावचारकरौ मिना,विचारविचारमैसोहै ॥५३॥"

अंत— ॥ दोहा ॥
"भक्तिजोगतरभूमिकाइहविधसाधतसाध ॥
येपार सकारकैयनूपियनत अगाध।"
(इसके आगे के पृष्ठ नहीं है)

विषय— विज्ञान गीता का भाषा-पद्य में वर्णन ।

टिप्पणी— कवि केशवदास की यह प्रसिद्ध रचना खण्डित है। प्रारंभ के एक प्रकाश तो है ही नहीं, द्वितीय प्रकाश के भी बीस पद खंडित हैं। अन्त में भी ग्रंथ खंडित है। ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। आदि और अंत खण्डित होने के कारण लिपिकार और लिपिकाल का उल्लेख नहीं हुआ है। यह ग्रंथ 'याज्ञिक संग्रह' के लिए ५ गदाधर भाव के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[९८] रामचन्द्रिका—ग्रंथकार—केशवदास । लिपिकार—× । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना, देशी कागज । पृष्ठ-सं०—१०१ । प्र० पृ ५ पंक्ति—२२ । आकार—१२"×५½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भाद्र वदी ८ मी, सं —१७६१ वि ।

प्रारंभ— 'श्रीगणेशायनम ॥ श्रीरामचन्द्रायनमः ॥
॥ कवित्त ॥ बालकमृणालनिज्यौं तोरिडारै
सबकौं ॥
निर्मलरतहरिपद्मनिकेपन्नगदउज्यौंपतालपलि
पठवैकलुखौ ॥
दूरिकैकलंकअंक श्रीरामचन्द्रिकानदेवेशाम
दम्नै बहुतकौ ॥

मध्य— (पृ सं ५२) ॥ भुजंगप्रयात ॥
'हहै न्पैगुरपद्यैन्द्रनपीन्है

वलीवेगुज्यौंआपुहीइनमानै
करैसावनाऐकपरलोकहींकों
हरिश्चन्द्र जैसेंगएंदैमहींको
दुहंलोकफोंएकमावैगयानैं ॥
विदेहीनिज्यौंन्द्विानीवपानैं ॥
नठैं लोकदोउहठी ऐक श्रैमें
त्रिमकेटमें ज्यौं भलेउ अनैमें २२"

अन्त— "चचला ॥ अशेपपुन्यपापकोकलापआपमेवहाई
विदेहराजजौंसदेहभन्करामको कहाउं ॥
लहैनुभुन्किलोकएहि अन्तमुक्ति होटताहि ॥
पटैगुनैं कहैसुनैंजुरामचटचन्द्रिकाहि ॥३६॥
इतिश्रीमत्मकललोकलोचनचकोरचितामनि श्रीरामचंद्र चंद्रिकाया-कुशलवादिपुत्रानाराज्याभिपेकवर्नसिछाटानंनाय एकोनचत्वारिंशतम प्रकाश ॥३६॥ इतिकेशवदास श्रीरामचंद्रकापुस्त ॥ नामाप्त ॥"

विपय— रामायण कथा का तुलसीकालोत्तर शैली में वर्णन।

टिप्पणी— सं० १६०० ई० के लगभग वर्तमान कवि केशवदास की यह प्रसिद्ध रचना है। इनके अब तक जितने हस्तलेख प्राप्त हुए हैं, उनमें इसका द्वितीय स्थान है। नागरी-प्रचारिणी सभा, (काशी) को खोज में मिली प्रतियों में प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल है सं० १६३१ वि०। मन्नूलाल पुस्तकालय, गया के संग्रह का लिपिकाल है—सं०१८३५ और सं० १६३७ वि० है। इस प्रति का लिपि-काल है-१७६३ वि० सं० ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे (बँगरी मोतिहारी, चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[६६] रामायण (बालकाण्ड)—ग्रंथकार—तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृ० सं०—२३३। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—१३' × ५$\frac{1}{६}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १६०६ वि०।

प्रारम्भ— ॥ चौपाई ॥
"गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन ॥ नयनअमियदृगदोपविभंजन ॥
तेहिकरीविमलविवेकविलोचन ॥ वरनेंरामचरितभवमोचन ॥
वंदोप्रथमहिंमूरचरना ॥ मोहजनितसंसयसवहरना ॥

सूननसमानसकलगुनखानि ॥ करौप्रणामसप्रेमसुवानि ॥
साधुचरीतसुभमरीसकपासु ॥ निरसविसदगुनमयफलजासु ॥
जोसहिदुपरछिद्रदूरावा ॥ वदनियनेहिजगजपावा ॥
मुदमगलमयसंतसमाजु ॥ जोजगजगमतिर्थराजु ॥
रामभक्तिजहांसूरसरीधारा ॥ स्वरसतिव्रह्मविचारप्रचारा ॥"

मध्य—(पृ० सं ११५) ॥ चौपाइ ॥

"सोमैचरीसकहाप्रसगाइ ॥ सुनुपगपतीगीरीनामनलाइ ॥
भासमादमणक्हो पानी ॥ पगयतीमुनाप्रेमसुयमानी
आहानेसदहतहापहुचा॰ ॥ कारेगरहनीनधामरीयाइ
नाहक्रेसीपानासमान ॥ नीतीदुहहरघुकुलमनीशाने ॥'

अंत—

'नित्यमीराधानिकरनिकारणरामतुलसीरयौ ॥
रघुविरचरीतअपारवाराविपारकविकोविदलह्यो ॥
उपवितव्याहउछाहमगलसुनिहिजेसादरगानहि ॥
वैदेहि' अनमसुपयावहि ॥
मुनिगानकहोगीरीसक्यायम्यमधि ~ ॥
निवाहनेसप्रेमगावहिसुनहि ॥
निहकदसदाउछाह मनस ॥३६४॥
इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुप
निद्धानसपादनोनामप्रथमोसापानरुपूण'"

विषय— रामचरितमानस के बालकांड की कथा।

टिप्पणी— तुलसीदासविरचित रामायण की सं० १६ ६ वि की पाण्डुलिपि। ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। प्रारंभ के दो पृष्ठ खंडित हैं। यह ग्रंथ 'चौबे संग्रह' के लिए पं गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[१००] रसिक प्रिया—ग्रंथकार—केशवदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन जीर्ण शीर्ण। पृष्ठ-उ —५५। प्र पृ १० लगभग—२ १ आकार—८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। निपिकाल—×।

प्रारंभ— "दीपियानिलागीरुपभाणनूकेमदिरमे घाइकै
नहानहासोरमारीमारणरजानिनिकीसबहीकीद्रुठिगइलाज
हायमायकै ॥
देखेमेकुअरकान्हसारोसआमाहिरकैराधकैजगाइऔर
जुवतीजगाइकै ॥

लोचणविशालचारचिबुकलिलारचुम्बिचेयेंकीसीवाल
लाललीनीउरलाइकें ॥"

मध्य—(पृ० सं०-२८) अथउत्तमालक्षणं ॥
"मानुकरैंअपमानतेतजैंमानतेमानु ॥
पिउदेषैंसुपपावइताहि उत्तमाजानु ॥

॥ अथउत्तमा ॥
होतकहाअवकैमसुकैमसुकैनतवैंजवहैमसुकाए ॥
एकहिंकविलोकमणिमाहयनेकयमोलविकैंकविकाए ॥"

अन्त— "॥ अथभारतीलक्षणम् ॥
वरनिएयामेवीररसअरुसिंगाररसहास ॥
कहिकेसवनव अथ सो भारतीप्रकास ॥
काननिकनकपत्रचनकचमकतचारुद्वयरुजुभूलीफलरनिअतिसदाइ ॥
केसवच्छवीलोच्छ्रुसीनफूलमारथीसोकेसरिकोऊउरध
राधिकारवीननाइ ॥
निरेंहीनवेसरिकोमोतिनकीनाकएकहिविलोकति
गोपालातोगएविकाइ ॥
लोचनविसालाभालजड़ितपराइला···· मीननिकरेथ
मनमथराय ॥"

विषय— नायक, नायिका, रस-अनरस, हाव-भाव, शृंगार आदि का मनोरम वर्णन।

टिप्पणी— ग्रंथ खंडित, जीर्ण-शीर्ण और अस्त-व्यस्त है। प्रारंभ के पृष्ठ खंडित हैं तथा वर्तमान चार पृष्ठ अत्यन्त जीर्ण होने के कारण अपठनीय हैं। इसीलिए, प्रारंभ की पंक्तियाँ पृष्ठ संख्या—१६ से उल्लिखित हुई हैं। अन्तिम भाग के भी खंडित होने के कारण लिपिकाल का उल्लेख नहीं हुआ है। ग्रंथ की लिपि पुरानी तथा अस्पष्ट है। 'चौबे-संग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे (बँगरी-मोतिहारी, चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त।

प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत पोथियों का विवरण

[१] मुहूर्त चिन्तामणि—ग्रंथकर्त्ता, दैवज्ञानन्त सुत श्री दैव राम। ग्रंथ लिपिकार सुखिहाल। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृ० ४६। प्र० पृ० प लगभग १३। लिपि—नागरी। रचनाकाल—सं० १५२२। लेखनकाल— ×।

प्रारंभ—'श्री गणेशाय नमः ॥ गौरीश्रव केतक पत्र भङ्गमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे।
विघ्न मुहूर्ताकलितद्वितीय दन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्य ॥१॥
क्रिया कलाप प्रतिपत्ति हेतुं संक्षिप्त सारार्थ विलास गर्भम्।
अनन्त दैवज्ञ सुतस्स रामो मुहूर्त चिन्तामणिमातनोति ॥२॥"

अन्त— गिरीश नगरे वरे भुज भुजेषु चन्द्रैर्मिते शके। विनिरमदिम खलु मुहूर्त चिन्तामणिम् ॥
इति श्री दैवज्ञानन्त सुत दैव राम विरचिते मुहूर्त चिन्तामणौ गृहप्रवेश स्समाप्त ॥
समाप्तायम्।
कार्तिके चासिते पक्षे धूम्राङ्कगजभुजै मिते विलेखि सुखिहालेन श्री मुहूर्त चिन्तामणि ॥
पाग्लिपुरके ॥'

विषय—ज्योतिष शास्त्र का संस्कृतभाषा का, प्रसिद्ध ग्रंथ। ग्रंथ में सिद्धांत से संबंधित चित्र भी दिये हुए हैं।

टि०—लिपिकार के निवासस्थान तथा काल आदि का संकेत ग्रंथ के आदि अथवा अन्त में स्पष्ट नहीं है। अन्तश्लोक का 'धूम्राङ्क गजभुजै मिते' स्पष्ट नहीं होता है। यह ग्रंथ शिवचन्द्रजी आर्य, (मिरजानहाट, छत्रपतितालाब भागलपुर) से प्राप्त हुआ है। ग्रंथ की लिपि पटना में ही की गई है क्योंकि 'पाग्लिपुरके' लिखा हुआ है।

[२] रुद्राध्याय-प्रकार—ग्रंथकार—×। ग्रंथलिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं० ६३। प्र० पृ० प० लगभग १७। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ— ततश्च व्याख्यान प्रकाशित देवतार्थविशेषामन्त्रा केचनाध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिका नुपसर्गानपाकर्तुं मनारथपथप्रवर्तमानानर्थांश्च साधयितुं वाजसनेय संहितायां समुच्चीयते यद्यपि मन्त्रानुक्त पारिश्चरंतन विविधप्रयोगसंबधबधुरास्तथा सति तत्र तेषां मन्त्राणामप्रतीकोपादानमात्र कृतार्थ वाक्यसान व्यवहितस्थितिरवश्यवोद्धव्या देवतार्थ विशेषाश्च भाष्या। । तत्र तावत्प्रथम सर्वमन्त्राणांशिर शेखरीभूतस्य प्रणवस्यो पासनोच्यते यत्र ग्राम्य पशूनां शब्दो न श्रूयते तत्र गंगा-यमुना-सरस्वत्यादिपुण्यक्षेत्रेषु एकस्थल प्राङ्मुख कुशासन कुशाध्वज कुशपरिवेष्टित गृह कृत्वा कुशाचीर कुशवासा कुशायण्योपवीत कुशहस्त शाकयावक पयोभक्षोऽन्यवर्जितभाजन विजितेन्द्रिय प्रचलत्प्राण नरेत्। अस्य प्रणवस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्द परमात्मा

देवता सकल कल्मष विनाशनद्वारा सर्वमंत्रसिद्ध्यर्थे विनियोग. इति विनियोगपूर्वंजपित्वा दशाशतिमाज्यं जुहुयात् ॥ तत सर्वदेवा सर्वमंत्राश्च सिद्धा भवंति अथ गायत्री साच प्रसिद्ध ऋष्यादिका अतश्चात्रकेवलप्रातीतिक [समुदायार्थो लिख्यते धीमहि ध्यायाम चितयाम इति यावत् कि तत् भर्ग तेज. सृज्यते] अनेन । श्रुति स्मृति विहित कर्माणिफलप्राय स्तत्वद्वारेणेति भर्गः भ्रस्जो पाके अस्मादौणादिक असुन प्रत्यय ग्रहिज्याव- वीत्यादिना सप्रसारण कीदृशं वरेण्य वरणीय अभिलषणीयं ब्रह्मादिभिरपीत्यर्थः कस्येतत् प्रथमाया पृथ्व्यादिपरिणामात् तस्य सवितुर्देवस्य सर्वे ।"

अन्त—'अपि च एनं प्रथम प्राणेवाऽर्यतिष्ठत् अविष्ठित अस्याश्वस्य रशन गंधर्व. अगृह्णत । इत्यादिदेनमश्व स्तौमीत्यभिप्राय ॥२६॥ अनेनाश्व संकृदाहुतीना सृष्य सहस्र जुहुयात् चतुरश्वयुक्तं रथं लभते ॥३०॥ असियम इति तिलाहुती शतसहस्र जुहुयात् विपापो भवति ॥ ब्राह्मणमपिलक्षहोमेन तारयेत् ॥ इतिप्रकार' ॥ इति चतुर्थ पल्लव ॥"

विषय—शुक्ल-यजुर्वेद के चुने हुए मंत्रों के अर्थ, व्याख्या आदि संस्कृत भाषा में है। मंत्रों के पूर्व उनके ऋषि, देवता तथा विनियोग आदि भी हैं।

टि०—(१) प्रारंभ के चार पृष्ठ नहीं है। ५वाँ पृष्ठ फटा हुआ है। प्रारंभ की पंक्तियाँ पृष्ठ ६ से लिखी गई हैं।

(२) ग्रंथ का प्रारंभ अथवा अन्त देखने से कर्त्ता एवं लिपिकार का पता नहीं चलता है।

(३) ग्रंथ कर्मकांडपरक है। हवन तथा बड़े-बड़े यज्ञों के संबंध में लिखा गया है।

(४) ग्रंथकार ने इन वैदिक मंत्रों की व्याख्या के संबंध में अपना अभिप्राय प्रकट किया है। किन्तु, पृष्ठ फटे होने के कारण स्पष्ट नहीं होता है। ग्रंथ अनुसंधेय है। यह ग्रंथ श्री शिवचन्द्रजी आर्य (छत्रपति तालाब, मिरजानहाट, भागलपुर) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[३] श्रीदत्तात्रयतंत्र—ग्रंथकर्त्ता—× । ग्रंथलिपिकार—श्री सरयू प्रसाद । अवस्था—प्राचीन, साधारण कागज । पृष्ठ-सं०—४० । प्र० पृ० पं० लगभग २२ । लिपि—नागरी । रचना-काल—× । लेखनकाल—× ।

प्रारंभ—"श्रीगणेशायनमः ॥ अथदत्तात्रय लिख्यते ॥ श्री दत्तात्रय उवाच ॥
कैलासे शिखराशीनं देव देव महेश्वरं
दत्तात्रय परिप्रच्छ शंकरं लोक शंकरं ॥१॥
कृतांजलि पुटो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सल ॥
भक्ताना-च हितार्थाय कल्पतन्त्रश्च कथ्यते ॥२॥
कलौ सिद्धि महाकल्पं तन्त्र विधा विधानकं
कथयंति महादेवं देव देवं महेश्वरम् ॥३॥
सन्ति ना ना विधा लोके मंत्र मंत्राभिचारिकं ॥
आगमोक्ता पुराणोक्ता ज सोक्ता डामरो तथा ॥४॥"

अंत—'पिता शैव —शैवी तदनु जननी च मुद्रा पिता शैव जैनी कुलमरिफल शैवामति च।
राच शैवशास्त्रे शिवशरणपूजानुसरणे सुख शैवी वाणी भवतु भगवन् शिव शिवं ॥५॥
इति श्री दत्तात्रेय तंत्रे दत्तात्रेयईश्वर सम्वाद इन्द्रजाल समाप्त ॥
यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया ॥
यदि शुद्ध मशुद्ध वा मम दोषो न दीयताम् ॥१॥
लिखित पुस्तक तत्रं सरयू प्रसादेन धीमता ॥

विषय—तंत्र शास्त्र—इन्द्रजालविद्या सर्पविषविमोचन, व्याघ्रभयनिवारण आदि विषय इसमें हैं। यथा-१८ पृष्ठ में—'अथ सर्प निवारण ॥
आस्तिक मुनिराज च नमस्कार पुन ॥०॥
स्वप्न सर्पभय नास्ति नान्यथा ०॥३॥
गृहीत्वा पुष्पनक्षत्रे अमृत मूलक हरत् ॥
यन्माला धारयेत् कण्ठ सर्प बाधा भय न हि ॥४॥
अस्य व्याघ्रभय निवारण ॥
गृहीत्वा शुभनक्षत्रे पत्र र मूलक हरत् ॥
धारयद् दक्षिण कर्णे शरचकाना भय न हि ॥

टि०—(१) सम्पूर्ण ग्रंथ २७ पटल में समाप्त है।
(२) ग्रंथकार का पता, आदि और अंत में, नहीं मिलता है। किन्तु, यह संकेत है कि ग्रंथकार शैव है।
(३) लिपिकार ने अपना नाम लिखने के अतिरिक्त, अपने संबंध में कुछ भी नहीं लिखा है। यह ग्रंथ श्री भागवत प्रसादजी (तुराव्पुर पटना) से प्राप्त हुआ।

[४] गीत-गोविन्द—ग्रंथकार—श्री जयदेव कवि। प्रथलिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज, फटा हुआ। पृष्ठ सं० ७८। प्र पृ० प० लगभग १३। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—'विहरति हरिरिहसरसवसंत ॥
नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहजनस्य दुरत ॥ ध्रु०॥८
उन्मद मदनमनोरथ पथिक वधूजनजनित विलाप ॥
अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥२॥
मृग मद सौरभ मरस वशंवद नवदल माल तमाले ॥
युवजन हृदय विदारण मनसिज नखरुचि किंशुक जाले ॥३॥
मदन महीपति कनकदण्डरुचि केशर कुसुम विकासे ॥
मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृत स्मरतूण विलासे ॥४॥
विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुणकरुण कृत हासे ॥
विरहिनि कृन्तन कुन्तमुखाकृति केतकि दंतुर ताम ॥५॥

अंत—"श्री जयदेव भणित विभवद्विगुणीकृत भूषणभारं ॥
प्रणमत हृदिविनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदयसार ॥८॥

विषय—श्री राधाकृष्ण के विरहवर्णन के साथ दर्शनानुपम वर्णन।

टि०—(१) गेय पदों के पूर्व 'ध्रुवपद' आदि नाम-निर्देश किया गया है।

(२) ग्रंथ अपूर्ण है। प्रारंभ के २ पृष्ठ नहीं हैं। 'मानिनी' वर्णन नाम दशम सर्ग समाप्त करके ११ सर्ग का कुछ अंश है। आगे के पृष्ठ नहीं हैं। प्रारंभ के पृष्ठ फटे होने के कारण ऊपर का अंश पृष्ठ ८ से लिया गया है। यह ग्रंथ श्री शिवनन्दन जी आर्य (मिर्जानगाट, छत्रपतिनगर, भागलपुर) से प्राप्त है।

[५] सारस्वतप्रक्रियाव्याकरणम्—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। पृ० सं०—६६। प्र० पृ० पं० लगभग १८। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल ×।

प्रारंभ—"श्री गणेशाय नमः॥ आनन्दैक निरानन्दममलमपरमगोविन्दम्॥
दया निलयन वन्दे वन्दे वरदं शान्तं नमः॥८॥
वाग्देवतायाश्चरणारविन्दं सानन्दं वन्दे हृदि संनिधाय॥
श्री पुञ्जराज कुरुते मनोज्ञां सारस्वतव्याकरणस्य टीकाम्॥१॥
इह ग्रंथस्य कर्ता निरन्तरायासमाप्तिकाम श्रेयस्करं शिष्टाचार परिपालनायेष्टदेवता-नमस्कारस्वमंगलाचरणपूर्वकं ग्रन्थप्रतिपादितं तावत् ग्रन्थादौ चिकीर्षितं प्रति-जानीते। प्रणम्य परमात्मानमित्यादि॥१॥ तत्र परमात्मानं प्रणम्य॥ बालधी-वृद्धिसिद्धये॥ नातिविस्तरणम्॥ सारस्वतीं प्रक्रिया ऋजु करोति इत्यन्वयः॥ प्रक्रियन्ते प्रकृति प्रत्ययादि-विभागेन व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनया इति प्रक्रिया॥
सरस्वत्या प्रणीता या प्रक्रिया सा सारस्वती प्रक्रिया ता सारस्वतीं प्रक्रियां ऋजुं प्रयोगानुकूल सूत्रक्रमां कर्वे करिष्ये वर्तमान सामीप्ये वर्तमानवदेति सूत्रात्करिष्ये इति स्थाने कुर्वे इति॥"

अंत—"आपतः स्त्रियाम्॥ आकारान्तात्स्त्रियां वर्तमानादाप प्रत्ययो भवति॥ आपि विहितं। आपरितमिस्त्रोप। जाया माया श्रद्धा वाला एवमादिषु स्त्रीप्रत्यय विशिष्टेषु वालाना लिङ्गविशेषज्ञान भवतीति लिङ्गविशेषाविज्ञार्थायेतिउक्तमेवोच्यतम्॥ इत्यादित्यादि शब्दान्॥"

विषय—संस्कृत के प्रसिद्ध व्याकरण की टीका।

टि०—(१) इस ग्रंथ के टीकाकार ने ग्रंथ की टीका करते हुए इसे सरल बनाने का यत्न किया है। यद्यपि टीकाकार ने अपना परिचय नहीं दिया है तथापि प्रारंभ के 'श्रीपुज्जराज' से प्रतीत होता है कि टीकाकार कोई पुज्जराज है।

(२) यह ग्रंथ श्री भागवत प्रसाद जी (हुसैनपुर, पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[६] वाजसनेय-संहिता—ग्रंथकार—×। ग्रंथलिपिकार—×। अवस्था—अच्छी। पृ० ३१। प्र० पृ० पं० लगभग १८। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×—।

प्रारंभ—"ये अग्नय समनसोन्तराद्यावापृथिवीऽइमे।
शारदावृतू ऽ अभिकल्पमानाऽइन्द्रमिवदेवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवे-सीदतम॥१६॥"

अंत—"अभिगारागि सहसा गाद्दाला न्या तार अल्म तुरि इ ॥
न्न्यवन पूननागान्युदाम्मात्त तना अवतु त्रयुतु ॥३६॥"

विषय—यजुर्वेद का नाखा—वाजसनय-संहिता मूल।

टि०—(१) ग्रथ की लिपि अच्छी नहीं है। प्रारंभ के १०१ पृष्ठ नहीं है। ग्रंथ पृष्ठ १०२ से प्रारंभ होकर पृष्ठ १३६ में समाप्त हो गया है।

(२) यह ग्रथ श्री परमानन्द मिश्र जी (ग्राम चन्दनपुरा नमालपुर, मुंगेर) के प्रयत्न से प्राप्त हुआ है।

(३) ग्रथ अपूर्ण है। अतएव, लिपिकार का नाम नहीं ज्ञात हो सका। मंत्रों के साथ उदात्त अनुदात्त, स्वरित बोधक चिह्न भी दिये हुए हैं ग्रथ के बीच बीच में अध्याय समाप्त होने पर इति वाजसनेय संहिता पाठ लिखा हुआ है। ग्रथ १७ वें अध्याय तक ही है।

[७] रुद्रयामल-तंत्र—ग्रथकार—×। लिपिकार ×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृ सं० ३१। प्र पृ प लगभग २०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"पूर्णगिरि पीठाय नम। उड्यान पीठाय नम॥ कामरूप पीठाय नम। जालधर पीठाय नम। इति संपूज्य पट्कोणा पञ्चास पूज्य॥ त्रिकोण त्रिकोणाग्र दलोशार संपूज्य॥ मध्य॥ आधारशक्तये नम। इति संपूज्य॥ त्रिकोण गर्भे मत्रिका महाध्य नम इति सामान्यार्घ्य नीनाम्युदय। य भूर्महिव नम॥ र उष्मायै नम॥ लं ज्वलन्यै नम॥ व ज्वालिन्यै नम। उ विस्फुलिंगन्यै नम॥ ५ सुत्रयै नम॥ म हवन्यै नम॥ ह कपनायै नम॥ लं हव्यवहायै नम॥ न कव्यवाहायै नम॥ इति संपूज्य॥

अंत—"चचन् काचन कड्लाग परागमदवाचाग्रज।
य वा ध्यनसि नद्गत क्षणमपि ध्यायति कृत्याम्पिराम्।
तना परम सुवर्णमादहरा स्फारा अध्यधरिरं॥
मायन्तु सकृता न लालनला स्थैर्य मा न त्रिय ॥१॥

विषय—तंत्रशास्त्र।

टि—(१) ग्रथ अपूर्ण है। प्रारंभ पृष्ठ १८ से है। ४७ पृ० में समाप्त हुआ है।

(२) यह ग्रंथ श्री रामनारायण जी 'आर' के द्वारा (मंत्री वैदिक पुस्तकालय सुलतानपुर पटना) द्वारा प्राप्त हुआ है।

[८]—ग्रथकर्ता—×। लिपिकार ×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं० २२। प्र० पृ ५० लगभग १८। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—कालस्य प्रयुक्त स्यादस्य न्यस्य दक्षमस्य करणं॥ ऊ आन्दनिर्गमि। ऊ गौन्हि। ऊ पद्मनि। ऊ शन्य। ऊ मधानि। ऊ मावसयनि। ऊ विश्रगनि। ऊ अर्नि। ऊ स्व नानि॥ ऊ स्वपामि। ऊ स्वाहान्ते। ऊ मनर स्मं। ऊ दक्षिणगंसि। ऊ पुण्यर्गि। ऊ शुभिर्गसि। ऊ आ मयुक्त स्वनामि। ऊ मीर्गसि। तना पिंडमान्य नमत्यामारभ्य॥ ऊ भूर्भुव स्व नागत महान्स्य नर जिय। ऊ भूर्भुव स्व मानि

इहागच्छ इहतिष्ठ। ऊं भूर्भुर्व स्व-पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ। ऊं भूर्भुर्व. स्व शचि-इहागच्छ इह तिष्ठ। ऊं भूर्भुर्व स्व घेमेइहागच्छ इह तिष्ठि। ऊं भूर्भुर्व. स्व सावित्रि इहागच्छ इह तिष्ठ। ऊ भूर्भुर्व-स्व विजये इहाग·· ·· ।"

अन्त—"ब्राह्मण स्थापनं कृत्वा प्रणीता यु त्तरेपरम्।
जलपात्र निधायाथ प्रणीतापूरणादिभि ॥१॥
कृत्वाज्यभागपर्यन्त वह्नौ पचाहुतिस्तत।
चरो. प्रजापतिहुत्वा भूय पञ्चाहुतीश्चरो॥
प्रजापतिस्त्रिष्टकृते व्याहृत्यादि घृतैर्न्न च॥"

विषय—इसमें ग्रंथ का नाम नही है। ग्रंथ में श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान, मातृकापूजा और जातकर्म—निष्क्रमण-संस्कार की विधि लिखी हुई है।

टि०—(१) ग्रंथ अपूर्ण है। प्रारंभ के ४५ पृष्ठ नहीं है। ४६ पृष्ठ से प्रारभ होकर ६८ पृ० में समाप्त हो गया है। ग्रथ का अन्तिम भाग भी नही है। अतएव, ग्रथ के लिपिकार का पता नही है। अक्षरों से ज्ञात होता है कि इसके लिपिकार कोई बॅगला भाषा-भाषी पडित है।

(२) यह ग्रंथ श्री रामनारायणजी 'आर्य' (खुशरूपुर, पटना) के उद्योग से प्राप्त हुआ है।

[६] **राजनीतिशास्त्रशतकम्**—ग्रंथकार—आचार्य चाणक्य। लिपिकार—भीष्मदास। अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज। पृष्ठ—६। प्रतिपृष्ठ पंक्ति, लगभग—१२। आकार-प्रकार—१३"×५"। भाषा-सस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—संवत् १६२६ वैशाख, कृष्ण पूर्णिमा रविवार।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ—"श्री गणेशायनमः॥ नीतिशास्त्र प्रवक्ष्यामि चाणुक्येन तु भाषितंयन विज्ञानमात्रेण बुद्धिविकास्यते नृणम् १

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीयरेनार्ज्जित धनम् तृतीये नार्ज्जितो धर्मश्चतुर्थे किं करिष्यति कृते च लिप्पते देशस्त्रे ताया ग्रम एव च द्वापरे लिप्पते भर्ता कलौ कर्तैव लिप्पते कृते त्वस्थ गता. प्राण स्त्रेताया मास एव च द्वापरेप्वंड ग्रपा प्राणा· कलौ चान्नगता परम् ४"

अन्त की पंक्तियाँ—"संतोषस्त्रिषु कर्तव्य सुदारे भोजनेधने त्रिषु चैव न कर्तव्यो दान तपसि चाध्यतपेत्
सर्वप्यारम्भते काये मे कचित्ते न भाषितं एकाक्षर प्रदारं यो गुरु नाभिवंदते
स्वानयोनि शतगत्वा चाडालेष्वपिजायते ६८
जुणात चलति मेरु कल्पान्ते सप्तसागर· साधव प्रतिपन्नार्थो न चलति कदाचन·
अध्वाजरादेहस्वतामनध्यावाजिना जरा अमभोगा जरा स्त्रीणा संभोगः करिजरा १००
इति श्री राजनीतिशास्त्र शतक समाप्तम् शुम भूयात्॥" (वस्तुत. यहाँ 'अध्वा जरा देहवतामनध्वा वाजिना जरा, असभोगो जरा स्त्रीणा, संभोग करिणा जरा" होना चाहिए। यही शुद्ध श्लोक है।)

विषय—साधारण व्यवहार के, प्रसिद्ध नीतिश्लोक।

टि — १—ग्रंथ पुरानी शैली में लिखा गया है। यत्र तत्र अशुद्धियाँ भी हैं। लेखक ने श्लोकों का भी कई स्थानों में, प्रचलित पाठ से भिन्न लिखा है। कहीं-कहीं छन्दोभंग भी है।

२—यह ग्रंथ कबीरमठ रामदा के महंत श्रीअवधदास साहब के सौजन्य से प्राप्त किया।

[१०] पञ्चदशी—ग्रंथकर्ता—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ सं — ५८। प्र पृ० ५० लगभग—३५। आकार प्रकार—१२ × ४३। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—×।

प्रारम्भ—'ॐ श्री गणेशायनम ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनीश्वरौ प्रत्यक्तत्व विवेकस्य क्रियते पद दीपिका ॥
प्रारीप्सितस्य ग्रंथस्याविघ्नेन परिसमाप्ति प्रचयगमनाभ्यां शिष्टाचार परिप्राप्तमिष्ट देवता गुरु नमस्कारलक्षण मंगलाचरण स्वेनानुष्ठितं शिष्यशिक्षार्थं श्लोकेनाप निबध्नाति अर्थाद्विषय प्रयोजन च सूचयति नम इति

(मोटे अक्षरों में)—ॐ नमः श्री शंकरानन्द गुरुपादाम्बुजन्मने सविलासमहामोह
ग्राहग्रासैककर्मणे १ ॥
तत्पादाम्बु रुहद्वन्द्व सेवा निर्मलचेतसाम् सुखबोधाय तत्वस्य विवेकोय विधीयते २

अन्त— तर्हि किमर्तदित्याशंक्याह अज्ञविदे न इय अज्ञावेया कथमुपनशंक्याह ध्यानेनति अगतिके हनुमाह विद्यावामिति भद्रकापापविवर्जनादिरुक्त तानि विभद्रकापाधिनाह शावति एतेषां परिहार कनोपायन्नाशंक्याह यागादिविवेकेति। कलितमाग निरुपायानि निपुणनाम भावात् भानम् इत्युच्यते ग्रंथमुपसंहरति
(मोटे अक्षरों में)—

शानोपायो निनोपायस्त्वभद्रकापायतामतो यागादिविकनोविषामुपायानिनमर्हति। ६२
निरपायि महत्तरं भासमान न्याय स्य कर्तृत निपुणैश्वासितं भूमाननतं उच्यते ६३
ध्यानदीपमिम ग्रंथ पंचमाध्याय इति विपनानन्न न दूरगात प्रानस्यना ६४
विद्यादीदिशा नने ब्रह्मानंदन सर्वदा पायान्य प्रणित सवान् स्वाश्रयान् शुद्धमासिन ६५

(पतले अक्षरों में) ब्रह्मानंद इति ६४, ५ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्यमुनि विरचित करण श्री रामकृष्णाख्य विरचित उपदेशप्रथविवरण विद्यानंद पंचमाध्याय ॥

विषय— दर्शन (वेदान्त-दर्शन)

टि०— १ वेदान्त के प्रसिद्ध ग्रंथ पंचदशी की टीका।
२ टीका अधूरी है। मोटे अक्षरों में मूल ग्रंथ है। पतले अक्षरों में उसकी टीका है।

[११] सूत्रपाठ—ग्रंथकार—×। लिपिकार ×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ सं —४। प्र० पृ० पं० लगभग—७७। आकार प्रकार—१४" × ४½"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लेखनकाल—×।

प्रारंभ की पक्तियाँ—"श्री गणेशाय नम ॥ अ इ उ ऋ लृ समान। १ ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदा- स्सवर्णा २ ए ऐ ओ औ ३ सन्ध्यक्षराणि ४ ... ५ ... ... ल ६ ... ७ ... ८ ... ९ ... १० ... ... ११ ... १२ ... १३ ... १४ ॥"

अन्त की पक्तियाँ—"... ७७ ... ७८ ... ७९ ... ८० ... ८१ ... ८२ ... ८३ ... ८४ ... ८५ ... ८६ ।

इति सूत्रपाठ ... ॥ ... सूत्रपाठ ... कृदन्त सूत्रपाठ ।"

विषय—संस्कृत-व्याकरण ।

टि०— पाणिनीय व्याकरण से इतर किसी प्रसिद्ध व्याकरण के सूत्रों का संकलन प्रतीत होता है। यह ग्रन्थ ... ज्ञान होता है, ... व्याकरण ... के, तद्धित, समास, स्त्रीप्रत्यय, तिङन्त और कृदन्त के लिए सूत्रों का समावेश इसमें नहीं है। यह ग्रंथ, ... मठ, ... (...) के महंत श्री ... ने प्राप्त किया है।

[१७] सारस्वतप्रक्रियाव्याकरण—ग्रंथकार—× । लिपिकार—भीष्मदास वैरागी । अवस्था— ठीक, ग्रंथ अपूर्ण । पृष्ठ सं०—१६ । प्र० पृ० पं०—लगभग २७ । भाषा— संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लेखनकाल—संवत १६२० आश्विन कृष्ण, अमावस्या, रविवार । आकार-प्रकार—१४½"×४½" ।

प्रारम्भ की पक्तियाँ—"श्री गणेशायनम ॥ अथाख्यात प्रत्ययानिष्पन्ते धातो. वक्ष्यमाणा प्रत्यया धातोर्विधा स्यादि भूवत्तायामित्यादि शब्दोधातु संज्ञो भवति धातुत्वाति- पादय ... च द्विविध आत्मनेपदी १ परस्मैपदु भयपदी चेति आदनुदात्तङित अनुदात्तेङितश्च धातोरात्मनेपदं भवति निस्वरितञ्चुभे जित स्वरितेतश्च धातोरात्मनेपदपरस्मैपदे भवत आत्मगामि चेत्फलमात्मनेपदपरगामिचेत्फल परस्मैपद प्रयोक्तव्यमन्वर्थात् परत्वान्यत् पूर्वोक्त निमित्तात्विगुणदन्यस्माद्धातो परस्मैपदं भवति न चेत्पाम् तिवादीनामष्टादश प्रत्याकानामद्यानि न वचनानि परस्मैपद संज्ञानि भवन्ति परत्रायात्मने पदानि"

अन्त की पक्तियाँ—"कृष्णकारम् दर्शंकारम् मुनोभावे क्यप् ब्रह्मभूयं गत लक्षेर्गमट्व लक्ष- दर्शनाकनयो लक्ष्मी स्त्यायते स्त्रीत्वाद्टिलोप संयोगात्तस्यलोप द्वित्वादीप् येभ्यः शब्द सघातयो स्त्री वर्णानिकार रादिको वा रेफ रकारादीनि नामानि श्रवणतो मम पार्श्वनिमत. प्रभ्रंशतामेति रामनामाभिसकया १ लोकाछन्दस्वसिद्धि यथा- मातरादे इति कृत्य प्रक्रिया स्वरूपान्तोऽनुभूत्यादिः शब्दो भूयत्रसार्थक समस्करी शुभाचके प्रक्रिया चतुरो चिताय १ अवत्ताद्धोथग्रीव कमलाकर ईश्वर सुरासुरनराकार मधुपापीतपकज ॥२॥ इति श्री सारस्वती प्रक्रिया यादृश पुस्तके दृष्टं तादृश लिपतं मया यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोपो न दीयते ॥१॥ इदं पोस्तक लिपीतं भीष्मदासेन ॥"' १ श्री सरस्वत्यै नम. । श्री गणेशाय नम ।"

विषय—संस्कृत व्याकरण की एक शाखा। सारस्वत प्रक्रिया सम्पूर्ण नहीं है। केवल तिङन्त प्रकरण है।

टि०— ग्रंथ में अधिक अशुद्धियाँ हैं। पाठ-भेद भी प्रतीत होता है। ग्रंथ में पूर्ण विराम या, अर्धविराम के प्रयोग का अभाव है। यह ग्रंथ श्री अवधदास साहबजी, महंत, कबीर-मठ रोसड़ा (दरभंगा) के सौजन्य से प्राप्त किया।

(१३) श्रीमद्भगवद्गीता—ग्रंथकार—श्री वेदव्यास जी। लिपिकार—रामभक्त। अवस्था ठीक, देशी कागज। पृष्ठ—४२। प्र० पृ० पं० लगभग—२। आकार प्रकार—१ ½″ × ५⅙। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचना काल—×। लेखन काल—संवत् १६२० मंगलवार, द्वितीया।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ— श्री गणेशायनम ॥ अस्य श्री भगवद्गीतामालामंत्रस्य श्री भगवान्वेद व्यासऋषि अनुष्टुप् छन्द ॥ श्री कृष्ण परमात्मा देवता अशोच्यान वशोचस्त्व प्रज्ञावादांश्च भाषसेतिबीजम् ॥ सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रजात शक्ति ॥ अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोचयिष्यामि मा शुचति कीलकम् ॥ नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नम ॥ न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति तर्जनीभ्यां नम। अ च्छेद्योयमदाह्यायमक्लेद्योशोष्य एव चेति मध्यमाभ्यां नम ॥ नित्य सर्वगत स्थाणुरचे लोयं सनातन इत्यनामिकाभ्यां नम ॥ पश्य मे पार्थ रूपाणि इति कनिष्ठिकाभ्यां नम ॥'

अंत की पंक्तियाँ—"राजन् संस्मृत्य रूपमत्यद्भुत हरे विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुन पुन ७ यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुव नीतिर्मतिर्मम ७७

इति श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्याय १८ ॥ इति श्रीकृष्णार्जुन गीता संपूर्ण।

विषय—कर्मयोग ज्ञान

टि०— पोथी की लिखावट में प्राचीन शैली अपनाई गई है। लिखावट अच्छी है। यत्र तत्र अशुद्धियाँ रह गई हैं। पाठ-भेद भी है।

यह ग्रंथ श्री अवधदास साहबजी, महंत कबीर मठ, रोसड़ा, दरभंगा से प्राप्त किया।

(१४) धातु-पाठ—ग्रंथकार—×। लिपिकार—। अवस्था—अच्छी है प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ—८। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार-प्रकार—१३ × ५¾। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— श्री गुरवे नम ॥ भूसत्तायाम् ॥ चिन्ता समान उत्तर आश्चर्य स्तुतिर रक्षण मैथ विलास्य कुथ पथि लथि माथ हिंसा संक्लेशनयो पिघु गत्याम् पिघु शास्त्रे माङ्गल्य च समर्थैर्यो हिंसाया च गद व्यक्ता वाचि।"

अंत की पंक्तियाँ— कंप चलन लवि आश्र मन पुरा प्रस्रवणे मृगणिमायाम् शुल सक्यान चिह भञ्जन चिह माने सम आकारायाम् तुत्र अवन पुष शुद्धी भूसज मथन इति धातुगणपाठ ॥ ॥ श्री ॥ ॥'

विषय—संस्कृत व्याकरण के धातु (क्रिया) गणों की सूची तथा उनके अर्थ।

टि०— १–इस पोथी की लिखावट बहुत ही अच्छी और साफ है। सभी अक्षर पृथक्-पृथक् हैं। इस ग्रंथ में भी वर्त्तमान मुद्रित ग्रंथों से पाठ भेद-सा प्रतीत होता है। सम्भवतः कुछ धातु नहीं भी दिये गये हैं।

२–यह ग्रंथ श्री अवधदास 'साहबजी' महंत कबीरमठ, रोसड़ा, दरभंगा के सौजन्य से पाया।

(१५) धातुपाठ—ग्रंथकार—। लिपिकार ×। अवस्था—अच्छी अवस्था, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ—४। प्र० पृ० प० लगभग—२४। आकार-प्रकार–१४" × ५½"। भाषा–संस्कृत। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लेखन-काल – ×।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— 'श्री गणेशायनमः'॥ भू सत्तायाम् चिती संज्ञाने च्युतिर् आसेचने श्च्युतिर् क्षरणे मथ विलोडने कुथि पुथि लुथि हिंसा संक्लेशनयो षिधु गत्याम् षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च स्वद स्वैर्ये हिंसाया च गद व्यक्तायां वाचि रद विलेखने नाद अव्यक्ते शब्दे अर्द्द गतौ याचने च अत सातत्य गमने खादृ भक्षणे अद अर्दिवधने दुराटि समृद्धौ चदि आह्लादने ।"

अंत की पंक्तियाँ—"कपि चलने लवि आप्र सने पुण श्रमणे मृग हिंसायाम् पुल मह्याने चिड भेदने चिड भेदने विडभाती त्वड आकाद्यायाम् भुज संचने यूप त्रद्वौ मस्तज मथने इति धातुगणपाठ ॥०॥ श्री ॥"

विषय—संस्कृत व्याकरण के धातुओं (क्रियाओं) की सूची।

टि०—ग्रंथ प्राचीन है। लिखावट की शैली भी पुरानी है।

यह ग्रंथ श्री अवधदासजी, महंत, कबीरमठ, रोसड़ा से प्राप्त हुआ है।

[१६] वैराग्य शतक—ग्रंथकार–श्री भर्त्तृहरि॥ लिपिकार भीष्मदास, वैरागी, कबीरपंथी। अवस्था—अच्छी है। पृष्ठ—११। प्र० पृ० प० लगभग—२०। आकार-प्रकार—१३" × ५½"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत् १६१०, आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी—१३।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—"श्री गणेशाय नमः ओं तत्सद्ब्रह्मणे नमः अपार संसार समुद्र मध्ये संमज्जतो मे मरण किमस्ति गुरो कृपालो कृपया वदैत । (प्रश्नोत्तरी के कुछ भाग समाप्त करने बाद) श्रीराम कृष्णायनमः अथ वैराग्य शतक मारभ्यते चूडोत्तंसितचन्द्रचारु कलिका चचच्छिखा भासुरो लीलादग्धविलोलकामशलभ श्रेयोदशाग्र स्फुरन् अंतस्फूर्जदपारमोहतिमिरप्राग्भारमुच्छेदयन्चेत स समानयोगिनां विजयतं ज्ञानप्रदीपो हरः १"

अंत की पंक्तियाँ—"पाणीपात्रं पवित्रं भ्रमण परिगत भैक्षमक्षय्यमन्नं विस्तीर्णं वस्त्रमाशा सुदशकमलमल्पमस्त्वल्पमुर्वी येषां निःसंगताना करणपरिणति स्वांतः॥ संतोषिणस्ते धन्या संन्यस्त दैन्यव्यतिकरनिकरा कर्म निर्मूलयंति ॥१००॥ इति श्री भर्तृहरियोगींद्र कृतौ वैराग्यशतके अवधूतचर्य्या निरूपणे नाम दसम दसकं॥ इति श्री भर्तृहरिकृत वैराग्य शतक संपूर्णम्।"

विषय—वैराग्यपरक, दार्शनिक, मननशील विचार। यह ग्रंथ प्रसिद्ध है।

टि०— ग्रंथ में दो प्रकार के कागजों और लिपियों का समावेश है। इससे प्रतीत होता है कि दो व्यक्तियों ने मिलकर ग्रंथ पूरा किया है। प्रथम प्रश्नोत्तरी और वैराग्य शतक के दो पृष्ठ के अक्षर तो एक व्यक्ति के हैं और कागज भी एक समान है किन्तु बाद के अन्य पृष्ठों के कागज और लिपि में भी अन्तर है। प्रथम के अक्षर स्पष्ट तथा सुपाठ्य हैं, किन्तु शेष अक्षर अस्पष्ट और पिचपिच' हैं।

यह ग्रंथ श्री अवधदास साहबजी, महंत, कबीरमठ, रोसड़ा (दरभगा) की कृपा से प्राप्त किया।

[१७] श्रीमद्भगवद्गीता—ग्रंथकार—श्री वेदव्यास जी। लिपिकार—वैष्णव श्री प्रेमदासजी। अवस्था—अच्छी है। ग्रंथ के बीच के अक्षर, पानी गिरने से अस्पष्ट हो गये हैं। देशी कागज है। पृष्ठ २४। प्र० प० प० लगभग—३०। आकार प्रकार—१२ × ६½। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—संवत् १८७१ फागुन, कृष्ण एकादशी, सोमवार।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—"ओं श्रीमते भगवन्निम्बादित्याय नमो नमः॥ ओं अस्य श्री भगवद्गीता माला-मंत्रस्य भगवान्वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप्छंदः श्रीकृष्ण परमात्मा देवता अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्चभाषसेनिबीजं॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रजेति शक्तिः॥ अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः इति कीलकं॥ नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः॥ न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति तर्जनीभ्यां नमः।

अंत की पंक्तियाँ—"राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतं॥ केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः॥७॥

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः॥ विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः॥७७॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः॥ तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥७८॥

इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः॥

लिखितं दरभंगा हुलासीमध्ये नृसिंह ठाकुर समीप॥ लिखितं वैष्णव श्री प्रेमदास जी परमार्थी लिखितं॥ शुभमस्तु मंगलं भवेतु॥'

विषय—कर्मयोग दर्शन।

टि०— इसमें बहुत सी अशुद्धियाँ हैं। लेखन शैली प्राचीन है।

यह ग्रंथ श्री अवधदास साहब जी, महंत कबीर मठ, रोसड़ा (दरभगा) से प्राप्त किया।

(१८) अपरोक्षानुभूति—ग्रंथकार—श्रीमच्छंकराचार्य। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ—२०। प्र० पृ० प० लगभग—१२। आकार प्रकार—

१४"×७१/२"। भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लेखनकाल—× ।

प्रारंभ—(पतले अक्षरों में) "श्री गणेशायनम श्रीदक्षिणामूर्तये नम ।। स्वप्रकाशश्च हेतुर्य परमात्मा चिदात्म चितस्वरूप अपरोक्षयानुभूत्याख्य. मोहमस्मि परं सुख ।।१।। ईशगुर्वात्मभेदय सकल व्यवहारभू औपाधिक स्वचिन्मात्र सोऽपरोक्षानुभूतिक ।।२।। तदेवमसुसंधाय निर्विघ्ना रवेष्टदेवता अपरोक्षानुभूत्याख्यामाचार्योवितं प्रकाशये ।।३।।

(मोटे अक्षरों में) श्री हरि परमानंदमपदेष्टारमीश्वर व्यापकं सर्वलोकाना कारणं तं नमाम्यहं ।।१।। अपरोक्षानुभूतिर्वैप्रोच्यते ।।"

अंत— (पतले अक्षरों में) "इदानीमुक्तं स्वाभिमतं योगमुपसंहरति राभिरिति किंचित्स्वल्पं पक्वावदग्धा मला रागाद्यो येपा तेपा हठयोगेन योगेन पातञ्जलोक्तेन प्रसिद्धे नाष्टांगयोगेन सयुतेयं वेदातोक्तो योग इति शेषं स्पष्ट ।।४३।। अयमेव केषा योग्य इत्याकाक्षाया सर्वग्रंथार्थमुपसंहरन्नाह परिपक्वमिति येपा मत परिपक्वं मलरागादि रहितमिति यावत् तेपामित्यध्याहार—

(मोटे अक्षरों में) राभिरंगैः समायुक्तो राजयोग उदाहृतः ।। किंचित्पक्वकषायाणा हठयोगेन संयुतः ।।४३।।

परिपक्व मनो येपा केवलो पंचसिद्धिद ।। गुरु दैवत भक्ताना सर्वेपा सुलभो भवेत् ।।४४।। इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचित अपरोक्षानुभूतिः सम्पूर्णा ।।राम राम।।

(पतले अक्षरों में) तेपा जितारिवड्वर्गाणा पुरुप धुरधराणा केवलं पातंजलाभिमत योगनिरपेक्ष. अयं वेदाताभिमत योगसिद्धि द प्रत्यगभिन्नब्रह्मापरोक्षज्ञान द्वारा स्व स्वरूपावस्थान लक्षणमुक्तिप्रदः चकारोऽवधारणे नान्येपापरिपक्वमनसामित्यर्थः ।। ननु परिपक्व मनस्त्वमति दुर्लभमित्याकाक्षायामस्यापिसाधकत्वादतोप्यतरग माधनमाह गुरुदवत भक्तानामिति जवादितिशीघ्रमित्यर्थ. सर्वेषामिति यत्नेन वर्णाश्रमादि निरपेक्ष मानुष्य मात्र गृहीतव्यं ।। अतएव गुरुदैवत भक्ते रतरंगत्वं तथा श्रुतिः यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।। तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाश ते महात्मन इति ।।"

विषय— वेदान्त-दर्शन । 'अपरोक्षानुभूति' की 'ग्रंथराज-प्रदीपिका' टीका-सहित ।

टि०— श्रीशंकराचार्य-विरचित वेदान्त-दर्शन पर यह मूल ग्रंथ टीका-सहित है। ग्रंथ की टीका अच्छी है। मोटे अक्षरों में मूल ग्रंथ है। मूल ग्रंथ बीच में, श्लोकवद्ध है। पतले अक्षरों में ग्रंथ की टीका है।

इस ग्रंथ के टीकाकार श्री विद्यारण्य जी हैं। ग्रंथ और ग्रथकार के सवध मे टीकाकार के निम्नलिखित विचार हैं—"पूर्णो य म परोक्षे ण नित्यात्मज्ञान का सि का अपरोक्षानुभूत्याख्यान ग्रंथराज प्रदीपिका ।।१।। नमस्तस्मै भगवते शंकराचार्य रूपिणे ।। येन वेदात विद्येयमुद्धृता वेद सागरात् ।।२।। यद्ययं शंकरः साक्षाद्वेदाताना भोजभास्करः नो निस्पत्तिर्हि का कथं व्यासादि सूत्रित ।।३।। अत्र

यत्नमत किञ्चित्तद्गुरोरेव मे न हि ॥ अन्मत तु यत्किंचि त ममैव गुरोर्नहि ॥१४॥"
पाथा के अ त में नानी महिमा सम्बद्ध लोक नामक एक पृष्ठ का ६ पद्यों का ग्रथ है। टीकाकार न इसकी भी टीका की है। इसमें तीर्थयात्रा आदि के विषय में लिखा गया है।

यह ग्रथ श्री अवधदास साहबजी महत कबीर मठ, रोसड़ा, (दरभगा) की कृपा से पाया।

[१९] आथर्वणी पुरुष सुबोधिनी—ग्रथकर्त्ता—× । लिपिकर्त्ता—वैष्णव श्री गोमती दास जी अवस्था—प्राचीन, देशी कागज पर, सभी पृष्ठ अलग अलग हैं। पृष्ठ—१५। प्र० पृ० प० लगभग—३ । आकार प्रकार—१३"×६ " । भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सवत् १८७६, कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा गुरुवार ॥

प्रारंभ— ओं श्री राधाकृष्णाभ्या नम ओं अस्य श्री विष्णु परस्तोत्रमत्रस्य श्री नारद ऋषिरनुष्टुप् छद श्री विष्णु परमात्मा देवता अह विज हो० शक्ति ओं ह्री कलक मम सर्व देह रक्षणार्थे जपे विनियोग नारद ऋषिये नम शिरसि अनुष्टुप् छद से नम मुखे श्री विष्णु परमात्मा देवताय नम हृदये अह बीज गहृये सोह शक्ति पान्या ओ ह्रा कीलकं पादाग्रे ओं ह्रा ह्रीं [illegible] हूँ ह्रौं ह्"

अन्त— "अवर्णा मंत्र पव रूप शापा न जानाति विष्णु न जानाति महता न जानाति ब्रह्मा न जानाति रुद्रो न जानाति चन्द्रसूर्यो न जानाति इद्रो न जानाति वरुणो न जानाति दशदिग्पालो गण गंधर्व मुनि किंकरोचति ॥ इत्याथर्वणी पुरुष सुबोधिन्या सत्त्वबोधन्या पचदशा प्रगाठक ॥१५॥

लिखित गौन्देशे कुलानी मध्ये श्री श्री ठाकुर नृसिंह जी समीपे श्री श्री महत राधिका दासजी के स्थानमध्ये गंगा श्री वेतनातटे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे तीथी प्रतिपदाया गदवासर सन् सन् १८ स छ्यासी ७६ लिखित वैस्नव श्री गोमती दासजी परमार्थ वैस्नव प्रेम दास।"

विषय— इस ग्रथ में श्री कृष्ण क जीवन की चर्चा प्रतीत होती है। कृष्ण क जीवन की अनक घटनाओं का वर्णन है। कृष्ण को लक्ष्य में रखकर स्तुति भी की गई है। इसमें कुछ तत्र स भी सबधित विषय प्रतीत होता है।

टि०— इस ग्रथ में ऐसे अक्षर लिखे गये हैं, जिन्हें पढ़ने में कठिनाई मालूम होती है। ग्रथ का विषय और नाम दोनों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। यह ग्रथ, कबीरमठ, रोसड़ा, (दरभगा) के महत से प्राप्त किया।

[२०] गीतगोविन्द—ग्रथकार—जयदेव। लिपिकार—वैष्णव प्रमदास । अवस्था-प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ—१५। प्र पृ० प० लगभग—२८। आकार प्रकार—१०×६। रचनाकाल—×। लिपिकाल—स० १८७१, माद्र, कृष्ण द्वादशी, सोमवार।

प्रारंभ- "ओं श्रीमते भावक्रिम्वादित्याय नमः ॥ मघैर्मेदुरमंवरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैनक्त भीरुरयंत्वमेव तदिमं रावे गृहं प्राप्य । इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंज द्रुमं राना माधवयोर्जयंति यमना कूलेरहः केलयः ॥१॥ वाग्देवता चरित्र चित्रीत चित्र सद्मा पद्मावती चरण चक्रवर्ती ॥ श्री वासुदेव रति केलि कथा समेतमेतं करोति जयदेव कवि. प्रबंधं ॥२॥

यदि हरिस्मरणे सरस मनो यदि विलास कलासु कुतूहलं ॥
मधुर कोमल कांत पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वतीं ॥३॥"

अन्त— "श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेविसुतस्यास्य इदा कवित्वं ॥
पराशरादि प्रीयवर्ज कंठे सुप्रीत पीतांवरमेतदस्तु ॥"

विषय—साहित्य, कृष्ण-विषयक काव्य

टि०— यह ग्रंथ १२ सर्गों और २४ प्रबंधों में समाप्त हुआ है ।
ग्रंथ के अन्त में कवि ने अपना भी परिचय दिया है ।
यह ग्रंथ अवधदास साहब, महंत, कबीरमठ, रोसड़ा (दरभंगा) से प्राप्त किया है ।

(२१) आत्मबोध—ग्रंथकार—श्री स्वामी शंकराचार्य । लिपिकार— × । अवस्था—अच्छी हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ १० । प्र० पृ० प० लगभग–३५ । आकार × । लिपि—नागरी । भाषा—संस्कृत । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

प्रारंभ—(पतले अक्षरों में) "ओं श्री गणेशायनम· श्री गुरवेनम शतमखपूजितपादंशतपथमनसोगोचराकारं विकसितजलरुहनेत्रमुमाश्लाया कमाश्रये शंभुं १
इह भगवान खलु शंकराचार्यः उत्तमाधिकारिणं वेदांतप्रस्थानत्रय निर्णयदवलोकने समर्थाना मंदबुद्धिना अनुग्रहार्थं सर्व वेदांत सिद्धांतसंग्रहं आत्मबोध्याख्यं प्रकरणं निर्दिदर्शयिषु· तं प्रतिजानीते तपोभिरिति कृच्छ्चांद्रायण नित्यनैतिक उपासना अनुष्ठानरूपैस्तपोभिः क्षीणनिपापानिरागद्यंतः करणदोषा येषा ते नित्यनैत्तिकैरेव कुर्वाणे दुरितात्त्वायमाप्नोतीति वचनात् अतएव शांतानाम क्षोभिताशयाना वीतरागिणा इहामुत्रार्थ फलभोगरहितानामुमूक्षूणांसंसारग्रंथि भेदनेकृत प्रयत्नाना-यथोक्त साधन संपन्नना अयमात्मबोधोभिधीयते विधिमुखेनावश्यकतया प्रतिपाद्यत इत्यर्थ · १

(मोटे अक्षरों में) ओं तपोभि क्षीणपापाना शांतना वीतरागिना मुमूक्षूणामपेक्ष्योय यात्मबोधोभिधीयते ॥१॥
बोधोहि साधनेभ्योहि साक्षात्मोक्षैक साधनं पाकस्य वह्निवत्ज्ञान विनामोक्षो न सिध्यति ॥२॥
अविरोधितयाकर्म विद्याविनिवतयेन् विद्याविद्यानिहन्त्येवतेजस्तिमिरसंघवत् ॥३॥

(पतले अक्षरों में) ननु तपोमंत्र कर्मयोगाधने कमाधनेषु सत् मुमोक्ष प्रतिबोध एव किमितिप्राधान्येनोच्यत इत्यत आह ॥ बोधो इति तपोमंत्र कर्मयोगादिसाधनानि परंपरयाक्रमेण ज्ञान द्वारा मोक्षं साधयंति ज्ञानं तु स्वजन्म मात्रादेवा ज्ञानं नि.शेष नाशयित्वामुमुक्षुं स्वराज्येऽभिषेचयति अतोन्यसाधनेभ्यो ज्ञानस्यप्राधान्य मुक्तं

तदेव दृष्टांतेन द्रढयति पाकस्येति यथालोके पाचन क्रियायां काष्ठजलभांडादि साधनेषु सत्स्वपिवह्निविना पाको न सिध्यति तद्वत् ज्ञान विना मोक्षो न सिध्यतीत्यर्थ ॥२॥

अन्त—(पतले अक्षरों में) 'पुनस्तद् ब्रह्म ज्ञानाय श्लोकत्रयेण पृथक् पृथक् निरूपयति यदिति यद्वस्तु भासा अर्कादिभिर्भास्यते ततदभास्यं रवादिभिर्न भास्यते न तत्र सूर्योभाति न चन्द्रतारकमनेमाविद्युता यांति कुतो यामानिस्तमेवभांतमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति इति श्रुते येन सर्वमिदं भूतभौतिक भावरूप जगद्भातितद्ब्रह्मेत्येतदवधारयन् जानीयात् ६१॥ तत्तापत्र शिह्वन् स्वयमेवब्रह्मवहिर्व्याप्य भासयन्नखिलं ब्रह्म प्रकाशते इत्याह स्वयमिति स्वयमंतर्गतमितिस्पष्टार्थ ६२ पुनस्तदेवाह जगद्विलक्षणमितिसर्वं ब्रह्मैव सत्य तथापि जगद् पंचपरयति तदा न गृह्यते इत्याह जगद्विलक्षणेन तत्कार्यत्वेन विचार्य्यतत्त्वज्ञातुं शक्य ब्रह्मणोत्यन्न विद्यते यदितलोन्यद् दृश्यते यत्किंचनान्मृषैव मरुमरीचिका जलवदित्यर्थ ६३ पुनस्तदेव स्फुट निरूपयति दृश्यते ज्ञान चक्षुषा दृश्यते श्रोत्रेण श्रूयते यन्मनसास्मर्यते यच्चवाचा अभिधीयेतत्तत्य ज्ञानात्सर्वं ब्रह्मैव सच्चिदानंदमद्वयं ब्रह्मणोऽन्यत् किंचिन्नास्तीत्यर्थ ॥६४॥

(मोटे अक्षरों में)

भातएव स्थूलमहत्त्वमदीर्घमजमव्ययं अरूप गुणवर्णाख्यं तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत् ६० ॥
यद्भासाभास्यतेर्कादिर्भास्यैर्यत्तुनभास्यते येन सर्वमिदं याति तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत् ६१ ॥
स्वयमंतर्गत व्याप्यभासयन्नखिलं जगत् ब्रह्म प्रकाशतेवह्निप्रतप्तायसपिण्डवत् ६२॥
जगद्विलक्षणं ब्रह्मनब्रह्मणोन्यत्किंचन ब्रह्मान्यद्भातिचेन्मिथ्या यथा मरुमरीचिका ६३
दृश्यते श्रूयतेयद्यद्ब्रह्मणोन्यनकिंचन तत्त्वज्ञानाच्चतद्ब्रह्म सच्चिदानंदमद्वय ६४
सर्वगं सच्चिदात्मानं ज्ञानचक्षु निरीक्षते अज्ञान चक्षुर्नेक्षेत भास्वंतं भानुमंधवत् ६५
श्रवणादिभिरुद्दीप्तो ज्ञानाग्निपरितापित जीवस्वर्वमलान्मुक्त स्वर्णवद् द्योततेस्वयं ६६
हृदाकाशोदितोह्यात्मा बोधमानुस्तमोपहृत् । सर्वव्यापी सर्वधारी येन सर्वं प्रकाशते ६७
दिग्देश कालाधनपेक्ष्य सर्वं ग शीतादिहिन्नित्य सुखनिरंजनं

य स्वात्मतीर्थं भजते विनिष्क्रिय सर्ववित्सर्वगतोमृतो भवेत् ४६

(पतले अक्षरों में) ननु यदि सर्वगा ब्रह्मात्तत्सर्वे किंन पश्यंत इत्याशंक्य चक्षुरादिभिर्नगृह्यत इत्येनया श्रुत्या प्रतिपादयति न चक्षुषा गृह्यते नापिवाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्वस्ततस्तुतं पश्यति निष्कलंध्यायमान इति सर्वगमिति य सतज्ञानचक्षु सर्वगतमपिसच्चिदानंद ब्रह्म पश्यति यस्त्वज्ञानचक्षु स न पश्यति यथा प्रकाशमानमपिभानु अंधो न पश्यति ज्ञानप्रसादेनचक्षुषा विशुद्धसत्व निरंतांविद्य सदा सर्वं ब्रह्मैव पश्यति न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनं हृदा मनीषामनसामि क्लृप्तो मृताम्ते भवंतीति श्रुत्यापि तस्य प्रमाणांतरविषयत्वमपायमर्थ ६५ एवमुक्तरीत्यानुभवपर्यन्त्यापितदामासरहितस्य वासना वशात् किंचिदज्ञानं संभवति तत्परिहाराय पुन स्मरणादि कुर्यादित्याह स्मरणादिति जीव प्रयाणामा एतत्प्रकरणोक्त स्मरणादिभिर्मननादिभिरुद्दीप्त प्रकाशित ज्ञानमयाग्निस्तेन परितापितो मानी शामते इत्यर्थ सर्वमलान्मुक्त

भूता ज्ञानमलानुयुक्त: स्वयमेव सम्यक् प्रकाशते यथाग्निपरितापितः स्वर्ण-औपाधिकं उर्वनादिकं हित्वा स्वरूपेण प्रकाशते तद्वदित्यर्थ ६६ ॥ एवं संशोधितो जीव परमात्मा हृदयाकाशेनुदितः सन् तम अज्ञानमुपसंहरन् भानुरत्पूर्वस्वरूप प्रकाशत इत्याह हृदिति बोधएवमनु सर्वस्याधारभूतत्वात्सर्वव्यापि सर्वधारी च शेषं स्पृष्टं ६७ न न्व रमनोज्ञान प्रतिबंधक दुरितपरिहारार्थ प्रयागादि तीर्थ यशोयोग कर्तव्य इत्याशंक्या आत्मतीर्थस्नातस्य न किंचित्कर्तव्यमित्याह दिग्देशेति यो विनिक्रियः परमहंसः स्वात्मतीर्थं भजते सर्वनित्सर्वज्ञः सर्वत्र परमात्मस्वरूपत्वात् अमृतोयुक्तो भवेत् कथंभूतं स्वात्मतीर्थं दिग्देशकालाद्यन-पेक्षमेव सर्वगंशीतादि द्वंद्व दुःखनिहर्न्तीतिशीतादिहारिष्पसुखं मोक्षानंदप्रायकत्वात् इतरतीर्थेषु तद्विपरीत द्रष्टव्यं तस्मादात्मतीर्थे स्नातस्य न किंचिदवशिष्यत इतिभावः ६८"

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्य श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचितात्मबोध संपूरनम्"

वि०— दर्शन।

टि०—१–यह ग्रंथ अनुसंधेय है। श्री शंकराचार्य के 'आत्मबोध' की बड़ी ही विशद व्याख्या इस टीका में की गई है। टीकाकार ने अपने सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखा है। मूल ग्रंथ मोटे अक्षरों में, बीच में है। व्याख्या पतले अक्षरों में है। लिपिकार के नाम का भी ग्रंथ के प्रारंभ या अन्त में निदश नहीं है। लिपिकार कोई कबीरपंथी साधु प्रतीत होते हैं, यह पोथी के प्रारंभ में 'गुरवेनम.' से स्पष्ट होता है।

२–पोथी की समाप्ति के बाद ३ पृष्ठ का 'तत्त्वबोध' नामक लघुकाय मूल ग्रंथ है। यह भी श्री शंकराचार्य जी का ही है। इसमें मोक्ष-प्राप्ति के साधन का समुल्लेख है। ग्रंथ ध्येय है। अन्त में 'इति श्री तत्त्वसार सदीपनक्रमचिंतनम्' लिखा है।

३–लिपि की शैली प्राचीन और अस्पष्ट है।

यह ग्रंथ कबीर-मठ, तेघड़ा (मुँगेर) से प्राप्त किया।

(२२) श्रीमद्भगवद्भक्तिरत्नावली—ग्रंथकार—परमहंस विष्णुपुरी। लिपिकार–वैष्णव श्री प्रेमदास। अवस्था—अच्छी, प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ–१६। प्र० पृ० पं० लगभग–२०। आकार ×। लिपि–नागरी। रचनाकाल–फाल्गुन शुक्ल, २ द्वितीया, १२५५, शक-सं०, मंगलवार। लिपिकाल–चैत्र, शुक्ल, ६ नवमी स० १८६८ शनिवार।

प्रारंभ— "ॐ श्रीमते भगवान्स्वादित्यायनम.॥ ॐ ऊपक्रामंतु भूतानि पिशाचा सर्वतो दिश। सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभेत। अपसर्पंतुये भूता ॥ जे भूताभूमिसंस्थिता विघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया ॥

ॐ अपवित्रं पवित्रो वा सर्वावस्थागतोपिवा ॥ यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतर शुचिः ॥

ॐ पुंडरीकाक्षाय नमः ॐ ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छंदः। अभिषेके विनियोगः ॥

ॐ भूरादिमहाव्याहृतीनां प्रजापति ऋषि ॥ अग्निर्वायु सूर्यो देवता ॥ गायत्री त्रयष्टुप्छन्दांसि ॥
अथाभिषेक मन्त्र ॥ ॐ ।वष्णु विष्णु वाक् वाक् ॥ प्राण प्राण ॥ चक्षु चक्षु ॥ ।
श्रात्र श्रात्र ॥ नाभी हृदय । कंठ ॥ शिर ॥ शिखा । बाहुभ्या ॥ यशोबल ॥
इति महाकाव्य ॥
ॐ श्राम उपपातकदुरितक्षयार्थ ॥ ब्रह्म प्राप्त्यै प्रातसंध्योपासनमहं करिष्ये
तत्सवितुरिति प्रजापति ऋषि सविता देवता गायत्री छद ॥ अभिषेके विनियोग ॥
ॐ पुनातु । ॐ भू पुनातु ॥ ॐ भुव पुनातु ॥
ॐ स्व पुनातु ॥ ॐ मह पुनातु । ॐ तप पुनातु ॥ ॐ सत्य पुनातु ॥ ॐ भूर्भुव स्व पुनातु ॥
ॐ तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहिधियो यान प्रचोदयात् ॥
ॐ सर्व पुनातु ॥ तत्र उदक ग्रहित्वा ॥ ॐ भूर्भुव स्व रितिभुव प्रक्षिपेत् ॥

अन्त— "एकादशे रुद्रवाक्य भगवत प्रति ॥ तापत्रयेणाभिहितस्य घोरे सतप्यमानस्यभवाधिनीश ॥
पश्यामि नान्यशरण तवाध्रेन्द्वातपत्रदमृताभिवर्षनात ॥६॥
दशम मुचुकुदवाक्य भगवत प्रत ॥ चिरमिह वृजनर्तिस्तप्यमानोनुतापैरवितृषय
षन्मित्रोलब्धशाति कथाचन ॥
शरणदसमुपेतस्त्वत्पदाब्ज परात्मन्न भयमृतमशोक पाहिमापन्नमीश ॥१०॥"

विषय— श्रीमद्भागवत का संक्षेप ॥

टि०— इस प्रकार श्री विष्णुपुरी जी ने ग्रंथ की समाप्ति पर निम्नस्थ शब्दों में अपना अभिप्राय प्रकट किया है।
विष्णुपुरी वाक्य ॥ एव श्री श्रीरमणभवतायत्समुत्तेनिताह याचयेवा सकलनिगम सारनिर्धारणे वा ॥
आत्मप्रज्ञाविभव सदृशैस्तत्र यत्नो मैने ॥ शाक भक्तै रुगति सुगततुष्टि म हित्वमेव ॥११॥
सानूना स्वत एव समतिरिह स्यादेव भक्त्यार्थिना मालोच्य प्रयतश्रमच च निपुणामरिमन्यवेशातुर ॥
ये केचित्परकृत्युपश्रुतिपरास्तानर्थ येमत्कृति मुयोपीक्ष्यवदत्वतय मिहचेत्रावासनारयास्यति ॥१२॥
एष स्यामहमल्प बुद्धि विभवोप्ये कापिकोपिध्रुवम् मध्ये भक्तजनस्य भक्तिरिय मस्यादवनास्पद ॥
किं विद्याप्रपा किमुच्चलकुला किं पौरुष किं गुणा ॥ रतत किं सु दर मादरेण सखिकैर्नापीयतत मधु ॥१३॥
इत्येश बहुयत्नत कृतवता श्री भक्ति रत्नावली सव्यीत्यैवसथया प्रकटितातत्कांत मालामया

यत्र श्रीवरमंत मौक्ति लिखते नूनाधिकं यत् भूतं तत् चंतु सर्वाधियोह्य स्वरचना, लघ्वस्यमे चापलं ।।१४।।"

२—ग्रंथकार ने ग्रन्थ-रचनाकाल और स्थान के संबंध में—"महायवनशर प्राणशशाके गुणते शके फाल्गुणे पक्षस्य द्वितीयाया शुभगन्ने ।।१५।।

वाराणस्यामहेशत्रमक्तिवौहरिमंदिरे ।। भक्ति रत्नावली सिद्धा सहिता कांति-मालया ।।१६।।

इति श्रीमत्पुरुषोत्तमचरणारविंद कृपामकरंदविंदु प्रोन्मीलितविवेकतर मुक्त परमहंसविष्णुपुरी ग्रथीताया श्री भागवतामृताविलव श्री मद्भगवद्भक्तिरत्ना-वल्या भगवतशरण नाम त्रयोदश विरचनं ।।१३।। सपूर्ण ।

"शुभमस्तु मंगलं ।।" लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि ग्रंथकार बनारस के निवासी थे।

३—ग्रंथ की भाषा यत्र-तत्र ठीक नहीं है। व्याकरण की अशुद्धियाँ तो हैं ही साहित्यगत दोष भी हैं। यह ग्रंथ श्रीमद्भागवत के आधार पर लिखा गया है, जैसा कि ग्रंथकार ने स्वयं स्वीकार भी किया है। नारद, शुकदेव, ब्रह्मा, नारायण, व्यास, शुकदेव आदि के परस्पर वार्त्तालाप, प्रश्नोत्तर आदि के रूप में, दार्शनिक चर्चाएँ हैं। ग्रंथ अनुसंधेय है।

४—लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। प्रतीत होता है ग्रंथ में विशेष अशुद्धियाँ लिपिकार के प्रमादवश हैं। ग्रंथ को समाप्त करते हुए लिपिकार ने लिखा है—"लिखितं वैष्णव श्री प्रेमदास ।। शेई पठित ।। सम्मत अठारस ।।१८।। अठासठ ।६८। चैत्रमासे शुक्ल पक्षे रामनवम्या शनीवासरे ।। श्रीमते भगवन्निम्बाकार्य नमोनम श्री राधाकृष्णाभ्या नम. ।।"

५—यह ग्रंथ श्री कबीर मठ, तेघड़ा (मुंगेर) के साधुजी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[२३] व्याकरण और छंद – ग्रंथकार— × । अवस्था—अच्छी, देशी कागज । पृष्ठ—१० । प्र० पृ० प० लगभग २५ । लिपि—नागरी । रचनाकाल— × । लिपिकाल– × ।

प्रारंभ— 'श्रीमते रामानुजाय नम वंदे ब्रह्मा शिवं वंदे वंदे देवी सरस्वती लक्ष्मी वंदे हरिवादे वन्दे सिद्धार्थ देवता

सूत्रसप्तमतंत्रस्म दत्तौ साक्षात्सरस्वती अनुभूतिस्वरूपाय तस्मै श्री गुरवेनम २

अल्पाक्षर मसंदिग्धं सारवद्विश्वतोमुख अस्तोभ्यमनवद्य च सूत्रं सूत्रविदो विदु ३

सज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च प्रतिषेधो विकारश्च पड्विधं सूत्र लक्षणं ४

अतिदेशोनुवादश्च विभाषाच निपातन एतच्चतुष्टयं शिक्षा दशधाकैश्चिदुच्यते ५"

अन्त— "आर्योत्तरार्द्ध तुल्यं प्रथमार्द्ध मपि प्रयुक्तचेत् कामिनि तामुपगीति प्रकाशयते महाकवय ५ हे अमृतवाणि अमृद्वाणी यस्या सा अमृतवाणी तस्या सबोधने हे अमृतवाणि तदानीं तस्मिन्काले छंदोविद: छंदशास्त्र

वेत्तर तागीति भाषंते तदानी कदा यत्र यस्मिन्काले आर्यापूर्वार्द्ध समरूपेंच तदर्द्ध च पूर्वार्द्ध आर्याया

पूर्वार्द्ध त्रिंशत्मात्रक SSS~IISISIIIIISIISIIS तेन सम तुल्य द्वितीयमपि नुत्तरार्द्ध यपिचेत्त प्रयुक्त भवति

SSISSSSSIIISISSS ४

हे कामिनि कामोस्या अस्या वास्तीति कामिनी तत्सबोधने हे कामिनि महाकवस्ता मुपगीति प्रकाशयते कथयति ताका यत्र चेत् यदि अर्धातरार्द्ध तुल्य आर्याया। यदुत्त रार्द्ध सप्तविंशत्मात्रक SIISIISSISISSISIIS तत्तुल्य प्रथमामपि प्रयुक्त भवति SSISISSIISIISISSS ५।

विषय—१—इस ग्रंथ में श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य विरचित 'सारस्वत-व्याकरण' के सूत्रों की अपूर्ण सूची और अपूर्ण छन्द संग्रह है। दोनों ग्रंथों के अपूर्ण होने के कारण ग्रंथ और लिपिकार के नाम नहीं हैं। छन्द ग्रंथ सटीक है।

२—पोथी के अन्त में १९ वें पृष्ठ पर 'भवत्' शब्द के रूपों का विवरण दिया हुआ है जो ग्रंथ से ही सम्बद्ध है। संक्षिप्त धातु पाठ भी है।

३—ग्रंथ की लिपि स्पष्ट नहीं है और प्राचीन है। ग्रंथ सोनपुर के कबीर-मठ से प्राप्त हुआ है।

[२४] गजेन्द्रस्तोत्रम्—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं —६। प्र० पृ० पं० लगभग—२६। लिपि —नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"श्रीमते रामानुजायनम ॥ माया ही देव देवस्य विष्णोरमिततेजस ॥ श्रुत्वा सभूतय सर्वा गदतस्तव सुव्रत ॥१॥

यदि प्रसन्नो भगवान मनु प्राप्तास्मि वा यदि ॥ तदह श्रोतुमिच्छामिनृणां दु स्वप्न नाशन ॥२॥

स्वप्ना हि सु महाभाग दृश्यते ये शुभाशुभ ॥ फलानि तत्प्रयच्छति तद्गुणान्येव मागध ॥३॥

तादक् पुण्य पवित्र च नृणामतिशुभप्रद ॥ दुस्वप्नोश्च शम याति तन्मे विस्तरतो वद ॥४॥

शौनक उवाच ॥ इदमेव महाभाग पृष्ठवास्ते पितामह ॥ भीष्म धर्मभृता श्रेष्ठ धर्मपुत्रो युधिष्ठिर ॥५॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ जित ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ॥६॥

आद्य पुरुषमीशान पुरुहूत पुरातन ॥ ऋतमेकाक्षर ब्रह्म व्यक्ताव्यक्त सनातन ॥७॥

अन्त—"य इद शृणुयान्नित्य प्रातरुत्थाय मानव ॥ प्राप्नुयात्परम सिद्धिं दु स्वप्न तस्य नश्यति ॥४०॥

गजेन्द्रमोचण पुण्य सर्वपापप्रणाशन ॥ श्रावयेत्प्रातरुत्थाय दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥४१॥

श्रुतेन हि कुरु श्रेष्ठ स्मृतेन कथितेन च ॥ गजेन्द्र मोचणचैव सद्य पापात्प्रमुच्यते

॥४२॥ मया ते कथित राजन् पवित्रं पापनाशनं ॥ कीर्त यश्च महाबाहो गजेंद्रस्य महात्मन ॥४३॥
चरितं पुण्य कर्माणि पुष्करें वद्दते यश ॥ प्रीतिमा—"

विषय—भक्ति (स्तोत्र)-साहित्य ।

टिप्पणी—१—यह पुस्तिका महाभारत का ही एक अंश प्रतीत होती है। इसके प्रारम्भ या अन्त में ग्रंथकार, लिपिकार और समय आदि का निर्देश नहीं है।

२—ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। ग्रंथ मोनपुर के कबीर-मठ के महंत जी की कृपा से प्राप्त हुआ है।

[२५] भागवत-तत्त्व-सार-सदीपन—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ—१६। प्र० पृ० पं० लगभग—२६। भाषा—संस्कृत। लिपि नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"हे मुने पुरातीत भवेपूर्वस्मिन्जन्मनि अहंवेदवादिना कस्याश्चन दास्याः पुत्र इतिशेष पुत्रोभव नोहं प्राग्रपवर्षाकाले निर्विवीक्षता योगिना भगवत्पादारविंदशरण योगयेषामस्तीतियोगिन तेषाप्रपत्तियोगिना शुश्रूषणे स्वामिनी निस्नापित बालक एवतैद्विजैरनुमोदित तेषाशरणा-गतयोगिना उच्छिष्टलेपार्भमकृत्स्नं भुंजेस्यत्तस्मात् अपातकिल्बिष अस्मिन्कल्पेब्रह्मपुत्रोस्मीत्यर्थः श्री नारद अहंपूर्वजन्मनिप्रपन्न प्रसाद ।"

अन्त—"मार्कंडेय. सीसाक्षात्कार भगवतंवरदं वरमप्रार्थ्यपरमपद मस्ययाचितो भूत्वातत्पादारविंदशरणं गत्वाप्रपत्ति रेवपरमपदं ददातीति प्रपत्यनुसंधान मेवचकारतस्मात् प्रपन्नाना भगवंतपरम्पद तयाचितव्यंप्रपतिरेवपरमपद ददातीतिप्रपत्यनुसंधानमेवकर्तव्यं अस्मिन् प्रबंधे यत्र यत्र देवादय. ऋषय राजान. भगवतं शरणवदते तत्रतत्रते द्वयमंत्रोच्चारणंजग्मुरिति वेदितव्य तेंदच्चारणजग्मुरितिवेदिव्यं तेदच्चारण मंत्रं सी वेदव्यास रहस्यमत्रस्य प्राकृतनोचितमितिशरण पपाविंतिरलोकरूपेण कृतवान् तर्हिचेत् प्रह्लादादयः विभीषणादय दुर्वासादयः मार्कंडेयनारदादि ।"

विषय—भक्ति-काव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ श्रीमद्भागवत महापुराण की टीका है। ग्रंथ के खण्डित होने के कारण (प्रारम्भ और अन्त के पृष्ठ फटे होने से) ग्रंथकार, लिपिकार तथा रचनाकाल, टीकाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चल पाता है। टीका की भाषा और शैली प्राचीन एवं अपरिष्कृत है। ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और साफ है। किन्तु अक्षरों से लिपि की प्राचीनता स्पष्ट प्रकट होती है। यद्यपि काल निर्देश का अभाव है, तथापि पोथी लगभग एक सौ वर्ष की प्राचीन प्रतीत होती है। यह पोथी श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ, छपरा से प्राप्त हुई है।

[०६] रति शास्त्र और स्तोत्र—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं०—३७। प्र पृ० पं० लगभग—१२। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्रीगणपतिर्जयति ॥ यस्तस्याग्रपुनाकाम्वनि ॥ यस्य यमागराणामिति ॥ चतस्य कृष्णधनूर्लाभात। ऊँ नमो भगवते कूष्माण्डिनीत ॥ महादेव नमस्कुर्वति ॥ एवमनेन मंत्रपाठास्ति तस्याचरस्यसप्तवारजपेत् ॥ तत गुदमानस सप्तवारत्रयमेव निपातयेत् ॥ तत शुभशुभम् यात्रात्र कार्या विचारणा। तस्यपुत्र निपतति य श्रद्धासमर्पिता अक्षियुक्तो भवति तथाहि ॥१११॥

१० पद पदचैव पातत शोभनस्तदा ॥ शुभ तु दरयत तत्र सर्वांगेषु चिंतित ॥ इचार्थलाभावा व्यवहार समागमे ॥ शोभनचैव वक्तव्य होराज्ञानस्यचितके ॥११२॥ पद प० द्विक चैव ॥

अन्त—"मुक्त चन्द्रकांतनमहन्तसै शिरोरुहै ॥
पादाभ्यापयणभ्यारजेरस्तनयीवसा ॥१५॥
तद्वक्त्र यदिमुदिताशशिकपानचेत् स्मितका सुधा
तच्चनु यदिहा रेन कृपत्तवैस्तारचेद्गिरोदिव मधु ॥
धिक्‌ दपधनुष चौर्यादवतडिवाक्यम् मदे ॥
यस्तस्यपुनरुक्त वस्तविमुक्त सर्गक्रमावेधस ॥१६॥
औरम्यमृगलाञ्छनयादसवेदिन्दीवरवक्त्र ॥ ता
माधुर्यवादवि मेतरलनार्कदर्पणापायदि ॥
रम्भायां यदिविप्रनीपगमनप्रामोपमानतदा।
नदक्त्र तदीवल्लमदपरस्तदग्र स्तम्भयुग ॥१७॥
यतोयतोगाद्दपयातिकचुकुम्भतस्तत स्वर्णमरीचवीचय ॥
यता यताम्यातेपतति दृष्य स्तदस्त स्यामसरोजवृन्दय ॥१८॥
कृतयानेर्तव मायताम मध्यमुजतं कुचयो ॥
कदायतंनयनयामम जीवितमतदायाति ॥१६॥
काम्याजमु दीता विनाननाङ्क तेन याम्यता ॥
उपकन्दिना विधात्रा बाहु कामस्य विपदम्या ॥२०॥
वेदीं विटवय सत्ममुत्रनालीमयाकरोति गुणमैदवमास्यमस्या ॥
बाहु मृणालनमतिकाधियमाश्रयतपु सानुपु खवतिकामशरात्प्रकाच ॥२१॥
तदानन्गम्यविभार्तविभ्रमविनेपनामाद्मुत स्फुरद्भ्रु व ॥
दरस्फुरत्कांचनकतकीन्लामुन्नानसर्दनकीरमर्दति ॥२२॥
प्र पल्लवधनुर ।

विषय—काव्य।

टिप्पणी–१–यह ग्रन्थ संस्कृत-साहित्य के नायिका-भेद से सर्वाधित प्रतीत होता है। खण्डित तथा अन्त के पृष्ठ के नहीं होने के कारण ग्रंथकार और लिपिकार के नाम आदि का पता नहीं चलता है। ग्रन्थ के बीच में भी कहीं ग्रन्थकार ने अपने विषय में उल्लेख नहीं किया है।

२—ग्रंथ सुपठ्य है। इसमें नारी के विभिन्न अंगों का बड़ा ही सुन्दर और साहित्यिक वर्णन किया गया है। जैसे—पृष्ठ ३३ में—

"अथरोमावली ।

गंभीरनाभिद्रुमसनिधाने रराज नीला नवरोमराजी ॥
मुखेंदुभीतस्तनचक्रवाकद्वद्वोज्झिताशैवलमञ्जरीव ॥१६॥
लावण्यामृतसंपूर्णानाभिकूपात्प्रवर्तिता ।
रेजे कुल्येव रोमाली सेक्तुं यौवनकाननं ॥७।

अथनाभि. ॥

मन्ये समाप्त लावण्य रसगर्भेनमृगीदृशा ॥
अपूरयन्वेगवतो नाभिरंध्र चतुर्मुखे ॥८॥
कुचकुंभौ समालव्य तरती कांतिका निम्नगा ॥
प्रमादतस्ततोभ्रष्टादृष्टिर्नाभौ निमज्जति ॥६॥"

एक स्थान पर और भी देखिए कि कवि ने कैसा वर्णन किया है—

"अथ स्त्रीसेवाप्रकारः ॥

सेवनं योषिता कुर्याद्बुधोबुद्ध्या यथाक्रम ।
बालरूढातियोग्यानामृतरागविभावनात् ॥१॥
बालेतिगीयतेनाम यावद्वर्षाणिषोडश ॥
तस्मात्परंचतरुणीयावतस्त्रिंशतिर्भवेत् ॥२॥
तदूर्ध्वंनतिरूढास्याद्यावत्पंचाशत भवेत् ।
वृद्धा तत्परतो ज्ञेया सुरतोत्सववंचिता ॥३॥
निदाघशरदोर्बालावथ्यापर्यंकणो भवेत् ॥
हेमते शिशिरे योग्या प्रौढा वर्षावसंतयो· ॥४॥
नित्यं वा सेव्यमानापि बालावर्द्धयतेबलं ॥
वय नयति योग्या स्त्री प्रौढा जनयते जरा ॥५॥"

पूरे ग्रंथ में नारी-सम्बन्धित कामशास्त्र की चर्चा की गई है। प्रतीत होता है, यह रतिशास्त्रविषयक कोई रचना है। इसमें रघुवंश कुमारसंभव तथा शिशुपालवध आदि के भी श्लोक उद्धृत हैं।

३—ग्रंथ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है। यह ग्रंथ प्रो० श्री भागवत प्रसाद जी, एम्० काम०, गया कालेज, गया से प्राप्त हुआ।

[२७] महाभारत और भागवत के मिश्रित खंड—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×।
अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—८५। प्र० पृ० पं०
लगभग—१२। भाषा-संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×।
लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—'पुरा यदाह भगवान्विष्णुरातापशस्त्रैत
सौणाणामासिमामिना नावसाते समक ॥२७॥
तथा नामानि कर्माणि सयुक्तानामधीश्वरे ॥
ब्रूहिन श्रद्धधानाना मनुमूर्धरिमनो हर ॥२८॥
सूत उवाच ॥ अनाद्य विद्यया विष्णोरात्मन सर्वदेहिना ॥
निर्मिता लोकपु परिवर्तते ॥२६॥
एक एवहि लोकाना सूर्य्य आत्माहृन्हरि ॥
सर्ववेदक्रियामूल ऋषिभिर्बहुधादित ॥३०॥
कालो देश क्रिया कर्ता कारण कार्यस्यागम ॥
द्रव्य फलमिति ब्रह्म तवचोक्तो जुषा हरि ॥३१॥'

अन्त—'ताबाप्यमाणा पतिभि पितृभिभ्रातृबधुभि ॥
गोविंदापहृतात्माना न न्यवर्त्तत मोहिता ॥
अतर्गृहगता काश्चिद्गोप्योलब्धाविनिर्गमा ॥
कृष्णं तद्भावनायुक्तादध्युर्मीलितलोचना ॥६॥
दु सहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुनाशुभा ॥
ध्यानप्राप्ता युताश्लेष निर्वृ त्याक्षीणमगला ॥१०॥
तमेव परमात्मान जारबुद्ध्यापिसगता ॥
जहुर्गुणमय देह सद्य प्राक्षीण बधना ॥११॥
राजोवाच ॥ कृष्णं विदु पर कान्त नतु ब्रह्मतया मुन ॥
गुणप्रवाहा परमस्तासा गुणधिया कथ ॥
श्री शुक उवाच ॥ उक्त पुरस्तादेतत्ते चय सिद्धि यथागत ॥
द्विषन्नपि हृषीकेश किमुताप्ताञ्जप्रिया ॥१३॥
नृणानि ने यसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ॥
अव्ययस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मन ॥१६॥'

विषय—भक्ति काव्य।

टिप्पणी—इस ग्रंथ में अनेक छोटे-छोटे उपग्रंथों का संग्रह है। उपग्रंथ के प्रारम्भ और अन्त के अंश खण्डित होने के कारण इनके नाम का पता नहीं चलता। इसी प्रकार ग्रंथकार और लिपिकार के नाम का भी संकेत नहीं मिलता है।

पूरे ग्रंथ में निम्नलिखित उपग्रंथ हैं—(इनके पृष्ठ भी अलग-अलग हैं, किन्तु नये क्रम से पृष्ठ दे दिये गये हैं।)

२८—स्कन्दपुराण नवग्रहस्तोत्रम्	पृष्ठ ५८ से ५६ पृष्ठ तक।
२६—भागवतमहापुराण चतुश्लोकिभागवतम्	पृष्ठ ५६ से ६ पृष्ठ तक।
३०—निवाश्राचार्योक्त चतुर्व्यूहस्तोत्रम्	पृष्ठ ६१ से ६४ पृष्ठ तक।
३१—मुद्रार्नाविवेक	पृष्ठ ६४ में।
३२—स्तोत्रपंचकम्-निम्बार्कमंगलाष्टकम्-व्यासदेवाचार्येण राधस्वरूपा	पृष्ठ ६४ से ६६ पृष्ठ तक।
३३—नदमाकथनम्	पृष्ठ ६७ से ६८ पृष्ठ तक।
३४—निम्बार्कनिग्रमाणवर्द्धनि—(क्र० सं० १ का शेष)	पृष्ठ ६६ से ७१ पृष्ठ तक।
३५—विष्णुसहस्रनाम	पृष्ठ ७२ में।
३६—भागवत महापुराण द्वादशस्कंध त्रयोदशाध्याय	पृष्ठ ७३ से ७५ पृष्ठ तक।
३७—भागवतमहापुराण दशमस्कंध रासक्रीडावर्णनम्	७५ पृष्ठ से ७६ पृष्ठ तक।

(इनमें लिखा है—संवत् १८७१ ॥ शुभमस्तु ॥)

इस ग्रंथ की जिल्द में पृष्ठ इधर उधर हो गये हैं। ग्रंथ ५ ३७ के अन्त में निर्दिष्ट संवत् लिपिकाल का है। लिपि स्वच्छ, किन्तु प्राचीन है। लिपिकाल १६ वीं शताब्दी है। ग्रंथ अनुपेय है।

यह ग्रंथ श्री कन्हैनाथ जी खारनिया (गया) के सौजन्य से प्राप्त किया। ग्रंथ बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् के संग्रहालय में सुरक्षित है।

[७८] रत्नमालिका—ग्रंथकार—श्री बंदाल भावनाचार्य। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ सं—६४। प्र० पृ० पंक्ति लगभग—२८। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—मार्गशीर्ष, कृष्ण सप्तमी सं० १८०७ वि०।

प्रारंभ—"यत्पादारविन्दैकवांछया श्री सनत्कुमार कात्यायनादारविंद कस्य समस्तकस्य भक्तसंदराय न विद्महेत्यत्र एव प्रकारेण भागवतेषु शरणागतमुत्तमेषु भगवान् श्री कृष्ण एकवाक्येन शरणागतानां भवति तथापि शरणागतानां क्रियां यच्चित विशेष धर्मशरणागतस्य कृतान्य कनराय इति श्रीमद्गुरुरुप पदीता तव वैष्णव सन्त तमेव प्रयत्नैर्निर्दिष्टा परमार्थिनः ६१ शाखार्थ विशेष भवती नद्दिद्दर्शिते निवार्य भागवता परापितमस्तिनाराशरस्य कमन की शरणागति धर्मार्पण पूर्वाक्रमपुण्येनैवकादय भगवनारायण प्रसन्न पनित्व मार्गाणा रंचित भर्गार विप्रभगता इतुकृत्य शरणागत स्वर द्वारी ग्रन्थो पुरा हारी महानिर्व पुत्र मन्त्र ग्रंथेषु धरवादय भगवान् रत्न प्रत्य परमार्थ सम्पुटान् सूचिते।

अन्त—"गृहस्थसंन्यामलक्षणाच रहस्यत्रयार्थचज्ञान भक्तिवैराग्याणिच श्री वैष्णवपादरजो वैभवंच श्री पादतीर्थ भवंचश्रीवैष्णवाचाराश्च प्रपन्ना-चारांश्च एकांतिनामाचाराश्च परमैकांतिनामाचाराश्च अन्याश्रमस्य स्पंच अवधूताश्रमस्य स्पंच विशदीकृत शोधनेकृतेमति प्रकाशयति श्रीमद्रामानुज मुनिचरणारविंदध्यानाल्लब्धज्ञानिन श्रीकदाल भावनाचार्याभिधानोऽहं एता शरणागतरत्नमालिका श्रीमहाभागवत पुराणे आलोड्य श्रीवेद व्यासमुनिना यथा कृष्ण तथैव कृतवानस्मि एषा शरणागतरत्नमालिका श्रीवैस्नवाना प्रपन्नाना अनुदिनमनुसंधेया अस्या अनुसंधानमात्रेण अस्तु इत्युक्तपरमार्थिकशरणागतनिष्ठा" भूत्वा भगवत दिव्यश्रीपादार विंदानदंलब्धा देहांते परमपदं प्राप्नोति ‥‥२ श्रीनिवासाघ्रिसद्धक्तं श्रीरंगगुरुमाश्रये १ श्री रामानुजाचार्य दिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्झता दिगंतव्यापिनी भूयात्माहिलोकहितैषिणी २ कावेरीवर्द्ध ताकालेवर्षतु वासव श्रीरंगनाथोजयतु श्रीरंग श्रीश्चवर्द्धता ३ श्रीमन् श्रीरंग श्रीयमनुपद्रु वामनुदिनसंवर्द्ध ४ अज्ञ सर्वज्ञहेरनिसक्तिमर्वशक्तिन्कारुणिक ४ सापराधत्वस्परतंत्रंस्वतंत्रं परिपाहि श्रीशैलपूर्णागुणवदुग्धसिंधु सुधाकराय ५ सुधाकरात्माश्रयत्येपनारायण देशिकार्यंय वदेत्यद्वेंकट देशिकेंद्रं श्रीमद्वादिभयंकरगुरवेनम ६ श्रीमतेरामानुजायनमः ।"

विषय—भक्ति-काव्य । वैष्णवमत-सम्बन्धी सैद्धान्तिक विवेचन ।

टिप्पणी—१—यह ग्रंथ किसी वैष्णव मत के सिद्धान्त-सम्बन्धी ग्रन्थ की टीका है । इसमें यत्र-तत्र अन्य दार्शनिक तथा श्रीमद्भागवत-सम्बन्धी प्रमाण दिये गये हैं । ग्रन्थ अनुसंधेय है ।

२—ग्रंथ में ग्रंथकार का नाम नहीं है, किंतु अन्त के 'श्रीकंदालभावनाचार्य्याभिधानोऽहं एता' आदि वाक्य से प्रतीत होता है कि कोई कदाल-भावनाचार्य्य नामक वैष्णव ने भागवत पुराण के आधार पर लिखित ग्रन्थ की 'रत्नमालिका' नाम की टीका की है । टीका की शैली प्राचीन तथा असम्बद्ध है ।

३—ग्रन्थ के लिपिकार ने अपने नाम का उल्लेख नहीं किया है । ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट तथा प्राचीन है । लिपि-शैली मध्यकालीन मालूम होती है । यह ग्रंथ श्री अवधेन्द्रदेव नारायण, टहियावाँ (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[२६] नैषध-चरित-टीका—ग्रंथकार—श्री हर्षकवि । टीकाकार—श्री पं० नारायणजी । लिपिकार – × । अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-सं०—१२८ । प्र० पृ० पं० लगभग—२२ । रचनाकाल—× । टीकाकाल—× । लिपिकाल—× । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।

प्रारम्भ— 'महेति ॥ नाम प्रसिद्धो साधव स्वनामना दद्ते कथयति। इदृशी महाजना नामाचारपरम्परा यत। अत कारणात् तत्स्वनाम अभिधातु वक्तु नाहमिहेनच्छामि। कुल कथित नाम न कथनीयमित्यर्थ। अत्र हेतु किल यस्मा ज्जन आचारमुच पुरुष पुनर्विगापयति निंदति। अतो न कथ्यत इत्यर्थ। आत्मनाम गुरोर्नाम नामापि कृपणस्यच। आयु कामी न गृह्णीयाज्ज्येष्ठाप यकलत्रयोरिति सदाचारामृत। आददते आहा दो नाम्यविहरणे इति तद्॥१३॥ त्रद इति अयमलाऽद पूर्वोक्तवचनमालम्याकरवानुष्णीवभूव। किमुज शारदो निपुण हियाप्रदावाऽनवाहता शत्रवसेवामपकारक। क इव शारद शारत्मवन्धी शिखीव मयूरहता। यथाहीना सर्पाणा ताप कराणि एष भूतामयूर आपि रन इरवा शारदि मूढी भवनि। अगानतरच।'

अन्त— 'मदन्येति। ममन्य यत्मनत्व यतिरिक्तापवरायानक्तृ कनान प्रति नहिस्यपितुर्नियोगेनत्यादि कपनार्दातर्क एषा तावत् कपनात्वनीयते दिवे दिवे चेत्तहित्व निशापि रात्रेपि सोमाच द्रादितरोय कात प्रियस्तस्य शका अस्यवेदस्य अत्रे सरपुरावर्ति कुन्वेदस्यानेसर आदौ ओंकारो भवति रात्रे श्चद्राद य काता न तथा नलातिरिक्त ममेत्यर्थ कातृ कनानवा अग्रेमर पुरोग्रतोग्रेपुसरैरिति अजायदतमितिपूर्वनिपात इत्यास्मशब्दस्य परनिपातकरणा सप्तम्येकवचनन ददत्वार्थे यूथ तदमवरमित्यादय प्रयोगाश्चाप्रत सरति अग्रेसरेति समर्थनाय॥ सरोजिनीनि हे हस सरोजिन्या कमलिन्या मानसराग अत करणानुराग स्तस्य वृत्ते मद्भावस्यस्थिते अनर्केण मूर्धाद येन सह सपर्क सबध अतर्कयित्वा अविचार्य तथेयं ममान्येननलव्यक्तिरिक्तेन पाणिग्रह परिणयस्त।

विषय—संस्कृत काव्य।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्रसिद्ध 'नैषध चरित' काव्य की टीका के रूप में लिखा गया है। टीकाकार ने सर्गों के अन्त में अपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है— इतिश्री वेदरकरापनामधीमत्परसिंहपंडितात्मजनारायण इत नैषधीयप्रकाशे तृतीय सर्ग। शुभमस्तु॥ टीका का 'नैषधीय प्रकाश' नाम है। टीका अच्छी है। इसमें व्याकरण की टिप्पणियाँ भी यथास्थान दी गई हैं। टीका की शैली प्राचीन है। ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। ग्रंथ खंडित है। प्रारम्भ के पृष्ठ नष्ट होने के कारण प्रारम्भ की पंक्तियाँ पृष्ठ-सं० ४ से दी गई हैं। सभी सर्गों की पृष्ठ-संख्या पृथक् पृथक् दी गई है। इसमें १, ४,

६, ७, ६, १०, ११, १६, १७, १८, १६ और २० वाँ सर्ग नहीं है। जो सर्ग हैं, उनके भी पृष्ठ बीच-बीच में फटे हैं और कुछ तो बिल्कुल नहीं हैं—दूसरे सर्ग में केवल पाँच ही पृष्ठ हैं। पूरे पृष्ठ मिलने पर इस ग्रन्थ की एक अच्छी टीका का उद्धार हो सकता है। यह ग्रंथ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[३०] रामकृष्णकाव्यम्—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-स०—४०। प्र० पृ० ५० लगभग—२०। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री रामतो मध्यमतोदिवेनवीरोगुणवग्यवतीवगदा· वारावतीवग्गवर्ग-निषेधी नचेदितो म यमतामराश्री·=॥५॥ (मूल) अथमायापन्नस्य समग्न रथातु न शक्नोतीति गद्यानुसंधानेन मायातिरस्काराद्युक्त तन्त्रात्मजाने महानामन श्रीराम नेत्रारातुविधाप्रामी तत्प्राप्तिकालरुवज्ञान निराशादति विषमाया रथेन्द्रजायाह श्री रामतुनिवा इत्यर्थ धाम्युष्मा-नृपीर· येनानिश श्रीरामतोमध्यमनो श्रीरामतो निमित्तभूताअर्ध्यं मध्ये अवमी समानं प्रपंचारगं अमोदिनाशितं न एव धीर इत्यर्थ । किं भूता श्रीरामतः वग्यवतीचरान् वर्यनेतु समर्थम्। वरयंरूपं तद्वतीजानकी तस्या वरान्। (टीका)"

अन्त—"सभवरयभवंचयेकहेतोम्मितसन्तेगविधारयतोस्वहार्थम्॥ रिपुराध.. प्रकृतिप्रत्यययोरिवानुबन्ध ॥ अथदीपितया ।"

विषय—काव्य। जीवन-चरित्र।

टिप्पणी–१–यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। मूल ग्रंथ श्री रामकृष्ण-काव्य है और साथ में ग्रंथ की टीका भी है। राम और कृष्ण के जीवन पर मुक्तक रचना की गई है। संस्कृत-साहित्य में इस नाम की तथा इस प्रकार की किसी अन्य रचना का पता नहीं है। ग्रंथ विवेच्य और अनुसंधेय है।

२–ग्रंथ की लिपि अत्यन्त अस्पष्ट और प्राचीन है। खंडित होने के कारण ग्रंथकार, टीकाकार तथा लिपिकार के न तो नाम का ही पता चलता है और न रचनाकाल या लिपिकाल का ही। ऐसा प्रतीत होता है कि यह ग्रंथ अवश्य १७ वीं–१८ वीं शताब्दी में लिखा गया है। यह ग्रंथ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त किया।

[३१] सिद्धान्तचन्द्रिका—ग्रथकार—श्री रामाश्रमाचार्य। लिपिकार—गुरुप्रसाद दीक्षित। अवस्था—अच्छी, प्राचीन दशी कागज। पृष्ठ स०—१६। प्र पृ०५० लगभग—२२। भाषा—सस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—वैशाख, वदी पचमी स०१६२१, मंगलवार।

प्रारभ—'श्री गणेशायनम कृत्कतरि वक्ष्यमाण प्रत्यय कृतसज्ञक स च कर्तरि तृगुणो धातो यक्ता कृत वसादे कृ इट् भविता कुट् कौन्त्ये कुन्लि गोपायिता गापिता गोप्ता सहिता सोऽ। एपिता एढा युधोरनाकौ याचक पाचक भावक दायक घातक जायत अनयातवा जनक जनिवध्योर्न वृद्धि धग्क मातस्यसेगेनवृद्धि दरिद्रायक कोन्क शमक नियामक।

अन्त—"भावनाद्यार्थप्रत्ययातेव्यर्थेकृभ्वोस्त्वाणमौ नानाकत्वानानाकृत्य गत नाना करवा नानाकार विनाकत्य विनाकत्वा विनाकार नानाभूय्नानाभूत्वा नानाभावन् एकधाकरयएकधाकृत्वा एकधाकार अनकद्रव्यमेकभूत्वा एकधा भूयएकधाभूत्वा एकधाभाव प्रत्यय प्रहयोर्कहिसारकृत्वा तुष्णीं न देभुव त्कागामो तुष्णींभूयगत तुष्णींभूत्वातुष्णीभाव अ वकरात्वेभुव त्स्वाणमो अनुकूलागम्ये अ वरभूयास्ते अ वरभूत्वा अ वरभाव अन्नमत पार त पृष्ठतोवानुकूलोभूत्वास्ते इत्यर्थ अनुकूल्ये किं अ वरभूत्वाति पृष्ठतोभूय्वयर्थ वर्णात्कार अकार इकार वकार रादिफोवारेफ रकार लाकाद्वेपत्यसिद्धिर्यथामतिरा?।

इति श्रीरामाश्रमाचार्यविरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिकायामुत्तरार्द्ध समाप्त शुभभूयात्॥ श्री शिवाय नम श्री सीतापतयेनम।

विषय—चान्द्रव्याकरण।

टिप्पणी—यह ग्रथ प्रसिद्ध सस्कृत-व्याकरण ग्रथ है। अन्त में लिखा है—'य पोथी शहर बनारस में दिवाकर छापाखाने में साढीन मोहल्ले भदैनी काली महल क पास शिवचरण के इहाँ चद्रिकातत्तातसहित छपावाकल गुरुप्रसाद दीक्षित व छापनवाले मातादीन य पोथी जिसको लेना होइ सा चादनीचौक मेकु अगली के फाटक के पछिम तरफ रामचरन के दुकान पर मिलेगी श्रीसम्वत् १६२१ मिति वैशाख वदी पचमी वार मगरवार तृतीय प्रहरे समाप्तम्।" प्रतीत होता है, ग्रथ का लीथो टाइप किया गया है, किन्तु लिपिकार ने 'व' के लिए (ब) 'ब' के नीचे बिन्दु देकर और ब के लिए 'व का प्रयोग किया है। ग्रथ में पूर्णविराम अर्धविराम आदि चिह्न उपेक्षित हैं।

यह ग्रन्थ सोरामा के शकरवार टोला-निवासी पं० श्री केशवप्रसाद शर्मा जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[३२] सिद्धान्तचन्द्रिका—(सुबोधिनी-सहित)-ग्रन्थकार—श्रीरामाश्रमाचार्य। टीकाकार—श्री सदानन्द। लिपिकार—×। अवस्था अच्छी है, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—१२१। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। भाषा-संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—वैशाख शुक्ल तृतीया, सं० १६३५, रविवार।

प्रारंभ—"ओं श्रीगुरवे नम. ओं नमस्कृत्य महेशान मतं बुद्धापतंजले·
वाणीप्रणीत सूत्राणां कूर्वे सिद्धान्तचन्द्रिका १ अइउऋलृसमाना अनेन क्रमेणैतवर्णा ज्ञेया ते च समानसंज्ञा स्यु· ॥२॥

नैतेपुनूत्रेपुमधिरनुसंधेयोऽविवक्षितत्वाद्विवक्षितस्तुसंधिर्भवतीति नियमात् ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदा सवर्णा. एतेपा ह्रस्वदीर्घप्लुता सजातीया परस्पर सवर्णा भण्यते ऋलृवर्णौ च एकमात्रो ह्रस्व ।

ओं श्री गणेशायनम पुराणपुरुषंध्यात्वानत्वाचार्हतनायकम् सिद्धान्त चन्द्रिकावृत्तिचर्क्करीयित्तरीमहम् १ विद्यारत्नपयोनिधौखरतराम्नाये जगत्पूजके। श्रीभट्टारकसंपदगुणगणै. स्तुत्यावरन्पुण्यवान् ॥

पूज्यश्रीजिनभक्तिसूरिरधिपोवर्वर्तिविद्यानिधि । सोयंशीतकरायते च यशसामूरायते तेजसा २"

अन्त—"चार्थे द्वन्द्व इति निपातनात्पुंस्त्वमपि ॥ शेषा निपात्या. कन्यादय· ॥ का संख्या येपाते कति दाविक शाशक । दात्यौह. । दार्धसत्र ॥ आयस ॥ इतिश्री रामाश्रमाचार्य्यविरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिकायाम् पूर्वार्द्धं सम्पूर्णम् ॥

अण् दित्यौह. इट दात्यौह वहोवौ इत्यौत्व निपातनात् अण् दीर्घसत्रे भवं दार्घसत्रं अण्श्रेयसि भवंआयस अणिति तद्धित प्रक्रिया। श्री मत्यानकवर्य भक्ति विनया विख्यात कीर्त्ति प्रभा राजेन्द्रै. परिपूजिता. सुकृतिनः पुंभाव वाग्देवता मंतारोजगता पतिगुण गणै विभ्राजमाना· सनत् संवेगादियुजो जयतु मतत पड्शास्त्रविद्याविद १ तेपा शिष्यः सदानंदस्तदनुग्रहभूषित· ॥ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति पूर्वार्द्धे चर्करीदिमाम् ॥ इतिश्री सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्याया सदानदकृतौ पूर्वार्द्धः समाप्तिमगात् ॥"

विषय—चान्द्रव्याकरण।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ सनानन्द कृत महत्त्वपूर्ण व्याख्या से सवलित है। इसकी लिपि पुरानी तथा अस्पष्ट है। यह ग्रन्थ मालामा के शकरवार टोना-निवासी श्री केशवप्रसाद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[४३] नलोपाख्यानम्—ग्रन्थकार—श्री कालिकादत्त। लिपिकार—×। अवस्था—खण्डित, प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ—४०—१६। प्र० पृ० प० लगभग—२०। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। आकार—१२'×५"। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"(टीका) नामानवपठितानि वार वार गृहीतानिसन्नामानि गोविन्दादीनी दैवतपाठनसन्नामान यद्वा यस्मिन् सा लक्ष्मी स सन्नामनिक। समापनिकटासन्नमनिकृष्ट सनीडमन्तिमर तना दरदशान्तरवर्तित्व विशिष्ट समीपस्थितवि यावन् आसन्न इत्र आङ उपसर्ग सहित अथ निरुपसर्ग च पुन. पाठत सन्नामाला भवमाला नस्तु ३

(मूल)—समनिन्दा नव ना सज्जन तानिकुल यथैव दान य नाशम् द्विरदा दानवाश अगयलभत यत सदा नाव नाशम् ४

(टीका)—समाने जनन जनसमूह यता राश ■ कल्याण लभत प्राप्नोति च पुन जगन् दानवाना दैत्याना नाश मृत्यु यता लभत कीर्त्या जनता सम निन्दा तवनाग स्तुता भातारुपुं नवनं स्तुन निन्दा च नवन च निन्दा नवन सम निन्दा नवन यस्या सा जगत् कीर्त्या सा जनवनाश जनवरसण तस्य आशा जनवाशा न विद्यत अयनाशा यस्यतत् जनवनाशं यथा अनिकुन कतृ इति सकारादशानवनाश प्राप्नोति दानव दानवल तस्य आशन आशम्नानराश सार्वभावायनदन ४

अन्त—"(मूल) गुरु महिमा परमास्तमभयानल एष य अतमा परमाया प्रियया उपरमाया स्वपुरमगुपयत समापरमाया ॥५३॥

(टीका)—गुर्वित एप नल प्रियया भैम्या अमसहतस्वपुर स्वनगरमापप्रपरवाद् मार्गभिधानांर्ङ सहार्थे इतिहम न्वदीला गुरुमहिमामदनामाया महिमागुर्वीनहिमावस्वय एव परमायास्तम्भौपरयां सम्पूर्णा या माया तस्या लक्ष्मीरिवहप नारा नार्य कीर्त्या स्ववर्ं परमाया उत्कृष्टाया रमाया तदस्या घर्न्तिरमन तकिम् यत्रपुरे आया घनागमनानि यस्मा परतिदृप्तुमर्यास्तजनसनगु प्रद ॥५३॥

(मूल)—शशिनासमहामहानगेरजनतायमहास्तमुदम्
अतिभासुरयासुरयाव्यहरयनतनोत्सुरयागमपि ॥५८॥

इति बोधिनी टीका सहिते श्री कालिकृते सकाव्ये नलोपाख्यानेप्रथमोच्छ्वास ॥१॥"

(टीका)—शशिनेति जनता जनसमूहः नगर नलपुरे मुद हर्ष समहास्तप्राप ओहतु. गतावित्यस्यवातो प्रयोगः विगन्यथास्ते प्राप्त्यर्थाज्ञानार्थाश्चक्त्म्भूता जनता शशिना चन्द्रेणसमहामहानस्य महस्तेजो यस्याः मा महश्चोत्सवतेजसोरित्यमर' एवं स महामहेन उत्सवेन सह वर्तमाना सा एव सुरया शोभतोस्य शब्दो यस्या सा सुरया पुन· जनतैव सुरया मदिरया व्यहरत चिक्रीड सुरयाग मपि सुरार्चनमपि व्यतनोत् अकरोत् कीदृश्या सुरया भासुरया स्वच्छया ५४ इति तत्वबोधिनीटीकायां ॥१॥"

विषय—संस्कृत-काव्य ।

टिप्पणी—१-यह ग्रंथ खंडित है । प्रारंभ का १ पृष्ठ नहीं है । प्रथम उच्छ्वास की समाप्ति के पश्चात् दूसरे उच्छ्वास का १ पृष्ठ नहीं है । प्रथमोच्छ्वास के अन्त में ग्रंथकार का नाम 'कालि' लिखा हुआ है । खंडित होने के कारण लिपिकार का नाम तथा रचनाकाल, लिपिकाल, स्थान आदि का संकेत नहीं मिलता है ।

२—यह ग्रंथ अप्रकाशित है । संस्कृत-साहित्य में, संभवत. इस ग्रंथ का ग्रन्थकार श्री कालि कवि का नाम नवीन है । ग्रन्थ में कवि ने श्लेष, अनुप्रास, यमक और अन्य विविध अलंकारों मे समीचीन रचना की है । निम्नलिखित श्लोकों मे देखिए—

"अथरतिरेकान्तेन प्रापि नलो नात्र मन्दिरेकान्तेन ॥
ताम्पुनरेकान्तेन प्राप्त. वतारिपु मदा तरेकान्तेन ॥१॥
वभौ ससार हागरश्चकाश सार सर्द्धी
मधु ससार सारवस्तदा ससार सार्तवः ॥२॥"
किस प्रकार यमक और अनुप्रास का समन्वय कवि ने किया है ।

३—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है । लिपि ठीक नहीं होने के कारण कहीं-कहीं छन्दोदोष भी आ गया है । ग्रन्थ में 'य' के लिए 'ञ' का प्रयोग किया गया है । शेष अक्षरों के प्रयोग भी सामान्यत. अन्य हस्त-लिखित पोथियों-जैसे ही हैं ।

यह पोथी मोकामा (पटना)के शकरवार--टोला के प्रसिद्ध जनहितैषी पं० श्री केशवप्रसाद शर्म्मा के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[३४] महाविद्यास्तोत्र-ग्रंथकार—×। लिपिकार–श्री लक्ष्मणराम। अवस्था–अच्छी पुराना हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-स -१०। प्र० पृ० ५०-लगभग-१६। आकार—७'×३½"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—मा॰ शुक्ल, तृतीया सं० १९२० वि० गुरुवार।

प्रारम्भ— 'श्री गणेशाय नम ॐ महाविद्यास्तोत्रस्य अयमा ऋषिर्देवी गायत्री छन्द जगती श्रा सदाशिव देवता श्री सदाशिव साहित्यर्थे जपे विनियोग ॐ महाविद्याप्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मितम् चिंतता वा राष्ट्ररूपेण मानिणा हृदयन – – ।

अन्त— 'ॐ शिपारक्षतु ब्रह्माणासिररक्षतु माहेश्वरी मुखरक्षतु कौमारीकंठरक्षतु वैष्णवी भुपरक्षतु वाराही ॐ हृदरक्षतु, इन्द्राणी कण्ठरक्षतु चामुण्डा दोरक्षतु महालक्ष्मी ॐ ह्रा ह्रीं ह्रु क्लिं ह्रां ध्रु हु फट् स्वाहा ॐ नमो भगवते परलामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधो एकविंशतिवारण पठीत विष्णुमायया आरण्यश्चैव सर्वग्रहनिवारण सर्वकार्येषु सिध्यन्ति शान्तिकर्म्मविशेषितम् इति श्री महाविद्यास्तोत्रस्य समाप्तम्॥

विषय—तन्त्र-साहित्य।

टिप्पणी—यह लघुकाय पुस्तिका तन्त्र-सम्बन्धी है। ग्रंथ के प्रारंभ के श्लोकों में इस तन्त्र का उपयोग बताते हुए सभी प्रकार के ज्वर शमन तथा सर्व व्याधिविनाशार्थ लिखा है। यथा—"ॐ वेलाज्वरशनिज्वर तिजारज्वर शृतज्वर अग्निज्वर रावणज्वर भूतज्वर पिशाचज्वर दृष्टिज्वर स्फोटज्वर तिज्रज्वर मातिप्रयोगादिविनाशायस्वाहा ॐ आंखिशूल कंधिशूल वक्षिशूल कणशूल प्राणशूल गन्धशूल गलशूल सिरशूल शिरादशूल सर्वाङ्गशूल विनाशायस्वाहा सवव्याधिविनाशाय स्वाहा सवशत्रु विनाशायस्वाहा सवस्वागविनाशायस्वाहा ॐ आत्मारक्ष परमात्मारक्ष अग्निरक्ष प्रयग्निरक्ष सतपावालक रक्षाव

इससे प्रतीत होता है कि इन उपर्युक्त प्रयोजनों के लिए इस तंत्र की सिद्धि की जाती थी। यह ग्रंथ माकामा (पटना) के रफरवार गोला निवासी पं॰ श्री कृष्णप्रसाद शर्म्मा के सौजन्य से प्राप्त किया।

[३५] संध्याविधि—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, जीर्ण शीर्ण, हाथ का बना मोटा कागज। पृष्ठ सं०—५। प्र० ८० प० लगभग—२०। आकार—८½'×४½"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७८८ वि०।

प्रारंभ—"ॐ अस्य उपनयने विनियोग ।। शिरस. प्रजापति ऋषि ब्रह्माग्नि-वायु र्सूर्यो देवता प्राणायामे विनियोग ।। इति ऋष्यादिकं स्मृत्वाबद्धासेन मम्मीलित नयनो मौनीप्राणायामत्रयं कुर्य्यात् ।। वारिणा पुनरात्मानं वेष्टयित्वा ।। वायोरादानकाले पूरक नाम। प्राणायाम· ।। तत्र नीलोत्पलदलश्यामं चतुर्भुज विष्णु ध्यायन् ।। दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षिण नाशापुट निरुन्धन् प्राणवायुमाकर्षयन् ।। ॐ भू स्वाहा ॐ भुव स्वाहा ॐ मह. ॐ जन. ॐ तप ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्व्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि । धीयोयोन प्रचोदयात् ।। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुव· स्वरोम् ।। इति मंत्रत्रि उच्चरेत् ।। एवं धारणकाले कुंभक. तत्र कमलासनं रक्तवर्ण च तम्मुगं ब्राह्मणं हृदिध्यायनमध्यभाग· लयावामनाशपुटमपिनिरुन्धन् ।।"

अन्त—"ॐ भूर्भुवस्वर्नेत्राभ्यावौषट ॐ भूर्भुव स्वरस्त्रायफट इति यथाशक्ति क्रम हृदय· सिरम शिखासर्वाङ्गनेत्रद्वये करतलेष्वंगन्यासं कृत्वावारत्रयं वामकरतलेदक्षिण करांगुलीभिस्तालत्रयपूर्व कृतकं तर्ज्जन्यंगुलद्वयोगेन सशब्ददिग्वन्धं कुर्य्यात् ।। ततस्तेजोसिति देव ऋषय शूलिदैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः ।। इति संध्याविधि· समाप्ता ।। शुभम् ।"

विषय—कर्मकाण्ड ।

टिप्पणी—१—यह संध्याविधि है । इसमें प्रचलित संध्याविधियों से कुछ अंतर है । प्राणायाम की विधि विस्तार से बताई गई है । ग्रन्थकार के नाम का ग्रंथ के प्रारंभ या अंत में उल्लेख नहीं है ।

२—इस ग्रंथ के साथ ही प्रारंभ में १ पृष्ठ का 'कृष्णकवचम्' नामक पुस्तक है। उसके अंत में भी लिपिकार ने लिपिकाल 'सं० १७८८ वि०' लिखा है । संध्याविधि के अंत में ग्रंथ के लिपिकाल की कोई भी चर्चा नहीं है । यह ग्रन्थ मोकामा (पटना) के शंकरवार टोला-निवासी पं० श्री केशवप्रसाद शर्म्मा के सौजन्य से प्राप्त किया ।

[३६] अहिचलचक्रम्—ग्रंथकार—× । लिपिकार—× । अवस्था—खंडित, प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ-सं०—४ । प्र० पृ० पं० लगभग १८ । आकार—१०$\frac{3}{4}$"×८$\frac{1}{4}$" । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना-काल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारभ—"श्री गणेशायनम· अथ अहिचलम् चन्द्र क्षेत्र सूर्य्य क्षेत्र विचार करना अथ प्रथमे चन्द्रक्षेत्र एतानिनक्षत्राणि शोपणेछन्ददेनाह रेवति० सतभि० अश्व० आद्रा० श्लेषा० भरणी० पुनर्व० पुर्वाषा० पुर्वभाद्रपद० कृत्तीका० पुष्प० श्रवणा० उत्राषा० इति चन्द ।।

अथ मूर्य्यचेत्र एतानि नक्षत्राणि—यत्र उपजातिकछदेनाह ॥ ॥
रोहिणी० पूर्वाफाल्गुणी चित्रा० अनुराधा० उत्तराभाद्रपद० मृगशिरा० उत्तराफाल्गुणी यानि ज्येष्ठा मघा हस्त विशाखा० मुल० इति मूर्य्यं ॥ अथग्निकास्वानुभावे पुवाभिमुखशीववलम् टीका अर्थं यस्मिन्समये महा नक्षत्रयोरन्तिरसमयमारम्भ० ॥'

अंत—"मूर्यं स्वर्णं १ स्तुत। चन्द्रौप्य २ भौमेताम्र ३ बुधेपीतर ४ गुरुणारात्रा ५ शुक्रेकाम्य ६ शनौलोह ७ राहुणाशीस ८ केतुना जस्ता ९ ताकान्तेचन्द्रवदेत्।"

विषय—ज्योतिष शास्त्र।

टिप्पणी—१—यह लघुकाय पुस्तिका ज्योतिष् शास्त्र से संबंध रखती है। इस भाग का ग्रंथ श्री लोमश ऋषि प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध और प्रकाशित है। इसमें यत्र-तत्र पाठ भेद तो प्रतीत होता ही है। ठाप ही, शीघ्र भी है। ग्रंथ के प्रारंभ या अंत में ग्रंथकार या लिपिकार का नाम नहीं है। ग्रंथ खण्डित है। अंत में ग्रंथ की समाप्ति के बाद निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी हैं—(एक रेखा खींचकर उसके नीचे)
"गाखीरस्य मु सपथ्य तिलकाद्र रात्रिका तृणबीज च सपथ्य निशाया च निर्दिश्यलम् अग्नोनायो भवत् यत्र प्रानस्तत्रनिधिर्निर्दिशेत् ॥१॥ आर्जुनस्य कण्टकस्य बकस्य (मुनेश्वरी) खदिरस्यच महावृक्ष (महावृक्षनाम स्नुही) यत्राग्नि काजकनैवरावयत् निशायां लेपयन्भूमौ कम्पयमरीणु श्रये प्रानलोपा न यन्नाम्ब तत्रैव निधिमादिशेत् ॥२॥ उमाग्निमात्रि चतुष्क किरा। तत्र पूजयत् तत्र हामो प्रकर्तव्या निशाया घत गुग्गुलै प्रभात तद्दिग्गु चविरि स्तव मुनीश्वर ॥३॥
(ॐ नमो भगवत रुद्राय कम्पनेपार्जनं दराशय दरशाय स्वाहा ठः ठ) मनन यथापनमग्रमंत्रयेत् ॥इति॥

२—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। लिपिकार ने अन्य हस्त लिखित लिपियों जैसा ही ष, श, य और न का प्रयोग किया है। ग्रंथ पठनीय है।

यह पोथी माकन्मा (पन्ना) के शङ्करचारगोला-निवासी पं० श्रीकेशवप्रसाद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुई।

[२७] सारस्वत प्रक्रिया-ग्रंथकार—श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य। लिपिकार—×। अवस्था—अत्यंत प्राचीन, हाथ का बना मोटा देशी कागज। पत्र-संख्या—२६।

प्रारम्भ—(मूल) 'श्रीगणेशाय नमः' मेघैर्मेदुरमम्बरम्वनभुव श्यामास्तमालद्रुमै
नक्तम्भीरुरयत्वमेवतदिम राधेगृहम्प्रापय ॥ इत्थ
नन्दनिदेशतश्चलितया प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमम् राधामाधवयो र्जयति
यमुनाकूले रह केलय ॥१॥"

(टीका)—"श्रीगणेशाय नमः मद्राय भवता भूयात्कृष्ण सद्भक्तिभावित ॥
कालिन्दीजल सवर्णमेघश्यामोऽति सुन्दर १ पिपासूना भक्तियोगाय
श्रीकृष्णचरिताऽमृतम् ॥ लिख्यते जय देवेन गीत गोविन्द
पुस्तकम् ॥२॥ इहकवि प्रारिप्सितस्य ग्रन्थयनिर्विघ्नेनपरिसमाप्त्यर्थं
श्रीकृष्णस्मरणरूप वस्तुनिर्देशलक्षण ॥३॥ मगल तावदाचरति ॥
मेघैरिति राधामाधवयो रह केलयो यमुनाकूले जयन्तीत्यन्वय
राधाकृष्णयो रह केलय एकान्त क्रीडा यमुनातीरे जयन्ति सर्वोत्कर्षेण
वर्तन्ते कथ भूतयो राधा माधवयो प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमम् अध्वनि मार्गे
कुञ्जे लतागृहे द्रुमेवृक्षे च इत्यमर इत्थ इति नन्दनिदेशतो
नन्दाज्ञयाचलितया प्रस्थितयो यद्वा अध्वकुञ्जद्रुमान् प्रत्युद्दिश्य
चलितया इतीति किमूहे राधे अम्बरम् आकाश मेघैर्मेदुरसान्द्र
श्यामामित्यर्थ वनभुवस्तमाल वृक्षै श्यामा अयकृष्ण नक्त रात्रौ भीरु
भयेन शीलवान् ततस्तस्मात्कारणात् त्वमेव इम परोवर्तिनं कृष्ण गृहे
प्रापय नय एव प्रकारेण नन्दस्य अन्यस्मिन् विश्वासाभावात् ॥१॥"

अन्त—(मूल) वसत रागेणरूपकताले ॥ ललित लवगलता परिशीलन
कोमल मलय समीर ॥ मधुकर निकरकरंवित कोकिल कूजित कुञ्ज
कुटीरे विहरति हरिरिह सरस वसते नृत्यति युवतिजनेन समसखि
विरहि जनस्य दुरन्ते १ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जनजनित
विलापे अलिकुल सकुल कुसुम समूह निराकुल बैकुल कलापे २ मृग
मदसौरभ रभसवशवद नव दल माल तमाले युवजन हृदय विदारण
मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ३ मदन मही पतिकनक दण्डरुचि
शर कुसुम विकाशे निलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मरतूर्णं
विलासे ४ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे
विरहिनिकृन्तन कुन्त मुखाकृति केतकि दन्तुरिताशे ५'
माधवि का परिमल ललिते नवमालिकयाति सुगंधौ ॥ मोहन कारिणि
तरुणा कारण बंधो ६ स्फुरदति मुक्तलतापरि रंभण मुकुलित पुलकित
चूत ॥ वृन्दावन विपिन परिसर परिगत यमुना जल पूते ७ श्रीजयदेव
भणितमिद मुदयति हरिचरणस्मृतिसार ॥ सरस वसत समय पर वर्णन
मनुगत मदन विकारम ८

(टीका)—श्री जयदेवेति श्री जयदेव कवेरिदं भणितं उदयति उदय प्राप्नोतीत्यर्थः
हरिचरणयो स्मृतिरनुचितन सारो मुख्यं यत्र मरसं सुमनोहरं वसंत
समय वर वर्णन यत्र अनुगतोऽनुस्मृतोऽनुकृतो मदनविकार काम
विलासो यमिन् ८"

विपय—संस्कृत-काव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्रसिद्ध गीतगोविन्द का खंडित भाग है। प्रकाशित ग्रन्थ से इसकी टीका कुछ और ही प्रतीत होती है। ग्रंथ की टीका-शैली प्राचीन अस्पष्ट तथा शिथिल है। ग्रंथ खंडित होने के कारण टीकाकार तथा लिपिकार के नाम का संकेत नहीं मिलता है। यही कारण ग्रंथ के लिपिकाल के लिए भी है। ग्रंथ की लिपि और कागज देखने से ग्रंथ सौ वर्ष से अधिक पुराना प्रतीत होता है। ग्रंथ का मूल भाग मोटे अक्षरों में और टीका पतले अक्षरों में है। यह ग्रंथ श्री वासुदेव प्रसाद गुप्त, नवीन प्रकाशन-मन्दिर, लक्खीसराय (मुँगेर) द्वारा प्राप्त किया। ग्रन्थ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है।

[३६] सिद्धांत-चंद्रिका—ग्रन्थकार—श्रीरामाश्रमाचार्य। टीकाकार—पं० श्री सदानन्द जी। लिपिकार—×। अवस्था अच्छी, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—५५। प्र० पृ० पं० लगभग—२४। आकार—११$\frac{६}{८}$" × ४$\frac{६}{७}$"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—(मूल) "श्रीगणेशायनम कृत्कर्तरिवक्ष्यमाणा प्रत्यय कृत्संज्ञकास्तेच
कर्तरि भवति तृ वुणौ धातो पक्ता कृत वसादे कृत इट् कुटिता एधते
इति एधिता गोपायिता गोपिता गोप्ता सहिता सोढा एषिता एष्टा
युवोरनाकौ पाचक भावक आतोयुक् दायक घातकः जनक घटक.
दरिद्रायक कोटक शमक नियामक कर्मे कर्तर्य्यादिपयात्कृतइटन
प्रकृन्ता ॥

(टीका)—श्री गणेशायनम श्री सरस्वतैनम प्रतोष्ट्य जगन्नाथं सदानंदेन-
सन्मुदा सिद्धांत-चन्द्रिका वृत्ति क्रियते कृत प्रकाशिका १ कृत्कर्तरि
उत्सर्गत कर्त्तरीतिवोध्यं तृवुणौधातोदेतौत कर्तरितृपप्रतये भाक्-
पचतीति विग्रहेचो कुरितिक वृत्तद्धितेति नाम संज्ञायास्याटिविभक्ति.॥"

अन्त—(मूल) "उर्जेर्दलवलोप. ओज. त्रिवस्शिर किच्चशिर अर्तेरुर उरः
अर्तेर्व्यावौतुट् अर्श उदकेनुट् अर्ण. इण आगसि एन स्रुरीभ्या तुट्

स्रोत रेत पतेरुद्केतुर् पाय अदेर्मक्तेधनोमुच अध आप उदके हस्वोनुम्भौ अम्म नर्ग्विम नम इण अगेऽपराधे आग ।।

(टीका)—नम नमो योम्निनमा मेघे श्रावरो च पतन् प्रदेघ्रारामृणाल सूत्रे च वपामुच नम स्मृत इति विश्व नभ म श्रावरो नभा इत्यमर नमत्रु नमसा सार्द्धमिति द्विरूपकोश इण आगपराधे इरा मतावस्मादसु स्यात् अपराधेवाच्येधोऽराणोदशस्य आग पापापराधयोरिति विश्व आगापराधो मनुश्चेत्यमर अनहुक अमगत्यादावस्मादसु स्यात् धावाहु गागमस्य अऽति गच्छत्यधस्ताद ननति अह दुरित रमेश्व रमुकोशयामस्मादसु स्यात् द्धातोहु गागम स्वरह वेग देशे वाच्यरमेरसु स्यात् धातोर्मस्यहश्चरह रहस्तत्वेरते गुणे नि मेत्नि रज्यादे किंतु असुस्यात् सचकित् रजरागेकित्पभोलप इतिनालोप रज रज क्लीवें गुणातरे आर्तवेच पराग च रेणुमात्रेपि हश्यते इति मेदिनी कप्रत्यये अकारातोपि रजापिरनसा साद्ध स्त्रीपुष्प गुण धूलिष्विल्य जयकोश ।"

विषय—संस्कृत-व्याकरण-शास्त्र।

टिप्पणी—यह ग्रथ प्रसिद्ध सिद्धात-चन्द्रिका की टीका है। टीकाकार ने ग्रथ के सरल रूप का और भी विकट तथा कठिन बना दिया है। ग्रथ का मूल भाग मोटे अक्षरों में और टीका भाग पतले अक्षरों में लिखा है।

ग्रथ की टीका अस्पष्ट और असबद्ध है। लिपि भी अस्पष्ट और पुरानी शैली के अनुसार है। ग्रथ खण्डित है। प्रारभ या अन्त में लिपिकार के नाम तथा टीका के काल (समय) का संकेत स्पष्ट नहीं है। यह ग्रथ श्रीशकर प्रसादजी बरबीघा (मुंगेर) के सौजन्य से प्राप्त किया।

[४०] अष्टाध्यायी—ग्रथकार—श्री पाणिनि मुनि। लिपिकार—श्री महादेव भट्ट तिलक अवस्था—अच्छी, प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—४७। प्र० पृ० प लगभग—१२। आकार—११$\frac{3}{8}$"×४$\frac{1}{8}$"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—चैत्र, शुक्ल, १३ सं० १९३४, (प्रारम्भ) आषाढ़, कृष्ण, सोमवार, सं० १९३४ वि० (समाप्त)।

प्रारभ—'श्री गणेशायनम ।। श्री पाणिनीयाय नम ।। येनाक्षर समाम्नायमधिगम्यमहेश्वरात् ।। कृत्स्न व्याकरणप्रोक्त तस्मैपाणिनये नम ।। येन धौतागिर पु साविमर्लै शब्दवारिभि ।। तमश्चाज्ञानजभिन्नन्तस्मै पाणिनये नम ।।२।। योगेन चित्तस्यपदेनवाचाम्मलंशरीरस्य च वैद्यकेन ।। यो पाकरोत्तम्प्रवरम्मुनीना पतञ्जलिरानतोऽस्मि ।।३।।'

अन्त—"उदात्तादनुदात्तस्यस्वरित ८।८।६६ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यप गालवानाम् ८।४।६७ अ अ ८।४।६८ रषाभ्यामुभौष्टुनोदोऽष्टौ। इत्यष्टमाध्यायस्यचतुर्थ पाद ॥ इत्यष्टमोध्यायस्समाप्त शुभम् ॥

विषय— संस्कृत-व्याकरण-शास्त्र।

टिप्पणी - यह श्री पाणिनि मुनि का प्रसिद्ध अष्टाध्यायी ग्रन्थ है। इसे काशी के 'हौजकटरा' मुहल्ले के 'श्रीरामदास दालाव' के मकान में 'श्रीहजारीलाल गनेस प्रसाद' ने लीथो में मुद्रित किया है। यह जिस हस्त-लिखित ग्रन्थ से तैयार किया गया है, उसके लिपिकार हैं प० श्रीमहादेव भट्ट तिलक। ग्रन्थ की लिपि, शुद्ध, स्पष्ट और सुन्दर है।

यह ग्रन्थ बरबीघा (मुँगेर)-निवासी समाजसेवी श्रीशंकर प्रसाद जी के सौजन्य से पाया।

[४१] हनुमत्कवचम्—ग्रन्थकार—श्री रामभद्र चिन्तामणि। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना मोटा देशी कागज। पृष्ठ-सं०—७। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—६¾"×४" भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—आश्विन, कृष्ण सं० १६३१ वि०।

प्रारंभ—"श्री गणेशायनम. ॐ अस्य श्री पञ्चमुखहनुमन्मन्त्रस्यब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्द पञ्चमुखविरिंचि हनुमान्देवता ह्रीं बीजं सः शक्तिर्गौं कीलक कुरुवचं ह्रौं आम्नायपक्ष्ट् इतिदिग्बंधनम् इश्वर उ वाच अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि-श्रृणुसर्वाङ्ग सुन्दरी यत्कृत देवदेवेशिध्यानहनुमत' प्रियम् १ पञ्चवक्त्रमहाभीमंत्रियज्वनयनैर्युत बाहुभिर्दशभिर्युक्तंसर्वाकामाथ सिद्धिदम् ॥२॥"

अन्त—"पटवारपठे नित्यंसर्वदेवशीकर सप्तवारंपठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकंम् अष्टवारपठेन्नित्य ईष्टकामार्थसिद्धिदम् नववार त्रिसप्तकेन राज्यभोग्य समारभेत् दसवारंत्रिसप्तकेनत्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् एकादशवारं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिभवेन्नर कवचं स्मरेणैव महालक्ष्मी समन्वित ॥"

विषय—स्तोत्र-मन्त्र।

टिप्पणी—इस लघुकाय ग्रन्थ मे हनुमान् के विभिन्न रूप और गुण की चर्चा है। स्तोत्र के अतिरिक्त पूजाविधि भी है। यत्र-तत्र कुछ ऐसे भी पद हैं, जो पूजा की प्रक्रिया में तंत्र की पद्धति से लिखे गये हैं। ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट है और लिपि-शैली पुरानी है। ग्रन्थ सम्पूर्ण है,

किन्तु प्रारम्भ या अन्त में लिपिकार का नाम नहीं है। ग्रन्थकार का नाम भी स्पष्ट नहीं है। ग्रन्थ के अन्त में—'इति श्री रामभक्त चिन्ता मनाक्न' लिखा है। इससे ग्रन्थ और ग्रन्थकार दोनों का बोध हो सकता है। यह ग्रन्थ बरबीघा (मुँगेर)-निवासी श्री शत्रुघ्न प्रसाद जी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[५०] सूर्याणवकर्मविपाक-राशिफल—ग्रन्थकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं—१८। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—६$\frac{3}{8}$''×४$\frac{1}{2}$''। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"अथ नृपराशि कथ्यते नारद उवाच शृणु राजन् विचित्र त्वं नृप राशिषु यं तत्त्व त त्त्वं च वदिष्यामि तवाग्रे च नृपोत्तम १ धर्मात्मा ब्राह्मणो ह्येक वसते नगरे शुभे पठते वेद शास्त्राणि त्रिकालज्ञ शुचिर्भवेत् २ भिक्षा मॉन्य च कुरु ते सवि ग्रामग्राम याजक एक न्तु प्रिया स्तस्य प्रेस हस्तेषु भाजन ३ आली त वसुधा ह्स्य सर्वदा भोजन कृत क्षण मात्र न दत्त वै लुब्धो मलयुतस्तथा ४ अपर शृणु शपस्य यत्कर्म कुरु ते द्विज वृत कर्म रतो नित्यमानीत हाटक पर ५ एवं वर्तुतिथे काले सवि प्र च तां गत यम पार्श्वेद्रूढ बध्वा आनितो बहुकष्टमे ६"

अन्त—"ब्राह्मणस्य सुवर्णस्य प्रतिमा कारयेकरे ॥ गां सचैव सवत्सां च पंच रत्नानि सहुता ॥२॥ ब्राह्मणाय प्रदीयते तेषा दोषा विनश्यति ॥२॥ नारद उवाच ॥ क न कर्म भवेल्लक्ष्मी राज्य के न कर्मणा यशवृद्धि भवतकेन तन्म विस्तरतो वद ॥२३

विषय—ज्योतिष शास्त्र।

टिप्पणी—१—यह ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित खंडित ग्रन्थ है। इसमें जो भाग है उसका संबंध राशियों के फल से है। ज्योतिष शास्त्र में इस नाम का ग्रन्थ प्रकाशित रूप में अब तक देखने में नहीं आया है, किन्तु मोतीलाल बनारसीदास, जो प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता हैं, उनके ग्रन्थ-सूची पत्र में एक ग्रन्थ वृद्ध सूर्याणव कर्म विपाक, नाम का है। जिसका मूल्य १२) बारह रुपये दिया गया है। संभव है उक्त बड़े ग्रन्थ का यह कोई संक्षिप्त रूप हो अथवा इसका खण्डित भाग। मिल जाने पर पता चले कि यह ग्रन्थ वस्तुतः कितना बड़ा है।

२—ग्रन्थ के खण्डित होने के कारण ग्रन्थकार और लिपिकार के नाम नहीं

ज्ञान हो पाते हे । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । यह ग्रंथ वरवीघा (मुंगेर)—निवासी श्रीशंकर प्रसादजी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[४२] लघुजातकम्—ग्रंथकार—X । टीकाकार—श्री मथुरानाथ। लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना जीर्ण-शीर्ण, कागज । पृष्ठ-सं०—१८ । प्र० पृ० प० लगभग २८ । आकार—10" X ६६" ।भाषा—संस्कृत-हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X।

प्रारंभ—"अथ मुहुर्तप्रदीप अथ कालवेला विचार आद्योष्ट भागो दिवसाविपस्य तत. परं पट् ६ परिवर्तनेन यस्मिन्विभागेरविमुन्द्रवेला कान्यपु सर्वत्र न शोभना सा ८१ पंच युग्म रसा रामौ मुनिवेदाख्य मूर्व्यतः ।। कालवेला शनेर्वारे प्रात. सायं द्वयोर्भवेत् ८१ रात्रौ पच परावृत्या वारवेला विनिर्मिता ।। रवेरुद्वे गवेला । चन्द्रस्यामृतवेला । भौमस्य रोगवेला । बुधस्यलाभवेला । गुरो· शुभवेला । शुक्रस्य चलवेला । शने कालवेला । इति वेलामामानि अथ रजोदर्शनम् वैशाखे फालगुणे माघे मार्गाख्यश्रावणेश्विने पक्षे शुक्ने शुभाहे च सिद्धि लग्ने तवादिवा ८४ श्रवस्त्रयेनुराधायारवति द्वितये मृगे हस्तत्रये च रोहीणया यच्छुभे चोत्तरासुच सितवस्त्रं सुभंस्त्रीणा प्रथमे पुष्पदर्शनम् ।"

अथ जन्म के वस्त में लडका पिता घर रहा या विदेश रहा इए विचार कहते है चक्र इति । जन्म लग्नकों चंद्रमा देषत रहै देव ते होयतो उसके पित्ता जन्मे समय परदेस कहना। औ बुध शुक्र के विच में चंद्रमा होय तो तौवभि पीता परदेश हिमें कहना । या जन्म लग्न में शनैश्चर होय तौ भी परदेश कहना । औ जन्म लग्न मे सात ७ ए घर में मंगल होंय तौ भि परदेश ही में कहना ।"

अन्त—"अथ जातक स्वरूप चन्द्रमा मंगल साथ होय तो कटज्ञ होय । याने बाजार की चीजों का वेचनेवाला होय । औ बुध के साथ होय जो प्रिय वोलनेवाला होय । औ वृहस्प से युक्त होय तो अपने कुल में सबसे अधिक होय । औ शुक्र के युत होय तो वस्त्र के व्यहार कों जाननेवाला होय । फुल खेलाने वाला होय । औ शनैश्चर से युक्त होय तो पुनर्भू से पैदा करै कहना । पुन भू वह कहलाति है । जो विवाहित पति के छोड के तविअत्त से अपने विरादर फीर करे वह अक्षत हो या क्षत हो उसका सस्कार फीर करे वही मंगल बुध इत्यादि दसापर है। औ बुध वृहस्पति साथ रहै इत्यादि उस वषत जिसका जन्म होय।

तिस्का स्वम्प एक आर्या करके कहत है। मत्तेति मगल बुध के साथ होय तो म त्त होय। और मगल बृहस्पति के साथ मे होय तो नार का रक्षक होय। आ शुक्र ॥ युक्त होय तो परदारा में रत रहै। आ शनैश्चर से युक्त होय तो दुःख म युक्त होय।''

विषय—ज्योतिष।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खण्डित, पर महत्वपूर्ण है। इसम मूल ग्रंथ की हिन्दी-टीका भी है। यद्यपि यह ग्रंथ प्रकाशित है, किन्तु इसकी टीका भिन्न है। ग्रंथ के प्रारभ आर अन्त के पृष्ठों के फटे रहने और लिपि के अस्पष्ट होन क कारण ग्रंथकार एव लिपिकार का नाम ज्ञात नहीं होता। टीका सक्षिप्त आर सुन्दर है। यत्र-तत्र टिप्पणी-मात्र दी गई है। ग्रंथ की अवस्था जीर्ण शीर्ण है।

२—ग्रंथ की लिपि शैली प्राचीन है। लिपि क अस्पष्ट आर पुरानी होन क कारण मूल ग्रंथ पढ़न में कठिनाई होती है। लिपि से प्रतीत होता है कि ग्रंथ १६ वीं शताब्दि के अन्तिम अथवा २० वीं शताब्दि के प्रथम चरण में लिखी गई है।

यह ग्रंथ बरबीघा (मुँगेर) निवासी श्री शकरप्रसादजी के सौज य स प्राप्त किया।

[४१] वाल्मीकि रामायण—ग्रंथकार—महर्षि वाल्मीकि। लिपिकार—प० श्री प्रताप नारायण जी। अवस्था—अच्छी प्राचीन, हाथ का बना मोटी देशी कागज। पृष्ठ-स०—११। प्र पृ० प०—१६ आकार—८½ × ४। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचना काल—×। लिपिकाल—फाल्गुन, शुक्ल, १३, सं १६१६ वि० सोमवार।

प्रारम्भ—'श्री राजराजेश्वराय महाकारुणिकाय रघुनन्दनाय नम ॥ जयति रघुवशतिलक कौशल्या हृदयनन्दनो राम दशवदन निधनकारी दाशरथि पु डरीकाक्ष ॥१॥ कूजन्तं रामरामेति मधुरमधुराक्षरम् ॥ आरुह्य कविता शाखाम् वन्दे वाल्मीक कोकिलम् ॥२॥ वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कविता वनचारिण ॥ शृण्वन् रामकथानादं को न याति परागतिम् ॥३॥ य पिबन् सतत रामचरितामृत-सागरम् ॥ अतृप्तस्त मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥४॥

अन्त—'नवा दुर्भिक्ष किंचित तस्कर भय तथा नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्य युतानि नित्य प्रमुदिता सर्वे यथा कृत युगे तथा

अश्वमेध शतैरिष्ट्वा तथा बहु सुवर्णकं गवाकोट्ययुतं दत्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वम् असंख्येयं धनं दत्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः सर्ववंशाक्षन गुणान् स्थापयिष्यति राजय चातुर्वर्ण्यं च लोके स्मिन्स्वेस्वे धर्मे नियोक्ष्यति दशवर्ष सहस्राणि दश वर्ष शतानि च रामोराज्य मुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्तति इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्चसंमुतम् य पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते एतदाख्यानमायुष्यं पठन रामायणं नर स पुत्रपौत्रसगण प्रेत्यस्वर्गमहीयते पठन् द्विजो वाग्पभत्वमीयात्स्यात् क्षत्रियो भूमिपति त्वमीयात् वणिग्जनः पण्यफलत्वमीयातज्जनश्चशूद्रोपिमहत्वमीयात् इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्य बालकांडे नारद वाक्ये संक्षेपवर्णनोनाम प्रथमः सर्ग ।"

विषय—रामकाव्य।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण के बालकांड का प्रथम सर्गमात्र है। ग्रन्थ के लिपिकार ने यत्र-तत्र कुछ पाठान्तर भी कर दिया है, ऐसा प्रतीत होता है। ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट है।

यह ग्रन्थ बरबीघा (मुंगेर)-निवासी श्री शंकरप्रसादजी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[४५] स्वरूपोपनिषद्—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, हाथ से बाँस का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—४। प्र० पृ० पं० लगभग—१५। आकार—६"×३¾"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १७६० वि०।

आरंभ—"श्री गणेशाय नमः ॥ प्रातः काले समुत्थाय गुरुस्मरणानंतरंगुरूपदिष्टज्ञानेन सहज सिद्ध मजपाजपं तत्तदेवताभ्यः समर्प्पयेत् ॥तत्क्रम.॥
ॐ अद्याहोरात्रोच्चरितमुच्छ्वासनिश्वासात्मकं षट्सताधिकमेकविंशतिसहस्रसंख्याकम् जपाजप मूलाधारस्वाधिष्ठान मनिपूरका नादे विशुद्धाज्ञाब्रह्मरन्ध्रे पु ॥ षट्दल ॥ दशदल ॥ द्वादशदल ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वरूपोपनिषत् ॥
अहमेव परंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययं
इतिस्यान्निश्चितो मुक्तोवद्ध एवान्यथा भवेत् ॥१॥
अहमेवपरं ब्रह्म न चाहं ब्रह्मण. पृथक् ॥
इत्येव समुपासीता ब्रह्म न चाहं ब्रह्मणिश्रित. ॥२॥"

अन्त— मयिसर्वं लय याति तद् ब्रह्मास्म्यहमद्वय ॥
सत्नाहमनन्ताऽ मत्वेश सर्वशक्तिमान् ॥२४॥
आनन्द सत्यबोध ह मति ब्रह्माण्डचिन्तम ॥
अथ प्रपचा मिथ्यैव सत्य मत्ऽ वदाम्यहम् ॥२५॥
इति स्वरूपोपनिषदुपासनम् ॥'

विषय—उपनिषद्-आदिरव ।

टिप्पणी—यह लघुकाय पुस्तिका प्रसिद्ध और प्रचलित उपनिषदों से भिन्न है। इस नाम का किसी भी उपनिषद् का पता प्राय अब तक नहीं मिला है। इसमें केवल मात्र ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया गया है। ग्रंथ में मौलिकता का अभाव है। ग्रंथ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है। ग्रंथ के अन्त में सं० १७६० लिखा हुआ है। यह—समय निर्देश ग्रंथ के निर्माण-काल के लिए है अथवा लिपिकाल के लिए, यह स्पष्ट नहीं है। ग्रंथकार और लिपिकार ने ग्रंथ में यथा-समय अपना नाम और समय आदि का कोई भी निर्देश नहीं होने दिया है। ग्रंथ में यदि सं० १७६० का समय लिपि का है, तो ग्रंथ अवश्यमेव प्राचीनतम है। ग्रंथ बाँस के बने कागज पर लिखा हुआ है और यह जीर्ण शीर्ण हो गया है। ग्रंथ अनुसंधेय है।

यह ग्रंथ बरबीघा (मुँगेर) निवासी श्रीशंकरप्रसादजी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[४६] विष्णुपञ्जरस्तोत्र—ग्रंथकार—×। लिपिकार—× । अवस्था—प्राचीन, हाथ बना, मोटा, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—५ । प्र० पृ० पं० लगभग—१२ । आकार—५"×३" भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—पौष शुक्ल, ५ सं १८१६ वि०, बृहस्पतिवार।

प्रारंभ—"श्री गणेशाय नम ॐ अस्य श्री विष्णुपञ्जरस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषि अनुष्टुप् छं० श्री विष्णु परमात्मा देवता अं बीज सोऽहं शक्ति ऋही कीलक ॥ ममसर्व दे आत्म रक्षार्थे जपे विनियोग ॥ नारद ऋषयेनमः शिरसि ॥ अनुष्टुप्छंदसे नम ॥ मुखे ॥ श्री विष्णु परमात्मा देवताये नम ॥ हृदये अहं बीज गुह्ये ॥ सोऽहं शक्तिपादयो ॥ ऋही कीलक पादाग्र ॥"

अन्त—"विद्यार्थी लभत विद्या मोक्षार्थी लभते गति ॥
आपदा हरत नित्य विष्णुस्तोत्रंवरं सर्वदा ॥ २३ ॥
वने विष्णु स्थने विष्णु विष्णु पर्वतम स्तके ॥

उत्तालमाताकुले विष्णु ॥ सर्वविष्णु मयं जगत् ॥२४॥
यस्त्विदं पठते स्तोत्रं विष्णुपंजरमुत्तमं ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥२५॥
"इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे इन्द्रनारद संवादे विष्णु पंजरस्तोत्रं समाप्त ॥"

विषय—मंत्र-साहित्य ।

टिप्पणी—यह अनुमान पुस्तक का तंत्र से संबंध रखती प्रतीत होती है । इसके प्रारंभ में तांत्रिक प्रक्रियाएँ लिखी हैं और अन्त में स्तोत्र-पाठ का फल दिया गया है । यह ग्रंथ प्रकाशित और प्राप्य है । इसकी लिपि प्राचीन है ।

यह ग्रंथ शेखपुरा (मुंगेर)-के श्रीव्रजनन्दनप्रसाद सिंह से प्राप्त हुआ ।

[४७] रुद्रयामलतन्त्र—ग्रंथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी, पुराना, देशी कागज । पृष्ठ-सं०—८ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—६$\frac{1}{4}$"X४" । भाषा-संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आषाढ, शुक्ल, १५, सं० १९३७ वि० ।

प्रारंभ—"श्रीगणेशायनम अथ महाविद्यास्तव पुरश्चरण पटल विधिलिख्यते
शिव ताण्डव तन्त्रोक्तं शिव उवाच ।
भूत प्रेत पिशाचाश्च डाकिन्या ब्रह्मराक्षस
पाठयेत्समराग्रणी ७ हवन त्रय मुत्तमम्
शाकल्या पायस श्चैव कटु तैलं सर्षपस्तथा
दिवामेकं त्रयं पाष्ठी ६३ पाठं सर्वसिद्धिः
महा होमं दशांशेन दशा सेतर्पणं तथा
दशा से ब्राह्मणं भोज्यं दशा मे चैव दक्षिणाम्"

अन्त—"अथ डामर तन्त्रोक्तो महाविद्या पुरश्चरण विधानम्
प्रथम गणेश आवाहनं पूजनं
महादेव अष्टमूर्ति शक्ति विष्णु अंजनी कुमार
इतरमेण आवाहनं पुजन च तथा विधि.
अरुणं पुष्प अरुणं वस्त्र श्वेत पुष्प श्वेत वस्त्रं
पित्तपुष्पं पीत वस्त्रं डणवस्त्रं गोघृते च शाकल्यम्
इति डामर तन्त्रे महाविद्या पुरश्चरण पटल विधि समाप्तम् ।"

विषय—तंत्र शास्त्र।

टिप्पणी—इस नाम का तन्त्र-ग्रन्थ ?१ भागों में प्रकाशित और प्राप्य है। किन्तु यह उससे भिन्न सा प्रतीत होता है। संभव है यह उसका संक्षिप्त रूप हो। इसमें क्रमश: निम्नलिखित भाग हैं—२—महाविद्यास्तव पुरश्चरण पञ्जल विधि, २—प्रेत शांति महाविद्यास्तव पुरश्चरण विधि, ३—महाविद्यास्तवपुरश्चरण विधि ४—क्रोडा तन्त्रे महाविद्यापाठ फलम्, ५—लिंगार्चा विधि, ६—वाराहतन्त्रोक्त लिंगार्चा विधि, ७—कोन्तन्त्रे पात्र विधि। ग्रन्थ अनुसंधेय है। ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है। प्रारंभ या अन्त में लिपिकार का नाम नहीं दिया गया है।

यह ग्रन्थ शेखपुरा (मुंगेर)—निवासी श्रीब्रजनन्दन प्रसाद सिंह के सौजन्य से प्राप्त किया।

[४८] विज्ञान-नौका, सिद्धान्त बिन्दु—ग्रन्थकार—श्री शंकराचार्य। लिपिकार—श्री प० ज्वालादत्त त्रिपाठी। अवस्था—अच्छी मोटा, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—१०। प्र०-पृ०—पं०—लगभग—१२। आकार—$४\frac{३}{४}" \times ३\frac{१}{२}"$। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—'श्री गणेशायनम तपोयज्ञ दानादिभि शुद्धबुद्धिर्विरक्तो
नृपादौ पदे तुच्छ बुद्धया
परित्यज्य सर्वं यदाप्नोति तत्व
परब्रह्म नित्यतदेवाहमस्मि १
दयालु गुरु ब्रह्म निष्ठ प्रशांतं
समाराध्य भक्त्या विचायस्वरूप
यदाप्नोति तत्व निदिध्यास्य विद्वान् परब्रह्म०२
यदानंदरूपप्रकाशस्वरूप निरस्त प्रपंच परिच्छेदशून्य
अहब्रह्म वृत्यैक गम्य तुरीय पर ब्रह्म० ३'

अन्त—'अविव्यापकत्वादितत्वप्रयोगात्स्वत शुद्धभावादनन्याश्रयत्वात्
जगत्तुच्छमेतत्समस्तदन्यत्तदे० ६
नचैकनदन्यद्वितीयकुत्र स्यान्नचाकेवलत्व न वा
केवलत्व न शून्यनचाशून्यमद्वैतकत्वात् कथ सर्व
वेदांतसिद्ध ब्रवीमि १
इति श्री सिद्धांत विंदुसपूर्णम्'

विषय—वेदान्त-दर्शन ।

टिप्पणी—यह श्रीशंकराचार्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसकी मुद्रित प्रति प्राप्य है, किन्तु संभवतः संप्रति वह दुर्लभ है। इसमें ग्रन्थकर्त्ता ने वेदान्त-मत के अनुसार ब्रह्म के रूप को सिद्ध किया है। दो ग्रन्थ–विज्ञान-नौका, सिद्धान्त-बिन्दु–एक साथ ही हैं। किन्तु, प्रतीत होता है कि शंकराचार्य के प्रसिद्ध ग्रंथ का या तो यह लघु रूप है या उस नाम पर अन्य किसी की रचना है। यह अनुसंधेय है। 'विज्ञान नौका' के अंत और 'सिद्धांत-बिन्दु' के प्रारंभ की पंक्तियाँ क्रमशः निम्नलिखित रूप में हैं—

"यदानंदसिंधौ निमग्नः पुमान्
स्यादविद्या विलासैः समस्तं प्रपंचं
तदा तस्फुरन्य द्भुतं तन्निमित्त परंब्रह्म० ८
स्वरूपानुसधान रूपा स्तुतियः
पठेदादराद्भक्ति भावै मनुष्यः
शृणोतीह नित्य समासक्त चित्तो
भवेद्विष्णुरत्रै चवेदप्रमाणात् ६
इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं
विज्ञान नौका संपूर्ण"

"न भूमिर्नतोयंनतेजोन वायु-
र्न खं नेंद्रियं वा न तेषा समूहः
अनैकांतकत्वान् सुपुप्तैक शुद्ध
स्तदेको विशिष्टः शिवः केवलोहं १
न वर्णान वर्णाश्रमाचार धर्मा-
न मे धारणा ध्यान योगादयोपि
अनात्माश्रयौहं ममाध्यासहाना तदे० २"

विज्ञान-नौका' में 'ब्रह्म' के रूप की और 'सिद्धान्त-बिंदु में 'शिव' के रूप की विवेचना या चर्चा की गई है। ग्रंथ की लिपि स्पष्ट, किंतु प्राचीन है। लिपिकार ने ग्रंथ के अंत में लिपिकाल का कोई भी संकेत नहीं किया है। केवल "लिषितं ज्वालादत्त त्रिपाठिना पठनार्थं पडराजस्य राम राम राम" लिखा हुआ है। ग्रंथ की लिपि तथा कागज देखने से ज्ञात होता है कि ग्रंथ एक सो वर्षों से अधिक प्राचीन है।

यह ग्रंथ शेखपुरा (मुँगेर)–निवासी श्रीव्रजनन्दनप्रसाद सिंह के सौजन्य से प्राप्त किया।

४६] शिवताण्डवतंत्र—ग्रंथकार— × । लिपिकार—× । अवस्था—अच्छी हाथ का बना मोटा, देशी कागज । पृष्ठ सं०—२ । प्र० पृ० प० लगभग—१२ । आकार—५"×३" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्ण, षष्ठी, सं० १८६३ वि , सोमवार ।

प्रारंभ— श्री गणेशायनम श्री वटुक भैरवाय नम ॥
मेरु पृष्ठे सुखा सीन देव देव त्रिलोचनम्
शङ्कर परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्
श्रीपार्वत्युवाच भगवन्सर्व धर्मज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु
आपदुद्धारणं मन्त्र सर्वसिद्धि प्रदनृणा २
सर्वेषां चैव भूताना हितार्थम्वाञ्छितम्मया
विशषतस्तु राज्ञा वै शाति पुष्टि प्रसाधनम् ३
अङ्गन्यास करन्यास देहन्यास समन्वितम्
वक्तुमर्हसि देवेश ममहृय विवर्द्धनम् ४
ईश्वरवाच शृणुदेवि महाम न्त्रमापदुद्धारहेतुकम्
सर्व दु ख प्रशमन सर्वशत्रु विनाशनम् ५
अपस्मरादि रोगाणा ज्वरादीना विशेषत
नाशन स्मृति मात्रेण मन्त्रराजमिमम्प्रिये ६"

अन्त— 'फणिधर फणिनाथो देव देवाधि नाथ
त्रिनिधर त्रिनिनाथो विरवेताल नाथ
निधि पति निधि नाथा योगीनी योग नाथा
जयति वटुकनाथ सिद्धिद साधकाना १
घनील कमल वक्त्र रक्त वर्ण मौनी कृत
कृतमना सुखारविंद कन्यणा कीर्तिकमनीय
कपालपाणि वन्देमहावटुकनाथमभीष्टसिद्धिम् २ '

विषय—तंत्र शास्त्र ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ रुद्र शास्त्र से संबधित श्री वटुकभैरवस्तोत्र है। इसमें 'देविरहस्य' नाम का भी ग्रंथ है। ग्रंथ अनुसंधेय है। ग्रंथ की लिपि सुन्दर और लगभग ११० वर्ष प्राचीन है। इस नाम का ग्रंथ रुद्र शास्त्र में यथासंभव नहीं है किन्तु एक स्थान पर लिखा है—'इति श्री रुद्रयामले तंत्रे विश्वसारे आपदुद्धारणं भैरवस्तोत्र समाप्तम्" इससे प्रतीत होता है कि यह रुद्रयामल-तंत्र का ही कोई भाग है। ग्रंथ में

लिपिकार का नाम-निर्देश भी नहीं है। यह ग्रन्थ शेखपुरा (मुंगेर)-निवासी श्रीव्रजनन्दनप्रसाद सिंहजी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[५०] षट्पञ्चाशिका—ग्रंथकार—भीष्मदत्त। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, प्राचीन हाथ से बना, देशी कागज। पृ०-सं०—१६। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार-११$\frac{1}{2}$"×४$\frac{1}{2}$"। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल-अगहन, शुक्ल, त्रयोदशी, सं० १८५८ वि०, सं० १७२३ शक शालिवाहन।

प्रारम्भ—"टीका—श्री गणेशाय नम ॥ उत्तामय सच्चारो यच्छास्त्र प्रारंभेष्वभिमत देवता नमस्कारं कुर्वन्ति अवन्त्याचार्य्य मगद्विज वराह मिहिराचार्य्यात्मिज पृथुयशमा संन्क्षिप्त प्रश्न विद्या सुविस्तरैः कर्त्तु कामः ॥ आदावेव भगवतः सूर्य्यस्य नमस्कारं स्व नामा रव्यापन० चाए० ॥ प्रणि पत्येति ॥
(मूल) प्रणिपत्य रवि मुर्द्धा वारह मिहिरात्मजेन सग श सा० ॥ प्रश्ने कृतार्थ गहना परार्थ मुद्दिश्य पृथु यश सा० ॥१॥"

अन्त—"(मूल) अंशका. नायते द्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्करादयः ॥ राशिभ्य. काल दिग्देशो व यो जातिश्च लग्न पात् ॥५६॥
(टीका) एव अंशकानायते द्रव्यं द्रेष्काणैलग्नत्रिभागैस्तस्करा माताश्चौरास्मृता. ॥ यादशी द्रेष्काणस्याकृतिस्तादशीतस्करा-कृतिर्वक्तव्या० यथामेषस्य प्रथमद्रेष्काणपुरुष कृरन रक्तनेत्रश्चौर.॥ द्वितीयः स्त्री लोहिताम्बरा० स्थूलोदरी० दग्धपदा० द्वितीयोनर. कलापिंगला गलशकटकमणीयकुम्भलौहहत्यादिति. मिथुनस्य प्रथमः स्त्री रुपान्विता रजस्वला० हीनप्रजा० मरणकार्यकृत क्रमात, द्वितीये पुरुष उद्यानसंस्थ. धनुर्पाणी ॥ तृतीयेषु पुमान् रक्तविभूषित पंडित. धनुर्पाणिः ॥ कर्कटस्य प्रथम पुरुषो वीरः हस्तीशरीरः शूकरमुख. द्वितीय. स्त्री यौवनोपेता आररापसंस्था० ॥ तृतीय. पुरुषः सर्प्पवेष्टितो लौह सुवर्ण भरणावित ॥ सिंहस्य प्रथमः संकुलीहस्तः शाल्मलिसंस्थो गृद्धजम्बुकमुखः द्वितीय. पुरुष. धनुर्पाणि उन्नता-ग्रनास ॥ तृतीयोजन. कुंचितकेश. चतुर्हस्त ॥ कन्याया. प्रथमः पुरुष आशनवीयो स्स्थाः ॥ द्वितीय. पुरुषो गृद्धतुल्यमुखो घटोन्वितः क्षुधितः तृषितश्च ॥ तृतीयः पुरुषो दीर्घमुखो धनुर्पाणि ॥ वृश्चिक प्रथम. स्त्रीभग्नानना स्थानच्युता. सर्प्पविद्धपाद मनोरमा. ॥ द्वितीय स्त्री भर्त्तृकृते भुजंगावृत्त

शरीरा । तृतीय पुरुष वनहाया पृथुर्न चिबुका वन्य ॥ धनुषा प्रथम पुरुषाधनुर्हस्त ॥ द्वितीय स्त्री स्वर्णा या स्वर्ण ॥ तृतीय पुरुषा दण्डहस्त कुर्मी ॥ मकरस्य प्रथम पुरुषा लोमश स्थूलदंता रौद्रवदना ॥ द्वितीय स्त्री श्यामा लंकारान्विता ॥ तृतीय पुरुषा दीर्घभुजा धनुर्धारी ॥ कुंभस्य प्रथम पुरुषा रुद्रवदन द्वय सकम्बल ॥ द्वितीय स्त्री रक्ताम्बरा तृतीय पुरुष श्याम सरोमहर्षेण ॥ मीनस्य प्रथम पुरुषा नौस्य द्वितीय स्त्री गौरा॰ तृतीययनग्न पुरुष भीतः सर्पवेष्टता॰ इति एवं बृहज्जातक॰ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु शुभं भूयाल्लेखक पाठकयो ॥ शुभ संवत् १८२८ शाके शालिवाहनस्य गताब्दा १७२३ ॥ अग्रहणस्यासित पक्षे त्रयोदश्या गुरुवासरे॰ ॥ पञ्चाशिका समानेखि भीष्मदत्तेनधामता ॥ श्री रामाऽवतुतराम्'

विषय—ज्योतिष शास्त्र।

टिप्पणी—यह ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ षट्पञ्चाशिका की टीका है । इसमें टीकाकार ने टीका की प्राचीन प्रणाली से काम लिया है और उसे बोझिल बना दिया है। इस उपयोगी टीका का अनुसंधान अपेक्षित है। ग्रंथ के प्रारंभ या अंत में टीकाकार का नामोल्लेख नहीं है। ग्रंथकार श्री वराह मिहिराचार्य के पुत्र हैं। टीका की भाषा में भी यत्र-तत्र अशुद्धियाँ हैं। ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है। ग्रंथ का लिपिकाल लगभग १५० वर्ष प्राचीन है। इस टीका के अनुसंधान से संभव है, मूल ग्रंथ और ज्योतिष शास्त्र के कुछ तथ्यों पर नवीन प्रकाश पड़े।

यह ग्रंथ पं० श्री गिरीशदत्त पाण्डेय जी, ग्रा० पण्डित टोली का रामपुर, महाराजगंज (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[४१] जातकाभरणम्—ग्रन्थकार—श्री दैवज्ञ ढुण्ढिराज। लिपिकार—श्री पं० महादेवजी। अवस्था—अच्छी प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—८५। प्र० पृ० प० लगभग—१०। आकार—१०½"×५½"। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ, कृष्ण, द्वादशी, सं० १८१४ वि०; शाक १७७७, गुरुवार।

प्रारंभ—'श्री गणेशाय नमः श्री देवदाह हृदयारविन्दे पादार विन्दे परदस्य ईड़े यदीय यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणधायमतां समेत १ उदारधी सदर भूपरेश प्रसम्य होराणम पितु राजम् श्री ढुण्ढिराज इद त किलाभ्यर्मार्यामिमलांक्ति रत्नैः २''

अन्त—"कामं स्वामी प्रेम नृ द्धस्त नस्यै वद्ये देशा व स्थिते प्रात्य हर्षे
पत्युश्चिंता नदद्रोच नामौ गुह्यस्ये स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ३०
गोदावरी तीर विराजमान पार्थाभिधान पुरभेदनवयत् सद्गोल
विद्यामलकीर्तिभाजा मत्पूर्वजाना व सती स्थलं तत् ३१
तत्रस्थ दैवज्ञ नृसिंह सनुर्गजाननाराधनताभिधान
श्री ढुंढिराजो रचयाबभूव होरागमेनुक्रममादरेरन ३२
इति श्री दैवज्ञ ढुंढिराज विरचिते जातका भरणे स्त्री जातकाध्याय
शुभमस्तु सिद्धिरस्तु शुभभूयात"

विषय—ज्यौतिष शास्त्र।

टिप्पणी—१—यह ग्रंथ गोदावरीतीर-स्थित पार्थिवपुर पुरग्राम के पंडित श्री ढुंढिराज शास्त्री द्वारा विरचित है। यह अद्यावधि अप्रकाशित है। इसमें जन्मपत्री-निर्माण विधि के साथ-साथ, जन्म से संबंधित ग्रहों और राशियों पर विचार करते हुए, उनके फलाफल का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण दिग्दर्शन कराया गया है। ग्रंथ की भाषा सरल और रचना हृद्य है। संपूर्ण ग्रंथ पद्य में है। यदि इस ग्रंथ का अनुशीलन और प्रकाशन किया जाय, तो संभव है, ज्यौतिष-संबंधी प्रकाशित अन्य ग्रंथों पर नवीन प्रकाश पड़े।

२—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। लिपिकार ने यत्र-तत्र ऐसी अशुद्धियाँ की हैं, जिनसे ग्रंथ की भाषा और विषय में दोष आ गये हैं। ग्रंथ पठनीय है।

यह ग्रंथ प० श्रीगिरीशदत्त पांडेय जी, ग्राम-पंडित लोगों का रामपुर, महाराजगंज (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

परिशिष्ट

* अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

** ग्रन्थों और ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

*** महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण



परिशिष्ट—१

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ निर्देशिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं)

क्र० सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१	आत्म प्रबोध (३६)	दर्शन			
२	गरुड़ बोध (२३–ग)	कबीर साहित्य		स० १८३९ वि	
३	तुलसीमाल्योपनिषद् (३०)	धर्म			
४	भक्त-विवेक (६८)	भक्ति			
५	भोपाल बोध (७–ख)	दर्शन		१२७८ साल	
६	रमल (८६)	ज्योतिष		सं० १८४१ वि०	
७	लक्ष्मी चरित्र (७१)	भक्ति		स० १८१८ वि	
८	विचार सागर (३१)	दर्शन			
९	विष्णुपुराण (८२)	कृष्ण चरित्र		१३३१ साल	
१०	सतनाम (७–क)	भक्ति		१२७८ साल	
११	सतनाम (१२)	दर्शन			
१२	समुद्रि (८८)	ज्योतिष		स० १८४२ वि	
१३	सुमिरन दानलीला (२३-ख)	कबीर साहित्य			
१४	सूरजपुरान (८३)	भक्ति			
१५	सूर्य-कथा (७६)	भक्ति			
१६	स्वासा-गुंजार (७)	योग			
१७	हनुमानचालीसा (५४)	स्तोत्र			
१८	चैत्रमिति और पहेलियाँ (७७)	गणित			

संस्कृत-ग्रन्थ

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई संस्कृत-पोथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

क्र० सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१.	अहिबलचक्र (३६)	ज्योतिष			
२.	आथर्वणी पुरुषसुबोधिनी (१६)	स्तोत्र		१८७६ वि०	
३	गजेन्द्रस्तोत्र (२४)	स्तोत्र			
४	दत्तात्रय-तंत्र (३)	तंत्र			
५.	पञ्चदशी (१०)	दर्शन			
६	व्याकरण और छंद (२३)	व्याकरण, छंद			
७	भागवततत्त्वसार-नदीपन (२५)	भक्ति			
८.	महाभारत और भागवत के मिश्रित स्फुट (२७)	भक्ति			
९.	महाविद्या-स्तोत्र (३४)	स्तोत्र			
१०.	रणदीक्षा-प्रकार (२)	तंत्र			
११.	रामकृष्णकाव्य (३०)	काव्य			
१२.	रीति-शास्त्र और स्तोत्र (२६)	स्तोत्र			
१३	रुद्रयामल तंत्र (७)	तंत्र			
१४.	रुद्रयामल तंत्र (४७)	तंत्र			
१५	लघुजातक (४३)	ज्योतिष			
१६.	वाजसनेय-संहिता (६)	वैदिक सा०			
१७	विष्णुपञ्जरस्तोत्र (४६)	स्तोत्र			
१८.	शिवताण्डव-तंत्र (४६)	तंत्र			
१९	स्वल्पोपनिषद् (४५)	उपनिषद्			
२०	संध्याविधि (३५)	कर्मकाण्ड			
२१.	सूत्रपाठ (११)	व्याकरण			
२२	सूर्यार्णव, कर्मविपाक, राशि-फल (४२)	ज्योतिष			

परिशिष्ट–२

ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम संख्याएँ हैं)

संस्कृत-ग्रन्थ

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका की पृष्ठ-सं० १५१ से प्रारंभ संस्कृत-पोथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

**

ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं)

**

संस्कृत-ग्रन्थकार

(ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई संस्कृत-पोथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

————

परिशिष्ट–३

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ संख्या			विशेष
			लिपिकाल	खो० वि० प्र०	ग्र० सं०	
१	आनन्दकवि*	कोकसार	१७३४ ई० १७४८ ई १७६५ ई० १७८१ ई १८४६ ई १८५३ ई १८८४ ई १९ १ ई०	ना० प्र स, का १९ २ ,, १९ ६ ,, १९१७ १९ , १९२३ २५ , १९२९ ३१	५ ८ ६७ १२ डी, ई, जी, एच्, आइ, ने। १ सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आइ, जे।	ग्रन्थकार की अन्य रचनाओं—कोकमंजरी, काकविलास और आमनमजरीसार—की बारह प्रतियाँ नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में मिली हैं। इस ग्रन्थ की ३८ प्रतियाँ उक्त सभा को खोज में प्राप्त हुई हैं।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष
			लिपिकाल	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१.	आनन्दकवि	कोकसार	१८१७ ई० १८३४ ई० १८६८ ई० १८७५ ई० १८८६ ई० १९०१ ई० १९२८ ई०			परिशिष्ट-ग्रन्थानुक्रम में कवि के नाम तीन ग्रन्थ गृहीत हैं। काशी-नागरी प्रचारिणी सभा को ग्रन्थकार के रचे ग्रन्थों की एक सौ तीस प्रतियाँ खोज में मिली हैं। दे०— 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण', पहला भाग पृ० सं० १८, हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण, पृ०-सं० ५८ और पन्द्रहवाँ त्रैवार्षिक विवरण, पृ० सं० ४१। 'ज्ञानसागर' नामक ग्रन्थ, 'शब्दसागर' नाम से भी मिलता है।
			१८८३ वि०	वि० रा० भा० प० १ खं०	७६	
२.	कबीरदास	१ शब्दावली	१८०५ वि०	ना० प्र० स०, का० १९०६-८	२०७ पी	
				,, १९०९-११	१४३ ए	
				वि० रा० भा० प० १ खं०	३२	
		२ बीजक	१८५६ वि०	ना० प्र० स०, का० १९२०-२२	३४ ए	
			१८८१ वि०	,, १९२३-२५	१९८ डी, ई, एफ.	
			१९०७ वि०	,, १९२९-३१	१३८ डी,	
			१९११ वि०	वि० रा० भा० प० १ खं०	६०	
		३ ज्ञानसागर	१८५६ वि०	ना० प्र० स०, का० १९०९-११	१४३ जे	
			१९३२ ई०	वि० रा० भा० प० १ खं०	८४	

३	कृपाराम	भागवत भाषा		ना० प्र० स०, का १९ ५	६
			१९५ वि	वि रा० भा० प० १ स	८५
४	केशवदास	१ विज्ञानगीता		ना० प्र० स , का० १९	५५
			१८९९	,, १९०४	१२७
			१८९१	,, १९२ २२	८९ डी,
				,, १९२३ २५	२ ७
				,, १९२६ २८	२३३ ए, ब,
			१८४९ वि०	,, १९२९ ३१	१९२ जी,
				वि० रा भा० प १ स	७३, ९७
		२ रसिकप्रिया		ना प्र स , का० १९०३	८९
			१८१४ वि०	,, १९ ४	१२८
				,, १९१७ १९	९६ बी,
			१९१७ वि०	,, १९२ २२	८९ बी,
				,, १९२३ २५	२ ७
				,, १९२६ २८	२३३ एफ्, जी,
				वि रा० भा० प १ स	८६,१ ०
		३ रामचन्द्रिका	१८२५ वि	ना० प्र० स , का १९०२	२५२
			१६११ वि	,, १९ ३	२१
				,, १९२३ २५	२ ७
				,, १९२६ २८	२३३ इ,
५	गोस्वामी तुलसीदास		१७६३ वि०	वि रा भा० प १ स	९८
		१ रामचरितमानस	१६४७	ना प्र स का १९ ०	१

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
			लिपिकाल	खो० वि० ग्रं०		ग्रं० सं०	
५.	गोस्वामी तुलसीदास	१ रामचरितमानस	१६०४	ना० प० स०, का०	१६०१	२२	
			१६७४	,,	१६०१	२८	
			१७६७	,,	१६०३	१६७, १६८, १६६	
			१८१८	,,	१६०४	१४४	
			१६०४	,,	१६२०-२२	१६८ ए०	
				,,	१६२३-२५	४३२	
				,,	१६२६-२८	४८२ ए, बी, सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आई, जे, के।	
			१८३४ लि०	,,	१६२६-३१	३२५ ए, बी. सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आई, जे, के, एल, एम्, एन् ओ, पी, क्यू, आर, एस्, टी, यू, वी, डब्ल्यू, एक्स, वाई, जेड्, ३२५ ए२, बी२, सी२.	

४	गोस्वामी तुलसीदास	१ रामचरितमानस			डी२, ई२, एफ२, जी२, एच्२, आइ२, जे२, के२, एल्२, एम्२, एन्२, ओ२।
			१६११ वि		
			१८७८ वि०		
			१८७६ वि०		
			१७६० वि०		
			१८५६ वि०		
			१७६ वि		
			१८८३ वि		
			१८८७ वि०		
			१६ ४ वि		
			१६ ६ वि०		
			१८६२ वि		
			१६ २ वि		
			१७६० वि०		
			१८७२ वि०		
			१८८८ वि०		
			१६३२ वि०		
			१६२२ वि०	वि० रा आ० प० १ सं०	२
			१८४७ वि	,,	३
			१८०२ वि०	,,	४

६	परनराम	ज्ञान सरोवै		ना प्र० स० का	१६२० २२	२६ बी	
				,,	१६२३ २५	७४	
				,,	१६२६ २८	७८ के	
			१६१८ वि	,,	१६२६ ३१	६५ डब्ल्यू एक्स, वाई, जेड् ।	
			१८१७ वि	,,			
			१८७७ वि०	वि रा० भा प	१ खं०	६१	
७	नाभादास	भक्तमाल	१७१२	ना प्र स , का	१६ ६ ११	२११	
				,,	१६१७ १६	११७	
				,,	१६२३ २५	२८६	
			१६ ७ वि	वि रा० भा प	१ रा०	६	
			{ १८७७ ई०, १६१४ वि	,,		१ , ११	
८	पदुमनदास	हितोपदेश	१८७४ वि	ना० प्र स०, का०	१६२६ २८	३३६	र का०—सं १७६६ = १७०६ ई (ना प्र स ,का०)
			१६१६ वि	वि रा भा प	१ रा०	२२	र का०—स १७३८ (वि० रा० भा० प , १ रा०) ग्रन्थकार की अन्य— काव्य मंजरी, भाषा भूषण— दो रचनाएं मिली है ।
९	परमानंद दास	कबीरभानुप्रकाश		ना प्र० स , का	१६२६ ३१	२६२	र० का —स १६३५ = १८७८ ई (ना प्र०स०,का०),

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष
			लिपिकाल	खो० वि० प०	पृ०	
९.	परमानंददास	कबीरमानुप्रकाश	१९१८ वि० = १८६१ ई०	[illegible]	११	[illegible] १८३४ [illegible]
१०.	बिहारीलाल	बिहारी सतसई	१७१८	[illegible] १३ १	१०	
			१७६०	,, १६०१	४२,७४	
			१७९९, १७६२	,, १२ ३	[illegible]	
			१७६३	,, १६०३	११३, ११४	
				,, [illegible]	[illegible]	
			१७७३	,, [illegible]	[illegible]	
			१७९०	,, [illegible]	[illegible]	
			१८०५	,, [illegible]	[illegible]	
				,, [illegible]	[illegible]	
				,, [illegible]	[illegible]	
			१९२७	,, [illegible]	[illegible]	
				[illegible]	[illegible]	
११.	[illegible]	हरिचरित		[illegible] १९-३-२५	२३८	[illegible]
			[illegible]	,, १९२६-२८	[illegible]	[illegible]

११	लालचदास				
१२	संत दरियादास	दरियाग्रंथ	१८५८ वि०	वि रा भा० प १ ख०	
		१ शब्द		ना प्र० स [illegible] १६०६ ११	५५ फ
			१६५५ वि	वि रा भा [illegible] १ ख	४४, ४६, ५० ५० (घ)
		२ ज्ञानदीपक	१६ ७ वि	ना प्र स, का १६०६ ११	५५ आइ
			१९६६ फ	वि रा भा० प० १ ग	४५ (क) ४६, ८७, ५७ (ख) ६८ (क)
		३ दरियासागर	१८८१ वि०	ना प्र स, का १६०६ ११	५५ इ
			१९६६ फ०	वि रा भा प १ ग	४८ (ख), ५७ (क), ६ (ग), ६१ (क), ६२ (क)
		४ भक्तिहेतु	१८६६ वि	ना प्र स, का १६०६ ११	५५ सी
			१९६६ फ०	वि रा० भा० प० १ ग०	४५ (ग), ५१ (क) ५२ (घ), ६१ (ख), ६५ (ग)
		५ ज्ञान सरावै	१८८७ वि	ना प्र० स, का १६ ६ ११	५८ एफ
			१९६६ फ०	वि रा भा प १ ख	४५ (घ)
		६ प्रेममूला	१९६६ फ		
			१९८६ फ	१८६६ वि, १६१३ वि	४५ (छ), ५२ (घ), ६ (क) ६५ (घ)
		७ ब्रह्म विवेक	१६४६ वि०	ना० प्र न, का० १६ ६ ११	५५ बी
			१९६६ फ०	वि रा भा प० १ ख	४५ (च)
			१९८६ फ		५२ (ग), ६२ (ग)
			१६१३ वि		६७ (ग)
		८ अमरसार	१५४६ वि०	ना प्र० स०, का १६ ६ ११	५५ ए

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			संकेत
			लिपिकाल	ना० लि० प्र०	ग्र० सं०	
१२.	संत दरियादास	८ ब्रह्मसार	१७६७ ई०	[illegible] १ सं०	६५ (ज)	
			१९८४ ई०	,	४२ (ट), ३० (ग)	
		९ ज्ञानरत्न	१८८३ वि०	[illegible] ११-१३-११	३१ एन	इन पोथियों में [illegible]
			१९०८ ई०	[illegible] १ सं०	४१ (क), ३२ (ग)	[illegible]
			१८३४ वि०	"	५३	[illegible]
			१९१३ ई०	"	२५	[illegible]
		१० [illegible]	१६४१ वि०	[illegible] ११	६६ [illegible]	[illegible]
				[illegible] १ सं०	०० (ग)	[illegible]
			१८५८ वि०	,	७३ (?), ४४	[illegible]
		११ [illegible]	१८६० वि० =	[illegible]	६६	
			१८३३ ई०			
			१८४० वि०	[illegible] १ सं०	३४	
१३.	सूरदास	सूरसागर	१८४३ वि०	[illegible] १९०९	११	
			१८८२ वि०	" १९०४	१८	
			१८३३ वि०	" १९ [illegible]	२४४ बी,	
			१८६६ वि०			
			१८२० वि०	" १९२६ [illegible]	३०१ [illegible]	
			१८३१ वि०	[illegible] १ सं०	४६	

सस्कृत

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं म उनक उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एव खोज विवरणिकान्तगत ग्र थ सख्या			विशेष
			लिपिकाल	खो० वि ग्र०	ग्र० न०	
१	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	सारस्वतप्रक्रिया	१८६३ वि०	आ शा भ ज० प्र	प्र १४१	
					२	
			१७७६ वि०	"	" ३	
			१८३८ वि०	"	" ४	
			१८४० वि	"	" ५	
				"	"	
				"	" ७	
			१८७३ वि	"	८	इसके लिपिकार ने महाराजा दौलतराव सिंधिया का उल्लेख किया है।
				"	" ६	
				"	१	

ग्रन्थकार	ग्रन्थ नाम	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणिकान्तर्गत ग्रन्थ संख्या			विशेष
		लिपिकाल	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
अनुभूतिस्वरूपचार्य	१ सारस्वतप्रक्रिया	१६६२ वि०	आ० शा० भ० ज० ग्र०	२	बालबोधिनी टीकासहित, टी० का० प० मिश्र, नागर कन्नड लिपि में लिखित।
			क० प्रा० ता० ग्र०	१०१, ६६८	
			जै० सि० भ० आ० सू०	छ० गं० ५१०,५१८, ५४०	
जगदेव	गीतगोविन्द	१६२७ वि०	वि० रा० भा० प०	१ रां (रा०) १२,३७,५	
		शक-सं० १७०५	वि०रि०सो०सा०डि०कै०(मि ०II)	३६ ए, बी, सी, डी	
		शक-स० १७६६ = १२५५ फ०	,,	३६ ई०	
		१२२२ फ०	,,	३६ एफ्	
			,,	३६ जी, एच्	
		१२१२ फ०	,,	३६ आई, जे. के, एल्	
			मी० सी० पट०	आई, पी १५३	
			पट०	११	
			पी०	३१	
			पट० III	पी० ३३	
			सी० एस० सी० सं० ५	पी० २०-२१ ए, सी	
			पट० आई०	पी० १४	
		१६०५	एच्० पी० एस० सं० I	पी० १६	